मीडिया रिपोर्ट

आज़ादी का अमृत महोत्सव

152वीं जयन्ती

गौर उत्सव

21-26 नवम्बर, 2021

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

www.dhsgsu.ac.in

डॉक्टर सर हरीसिंह गौर

(26 नवम्बर,1870 – 25 दिसंबर,1949)

152 पूर्व 26 नवम्बर, 1870 को शौर्य-भूमि बुंदेलखंड के सागर में तख्त सिंह और भूरी बाई के घर में जन्में , और राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के समकालीन , माँ भारती के अमर सपूत एवं विलक्षण प्रतिभा के धनी डॉ. हरीसिंह गौर का सम्पूर्ण जीवन ज्ञान , संकल्प और पुरुषार्थ की जय-गाथा है. उनकी शिक्षायी प्रतिबद्धता की कर्तव्य यात्रा सागर , जबलपुर, नागपुर की पगडंडियों से होते हुए विश्वविख्यात केम्ब्रिज विश्वविद्यालय के ज्ञान शिखर तक पहुँचती है.

कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में रहते हुए गौर साहब ने अकादमिक उपाधियों को हासिल करने के साथ ही देश-दुनिया के समकालीन मुद्दों के प्रति अभिनव समझ तथा अपनी रचनात्मक प्रतिभा से अपने समय के अनेक बौद्धिकों, राजनीतिज्ञों और रचनाकारों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया. भारत वापस आने पर आपने जबलपुर, नागपुर जैसे शहरों में नौकरियां की और कुछ ही समय बाद सरकारी नौकरी से त्यागपत्र देकर एक अधिवक्ता के रूप में काम शुरू किया. इस कार्य में बहुत जल्दी ही अखिल भारतीय स्तर पर उनकी ख्याति बन गयी साथ ही विधि-शास्त्र की अनके पुस्तकों के रचनाकार के रूप में भी वे अपने जीवन काल में ही किम्वदंती बन गये थे.

साहित्य, शिक्षा, दर्शन और विधि जैसे विषयों में अपने विशिष्ट हस्तक्षेप और देश-दुनिया के तत्कालीन परिदृश्य में अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति के चलते वे दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्थापक उपकुलपति (1922-26) नियुक्त किये गए. 1925 में उन्हें ‘सर’ की उपाधि प्रदान की गयी. 1928 से 1936 तक वे नागपुर विश्वविद्यालय के भी कुलपति रहे. सफलता के अपने उन चरम दिनों में भी डॉ. गौर अपनी मातृभूमि सागर के प्रति अपने लगाव को भूल नहीं पाए थे , उसी लगाव की फलश्रुति थी कि उन्होंने 18 जुलाई 1946 को अपनी समस्त सम्पत्ति (लगभग दो करोड़ रूपये) दान कर सागर में मध्य प्रदेश का पहला विश्वविद्यालय स्थापित किया. इस अभूतपूर्व कार्य ने समूचे बुंदेलखंड का वर्तमान और भविष्य बदल दिया. गौर साहब के इस अद्वितीय अवदान के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए समूचा बुंदेलखंड प्रति वर्ष उनके जन्मदिवस 26 नवम्बर को अत्यंत आदर के साथ ज्ञान के एक अभिनव पर्व के रूप में मनाता है. यह दिन यहाँ के लोगों के लिए एक तरह से अज्ञान के अँधेरे के विरुद्ध ज्ञान के उजाले का विजय दिवस है. ज्ञान-दान की यह इस अद्वितीय कथा को कहने-सुनने के लिए इस दिन विश्वविद्यालय में लगभग 4 से 5 हजार की संख्या में लोग जुटते हैं. सागर जिले के सभी विद्यालयों , कालेजों और सभी निजी एवं सरकारी प्रतिष्ठानों में गौर साहब के जन्मदिन को आत्मप्रेरित उत्सव और आनंद के साथ मनाया जाता है. उनका जन्मदिन जनता द्वारा अपने सच्चे जननायक को याद करने और उसके प्रति अपनी आदरांजली व्यक्त करने का जन-उत्सव का दिन है. इस दिन कि शुरुआत कुलपति द्वारा नगर स्थित गौर साहब की मूर्ति पर माल्यार्पण से होती है तत्पश्चात बड़ी संख्या में कृतज्ञ जनसमूह कुलपति के नेतृत्व में एक गौरवमयी जुलुस के साथ विश्वविद्यालय स्थित गौर साहब की समाधि पर पुष्पांजलि अर्पित करता है. यह एक तरह से समाज के प्रत्येक वर्ग के सम्मिलित आह्लाद की आयोजना है, जो अपनी संरचना और भावना में विरल है.

गौर उत्सव के आयोजन के लिए कुलपति ने किया शिक्षकों से संवाद

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने विश्वविद्यालय के शिक्षकों को संबोधित करते हुए कहा कि डॉ. गौर के संकल्प और सपनों को साकार करना हमारा दायित्व है. हमें इसके लिए भरपूर ऊर्जा और उत्साह से काम करना है.विश्वविद्यालय अपनी गौरवशाली परम्परा को मजबूत करते हुए सर डॉ. हरीसिंह गौर की 152वीं जयन्ती मनाने जा रहा हैं. हमें इसअवसर पर डॉ. गौर के अवदान का स्मरण करना होगा. राष्ट्र निर्माण में उनकी भूमिका को विद्यार्थियों, समुदाय और जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से गौर उत्सव को छह दिनों तक विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जाएंगे. सागर शहर के स्कूली एवं महाविद्यालय के बच्चों की सहभागिता भी विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से सुनिश्चित की जाएगी. सागर शहर के नागरिकों और विश्वविद्यालय परिवार डॉ. गौर की जन्म जयन्ती को मिलजुलकर उत्साहपूर्वक मनायेगा. गौर उत्सव को यादगार बनाने के उद्देश्य से विधि विभाग के मूट कोर्ट एवं समाज विज्ञान एवं मानविकी व्याख्यान भवन का लोकार्पण भी किया जायेगा. इन सभी कार्यक्रमों में शिक्षकों, अधिकारीयों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों का सहयोग एवं सहभागिता अपेक्षित है.

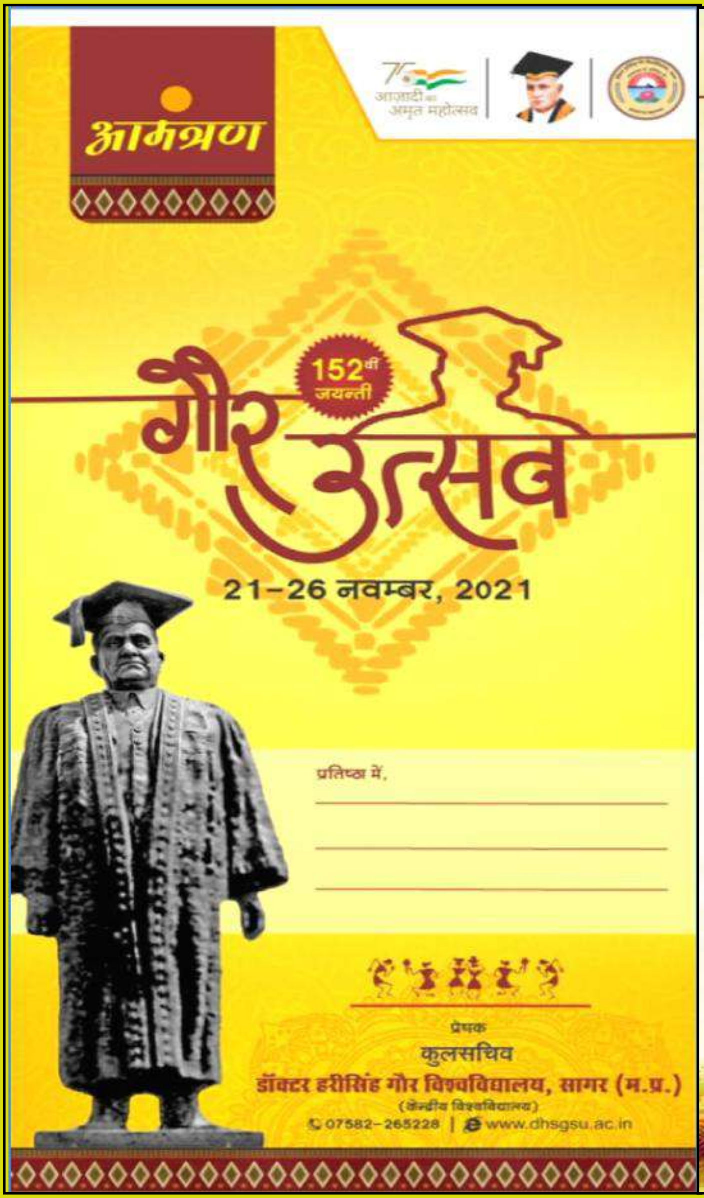

मंगलवार, 23 नवम्बर 2021

डॉ. गौर का अवदान : एक विश्लेषण एवं डॉक्टर हरीसिंह गौर के जीवनवृत्त का प्रदर्शन

समय : प्रातः 11:00 से दोपहर 01:00 बजे तक
कार्यक्रम स्थल - स्वर्ण जयन्ती सभागार

लोकार्पण कार्यक्रम एवं गौर व्याख्यान माला

- **'विक्रमादित्य भवन'** (MOOT COURT) का लोकार्पण
  समय – दोपहर 03:00 बजे
  कार्यक्रम स्थल: विधि विभाग परिसर
- **गौर व्याख्यान माला**
  Subject: The Expected Role and Impact of Artificial Intelligence in Judicial Governance
  समय : दोपहर 03:00 से सायं 05:10 बजे तक
  कार्यक्रम स्थल: जवाहरलाल नेहरू पुस्तकालय सभागार
  मुख्य अतिथि
  माननीय न्यायमूर्ति श्री अमरेश्वर प्रताप साही (से.नि.)
  निदेशक, राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी, भोपाल (म.प्र.) एवं
  पूर्व मुख्य न्यायाधीश, पटना एवं मद्रास उच्च न्यायालय

बुधवार, 24 नवम्बर 2021

लोकार्पण कार्यक्रम

- **'आचार्य शंकर भवन'** का लोकार्पण
  मुख्य अतिथि
  माननीय श्री मुकुल मुकुंद कानिटकर
  अखिल भारतीय संगठन मंत्री, भारतीय शिक्षण मण्डल, नागपुर
  समय: दोपहर 01.30 बजे
  कार्यक्रम स्थल : मानविकी एवं समाज विज्ञान व्याख्यान कक्ष कॉम्पलेक्स
- **डॉक्टर हरीसिंह गौर के जीवनवृत्त का प्रदर्शन**
- **एम.ओ.यू. हस्ताक्षर कार्यक्रम**
  डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर एवं रिसर्च फॉर रिसर्जेन्स फाउण्डेशन (भा.शि.मं.) के साथ अकादमिक अनुबंध

गौर व्याख्यान माला

विषय : राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020: उच्च शिक्षा संस्थानों की नवाचारी भूमिका
मुख्य वक्ता
माननीय श्री मुकुल मुकुंद कानिटकर
अखिल भारतीय संगठन मंत्री, भारतीय शिक्षण मण्डल, नागपुर
विशिष्ट वक्ता
माननीया सुश्री अरुंधति कावड़कर
अखिल भारतीय महिला प्रकल्प सह प्रमुख एवं पालक अधिकारी
महाकौशल प्रान्त एवं मध्यभारत, भा.शि.मं.

समय : दोपहर 02:00 से सायं 04:30 बजे तक
कार्यक्रम स्थल : स्वर्ण जयन्ती सभागार

विश्वविद्यालयीन विद्यार्थियों द्वारा फाईन आर्ट, पेंटिंग एवं क्राफ्ट का प्रदर्शन

समय : प्रातः 10:00 से दोपहर 03:00 बजे तक
कार्यक्रम स्थल : स्वर्ण जयन्ती सभागार

गुरुवार, 25 नवम्बर 2021

- **डॉक्टर हरीसिंह गौर के जीवनवृत्त का प्रदर्शन**
- **डॉ. गौर परिसंवाद कार्यक्रम**
  विषय : डॉ. गौर के सपनों का सागर और उनका विश्वविद्यालय

सम्माननीय विशेषज्ञ गण:

- प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलपति, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
- श्री रघु ठाकुर, वरिष्ठ समाजवादी चिंतक, सागर
- डॉ. जी.एस. चौबे, वरिष्ठ चिकित्सक, सागर
- प्रो. एस.पी. व्यास, वरिष्ठ शिक्षाशास्त्री एवं पूर्व कुलपति, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि., सागर
- प्रो. सुरेश आचार्य, वरिष्ठ साहित्यकार, सागर

समय : प्रातः 11:00 से दोपहर 01:00 बजे तक
कार्यक्रम स्थल : स्वर्ण जयन्ती सभागार

गौर उत्सव

अखिल भारतीय कवि सम्मेलन

सरस्वती वंदना कु.सोनाली सेन, सागर

आमंत्रित कविगण:

- शायर अशोक मिज़ाज 'बद्र', सागर
- श्री अशोक सुंदरानी, सतना
- सुश्री विभा सिंह, वाराणसी
- श्री संतोष शर्मा 'सागर', विदिशा
- श्री राम भदावर, इटावा

समय : सायं 07:00 से सायं 09:30 बजे तक
कार्यक्रम स्थल : स्वर्ण जयन्ती सभागार

शुक्रवार, 26 नवम्बर 2021

गौर जयन्ती दिवस - तीनबत्ती कार्यक्रम

- गौर प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं उद्बोधन
  माननीया प्रो. नीलिमा गुप्ता
  कुलपति, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
  समय: प्रातः 8.00 बजे
  कार्यक्रम स्थल : गौरमूर्ति, तीनबत्ती, सागर
- डॉ. गौर शोभा यात्रा
  गौरमूर्ति, कटरा बाजार से विश्वविद्यालय परिसर
  समय: प्रातः 8.30 बजे

गौर जयंती मुख्य समारोह

मुख्य अतिथि
माननीय श्री भूपेंद्र सिंह
कैबिनेट मंत्री, नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग, म.प्र. शासन
सारस्वत उद्बोधन
माननीया प्रो. नीलिमा गुप्ता
कुलपति, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
अध्यक्षता
माननीय प्रो. बलवंत शांतिलाल जानी
कुलाधिपति, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
समय: प्रातः 11.00 बजे
कार्यक्रम स्थल : गौर समाधि प्रांगण

सांस्कृतिक संध्या एवं भारतीय सेना की 'विक्ट्री फ्लेम' का स्वागत

1971 के भारत–पाक युद्ध में भारत की विजय के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भारतीय सेना के 'विक्ट्री फ्लेम' का विश्वविद्यालय में स्वागत
(सहयोग: महार रेजीमेंट, सागर)

समय : सायं 06:00 से सायं 06:30 बजे तक

सांस्कृतिक संध्या

विश्वविद्यालयीन विद्यार्थियों की प्रस्तुति
समय : सायं 06:30 से रात्रि 08:30 बजे तक
कार्यक्रम स्थल : गौर समाधि प्रांगण

उपरोक्त कार्यक्रमों में आपकी गरिमामयी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

भवदीय
संतोष सोहगौरा
कुलसचिव (प्र.)

अनुरोध : उपरोक्त कार्यक्रमों में कोविड–19 नियमों का पालन करते हुए सम्मिलित होने का कष्ट करें।

गौर समाधि

गौर उत्सव आयोजन के लिए गठित समिति एवं कार्यक्रम विवरण

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

क्र./आर/2021/7854 — 11 नवम्बर 2021

संशोधित कार्यालय आदेश

डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के संस्थापक, शिक्षाविद एवं प्रख्यात विधिवेत्ता, संविधान सभा के सदस्य एवं दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्मोत्सव पर **"गौर उत्सव सप्ताह"** में दिनांक 21–26 नवम्बर 2021 तक आयोजित किया जायेगा।

गौर उत्सव सप्ताह 2021 समारोह के दौरान आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रमों के सफल संचालन हेतु निम्नलिखित उप–समितियों का गठन किया जाता है:-

गौर जयंती समारोह–2021 मुख्य समन्वयक: प्रो. आर.के. त्रिवेदी

क्र	उप–समिति का नाम	क्र	उप–समिति का नाम
1	**मंचीय अधोसंरचना व्यवस्था एवं कार्यक्रम स्थल पंडाल, प्रकाश एवं साज–सज्जा समिति (गौर प्रांगण एवं समागार)**	2	**ऑनलाइन प्रसारण/तकनीकी/वीडियो/फोटोग्राफी/प्रचार–प्रसार एवं मीडिया समिति**
	डॉ. ललित मोहन – समन्वयक		प्रो. दिवाकर शुक्ला – समन्वयक
	डॉ वन्दना सोनी – सह समन्वयक		डॉ पंकज तिवारी – सह समन्वयक
	श्री अनिल दुबे		डॉ विवेक जयसवाल
	श्री राहुल गिरी गोस्वामी		डॉ. अलीम अहमद खान
	श्रीमति ए. लक्ष्मी		डॉ अनुराग श्रीवास्तव
	श्रीमति निधि जैन		श्री माधव चन्द्रा
	श्री सुहैल अहमद कुरैशी		डॉ. के.के. राव
	श्री भगत सिंह		
3	**आमंत्रण–पत्र वितरण समिति**	4	**सम्मान/पुरस्कार/पुस्तक एवं विमोचन समिति**
	प्रो सुबोध जैन – समन्वयक		प्रो ए.डी. शर्मा – समन्वयक
	प्रो बी.के. श्रीवास्तव – सह समन्वयक		प्रो. अर्चना पाण्डे – सह समन्वयक
	प्रो नवीन कांगो		प्रो. चंदा बेन
	श्री सतीश कुमार		प्रो. एम.एल. खान
	डॉ मुकेश साहू		श्री छबिल कुमार मेहर
	श्री राजेश बोहरे		श्री विनोद रजक
	श्री भगत सिंह	6	**कार्यक्रम स्थल, सुरक्षा, शोभा–यात्रा नियंत्रण एवं अनुशासन व्यवस्था समिति**
	श्री अमित जैन		
	श्री मनीष गौतम		प्रो जी. एम. दुबे – समन्वयक
	श्री फितर सिंह		डॉ. हिमांशु कुमार – सह समन्वयक
			प्रो. पी.पी. सिंह
5	**गौर मूर्ति कटरा–मंच संचालन, गौर अध्ययन केन्द्र कार्यक्रम, गौर जन्मस्थली एवं शोभा–यात्रा समन्वय समिति**		प्रो. चंदा बेन
			प्रो. देवाशीष बोस
			डॉ रितु यादव
	प्रो सुरेश आचार्य (से.नि.) – समन्वयक		डॉ. संध्या पटेल
	प्रो. पी.पी. सिंह – सह समन्वयक		डॉ. सी.पी. उपाध्याय
	प्रो. आशीष वर्मा		डॉ. अभिलाषा दुर्गवंशी
	श्री आर.के. पाल		डॉ. अनिल कुमार कश्यप
	डॉ प्रदीप तिवारी		डॉ वीरेन्द्र सिंह मटसेनिया
	श्री अजब सिंह		डॉ. के.एस. माथुर
	श्री बहादुर यादव		डॉ. शालिनी चौधरानी
			डॉ. संदीप जैन
			श्री महेन्द्र बाथम
7	**कोविड–19 महामारी बचाव, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता समिति**	8	**कार्यक्रम स्थल बैठक व्यवस्था समिति**
	प्रो. यू. के. पाटिल – समन्वयक		प्रो. के.के.एन. शर्मा – समन्वयक

	डॉ किरण महेशवरी – सह समन्वयक		डॉ आर.टी. पेंदरे – सह समन्वयक
	डॉ भूपेन्द्र कुमार पटेल		डॉ. पवन शर्मा
	डॉ धर्मेन्द्र जैन		श्री राहुल गिरी गोस्वामी
	डॉ. सुमन पटेल		श्री ब्रजभूषण सिंह
	श्री अरूण सिरोठिया		श्री अनिल दुबे
			श्री दीपक सिपाई
			डॉ. उदय श्रीवास्तव
9	**गौर जयन्ती वित्त समिति**	10	**सांस्कृतिक कार्यक्रम समिति**
	प्रो. जी.एल. पुणताम्बेकर – समन्वयक		प्रो. ए.डी. शर्मा – समन्वयक
	डॉ एस. के. विश्वास – सह समन्वयक		डॉ. राकेश सोनी – सह समन्वयक
	डॉ केशव टेकाम		डॉ. अवधेश प्रताप सिंह तोमर
	श्री दीपक शाक्या		डॉ. राहुल स्वर्णकार
	श्री विवेक विसारिया		श्री अभिषेक सक्सेना
	श्री अशोक सैनी		श्री प्रवीण राठौर
11	**अतिथि सत्कार एवं अतिथि गृह समिति**	12	**मिष्ठान वितरण समिति**
	डॉ पंकज तिवारी – समन्वयक		डॉ. उत्सव आनन्द – समन्वयक
	डॉ. उत्सव आनन्द – सह समन्वयक		डॉ. धर्मेन्द्र सराफ – सह समन्वयक
	डॉ. महेन्द्र कुमार		प्रो. चंदा बेन
	डॉ. पंकज सिंह		डॉ. गौतम प्रसाद
	श्री समर्थ दीक्षित		डॉ. ऊषा राणा
	श्री वीरेन्द्र सिंह ठाकुर		श्री आर.के. पाल
			श्री समर्थ दीक्षित
			श्री जगेन्द्र सिंह ठाकुर
13	**परिवहन समन्वय समिति**	14	**गौर–प्रांगण एवं सभागार–मंच संचालन, समिति**
	प्रो. अशोक अहिरवार– समन्वयक		प्रो. अर्चना पाण्डे – समन्वयक
	प्रो. रत्नेश दास – सह समन्वयक		प्रो. संजय जैन – सह समन्वयक
	डॉ. अनिल कुमार कश्यप		डॉ. ललित मोहन
	श्री सतीश कुमार		श्री संतोष सोहगौरा
	श्री शरद दुबे		श्री अजय सेठले

उपरोक्त उप–समितियाँ गौर जयंती वर्किंग कमेटी/मुख्य समन्वयक, गौर जयंती समारोह–2021 के मार्गदर्शन में अपने दायित्वों का निर्वाहन करेगी। समस्त उप–समितियों के समन्वयकों से आग्रह है कि वे गौर उत्सव सप्ताह–2021 के सफल आयोजन हेतु अपनी समिति की बैठक आयोजित कर सकते हैं। इसके अलावा वे समिति में आवश्यकतानुसार अन्य सदस्य/विद्यार्थी वालेंटियर्स भी शामिल कर सकते हैं।

आदेशानुसार,
(हस्ताक्षर) 11/11/2021
कुलसचिव (प्र.)

प्रतिलिपि :–सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु।

1. प्रो. आर.के. त्रिवेदी, मुख्य समन्वयक, गौर जयंती समारोह–2021
2. सर्व सम्बंधित समन्वयक, सह समन्वयक एवं सदस्यगण।
3. समस्त अधिष्ठाता/निदेशकगण (शैक्षणिक/प्रशासनिक)।
4. अध्यक्ष, डेलीगेसी।
5. समस्त विभागाध्यक्ष/प्रभारी अधिकारी।
6. प्रभारी परीक्षा नियंत्रक, प्रो. इंचार्ज लाइब्रेरी, प्रभारी वित्ताधिकारी।
7. कुलानुशासक एवं मुख्य सुरक्षा अधिकारी।
8. मुख्य प्रतिपालक (बालक/बालिका छात्रावास)।
9. समस्त अधिकारीगण/शाखा प्रभारी।
10. डॉ. धर्मेन्द्र सराफ, ए.एन.ओ. – *26 नवम्बर को गौर मूर्ति पर एन.सी.सी. कैडेट द्वारा सलामी की व्यवस्था हेतु।*
11. समस्त कर्मचारीगण।
12. प्रभारी मीडिया अधिकारी।
13. प्रो. इंचार्ज वेबसाइट सेल।
14. कुलपति जी के निज सचिव – माननीया कुलपति जी को सूचनार्थ।
15. कुलसचिव के निज सहायक।
16. सम्बंधित नस्ति।

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
DR. HARI SINGH GOUR VISHWAVIDYALAYA, SAGAR (M. P.)
(A Central University)

क्र./आर/2021/7/906 — 18 नवम्बर 2021

//अधिसूचना//

महान शिक्षाविद् एवं प्रख्यात विधिवेता, संविधान सभा के सदस्य एवं विश्वविद्यालय के संस्थापक दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में दिनॉक 21–26 नवम्बर 2021 तक ''गौर उत्सव सप्ताह'' विश्वविद्यालय में मनाया जा रहा है। गौर उत्सव के दौरान आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों की रूपरेखा निम्नलिखित है:–

गौर उत्सव सप्ताह
(21–26 नवम्बर 2021)

कार्यक्रम विवरण

विवरण	रिमार्क
21.11.2021	
1 महाविद्यालयीन एवं स्कूली विद्यार्थियों के लिये प्रतियोगिता:– डॉं. गौर की जीवनी पर आधारित महाविद्यालयीन एवं स्कूली विद्यार्थियों के लिये निबंध एवं चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन। **प्रतियोगिता स्थल एवं समय:–** **महाविद्यालयीन छात्रों के लिये**–शासकीय गर्ल्स डिग्री कालेज, सागर। • निबंध प्रतियोगिता: **समय दोपहर 12:00 बजे से 01.00 बजे तक** • चित्रकला प्रतियोगिता: **समय दोपहर 02.00 बजे से सायं 04.00 बजे तक** **स्कूली विद्यार्थियों के लिये**–महारानी लक्ष्मी बाई कन्या विद्यालय, सागर। • निबंध प्रतियोगिता: **समय दोपहर 12:00 बजे से 01.00 बजे तक** • चित्रकला प्रतियोगिता: **समय दोपहर 02.00 बजे से साय 04.00 बजे तक**	**संयोजक** **प्रो. बी.आई. गुरू, अंग्रेजी विभाग** **डॉं. राजेन्द्र यादव, हिन्दी विभाग** **सह–संयोजक** प्रो. ईला तिवारी प्राचार्य, शासकीय गर्ल्स डिग्री कालेज, सागर, डॉं अमर कुमार जैन, आर्ट एण्ड कामर्स कालेज, सागर डॉं. यशवंत राजपूत प्राचार्य, महारानी लक्ष्मी बाई कन्या विद्यालय, सागर, श्री बी.के. पांडे, प्राचार्य, विवि केन्द्रीय विद्यालय क्रं.–4, श्रीमती कल्पना शर्मा एवं श्रीमती रंजना पुन्ताम्बेकर
2 विश्वविद्यालयीन शिक्षकों का काव्य–पाठ:– **कार्यक्रम स्थल:**–स्वर्ण जयन्ती सभागार **समय:** दोपहर 03.00 बजे से सायं 5.00 बजे तक	**संयोजक** **प्रो. नवीन कानगो** **डॉं. राजेन्द्र यादव**
22.11.2021	
खेल–कूद प्रतियोगिता:– 1. विश्वविद्यालय शिक्षक एकादश Vs विश्वविद्यालय अधिकारी एकादश के बीच T-20 **मैत्री क्रिकेट मैच समय–प्रात: 8:30 बजे से 11:00 बजे तक** 2. विश्वविद्यालयीन विधार्थियों के लिये **कब्बड्डी प्रतियोगिता समय – प्रात: 11.00 बजे से** 3. विश्वविद्यालयीन विधार्थियों के लिये **बॉलीबाल प्रतियोगिता समय–प्रात: 11.00 बजे से**	**संयोजक** **डॉं. रत्नेश दास** निदेशक, विश्वविद्यालय शारीरिक शिक्षा विभाग

विवरण	रिमार्क
4. विवि महिला शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी तथा विश्वविद्यालय महिला **क्लब** के बीच **म्यूजिकल चेयर समय – दोपहर 12.00 बजे से** 5. विवि महिला शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी तथा विश्वविद्यालय महिला क्लब के बीच **टग ऑफ वार प्रतियोगिता समय –दोपहर 1:30 बजे से** प्रतियोगिता **स्थल** :–विश्वविद्यालयीन शारीरिक शिक्षा विभाग प्रांगण	**सह–संयोजक** प्रो. अर्चना पांडेय, प्रो. गिरीश मोहन दुबे,डॉ हिमांशु कुमार, डॉ सुमन पटेल, श्री माधव चंद्रा, डॉ मुकेश साहू एवं विश्वविद्यालय महिला क्लब पदाधिकारी–डॉ रत्ना शुक्ला एवं श्रीमती रेणु शुक्ला।
23.11.2021	
1 डॉ. गौर का अवदानः एक विश्लेषण **2 डॉ. हरीसिंह गौर के जीवनवृत्त का प्रदर्शन** **कार्यक्रम स्थलः**–स्वर्ण जयन्ती सभागार **समयः** प्रातः 11.00 बजे से अपरान्ह 1.00 बजे तक	संयोजक **प्रो. बी.के. श्रीवास्तव** **डॉ. पंकज सिंह** इतिहास विभाग
3 लोकार्पण कार्यक्रम एवं व्याख्यानः– विधि विभाग स्थित नवनिर्मित **'विक्रमादित्य भवन'** (MOOT COURT) का लोकार्पण। द्वारा–माननीय न्यायमूर्ति **श्री अमरेश्वर प्रताप साही** (से.नि.) निदेशक, राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी, भोपाल (म.प्र.) एवं पूर्व मुख्य न्यायाधीश, पटना एवं मद्रास उच्च न्यायालय। **कार्यक्रम स्थलः–विधि विभाग परिसर** **समयः** दोपहर 03:00 बजे **व्याख्यान वक्ताः** माननीय न्यायमूर्ति **श्री अमरेश्वर प्रताप साही** (से.नि.) विषयः–**"The Expected Role and Impact of Artificial Intelligence in Judicial Governance"** **कार्यक्रम स्थलः**–जवाहर लाल नेहरू पुस्तकालय सभागार **समयः** दोपहर 03.30 से सायं 05.10 बजे	संयोजक **प्रो. पी.पी. सिंह** विभागाध्यक्ष, विधि विभाग **सह–संयोजक** विश्वविद्यालय यंत्री
24.11.2021	
1. लोकार्पण कार्यक्रमः– • **"आचार्य शंकर भवन"** मानविकी एवं समाज विज्ञान व्याख्यान कक्ष काम्पलेक्स का लोकार्पण द्वाराः मान. श्री मुकुल मुकुंद कानिटकर, राष्ट्रीय संगठन–मंत्री, भारतीय शिक्षण मण्डल, नागपुर **कार्यक्रम स्थलः**–मानविकी एवं समाज विज्ञान व्याख्यान काम्पलेक्स **समयः**दोपहर 01.30 बजे **डॉ. हरीसिंह गौर के जीवनवृत्त का प्रदर्शन** 2. **डॉ हरीसिंह गौर वि.वि., सागर एवं आर.एफ.आर.एफ. (भा.शि.मं.) के साथ शैक्षणिक एम.ओ.यू. हस्ताक्षर कार्यक्रमः–** • **गौर व्याख्यान मालाः 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020: उच्च शिक्षा संस्थानों की नवाचारी भूमिका'** **मुख्य वक्ताः मान. श्री मुकुल मुकुंद कानिटकर** राष्ट्रीय संगठन मंत्री, भा.शि.मं.,नागपुर। **विशिष्ट वक्ता–माननीया सुश्री अरूंधति कावड़कर** अखिल भारतीय महिला प्रकल्प सहप्रमुख एवं पालक अधिकारी, महाकौशल प्रान्त एवं मध्यभारत, भा.शि.मं.। **कार्यक्रम स्थलः–स्वर्ण जयन्ती सभागार।** **समयः** दोपहर 2.00 बजे से सायं 4.30 बजे तक।	संयोजक प्रो. अर्चना पांडेय **सह–संयोजक** विश्वविद्यालय यंत्री

विवरण	रिमार्क
विश्वविद्यालयीन विद्यार्थियों द्वारा फाईन आर्ट, पेंटिंग एवं क्राफ्ट का प्रदर्शनः— **कार्यक्रम स्थलः**—स्वर्ण जयन्ती सभागार **समयः** प्रातः 10.00 बजे से अपरान्ह 3.00 बजे तक	संयोजक **डॉ. ललित मोहन** विभागाध्यक्ष फाईन एवं परफारमिंग आर्ट
25.11.2021	
1 डॉ. हरीसिंह गौर के जीवनवृत्त का प्रदर्शन **2 डॉ. गौर परिसंवाद कार्यक्रम** • '**डॉ. गौर के सपनों का सागर और उनका विश्वविद्यालय**' पर आधारित परिसंवाद कार्यक्रम। **सम्मानीय विशेषज्ञ :—** ➤ प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलपति, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि., सागर (म.प्र.) ➤ श्री रघु ठाकुर, वरिष्ठ समाजवादी चिंतक, सागर (म.प्र.) ➤ डॉ जी.एस. चौबे, वरिष्ठ चिकित्सक सागर (म.प्र.) ➤ प्रो. एस.पी. व्यास, शिक्षाशास्त्री एवं पूर्व कुलपति, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि.,सागर (म.प्र.) ➤ प्रो. सुरेश आचार्य, वरिष्ठ साहित्यकार, सागर (म.प्र.) **कार्यक्रम स्थलः**—स्वर्ण जयन्ती सभागार **समयः** प्रातः 11.00 बजे से दोपहर 01.00 बजे तक।	संयोजक **प्रो. सुरेश आचार्य (से.नि.)** **सह—संयोजक** डॉ. संजय शर्मा
3 अखिल भारतीय कवि सम्मेलन :— **आमंत्रित कवि—** • सरस्वती वंदना—कुमारी सोनाली सेन, सागर। ➤ शायर अशोक मिजाज 'बद्र', सागर ➤ श्री अशोक सुंदरानी, सतना ➤ सुश्री विभा सिंह, बनारस ➤ श्री संतोष शर्मा 'सागर', विदिशा ➤ श्री राम भदावर, इटावा **कार्यक्रम स्थल** :—स्वर्ण जयन्ती सभागार **समयः** सायं 7.00 बजे से रात 9.30 बजे तक।	संयोजक **श्री संतोष सोहगौरा** **सह—संयोजक** डॉ. अवधेश सिंह तोमर डॉ. विवेक जायसवाल
26.11.2021	
1. गौर जयंती—गौर मूर्ति, तीन बत्ती, सागर स्थित कार्यक्रम एवं शोभा यात्रा :— • **गौर प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं उद्बोधन :** माननीया **प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलपति, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)** कार्यक्रम **स्थल** :—गौर मूर्ति, तीन बत्ती, सागर **समय :** प्रातः 8.00 बजे • **शोभा यात्रा—गौर मूर्ति, कटरा बाजार से विश्वविद्यालय परिसर** **समयः** प्रातः 8.30 बजे	संयोजक **प्रो. सुरेश आचार्य (से.नि.)** **सह—संयोजक** प्रो. पी.पी. सिंह डॉ. प्रदीप तिवारी
2. गौर जयंती मुख्य समारोह :— मुख्य अतिथि :— माननीय **श्री भूपेंद्र सिंह** कैबिनेट मंत्री, नगरीय विकास एवं आवास विभाग, म.प्र. शासन	संयोजक **प्रो. आर. के. त्रिवेदी** मुख्य समन्वयक **सह—संयोजक** गठित विभिन्न समितियाँ

विवरण	रिमार्क
अध्यक्षता :– माननीय **प्रो. बलवंत शांतिलाल जानी** कुलाधिपति, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि., सागर (म.प्र.) **समारोह स्थल** :–गौर समाधि प्रांगण **समयः** प्रातः 11.00 बजे	
3 सांस्कृतिक कार्यक्रम **एवं भारतीय** सेना 'विक्टरी फ्लेम' **का** वि.वि **में स्वागतः**– • 1971 के भारत पाक युद्ध में विजय के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भारतीय सेना के 'विक्टरी फ्लेम' का वि.वि. मे स्वागत (सहयोगः महार रेजीमेंट, सागर)। **समयः** सायं 6.00 से 6.30 बजे • **सास्कृतिक संध्या** : विश्वविद्यालयीन विधार्थियों की प्रस्तुति। **कार्यक्रम स्थल** :–गौर समाधि प्रांगण **समयः** सायं 6.30 बजे से रात्रि 8.30 बजे तक	संयोजक विश्वविद्यालयीन सांस्कृतिक समिति / डॉ. राकेश सोनी, सांस्कृतिक समन्वयक **सह–संयोजक** डॉ. अवधेश तोमर डॉ. राहुल स्वर्णकार

आदेशानुसार,

कुलसचिव **(प्र)** 18/11/2021

प्रतिलिपि :–सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु।

1. मुख्य समन्वयक, गौर जयंती 2021।
2. उपरोक्त संयोजक एवं सह–संयोजक, गौर उत्साह सप्ताह–2021
3. समस्त समन्वयक, सह–समन्वयक एवं सदस्यगण, कार्यक्रम उप–समिति, गौर जयंती 2021 ।
4. समस्त शैक्षणिक एवं प्रशासनिक अधिष्ठाता / निदेशकगण ।
5. समस्त विभागाध्यक्ष / प्रभारी अधिकारीगण।
6. प्रभारी परीक्षा नियंत्रक, प्रो. इंचार्ज लाइब्रेरी, प्रभारी वित्ताधिकारी।
7. कुलानुशासक एवं सुरक्षा अधिकारी।
8. प्रतिपालक, बालक / बालिका छात्रावास
9. समस्त अधिकारी / शाखा प्रभारी ।
10. अध्यक्ष, डेलीगेसी, डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर।
11. प्राचार्य, गर्ल्स डिग्री कालेज, सागर (म.प्र.)
12. प्राचार्य, महारानी लक्ष्मी बाई कन्या विद्यालय, सागर।
13. जिला शिक्षा अधिकारी, सागर।
14. अतिरिक्त संचालक, उच्च शिक्षा विभाग, सागर।
15. प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय कं. 04, वि.वि. सागर।
16. अध्यक्षा, विश्वविद्यालय महिला क्लब।
17. समन्वयक, आमंत्रण–पत्र वितरण समिति 2021।
18. प्रो. इचार्ज आइ.टी सेल – कृपया वेबसाईट पर अपलोड करने की कष्ट करें।
19. मीडिया अधिकारी : उक्ताशय के प्रचार–प्रसार हेतु ।
20. कुलपति जी के निज सचिव – माननीया कुलपति जी को सूचनार्थ।
21. कुलसचिव के निज सहायक।
22. सम्बंधित नस्ति ।

गौर उत्सव के संबंध में हुआ पत्रकारवार्ता का आयोजन

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के संस्थापक महान शिक्षाविद् एवं प्रख्यात विधिवेत्ता, संविधान सभा के सदस्य एवं दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 21 नवंबर से 26 नवंबर तक 'गौर उत्सव' का आयोजन किया गया. इस संबंध में आयोजित पत्रकार-वार्ता कार्यक्रम में पत्रकारों को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि डॉ. गौर का व्यक्तित्व बहुआयामी है. समाज और राष्ट्र के निर्माण में उनकी भूमिका और उनके अवदान को किसी एक कार्य से नहीं जाना जा सकता. उनके समग्र अवदान को स्मरण करने और उनके द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलने का संकल्प लेने के लिए यह आवश्यक है कि उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को हमारी युवा पीढ़ी न केवल समझे बल्कि उसे आत्मसात भी करें. विश्वविद्यालय डॉ. गौर के अवदान को विद्यार्थियों, समुदाय और जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से गौर उत्सव को छह दिनों तक विभिन्न कार्यक्रम का आयोजन कर रहा है. सागर शहर निवासी और विश्वविद्यालय परिवार अपने पितृ पुरुष की जन्म जयन्ती को मिलजुलकर उत्साहपूर्वक मनायेगा. कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि डॉ. गौर के संकल्प और सपनों को साकार करना हमारा दायित्व है. हमें इसके लिए भरपूर ऊर्जा और उत्साह से काम करना है. गौर उत्सव को यादगार बनाने के उद्देश्य से पूरे सप्ताह कई अकादमिक-सांस्कृतिक गतिविधियाँ आयोजित की जाएगी. गौर उत्सव के दौरान ही विधि विभाग के मूट कोर्ट एवं समाज विज्ञान एवं मानविकी व्याख्यान भवन का लोकार्पण किया जायेगा. इस अवसर पर गौर व्याख्यानमाला के अंतर्गत आमंत्रित अतिथियों के विशेष व्याख्यान भी आयोजित किये गये हैं. उन्होंने कहा कि यह केवल विश्वविद्यालय का आयोजन नहीं बल्कि पूरे सागर शहर का आयोजन है. गौर उत्सव के विविध आयोजनों में शहर और विश्वविद्यालय से जुड़े प्रत्येक नागरिक का स्वागत और अभिनन्दन है. गौर उत्सव आयोजन के मुख्य समन्वयक प्रो. आर. के. त्रिवेदी ने छह दिवसीय आयोजन की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की. कार्यक्रम का संचालन मीडिया अधिकारी डॉ. विवेक जायसवाल ने किया तथा आभार कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने ज्ञापित किया. इस अवसर पर सागर के सम्मानीय पत्रकार गण सहित उपकुलसचिव सतीश कुमार, डॉ. पंकज तिवारी, डॉ. संजय शर्मा, डॉ. राकेश सोनी, डॉ. हिमांशु कुमार, माधव चंद्र आदि उपस्थित थे

गौर जयंती पर रेडियो पर विशेष प्रसारण

- आकाशवाणी सागर से 20 से 26 नवम्बर तक प्रतिदिन गौर जयंती का प्रचार प्रसार किया-गया.
- 25 नवंबर की रात्रि 8.30 बजे कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता .जी की वार्ता के साथ गौर गीत का प्रस्तुति दी गयी.
- 26 नवम्बर को सुबह 9.30 बजे विशेष रूपक, ज्ञानदानी सागर रत्न डॉ गौर का प्रसारणकिया गया.
- स्वराज भवन भोपाल द्वारा निर्मित डॉ ' गौर के व्यक्तित्व पर आधारित.वतन का राग ' कार्यक्रम का प्रसारण रविवार सुबह 9.30 बजे एफ एम गोल्ड दिल्ली, मुंबई के साथ विविध भारती, एफ एम लखनऊ, इंदौर, भोपाल, जबलपुर से एवं गुरुवार को सुबह 9.30 बजे मध्यप्रदेश के सभी आकाशवाणी केंद्रों से प्रसारित किया गया.
- स्वराज भवन भोपाल द्वारा वतन का राग कार्यक्रम के अंतर्गत देश के सौ से अधिक कम्युनिटी रेडियो को भी डॉ . गौर पर आधारित कार्यक्रम ऑन लाईन संप्रेषित किया गया.

गौर उत्सव – पहला दिन

शब्द, चित्र और रंगों से विद्यार्थियों ने उकेरे अपने मन के डॉ. गौर

गौर उत्सव के पहले दिन विद्यार्थियों ने शब्द, चित्र और रंगों से अपने मन के डॉ. हरीसिंह गौर को दर्शाया. गौरतलब है कि डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के संस्थापक महान शिक्षाविद् एवं प्रख्यात विधिवेत्ता, संविधान सभा के सदस्य एवं दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 21 नवंबर से 26 नवंबर तक 'गौर उत्सव' का आयोजन किया गया. पहले दिन महाविद्यालयीन और स्कूल के विद्यार्थियों ने डॉ. गौर की जीवनी और उनके पर केंद्रित निबंध और चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लिया. यह दोनों प्रतियोगिताएं गर्ल्स डिग्री कॉलेज और एमएलबी स्कूल, सागर में आयोजित की गई थीं. आयोजन के सह-संयोजक डॉ. राजेन्द्र यादव ने बताया कि दोनों प्रतियोगिताओं में सौ से अधिक विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की. विश्वविद्यालय के शिक्षकों डॉ. अरविन्द कुमार और अरविन्द गौतम के निर्देशन में ये अयोजन संपन्न हुआ.

प्रतियोगिता स्थलों पर पहुँचकर कुलपति ने किया विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन

विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने प्रतियोगिता स्थलों पर पहुँचकर प्रतिभागी विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया. इस दौरान विश्वविद्यालय के कुलसचिव संतोष सोहगौरा और उपकुलसचिव सतीश कुमार मौजूद रहे

गौर उत्सव के पहले दिन बही काव्य-गंगा 'कुछ मन की, कुछ माटी की' आयोजन में शिक्षकों ने सुनाईं कवितायें

विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयन्ती सभागार में 'कुछ मन की, कुछ माटी की' शीर्षक से शिक्षकों के काव्य पाठ का आयोजन संपन्न हुआ. इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि विश्वविद्यालय के शिक्षकों में अपार प्रतिभाएं हैं, उनकी प्रतिभा के हर क्षेत्र का लाभ विश्वविद्यालय को मिलना चाहिए. साथ ही शिक्षकों को भी अपनी प्रतिभाओं को निखारने का अवसर मिलना चाहिए. विश्वविद्यालय इसके लिए सबसे सुयोग्य स्थल है. यह शिक्षकों का, शिक्षकों द्वारा और शिक्षकों के लिए किया गया आयोजन है. उन्होंने सभी शिक्षक- कवियों को शुभकामनाएं दीं. कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. गौर और मां सरस्वती की प्रतिमा पार माल्यार्पण से हुई और डॉ. अवधेश तोमर ने वंदना प्रस्तुत की. कार्यक्रम के संयोजक प्रो. नवीन कांगों ने स्वागत वक्तव्य दिया. इस अवसर पर गौर उत्सव के मुख्य समन्वयक प्रो. आर. के. त्रिवेदी भी उपस्थित थे.

कहकशां हूँ मैं, सारे सितारे मुझमें.......बहता दरिया हूँ, सारे किनारे मुझमें........

प्रो. नवीन कांगो ने बेहतरीन गजल की प्रस्तुति दी और डॉ. गौर के जीवन-चरित्र पर कविता भी सुनाई. डॉ. राकेश सोनी ने माउथ ऑर्गन बजाते हुए गीतकार संतोष आनंद की रचना 'इक प्यार का नगमा है.....महफ़िल में समां बांधा. सपनों

की इस नगरी में, कुछ सपने लेकर आई हूँ, शीर्षक से डॉ. वन्दना राजौरिया ने अपनी रचना का पाठ किया. डॉ. पंकज तिवारी ने डॉ. गौर

के अवदान पर केंद्रित कविता पाठ किया. कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने महादानी डॉ. गौर पर स्वरचित कविता सुनाई. विश्वविद्यालय के शिक्षक-कवियों डॉ. पंकज तिवारी, डॉ. जी एल पुणताम्बेकर, डॉ. अफरोज, डॉ. अफरीन खान, डॉ. हिमांशु, डॉ. संजय कुमार, प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत, डॉ. कालीनाथ झा, प्रो. बी.के. श्रीवास्तव, डॉ. ललित मोहन, डॉ. किरण आर्या, डॉ. शशि कुमार सिंह, डॉ. रामहेत गौतम, डॉ. नीरज उपाध्याय, डॉ. त्रिलोकी नाथ ने अपनी काव्य रचनाओं का पाठ किया. कार्यक्रम के अंत में वरिष्ठ प्रो. पीपी सिंह, प्रो. पी के कठल, कुलसचिव संतोष सोहगौरा और संयोजक प्रो. नवीन कांगो ने सभी शिक्षक-कवियों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया. इस अवसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी, विद्यार्थी और सागर शहर के अनेक गणमान्य नागरिक और पत्रकार बंधु उपस्थित थे. संचालन सह-संयोजक डॉ. राजेन्द्र यादव ने किया और डॉ. आशुतोष ने आभार ज्ञापन किया.

गौर उत्सव दूसरा दिन

गौर उत्सव का दूसरा दिन रहा खेल प्रतियोगिताओं के नाम

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के संस्थापक महान शिक्षाविद् एवं प्रख्यात विधिवेत्ता, संविधान सभा के सदस्य एवं दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152 वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 21 नवंबर से 26 नवंबर तक आयोजित 'गौर उत्सव' का दूसरा दिन खेल प्रतियोगिताओं के नाम रहा. विश्वविद्यालय के शिक्षक और अधिकारियों के बीच टी-20 क्रिकेट मैच खेला गया. क्रिकेट मैच के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि खेल में कोई भी जीते या हारे लेकिन मैत्री भावना बनी रहनी चाहिए. खेल से आत्मीय संबंध बढ़ते हैं. इस मैत्री मैच के माध्यम से आत्मीयता, सामंजस्य, बंधुत्व और प्रेम का संदेश चारों ओर जाए, ऐसी मेरी कामना है. खेल के माध्यम से विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी और विद्यार्थी काम

और पढ़ाई के दबाव को कम कर सकेंगे और उनका शरीर भी स्वस्थ रहेगा. हम सभी जानते हैं कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क होता है. उनकी ऊर्जा और स्वस्थ मस्तिष्क विश्वविद्यालय के विकास को एक नया आयाम देगा, ऐसा मेरा विश्वास है. अधिकारी टीम के कप्तान संतोष सोहगौरा और शिक्षक टीम के कप्तान प्रो. जी एम दुबे ने कुलपति से टीम के खिलाड़ियों का परिचय करवाया. कुलपति ने उन्होंने टॉस उछालकर और बल्लेबाजी करके मैच की शुरुआत की. इस अवसर पर गौर उत्सव के मुख्य समन्वयक प्रो. आर. के त्रिवेदी, प्रो. निवेदिता मैत्रा, प्रो. वंदना सोनी और कई शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी उपस्थित थे.

शारीरिक शिक्षा विभाग के संचालक प्रो. रत्नेश दास ने जानकारी दी कि शिक्षक बनाम अधिकारी क्रिकेट मैच में टॉस जीतकर

अधिकारी-कर्मचारी ने गेंदबाजी करने का फैसला लिया। शिक्षकों की टीम ने बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवर में 9 विकेट खोकर 121 रन बनाए जिसमे सर्वाधिक डॉ आर पी सिंह ने शानदार 38 रनों की पारी खेली , हिमांशु कुमार ने 18 एवं बुद्ध सिंह 13 रन एवं प्रो रत्नेश दास ने 8 रनों की पारी खेली ।अधिकारी कर्मचारी की ओर से गेंदबाजी करते हुए महेंद्र कुमार बाथम एवं भूपेंद्र पटेल 3-3 विकेट चटकाए. जबाब में अधिकारी कर्मचारी की टीम ने 14 ओवर में मैच समेट दिया और 2 विकेट खोकर 8 विकेट जीत हासिल की. समर्थ

दीक्षित ने सर्वाधिक 33 रन, विनय शुक्ला जी ने 28 एवं निखलेश ने 25 एवं श्री संतोष सहगौरा जी ने 16 रनों की नाबाद पारी खेली। मैच के निर्णायक अनवर खान, एवं आकाश लिटोरिया, डॉ सुमन पटेल एवं ऋषिकेश बर्दिया रहे।

कबड्डी बालक, बालिका वर्ग

इंटर स्कूल कबड्डी बालक वर्ग में फाइनल मैच स्कूल ऑफ एजूकेशन बनाम स्कूल ऑफ सोशल साइंस के मध्य खेला गया जिसमें निर्धारित समय मे दोनों टीमों का स्कोर बराबर रहा . अतिरिक्त समय मे स्कूल ऑफ सोशल साइंस 5 अंक से विजयी रही। बालिका वर्ग में फाइनल मुकाबला स्कूल ऑफ एजूकेशन एवं स्कूल ऑफ बॉयोलोजिकल साइंस के बीच रहा जिसमें 14-03 से स्कूल ऑफ एजूकेशन विजयी रही। मैच के निर्णायक इंद्रपाल सिंह, शैलेन्द्र सिंह, जितेंद्र यादव थे।

टग ऑफ वॉर प्रतियोगिता

विश्व विद्यालय महिला शिक्षक , कर्मचारी बनाम विश्व विद्यालय महिला क्लब के बीच टग ऑफ वार प्रतियोगिता में महिला शिक्षक एवं कर्मचारी ने जीत अर्जित की। निर्णायक अनवर खान, विनय शुक्ला एवं महेंद्र कुमार रहे।

म्यूजिकल चेयर प्रतियोगिता

डॉ हरीसिंह गौर विश्व विद्यालय की महिला शिक्षक, कर्मचारी एवं महिला क्लब के बीच म्यूजिकल चैयर प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें अफ़रोज़ बेगम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। दूसरा स्थान श्रीमती अनीत सोनी एवं तीसरा स्थान डॉ किरण महेश्वरी ने प्राप्त किया ।निर्णायक प्रो,चंदा बेन . विनय शुक्ला एवं महेंद्र कुमार रहे|

वॉलीबॉल बालक/ बालिका वर्ग प्रतोयोगिता

वॉलीबाल बालक वर्ग में फायनल मैच स्कूल ऑफ एजूकेशन बनाम स्कूल ऑफ सोशल साइंस के मध्य खेला गया जिसमें स्कूल ऑफ एजूकेशन की टीम 2-1 सेट से विजयी रही। मैच के निर्णायक गीतेश रैकवार , दानिश खान , योगेश कोरी रहे। इस अवसर पर प्रो निवेदिता मैत्रा ., श्री सतीश कुमार , श्री सुरेंद्र पी गादेवार, आर के पाल , डॉ सुमन पटेल , अनवर खान , डी के तिवारी, हिम्मत सिंह , अनिल ब्रह्मकर , प्रकाश पटेल , जगदीश उपस्थित रहे। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने सभी छात्रों को बधाई दी.

गौर उत्सव तीसरा-दिन

तीसरे दिन डॉ गौर के अवदान पर हुए व्याख्यान

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के संस्थापक महान शिक्षाविद् एवं प्रख्यात विधिवेत्ता, संविधान सभा के सदस्य एवं दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 21 नवंबर से 26 नवंबर तक आयोजित 'गौर उत्सव' के तीसरे दिन 'डॉ. गौर का अवदान- एक विश्लेषण' कार्यक्रम का आयोजन किया गया. डॉ. गौर पर माल्यार्पण के दौरान डॉ.अवधेश तोमर ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की.

डॉ. गौर के महान संकल्प की देन है डॉ हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय : कुलपति

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि डॉ. गौर का समग्र जीवन-दर्शन समझने के लिए उनके विराट व्यक्तित्व के हर पहलू को समझना होगा. हम सब सौभाग्यशाली हैं कि हम उनके परिवार के अंग हैं. यह विश्वविद्यालय उनके ही महान संकल्प की देन है. इस विश्वविद्यालय को गढ़ने-रचने की जिम्मेदारी हम सबके कन्धों पर है. डॉ. गौर के जीवन के विविध आयामों पर केंद्रित कार्यक्रमों की लंबी श्रृंखला के माध्यम से हम उनके सपनों को साकार करने के लिए कार्यरत हैं. डॉक्टर गौर हम सभी के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। डॉ गौर का योगदान न केवल विश्वविद्यालय की स्थापना तक सीमित है बल्कि उनका योगदान एक विधिवेत्ता के रूप में , एक राजनीतिज्ञ, एक समाज सुधारक तथा महिला सशक्तिकरण के सशक्त प्रणेता के रूप में है। उन्होंने सभी वक्ताओं को शुभकामनाएं दीं.

विशिष्ट अतिथि प्रो. बीके श्रीवास्तव ने डॉ. गौर के महत्वपूर्ण योगदानों पर चर्चा करते हुए उनके जीवन से जुड़ी कई घटनाओं की चर्चा की. प्रोफेसर श्रीवास्तव ने बताया कि जहां सागर में कभी स्याही तक नहीं मिलती थी , उस सागर शहर में उन्होंने कैंब्रिज और ऑक्सफोर्ड जैसे विश्वविद्यालय की स्थापना करने की सोची। यह उनकी मातृभूमि एवं शिक्षा के प्रति उनका समर्पण बताता है। कार्यक्रम के सह-संयोजक डॉ. पंकज सिंह ने महिला सशक्तीकरण में डॉ. गौर की महती भूमिका पर प्रकाश डाला. उन्होंने कहा कि स्त्री शिक्षा और उनके अधिकारों को लेकर डॉ. गौर ने लंबी लड़ाई लड़ी. आज हर क्षेत्र में स्त्रियों का आगे होना डॉ. गौर के अवदानों की फलश्रुति है. 1921 से लेकर 1935 तक सेंट्रल लेजिस्लेटिव एसेंबली के मेंबर रहने के दौरान उन्होंने महिला सशक्तिकरण के लिए अभूतपूर्व प्रयास किए। डॉ मनोज श्रीवास्तव ने डॉक्टर गौर के विधि वक्ता के रूप में उनके योगदान पर बोलते हुए कहा कि ट्रांसफर ऑफ प्रॉपर्टी एक्ट तथा हिंदू कोड नाम की दो किताबें विधि के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कार्य है।

डॉ. वंदना राजौरिया ने डॉ. गौर के साहित्यिक अभिरुचि और उनकी कृतियों पर प्रकाश डाला और कहा कि डॉक्टर गौर की कविताओं में हमें एक जीवन के प्रति सकारात्मकता दिखाई पड़ती है। उन्होंने शंकराचार्य के अद्वैत के साथ भी डॉक्टर गौर की विचारों को साम्यता को बताया। प्रसिद्ध रंगकर्मी नाटककार शुभम उपाध्याय ने डॉक्टर गौर के धार्मिक चिंतन पर अपने विचार प्रस्तुत किए और कहा कि डॉ गौर का धर्म मानवतावादी धर्म था।

प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने कहा कि डॉ. गौर की जीवन से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए तथा उनके पद चिन्हों पर चलते हुए उनके सपनों को साकार करना चाहिए। इस प्रकार के व्याख्यानमाला आयोजित किए जाने से न केवल छात्रों को लाभ होगा बल्कि वह डॉक्टर गौर के विचार तथा चिंतन से अवगत हो पाएंगे . कार्यक्रम का संचालन डॉ. वंदना राजौरिया ने किया और आभार डॉ. संजय बरौलिया ने

आभार ज्ञापित किया. कार्यक्रम में प्रो.अशोक अहिरवार, प्रो. जी. एल पुणतांबेकर, प्रो.नवीन कांगो प्रो. वंदना सोनी प्रो. जेके जैन प्रो. ममता पटेल प्रो. आर टी बेदरे , डॉ शशि कुमार सिंह डॉ . आरपी सिंह डॉ किरण आर्य , डॉ.अरुण साव, डॉ. अरविंद गौतम , डॉ रेखा सोलंकी, डॉ. नीलम थापा, डॉ हिमांशु, डॉ प्रीति, डॉ. सुमन पटेल, केंद्रीय विद्यालय के डॉ. बृजेश कुमार पांडे उपस्थित थे।

ईएमआरसी द्वारा बनाई डोक्युमेंट्री का प्रदर्शन

कार्यक्रम में ईएमआरसी के निदेशक डॉ. पंकज तिवारी द्वारा निर्देशित डॉ. गौर के जीवन, विचार और दर्शन को समग्रता में प्रस्तुत करती हुई डोक्युमेंट्री ' सूर्य से प्रचंड गौर' का प्रदर्शन किया गया जिसे 2015 में निर्मित किया गया था.

कुलपति ने किया पेंटिंग का अनावरण

प्रो. पुणताम्बेकर ने कोरोना महामारी के दौरान समय का सदुपयोग करते हुए 'लॉकडाउन' में बनाई गई 21 पेंटिंग विश्वविद्यालय को भेंट की जिसका अनावरण कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने किया. कुलपति ने प्रो. पुणताम्बेकर को बधाई देते हुए कहा कि मुझे प्रसन्नता है कि मैं क्रियाशील और रचनात्मक शिक्षकों के बीच हूँ और ऐसे सृजनशील विश्वविद्यालय में मुझे कार्य करने का अवसर मिला है. इस अवसर पर सागर शहर निवासी सत्यम कला संस्कृति संग्रहालय के संचालक दामोदर अग्निहोत्री ने डॉ. गौर की लेखनी की कुछ प्रकाशित प्रतियां कुलपति को भेंट की.

आज के समय में निर्णय नहीं विवेकपूर्ण न्याय की जरूरत है – न्यायमूर्ति ए. पी.साही

गौर व्याख्यानमाला के अंतर्गत मुख्य अतिथि के रूप में पधारे राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी, भोपाल के निदेशक न्यायमूर्ति ए. पी. साही ने न्यायिक प्रशासन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की प्रत्याशित भूमिका एवं प्रयोग विषय पर बोलते हुए कहा कि आज के समय में सबसे बड़ी

जरूरत विवेकपूर्ण न्याय की है. बुद्धि और विवेक, निर्णय और न्याय में फर्क करना होगा. आर्टिफिसियल इंटेलीजेंस कोई नया आविष्कार नहीं है लेकिन न्यायिक प्रक्रिया में इसका उपयोग बहुत ही संवेदना और विवेक के साथ करना होगा. आज मोबाइल युग में डेटा का इधर से उधर होना आम बात हो गई है. इसकी गति बहुत ही तीव्र है. उन्होंने कहा कि मनुष्य आज प्रकृति को नियंत्रित करने की कोशिश करने लगा है जबकि पहले प्रकृति के अनुसार मनुष्य स्वयं को ढालता था. हम अप्राकृतिक चीजों से प्रकृति को निर्णीत कर रहे हैं. उन्होंने कहा कि साहित्य और क़ानून का बहुत प्रगाढ़ संबंध है. बिना साहित्य अध्ययन के कोई भी कानूनवेत्ता नहीं बन सकता. मनुष्य की क्षमता असीमित है. आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस एक क्रियेटेड इन्वेंशन है. मनुष्य ही इसका सर्जक है. इसके इस्तेमाल के लिए कानून बनाते समय इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि किसी भी व्यक्ति की सामान्य दिनचर्या पर इसकी तीव्रता और गतिशीलता का प्रभाव न पड़े. डाटा एल्गोरिदम और पैटर्न रीडिंग के माध्यम से कुछ कामों के लिए न्यायिक व्यवस्था में इसका इस्तेमाल होना चाहिए जो सुविधा प्रदान करे. आज के समय में अलग से इस विषय की पढ़ाई भी होनी जरूरी है.

डॉ. गौर की धरती पर निर्मित 'मूट कोर्ट' न्यायपूर्ण समाज की आधारशिला साबित होगी- कुलपति

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि 'मूट कोर्ट' की आवश्यकता लम्बे समय से महसूस की जा रही थी. आज उद्घाटित यह स्थल न्यायपूर्ण समाज की स्थापना की आधारशिला साबित होगी. विद्यार्थी और शिक्षक अब इसका उपयोग कर पायेंगे और एक समतामूलक समाज की निर्मिति में सहयोग कर पायेंगे, जो गौर साहब की संकल्पना थी. उन्होंने न्यायमूर्ति साही के विश्वविद्यालय आगमन की सहमति के लिए उन्हें धन्यवाद दिया. विषय प्रवर्तन करते हुए उन्होंने कहा कि आज रोबोट का युग आ गया है. हमें यह देखना होगा कि क्या सचमुच मनुष्य की संवेदनशीलता भी रोबोट जैसी अप्राकृतिक चीजें सृजित करने में सक्षम हो सकेगी. उन्होंने कहा कि न्यायालयों में लंबित प्रकरणों को हल करने में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के उपयोग की संभावनाओं को तलाशा जा सकता है. इस दिशा में अभी बहुत से प्रयोग किये जाने की आवश्यकता है ताकि मनुष्य की संवेदना बने रहने के साथ ही तकनीक आधारित न्याय व्यवस्था मददगार साबित हो

मनुष्य की संवेदना की समझ न्याय प्रक्रिया का अहम हिस्सा- कुलाधिपति

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी ने कहा कि मनुष्य की संवेदना को समझना बहुत ही आवश्यक है. इसको समझे बगैर न्याय प्रक्रिया पूर्ण नहीं हो सकती. इस मशीनी युग में भी हमें देशज ज्ञान परम्परा की अवहेलना नहीं करनी चाहिए. इसकी अपनी विशिष्ट महत्ता है. संवेदनापूर्ण न्याय मनुष्य के विकास को नया मुकाम देगा. हमें कोगनिटिव साइंस जैसे पाठ्यक्रम को शुरू किये जाने की भी बात कही. कार्यक्रम में स्वागत वक्तव्य विधि अध्ययनशाला के अधिष्ठाता प्रो. पीपी सिंह ने दिया. मुख्य अतिथि का परिचय डॉ. अनुपमा सक्सेना ने और संचालन डॉ. विकास अग्रवाल ने किया. आभार कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने माना. कार्यक्रम में सागर शहर के अनेक अधिवक्तागण, जिला अधिवक्ता संघ के पधाधिकारी गण, नागरिक गण, विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी और विद्यार्थी उपस्थित थे.

'मूट कोर्ट' का हुआ लोकार्पण

मुख्य अतिथि के रूप में पधारे राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी के निदेशक न्यायमूर्ति ए. पी. साही और कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की गरिमामयी उपस्थिति में विधि विभाग परिसर में निर्मित 'मूट कोर्ट'- विक्रमादित्य भवन का लोकार्पण हुआ. इस अवसर पर अधिष्ठाता प्रो. पीपी सिंह, प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा, कुलसचिव संतोष सोहगौरा, प्रो. आशीष वर्मा, प्रो. पुणताम्बेकर, प्रो. गिरीश मोहन दुबे सहित विधि विभाग के समस्त शिक्षक, विद्यार्थी और कर्मचारी उपस्थित थे.

गौर उत्सव-चौथा दिन

आचार्य शंकर भवन का लोकार्पण और राष्ट्रीय शिक्षा नीति:2020 पर हुआ व्याख्यान

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के संस्थापक महान शिक्षाविद् एवं प्रख्यात विधिवेत्ता, संविधान सभा के सदस्य एवं दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 21 नवंबर से 26 नवंबर तक आयोजित 'गौर उत्सव' के चौथे दिन 'आचार्य शंकर भवन' (मानविकी एवं समाज विज्ञान व्याख्यान कक्ष कॉम्प्लेक्स) का लोकार्पण माननीय श्री मुकुल मुकुंद कानिटकर , राष्ट्रीय संगठन मंत्री, भारतीय शिक्षण मंडल, नागपुर, कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतीलाल जानी एवं कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की गरिमामयी उपस्थिति में संपन्न हुआ. बुन्देली परम्परा से अतिथियों का स्वागत हुआ. लोकार्पण के अवसर पर मान. कानिटकर जी ने बोलते हुए कहा कि यह भवन आचार्य शंकर के नाम पर रखा गया है. सभी को बराबर भाव से देखना ही अद्वैत है. उनकी अद्वैत परम्परा को पुनर्जीवित करने का काम यहाँ के विद्यार्थी और शिक्षक करेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है. आचार्य शंकर मत वैभिन्नता का सम्मान करते थे. यह भवन उनके इस सिद्धांत का केंद्र बनेगा. स्वागत वक्तव्य अधिष्ठाता प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने दिया और संचालन कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने किया. इस अवसर पर संयोजक डॉ. ललित मोहन, विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष, शिक्षक, कर्मचारी और विद्यार्थी उपस्थित थे.

अनुभवजनित शिक्षा से बनेगा आत्मनिर्भर भारत- कुलपति

विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयन्ती सभागार में आयोजित गौर व्याख्यानमाला श्रृंखला के अंतर्गत राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: उच्च शिक्षा की नवाचारी भूमिका विषय पर आयोजित कार्यक्रम में स्वागत उद्बोधन में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि आज के समय में विद्यार्थियों को केवल कक्षाओं तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए बल्कि उन्हें अनुभव आधारित शिक्षा की तरफ प्रेरित करना चाहिए ताकि वे स्वयं के अनुभवों से बहुत कुछ सीख सकें. राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में हमें नवाचारी तरीके से बहुआयामी कार्य करने होंगे. इस शिक्षा नीति के माध्यम से देश को बदलने का संकल्प लिया गया है. देश तभी बदलेगा जब शिक्षा बदलेगी. हम भाग्यशाली हैं कि डॉ. गौर के जन्मोत्सव पर हम उनके ही शिक्षा के केंद्र में शिक्षा में नवाचार पर चर्चा कर रहे हैं. इंडस्ट्री कोलैबोरेशन, एमओयू के माध्यम से शिक्षा एवं शोध को नई दिशा मिलेगी. भारत एक कृषि प्रधान देश है, इसलिए हम रूरल डेवलपमेंट के लिए नए प्रोग्राम बना रहे हैं. इससे गाँवों की आर्थिकी के साथ-साथ देश की अर्थव्यवस्था में भी सुधार होगा.

विश्वविद्यालय बनें ज्ञान-गुरुत्व के केंद्र- अरुंधति कावड़कर

विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए सुश्री अरुंधती कावड़कर, अखिल भारतीय महिला प्रकल्प सहप्रमुख एवं पालक अधिकारी , महाकौशल प्रान्त एवं मध्यभारत , भारतीय शिक्षण मंडल ने कहा कि विश्वविद्यालय ज्ञान और गुरुत्व के केंद्र के रूप में होने चाहिए. विद्यार्थी गुरुत्व के स्पर्श से ही आगे बढ़ता है. उसके जीवन में गुरु का बहुत महत्त्व होता है. गुरु को भी अपने विद्यार्थियों को समझने की योग्यता होनी चाहिए. शिक्षक अपने विद्यार्थियों के कारण ही शिक्षक कहलाता है. बिना विद्यार्थी के शिक्षक अस्तित्वहीन है. राष्ट्रीय शिक्षा नीति मातृभाव से प्रेरित है. एर्ली

चाइल्डहुड एजुकेशन की संकल्पना राष्ट्रीय शिक्षा नीति का अहम हिस्सा है. यहीं से एक विद्यार्थी की नींव पड़ती है. उन्होंने कहा कि नए भारत को गढ़ने के लिए भारतमाता को जानना बहुत ही आवश्यक है. नदियों, पर्वतों और प्रकृति के सभी घटकों को जानना-पहचानना एक विद्यार्थी के लिए बहुत ही जरूरी है.

गुरु ही बनाएंगे भारत को विश्वगुरु: मुकुल कानिटकर

मुख्य अतिथि मान. मुकुल कानिटकर ने कहा कि गुरु के बिना भारत का विश्वगुरु बनाना असंभव है. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में ऐसे कई बिंदु हैं जो शिक्षक को नवाचार की पूरी स्वायत्तता देते हैं. एक शिक्षक को नवाचार करने के लिए संस्था और सरकारों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए. शासन केंद्रित व्यवस्था से समाज के अंतिम व्यक्ति का हित नहीं संभव है. समाज केंद्रित व्यवस्था से ही अंतिम व्यक्ति का कल्याण संभव है. राष्ट्रीय शिक्षा नीति पढ़ते समय उसमें हमें स्व मन का भाव मिलता है. उसमें बहुत सी जीवनोपयोगी और तार्किक बातें हैं जिनके माध्यम से भारतीयता का बोध पैदा होता है. शिक्षक और संस्था दोनों का कार्य नवोन्मेष करना है. आज के शिक्षक और विद्यार्थी को लीक से हटकर सोचना चाहिए. यही समय की मांग है. पहले हम आयातित ज्ञान पर निर्भर थे लेकिन आज इस शिक्षा नीति के माध्यम से हम भारतीय शिक्षा पद्धति की बात कर पा रहे हैं. यही इसका सुफल है. मातृभाषा में पठन-पाठन के लिए हमें अनुवाद पर निर्भरता ख़त्म करते हुए मातृभाषा में पाठ्य सामग्री तैयार करना चाहिए. यह काम शिक्षकों का है. यह चुनौती भी है. हमें इसी को अवसर में बदलना है और यही नवाचार है. यह सृजनशीलता का अवसर भी है

गौर उत्सव चरित्र निर्माण का उत्सव है -कुलाधिपति

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. बलवंत राय शांतिलाल जानी ने कहा कि डॉ. हरीसिंह गौर की दैवीय विलक्षणता ही है कि हम प्रतिवर्ष उनके जन्मदिन को एक उत्सव के रूप में मनाते हैं. वह एक विश्वविद्यालय स्थापित करने और सब कुछ दान कर देने वाले एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक स्वप्नद्रष्टा थे जो उन्होंने भावी भारतीय युवा पीढ़ी के लिए देखा था. आज बहुत सी विदेश की संस्थायें भारतीय युवा मेधा को अपने यहाँ शिक्षा और रोजगार के लिए आकर्षित कर रही हैं. डॉ गौर ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने कैम्ब्रिज में पढ़ाई तो की लेकिन वे भारतीय युवा पीढी के लिए भारत में कैम्ब्रिज जैसी संस्था शुरू करने का संकल्प लेकर भारत वापस आ गये. यह विश्वविद्यालय उसी सपने की देन है. भारतीय युवाशक्ति प्रचंड मेधा संपन्न है, इसका पलायन नहीं होना चाहिए. राष्ट्रीय शिक्षा नीति इसके लिए संकल्पित है कि भारतीय मेधा का सदुपयोग राष्ट्र निर्माण के लिए हो, ताकि हम परमवैभवशाली राष्ट्र निर्माण में गति ला सकें. राष्ट्रीय शिक्षा नीति के बहुआयामी क्रियान्वयन के माध्यम से डॉ. गौर द्वारा स्थापित यह विश्वविद्यालय केवल सागर और मध्य प्रदेश ही नहीं बल्कि पूरे देश के लिए अनुकरणीय बनेगा. कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. हरीसिंह गौर और देवी सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण से हुई जिसमें संगीत विभाग की छात्राओं ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की. संचालन डॉ. शशि कुमार सिंह ने किया. प्रो. अर्चना पाण्डेय ने अतिथियों का परिचय वाचन किया. कार्यक्रम के मध्य में संगीत विभाग की शिक्षका डॉ. स्मृति त्रिपाठी ने गीत प्रस्तुत किया. कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने आभार ज्ञापन किया. राष्ट्रगीत वन्देमातरम के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ. इस अवसर पर प्रो. अशोक अहिरवार, प्रो. जी. एल पुणतांबेकर, प्रो.नवीन कांगो, प्रो. वंदना सोनी, प्रो. जेके जैन, प्रो. ममता पटेल, प्रो. आर टी बेदरे, डॉ. आरपी सिंह, डॉ किरण आर्य, डॉ.अरुण साव, डॉ. अरविंद गौतम, डॉ रेखा सोलंकी, डॉ. नीलम

थापा, डॉ हिमांशु, डॉ प्रीति सहित कई शिक्षक, विद्यार्थी, कर्मचारी, सागर शहर एवं मध्य प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से पधारे गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

विश्वविद्यालय और रिसर्च फॉर रिसर्जेन्स फाउंडेशन के बीच हुआ अकादमिक अनुबंध

कार्यक्रम के दौरान डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय और रिसर्च फॉर रिसर्जेन्स फाउंडेशन, नागपुर के बीच अकादमिक समझौता पत्रक पर हस्ताक्षर हुए. विश्वविद्यालय की ओर से कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने और फाउंडेशन की ओर से मान. मुकुल कानिटकर ने समझौता-पत्रक पर हस्ताक्षर किये. इस अकादमिक समझौते के तहत सेंटर फॉर रिसर्च एंड रिसर्जेंस स्थापित किया जाएगा. इससे अकादमिक शोध और नवाचारी गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा.

फ़ाईन आर्ट, पेंटिंग क्राफ्ट की प्रदर्शनी आयोजित

विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा बनाई गई फ़ाईन आर्ट, पेंटिंग क्राफ्ट की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया. इसमें प्रो. पुणताम्बेकर द्वारा बनाई गई पेंटिंग भी प्रदर्शनी के लिए रखी गई थी. सभी अतिथियों ने प्रदर्शनी का अवलोकन कर कलाकारों को शुभकामनाएं दीं. यह प्रदर्शनी डॉ. ललित मोहन और डॉ. सुप्रभा दास के संयोजन में आयोजित की गई थी. डॉ सुप्रभा दास ने डॉ. गौर की स्वनिर्मित मूर्ति कुलपति को भेंट की.

'आज़ादी की आग- बुंदेलखंड की वीरांगनाओं की शौर्य गाथा' पुस्तक का विमोचन

कार्यक्रम में अतिथियों द्वारा डॉ सरोज गुप्ता द्वारा लिखित पुस्तक 'आज़ादी की आग- बुंदेलखंड की वीरांगनाओं की शौर्य गाथा ' का विमोचन भी किया गया.

गौर उत्सव-पांचवा दिन

‘डॉ. गौर के सपनों का सागर और उनका विश्वविद्यालय’ पर परिसंवाद आयोजित

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के संस्थापक महान शिक्षाविद् एवं प्रख्यात विधिवेत्ता, संविधान सभा के सदस्य एवं दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 21 नवंबर से 26 नवंबर तक आयोजित ‘गौर उत्सव’ के पांचवें दिन विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयन्ती सभागार में ‘डॉ. गौर के सपनों का सागर और उनका विश्वविद्यालय’ विषय पर परिसंवाद आयोजित हुआ.

डॉ. गौर और मां. सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण, दीप प्रज्जवलन और अतिथियों के स्वागत के उपरान्त विषय प्रवर्तन करते हुए डॉ. संजय शर्मा ने डॉ. गौर के सागर शहर और शिक्षा के मंदिर के सपने के पीछे के ऐतिहासिक कारणों का जिक्र किया. उन्होंने कहा कि वे अपने समकालीन विचारकों और संस्थानों से प्रभावित थे. वे सागर ही नहीं पूरे भारत की संस्कृति को बदलना चाहते थे. यह बदलाव शिक्षा के माध्यम से ही होगा, यह मानने वाले डॉ. गौर ने इसके लिए एक विश्वविद्यालय स्थापित करने का प्रण लिया. उनका वह संकल्प एक विश्वविद्यालय के रूप में हमारे सामने है. डॉ. गौर विश्वविद्यालय को समाज निर्मिति के केंद्र के रूप में देखते थे.

डॉ. गौर की आंतरिक छवि विराट थी- कुलाधिपति

कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी ने कहा कि डॉ. गौर स्वप्नद्रष्टा थे. उनके सपनों के बारे में जानने के लिए सबसे पहले उनके अन्तः हृदय को जानना होगा. ऊपरी तौर पर हम उनके बारे में बहुत सी बातें जानते हैं लेकिन उनकी आंतरिक छवि विराट थी. वे समय के अनुकूल नए ज्ञान और सृजन के प्रति सचेत थे. वे जानते थे कि भौतिक युग में ग्रामीण संस्कृति को बढ़ावा नहीं मिलेगा. इसीलिये उन्होंने एक विश्वविद्यालय के लिए ग्रामीण परिवेश चुना ताकि समकालीन विचारों के साथ यह विश्वविद्यालय अद्यतन ज्ञान का केंद्र बने. आने वाले समय में यह विश्वविद्यालय नवाचार के प्रयोग के माध्यम से साहित्य, संस्कृति, परम्परा के महत्त्व की स्थापना का विश्वस्तरीय केंद्र बनेगा.

मनुष्य को लोकतांत्रिक और प्रगतिशील बनाने वाली शिक्षा के हिमायती थे डॉ. गौर- रघु ठाकुर

प्रसिद्ध समाजवादी चिन्तक रघु ठाकुर ने कहा कि डॉ. गौर ने गरीबी का निकट से अनुभव किया था. उन्होंने इस पूरे अंचल को विकास के रास्ते पर लाने के लिए विश्वविद्यालय को आधार बनाया. उन्होंने शहर और विश्वविद्यालय को पूरी दुनिया से जोड़ने के लिए विमानन मंत्रालय को हवाई अड्डा बनाने के लिए ज्ञापन दिया. रेल सुविधाओं को अद्यतन करने के लिए ज्ञापन दिए. वे सागर को देश की उप राजधानी बनाना चाहते थे. इसके लिए उन्होंने कई पत्राचार किये जिसमें तर्कसंगत बातों से तत्कालीन सरकार को सहमत करने का प्रयास किया. सागर में टेक्नीकल एजुकेशन के लिए कॉलेज और विश्वविद्यालय स्थापित करने के लिए भी उन्होंने पत्र लिखे. विकास के जितने भी मापदंड हो सकते हैं, वे सागर को सबसे परिपूर्ण करना चाहते थे. उनका सपना सागर को आत्मनिर्भर बनाने का सपना था. उनका मानना था कि लोग पढ़कर केवल डिग्री न हासिल करें बल्कि लोकतांत्रिक व्यवहार भी सीखें. वे मानते थे कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो लोकतांत्रिकता और प्रगतिशीलता के रास्ते पर व्यक्ति को ले जाए और विश्वविद्यालय

इसका केंद्र बने. वे हिन्दू धर्म और परम्पराओं का नवजागरण चाहते थे. महिलाओं की शिक्षा और उनके अधिकारों के लिए उन्होंने बहुत से काम किये. वे ऐसी शिक्षा के हिमायती थे जो केवल सूचना प्रदान करने तक सीमित न हो बल्कि विवेक भी जुड़ा हो

डॉ. गौर के जन्म का दशक प्रतिभाओं के जन्म का दशक है- डॉ. चौबे

ख्यातिलब्ध चिकित्सक डॉ. जी एस चौबे ने कहा कि डॉ. गौर का जन्म जिस दशक में हुआ, वह देश में प्रतिभाओं के जन्म का दशक था, 1861 में जन्मे रवींद्र नाथ ठाकुर को नोबल पुरस्कार से नवाजा गया, 1863 में जन्में स्वामी विवेकानंद के विचारों और कार्यों ने पूरी दुनिया में भारत को विश्वगुरु के रूप में स्थापित किया. सन 1869 में जन्मे गांधीजी ने सत्य और अहिंसा के रास्ते पर पूरे देश को चलने की प्रेरणा दी और अप्रतिम त्याग का परिचय दिया. 1870 में जन्मे डॉ. गौर ने अपना सर्वस्व धन दानकर विद्या के एक मंदिर की स्थापना की. ऐसा उदाहरण पूरी दुनिया में कहीं नहीं मिलेगा.

डॉ. गौर के सपनों ने सागर को विश्वपटल पर स्थापित किया- प्रो. व्यास

वरिष्ठ शिक्षाशास्त्री एवं वैज्ञानिक प्रो. एस पी व्यास ने कहा कि डॉ. गौर के व्यक्तित्व को शब्दों में उतारना बड़ा ही कठिन कार्य है. उनके सपने के अनुरूप बहुत से मंगल कार्य किये जा रहे हैं. यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है. डॉ. गौर के सद्प्रयासों से महिलाओं के लिए वकालत का रास्ता खुला. वे एक व्यक्ति नहीं विचार थे. विश्वविद्यालय की स्थापना करके एक छोटे से ग्रामीण इलाके को विश्वपटल पर सम्मान दिलाने वाले वे पहले व्यक्ति थे. उनका व्यक्तित्व संत का व्यक्तित्व था. उनके जन्म दिवस के अवसर पर हमें यह प्रण लेना होगा कि हम हर दिन की शुरुआत उनके संकल्पों के अनुरूप कार्य करने से करेंगे. अनुशासित रहकर इस शिक्षा के केंद्र को एक नई ऊंचाई पर ले जाने के लिए सदैव श्रमशील रहेंगे.

डॉ.गौर के सपनों के अनुरूप अपनी सामाजिक भागीदारी सुनिश्चित करेगा विश्वविद्यालय- कुलपति

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि डॉ. गौर के जीवन संघर्ष और उनके अवदानों की चर्चा सुनते हुए मुझे उनका समकालीन परिदृश्य दिखाई दे रहा है. डॉ. गौर बेहद अभाव की स्थिति से निकलकर उच्च शिखर पर पहुँचने वाले महान व्यक्तित्व थे. आज लोग अपने परिवार और बच्चों के लिए पूंजी इकट्ठा करते हैं. लेकिन डॉ. गौर ने परिवार के साथ-साथ समाज के लिए एक बड़ा हिस्सा भी रखा और एक अद्भुत शिक्षा का केंद्र हमें विरासत में मिला है. हमारी यह जिम्मेदारी है कि हम उनके अवदानों को याद करते हुए उनके संकल्पों को पूरा करने में अपनी ऊर्जा लगाएं. उन्होंने हाल ही में हुए विभिन्न संस्थाओं के साथ हुए अकादमिक अनुबंधों की चर्चा करते हुए कहा

कि हम नए-नए पाठ्यक्रमों के माध्यम से ऐसी पीढ़ी तैयार करेंगे कि आने वाले समय में यह विश्वविद्यालय अपने शिखर पर पहुंचेगा. ग्रामीण विकास, स्किल डेवलेपमेंट पाठ्यक्रमों के जरिये हम आदर्श गाँव भी बनायेंगे. समाज और समुदाय की बेहतरी के लिए भी विश्वविद्यालय अपनी भागीदारी सुनिश्चित करेगा. डॉ. गौर ने विश्वविद्यालय के रूप में जो बीजारोपण किया है हम उनके संकल्पों और सपनों के अनुरूप इसे हरा-भरा बनाएंगे. उन्होंने कहा कि जल्द ही गौर म्यूजियम बनकर तैयार होगा. उन्होंने अपील की कि जिनके पास भी उनसे जुड़ी हुई वस्तुएं हों वे विश्वविद्यालय को सौंपकर अपना योगदान दें ताकि म्यूजियम के माध्यम से वे वस्तुएं सभी के लिए उपलब्ध हो पायें.

डॉ. गौर द्वारा स्थापित कल्पवृक्ष की कीर्ति पताका फहराना हमारा कर्तव्य- प्रो. सुरेश आचार्य

वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. सुरेश आचार्य ने कहा कि पूरे बुंदेलखंड में डॉ. हरीसिंह गौर 'गौर बब्बा' के नाम से जाने जाते हैं. यह यहाँ के लोगों का उनके प्रति अगाध प्रेम है और यह रिश्ता बड़ा ही नायाब है. उनके द्वारा स्थापित इस विश्वविद्यालय की रक्षा, इसकी समृद्धि, वृद्धि और इसकी कीर्ति पताका चारों ओर फहराना हम सबका कर्तव्य है. आज के आधुनिक युग में लोग अंधाधुंध संपत्ति इकट्ठा कर विलासितापूर्ण जीवन जीने में संलग्न हैं लेकिन डॉ. गौर ने एक-एक पैसा जोड़कर विश्वविद्यालय के रूप में एक कल्पवृक्ष लगाया जिसमें देश भर के लोग अध्ययन करने के लिए आते हैं. इस विश्वविद्यालय में बहुत कुछ अद्भुत है. 1970 में उनकी जन्म शताब्दी मनाई गई थी

जिसमें शहर से एक बहुत बड़ा जुलूस विश्वविद्यालय में आया था. आज भी यह परम्परा जारी है. यह उनके प्रति श्रद्धानवत होने का अवसर है.

सर्वश्रेष्ठ एनसीसी कैडेट को सम्मानित करने के लिए डॉ. ललित मोहन ने राशि दी

कार्यक्रम में डॉ. ललित मोहन ने एक लाख एक सौ पचीस रूपये का चेक कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी को सौंपा. इस राशि से आगामी वर्षों में विश्वविद्यालय के सर्वश्रेष्ठ एनसीसी कैडेट को गौर जयन्ती के अवसर पर सम्मानित किया जाएगा. डॉ. ललित मोहन विश्वविद्यालय में दस वर्षों तक एनसीसी अधिकारी रह चुके हैं. उत्कृष्ट कार्य एवं सेवा के लिए उन्हें महानिदेशक प्रशंसा पदक भी मिल चुका है. कार्यक्रम का मॉडरेशन और आभार ज्ञापन कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने किया. इस कार्यक्रम में विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष, शिक्षक, कर्मचारी और विद्यार्थी और सागर शहर के अनेक सम्माननीय नागरिकगण उपस्थित थे.

बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ के तहत महिला समाज ने किया आयोजन

विश्वविद्यालय की महिला समाज ने ग्राम पथरिया स्थित माध्यमिक विद्यालय में बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ के तहत स्कूली बच्चों के लिए कार्यक्रम का आयोजन किया. महिला समाज की अध्यक्ष डॉ. रत्ना शुक्ला ने इस अभियान के तहत आयोजित कार्यक्रमों कीजानकारी देते हुए कहा कि आज बेटियों का अनुपात हर क्षेत्र में बढ़ रहा है. इसे और अधिक सशक्त बनाए जाने की आवश्यकता है. शिक्षा के माध्यम से हम बेटियों को एक सुनहरा भविष्य दे सकते हैं. इसके लिए हम सबको मिलकर प्रयास करना चाहिए. कार्यक्रम की मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि बेटी तभी बचेगी जब बेटी पढ़ेगी. शिक्षा एक ऐसा हथियार है जिसको प्राप्त कर लेने के बाद बेटियाँ स्वयं आत्मनिर्भर हो जाती हैं और परिवार चलाने में सक्षम हो जाती हैं. आज हर क्षेत्र में बेटियाँ आगे हैं. कोई भी क्षेत्र उनसे अछूता नहीं है. बस बेटियों को सपने देखने की जरूरत है. एक बार पढ़कर बढ़ने का संकल्प ले लिया फिर कोई भी रास्ता उनके लिए कठिन नहीं है. कार्यक्रम में विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजित बच्चों को पुरस्कृत किया गया. इस अवसर पर प्राचार्य श्रद्धा दुबे ने उनके विद्यालय में शिक्षा की स्थिति और उसमें बालिकाओं के श्रेष्ठ प्रदर्शन की जानकारी दी. सभी बच्चों को पाठ्य सामग्री और फल वितरित किया गया. कार्यक्रम का संचालन महिला समाज की सचिव रेणु शुक्ला ने किया. आभार प्रदर्शन ओमिका सिंह ने किया. इस अवसर पर डॉ. ऋतु यादव, ब्रिजेश दुबे, रीना बासु, त्रिवेणिका रे सहित महिला समाज की सभी पदाधिकारी, सदस्य और विद्यालय के शिक्षक और बच्चे उपस्थित थे.

कुलपति ने लिया गौर जयन्ती उत्सव की तैयारियों का जायजा, दिए जरूरी निर्देश

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के संस्थापक महान शिक्षाविद् एवं प्रख्यात विधिवेत्ता, संविधान सभा के सदस्य एवं दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152 वें जन्म दिवस के उपलक्ष्ि में 'गौर उत्सव'मनाया गया है. इस क्रम में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने गौर जयन्ती 26 नवंबर को आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की तैयारियों का जायजा लिया उन्होंने गौर-प्रांगण का निरीक्षण किया और आयोजन समिति को यथोचित दिशा-निर्देश दिए. इसके बाद वे तीनबत्ती पहुँची और आयोजन स्थल का निरीक्षण कर तैयारियों का जायजा लिया. इस दौरान उन्होंने

दीप प्रज्जवलित कर डॉ. गौर को श्रद्धांजलि दी. गौरतलब है कि डॉ. गौर के जन्मदिवस पर तीनबत्ती स्थित गौर प्रतिमा पर माल्यार्पण और कुलपति के उद्बोधन के पश्चात शोभा यात्रा निकलने की परंपरा है. यह शोभायात्रा विश्वविद्यालय पहुँचने के उपरान्त मुख्य समारोह का आयोजन होता है. तीनबत्ती स्थल पर प्रवीण पाण्डेय, राजेश केशरवानी, पत्रकार संघ के अध्यक्ष सुदेश तिवारी, सिंटू कटारे, शहर के गणमान्य नागरिक और विश्वविद्यालय के शिक्षक और अधिकारी मौजूद रहे.

गौर जयन्ती की पूर्व संध्या पर अखिल भारतीय कवि सम्मलेन आयोजित

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के संस्थापक महान शिक्षाविद् एवं प्रख्यात विधिवेत्ता, संविधान सभा के सदस्य एवं दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 21 नवंबर से 26 नवंबर तक आयोजित 'गौर उत्सव' के पांचवें दिन गौर जयन्ती की पूर्व संध्या पर विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयन्ती सभागार में अखिल

भारतीय कवि सम्मलेन का आयोजन हुआ जिसमें शायर अशोक मिज़ाज बद्र, सागर, श्री अशोक सुन्दरानी,सतना, सुश्री विभा सिंह, बनारस, श्री संतोष शर्मा सागर, विदिशा, श्री राम भदावर, इटावा ने काव्य पाठ की प्रस्तुति की. युवा कवियित्री सोनाली सेन ने कविता के माध्यम से वंदना प्रस्तुत की. कार्यक्रम में कुलाधिपति बलवंतराय शांतीलाल जानी ने अध्यक्षता की. कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता मुख्य अतिथि थीं और प्रो. डी के गुप्ता ने विशिष्ट अतिथि के रूप में आयोजन की शोभा बढ़ाई.

कवि संतोष सागर ने *चाँद सूरज सितारों का अहम क्या करें, तू नहीं तो बहारों का हम क्या करें* पंक्तियों के माध्यम से चार चाँद लगाया. कवि राम भदावर ने *उपवन समूचा बाद में, पहले कली स्वीकार करो* कविता जोशपूर्ण अंदाज़ में सुनाई. हास्य कवि अशोक सुन्दरानी ने जूते पर केंद्रित अपनी प्रसिद्ध रचना सुनाई और समा बांधा. कवि अशोक मिजाज़ 'बद्र' ने मुझे ज़िन्दगी की खबर नहीं, मुझे छोड़कर किधर गई पंक्तियों से लोगों का दिल जीता. कवियित्री विभा सिंह ने संगीतमयी प्रस्तुति से श्रोताओं को मुग्ध किया. कार्यक्रम में स्वागत भाषण कुल्सचिन संतोष सोहगौरा ने दिया. आभार डॉ. अवधेश तोमर ने माना. कार्यक्रम में शिक्षक, विद्यार्थी, कर्मचारी और शहर के गणमान्य नागरिक काफी संख्या में मौजूद थे

चतुर्दिक उमंग, उत्साह और उल्लास से मनाई गई गौर जयन्ती

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के संस्थापक महान शिक्षाविद् एवं प्रख्यात विधिवेत्ता, संविधान सभा के सदस्य एवं दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152 वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 21 नवंबर से 26 नवंबर तक आयोजित 'गौर उत्सव' में 26 नवंबर गौर जयन्ती चतुर्दिक उमंग, उत्साह और उल्लास से मनाई गई. परम्परानुसार विश्वविद्यालय की कुलपति ने तीनबत्ती स्थल पर डॉ. गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया और अपने संबोधन में कहा कि सागर शहर के नागरिकों, बुद्धिजीवियों, विद्यार्थियों और जन-जन का का डॉ. गौर के प्रति प्रेम, अगाध श्रद्धा और भाव देखकर मैं भाव विह्वल हूँ. डॉ गौर ने विश्वविद्यालय के रूप में एक शिक्षा और ज्ञान का केंद्र स्थापित किया है

जिसके माध्यम से इस समूचे अंचल ने पूरे विश्व में अपनी एक अलग पहचान बनाई है. आप सभी विश्वविद्यालय के विकास में अपना सहयोग करें ताकि सर गौर के सपनों को साकार किया जा सके. यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी उद्बोधन पश्चात तीन बत्ती से शोभायात्रा निकाली गई. गौर स्मारक स्थल पर भी कुलपति ने पुष्पांजलि दी. शोभायात्रा के विश्वविद्यालय पहुँचने पर उन्होंने गौर मूर्ति पर माल्यार्पण किया और गौर समाधि पर पुष्प अर्पित किया. मुख्य अतिथि श्री भूपेन्द्र सिंह, कैबिनेट मंत्री (म. प्र. सरकार), कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी ने भी डॉ. गौर की समाधि पर पुष्प अर्पित किया.

एनसीसी कैडेट्स ने दिया गार्ड ऑफ़ ऑनर

विश्वविद्यालय के 3 एम पी सिग्नल एनसीसी कैडेट्स तीनबत्ती स्थल और विश्वविद्यालय परिसर में ले. कर्नल डॉ धर्मेन्द्र सर्राफ, डॉ. गौतम प्रसाद और ऊषा राणा के नेतृत्व में कुलपति महोदया को गार्ड ऑफ़ ऑनर दिया. गौर प्रांगण में मुख्य समारोह आयोजित किया गया. अतिथियों ने डॉ. गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया और दीप प्रज्जवलित किया. कुलसचिव संतोष सोहगौरा के स्वागत भाषण के पश्चात गौर उत्सव के मुख्य समन्वयक प्रो. आर के त्रिवेदी ने छह दिवसीय गौर उत्सव में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी दी.

डॉ. गौर का समूचा जीवन मनुष्य के अपराजेय जिजीविषा की जय-यात्रा है- कुलपति

इस अवसर पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने ज्ञान-दान के अन्यतम पुरोधा, शैक्षिक उन्नयन के अभिनव सुत्रधार और भारतीय मेधा के वैश्विक पहचान, विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉ. हरीसिंह गौर जी की 152 वीं जयंती पर सभी को बधाई दी. उन्होंने कहा कि डॉ. हरीसिंह गौर की जयंती न केवल हमारे विश्वविद्यालय के लिए बल्कि समूचे बुन्देलखण्ड के लिए अज्ञानता के अंधेरे के विरुद्ध ज्ञान के उजाले का नूतन विवेक है। आज का दिन उज्ज्वल चेतना का पावन अभिषेक है। उन्होंने कहा कि डॉ. गौर का समूचा जीवन मनुष्य के अपराजेय जिजीविषा की जय-यात्रा है। उन्होंने जीवन-भर सर्वोच्चता की संकल्पना को अपने ढंग से सिरजा , सहेजा और साकार किया। आसमान की बुलंदी पर रहते हुए भी डॉ. गौर ने सागर की जमीनी हकीकतों को कभी भुलाया नहीं। वे जानते थे कि बुन्देलखंड की जय-यात्रा ज्ञान के रास्ते से होकर ही जायेगी। इस भूमि पर उन्होंने अपने पुरुषार्थ से ज्ञान की अनंत रष्मियों कोसंकलित कर सागर विश्वविद्यालय का रूप दे दिया। जीवन भर की जुटाई गयी निजी पूँजी को सार्वजनिक हित में इस तरह समर्पित कर गौर साहब ने जाहिर इतिहास का एक ऐसा अफसाना लिख दिया जिसे

आज सारी दुनिया गुनगुना रही है। हमारा विश्वविद्यालय केवल बुन्देलखण्ड के लिए ही नहीं बल्कि पूरे देश के लिए ज्ञान का अभिनव तीर्थ है. विश्वविद्यालय कोरोना की महामारी के दौरान भी लगातार क्रियाशील रहा। दुनिया भर के शीर्ष वैज्ञानिकों में 20 वैज्ञानिक हमारे

विश्वविद्यालय के छात्र रहे हैं। इस प्रतिष्ठित सूची में सम्मिलित हमारे विवि के भी शिक्षक हैं. ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र शिक्षकों, विद्यार्थियों और अधिकारियों की उपलब्धियों के लिए बधाई दी और कहा कि यह कोशिश हमारे संस्थापक के सपनों को पूरा करने की दि शा में एक जागृत पहल है। उन्होंने विश्वविद्यालय में जारी परियोजनाओं और भविष्य की योजनाओं के बारे में रूपरेखा भी प्रस्तुत किया. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों के चतुर्दिक विकास और अपनी अकादमिक प्रतिबद्धता के साथ ही अपने सामाजिक सरोकारों को भी नये ढंग से सृजित कर रहा है। उन्होंने कहा कि डॉ. गौर अपने प्रगतिशील सरोकारों के साथ व्यक्तिगत मुक्ति की जगह सा मूहिक मुक्ति के हिमायती थे। अपनी मातृभूमि के लिए ज्ञान के उजाले का जो सपना देखा था, उसे उन्होंने अपनी आस्था और त्याग से पूरा किया, आज उनके जन्मदिवस पर हम सबका कर्तव्य बनता है कि हम अपने संस्थापक के सपनों को कभी बेरंग नहीं होने देंगे।

मुख्य अतिथि कैबिनेट मंत्री भूपेन्द्र सिंह जी ने कहा कि महादानी कर्ण के बाद के बाद यदि किसी का नाम लिया जा सकता है तो वे डॉ. गौर थे. उन्होंने कहा कि यह ऐसा शुभ दिन है जो समूचा बुंदेलखंड एक उत्सव के रूप में मनाता है. डॉ. गौर के समय में यहाँ अनेकानेक विषय शुरू हुए जो आज भी चल रहे हैं. उनके द्वारा स्थापित विश्वविद्यालय को आज केन्द्रीय दर्जा मिल चुका है. वक्त की मांग है कि कुछ नए अकादमिक पाठ्यक्रम शुरू किये जाएँ और बुंदेलखंड के अंचल में भी विश्वस्तरीय पढ़ाई होने लगे, इसके प्रयास किये जाने चाहिए. उन्होंने कहा कि हम डॉ. गौर का ऋण कभी नहीं चुका सकते. हमारी, इस शहर की पहचान उन्हीं के कारण ही है. कुछ ऐसे प्रयास किये जाएँ कि बुंदेलखंड अंचल के विद्यार्थियों को इस विश्वविद्यालय में प्रवेश में प्राथमिकता मिले.

विशिष्ट अतिथि सागर लोक सभा सांसद श्री राजबहादुर सिंह ने कहा कि गौर साहब की 150 वीं जयन्ती के अवसर पर मैंने लोकसभा में डॉ. गौर को भारत रत्न देने की मांग उठाई थी. सरकार भी मेरी इस मांग पर विचार कर रही हैं लेकिन इस मुहिम में जनसहयोग भी उतना ही आवश्यक है. मैं उम्मीद करता हूँ कि कि डॉ. गौर को भारत रत्न मिले, इसके लिए जनभागीदारी और सबका सहयोग मिलेगा. डॉ.

गौर ने विश्वविद्यालय के माध्यम से शिक्षा की अलख जगाई थी. इस बुंदेलखंड क्षेत्र में आज उन्हीं के कारण हम सब कुछ पढ़-बन पाए. इस अंचल के लोगों को शिक्षा के इस केंद्र का लाभ मिले इसके लिए ठोस प्रयास किये जाने चाहिए. अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी ने कहा कि डॉ. गौर की जयन्ती पर बौद्धिक समुदाय और जनभागीदारी को देखकर ऐसा लग रहा है कि यह उत्सव नहीं बल्कि अनुष्ठान है. लोगों की डॉ. गौर के प्रति श्रद्धा और सम्मान देखकर मेरा मन आह्लादित है. पूर्व विद्यार्थियों की विश्वविद्यालय के प्रति सोच की मैं प्रशंसा करता हूँ. डॉ. गौर अर्वाचीन समय के भामाशाह हैं. निश्चित तौर पर यह विश्वविद्यालय तेजस्वी विकास करेगा. इस अवसर पर अलग-अलग श्रेणी में विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया. पत्रकारिता विभाग के प्रायोगिक समाचार-पत्र ‘ समय’ और ‘मध्य भारती’ शोध पत्रिका के 80वें अंक के विमोचन के साथ ही कई शिक्षकों की पुस्तकों का

भी विमोचन हुआ. इस अवसर पर उत्कृष्ट कार्यो और सेवाओं के लिए विश्वविद्यालय के शिक्षकों, अधिकारियों और कर्मचारियों को सम्मानित किया गया. कार्यक्रम का संचालन डॉ. ललित मोहन ने किया. आभार ज्ञापन मुख्य समन्वयक प्रो. आर के त्रिवेदी ने किया.

विश्वविद्यालय में हुआ संविधान की प्रस्तावना का वाचन, 'विक्ट्री फ्लेम' का स्वागत

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के संस्थापक महान शिक्षाविद् एवं प्रख्यात विधिवेत्ता, संविधान सभा के सदस्य एवं दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 21 नवंबर से 26 नवंबर तक आयोजित 'गौर उत्सव' में गौर जयन्ती 26 नवंबर के मुख्य समारोह आरम्भ होने से पूर्व संविधान के अंगीकार दिवस पर भारतीय संविधान की प्रस्तावना का वाचन किया गया. प्रस्तावना वाचन कार्यक्रम देश भर की संस्थाओं में आयोजित किया गया था. विश्वविद्यालय में 1971 के भारत पाक युद्ध में विजय के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भारतीय सेना के 'विक्टरी फ्लेम' का विश्वविद्यालय में स्वागत भी किया गया. इस अवसर पर सेना के जवानों का सम्मान भी किया गया.

गौर जयन्ती पर आयोजित हुई सांस्कृतिक संध्या

गौर जयन्ती की संध्या वेला में को विश्वविद्यालययीन विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी गई. कार्यक्रम की शुरुआत

तालवाद्य से हुई जो संगीत विभाग के विद्यार्थियों ने प्रस्तुत किया. केन्द्रीय विद्यालय के बच्चों ने गांधी जी थीम पर मूक अभिनय (माइम) प्रस्तुत कर गांधी जी के विचारों और संदेशों को प्रस्तुत किया. विवि के परफार्मिंग आर्ट्स के छात्रों ने डॉ राकेश सोनी द्वारा निर्देशित प्रहसन 'अंतिम इच्छा' की प्रस्तुति दी यह प्रस्तुति 26/11 की आतंकवादी घटना पर आधारित थी. विद्यार्थियों ने बुन्देली और अवधी लोक को कव्वाली के रूप में प्रस्तुत किया. केन्द्रीय

विद्यालय के बच्चों ने राजस्थानी लोकनृत्य कालबेलिया का प्रदर्शन किया. संगीत विभाग की छात्राओं ने एकल गायन प्रस्तुत किया. अंत में बुन्देली लोकनृत्य 'बधाई' की प्रस्तुति हुई. पूरा गौर प्रांगण दर्शकों से भरा हुआ था. इस अवसर पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता विशिष्ट अतिथि प्रो. डी के गुप्ता, कुलसचिव संतोष सोहगौरा तथा शिक्षक कर्मचारी, विद्यार्थी और कर्मचारी मौजूद थे. उनके परिवार के लोग भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए. समस्त कार्यक्रम छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा और सांस्कृतिक परिषद् के समन्वयक डॉ. राकेश सोनी के निर्देशन में संपन्न हुआ.

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

गौर जन्म दिवस कार्यकम की रूपरेखा

दिनांक : 26 नवम्बर 2021

विश्वविद्यालय परिसर कार्यकम

1. माननीया प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलपति जी द्वारा डॉ. गौर मूर्ति पर माल्यार्पण — 10:30 बजे
   गार्ड ऑफ ऑनर – द्वारा एन.सी.सी. छात्र/छात्रायें — 10:40 बजे
   (सहयोगः सुरक्षा अधिकारी डॉ. हिमांषु यादव, एन.सी.सी. अधिकारी डॉ. धर्मेन्द्र सर्राफ एवं सुश्री उषा राणा)

गौर प्रांगण कार्यकम

1. माननीया प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलपति जी द्वारा डॉ. गौर समाधि पर रीथ (पुष्पांजलि) अर्पण (सहयोगः विष्वविद्यालय यंत्री) — 10:50 बजे

गौर प्रांगण मंचीय कार्यकम

मुख्य अतिथि – माननीय श्री भूपेन्द्र सिंह, केबिनेट मंत्री, नगरीय प्रषासन एवं विकास, म.प्र. शासन
अध्यक्ष – माननीय प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी, कुलाधिपति, डॉ. हरीसिंह गौर विष्वविद्यालय, सागर
सारस्वत उद्बोधन – माननीया प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलपति, डॉ. हरीसिंह गौर विष्वविद्यालय, सागर
विशिष्ट अतिथि- श्री राजबहादुर सिंह, माननीय सांसद, सागर लोकसभा क्षेत्र
उपस्थिति – प्रो. आर.के. त्रिवेदी, समन्वयक, गौर जयंती एवं गौर सप्ताह
उपस्थिति – प्रो. ए.डी. शर्मा, अधिष्ठाता छात्र गतिविधियां
उपस्थिति – श्री संतोष सोहगौरा, कुलसचिव, डॉ. हरीसिंह गौर विष्वविद्यालय, सागर

1.	अतिथियों का मंच पर आगमन एवं दीप प्रज्जवलन तथा डॉ. गौर के तैल चित्र पर पुष्पांजलि	10:55 बजे
2.	संविधान दिवस पर संविधान की उद्देषिका का वाचन	11:00 बजे
3.	संगीत विभाग के छात्र/छात्राओं द्वारा सरस्वती वंदना एवं गौर गीत की प्रस्तुति	11:10 बजे
4.	अतिथियों का पुष्प गुच्छ से स्वागत **(प्रो. आर.के. त्रिवेदी द्वारा, त्रिवेदी जी का प्रो. ए.डी. शर्मा)**	11:40 बजे
5.	माननीया कुलपति जी का कर्मचारी संघ द्वारा सम्मान	11:45 बजे
6.	स्वागत भाषण– श्री संतोष सोहगौरा, कुलसचिव	11:50 बजे
7.	प्रो. आर.के. त्रिवेदी, समन्वयक द्वारा गौर सप्ताह – 2021 का विवरण	12:00 बजे
8.	माननीया प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलपति जी का उद्बोधन	12:15 बजे
9.	मुख्य अतिथि का उद्बोधन	12:45 बजे
10.	अध्यक्षीय उद्बोधन	1:00 बजे
11.	अतिथियों का शाल, श्रीफल एवं स्मृति चिन्ह द्वारा सम्मान **(मुख्य अतिथि एवं कुलाधिपति का माननीया कुलपति द्वारा एवं माननीया कुलपति जी का प्रो. आर.के. त्रिवेदी जी द्वारा, एवं प्रो. आर.के. त्रिवेदी और प्रो. ए.डी. शर्मा का कुलसचिव द्वारा, कुलसचिव जी का प्रो. ए.डी. शर्मा द्वारा)**	1:15 बजे
12.	पुस्तकों का विमोचन	1:30 बजे
13	पुरस्कार वितरण एवं विषेष उपलब्धियों के लिये सम्मान	1:45 बजे
14.	धन्यवाद ज्ञापन – प्रो. आर.के. त्रिवेदी	2:30 बजे

मंच संचालन – डॉ. ललित मोहन, अध्यक्ष, ललित कला एवं प्रदर्षनकारी कला विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विष्वविद्यालय, सागर करेंगे।

***

पुरस्कार, विमोचन सूची

गौर जयंती 2021

पुरस्कार वितरण – छात्र/छात्राओं की सूची

(1)	**श्री रिंकू सरवैया** द्वारा अपने पिता स्व.श्री रघुवर प्रसाद सरवैया, की स्मृति में प्रदत्त संस्थापक सर डॉ. हरीसिंह गौर जी का छाया चित्र, पुरस्कार प्राप्त करने वाले मेधावी छात्रों–छात्राओं को प्रदान किया जायेगा।	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**
(2)	**पुस्तकों का विमोचन/लोकार्पण** • **मध्य भारती अंक 80वां का विमोचन** (प्रधान संपादक, संपादक एवं प्रबंध संपादक मंच पर आमंत्रित है) • **सूचना** – मध्य भारती विज्ञान, अंक 62– 2, 2021 का ई–जर्नल के रूप में प्रकाशित किया जायेगा। • पत्रकारिता विभाग से प्रकाशित समाचार पत्र समय का लोकार्पण – (डॉ. ललित मोहन, विभागाध्यक्ष, डॉ. विवेक जयसवाल एवं विभाग के छात्र/छात्रायें सहयोग करेंगे)। • डॉ. वर्षा शमा, प्राणी शास्त्र विभाग द्वारा लिखित पुस्तक पेस्टीसिडस टॉक्सिसिटी का विमोचन • डॉ. बी. के. श्रीवास्तव, इतिहास विभाग द्वारा लिखित पुस्तक मध्यप्रदेश मे पर्यटन का विमोचन • डॉ. बबलू राय, भाषा विज्ञान विभाग, द्वारा लिखित पुस्तक नैरेटिभ स्ट्रक्चर इन किरन देशाइज फिक्शन का विमोचन • डॉ. अवधेश प्रताप सिंह तोमर, संगीत विभाग द्वारा लिखित पुस्तक संगीत सुरसरि, द्वितीय का विमोचन • डॉ. सुशील के काशव एवं डॉ. प्रशान्त साहू, द्वारा लिखित पुस्तक क्वानटिटेटिव एनालेसिस ऑफ कम्पाउन्डस का विमोचन	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**
(3)	डॉ. ललित मोहन द्वारा प्रदत्त राशि से बी.ए., बी.एस–सी, बी.काम. वर्ष 2021 की परीक्षाओं में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र/छात्राओं का सम्मान – **सम्मान राशि रू. 2000/– एवं प्रशस्ति पत्र** 1. बी. ए. में सर्वाधिक अंक, प्रावीण्य सूची में प्रथम स्थान कु . **एकता पटैरिया**, विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग, सागर 2. बी.एस.सी. में सर्वाधिक अंक, प्रावीण्य सूची में प्रथम स्थान **कु. तनु नायक**, विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग, सागर 3. बी.काम. में सर्वाधिक अंक, प्रावीण्य सूची में प्रथम स्थान **कु. पलक जैन**, विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग, सागर	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**

(4)	श्री राजेन्द्र नारद द्वारा प्रदत्त राशि से **कु. संगीता नारद मेधा छात्रवृत्ति एवं प्रशस्ति पत्र।** **1. कु. अवंतिका मिश्रा,** विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग को बी.एस.सी. अंतिम वर्ष (बॉयलाजी समूह) सैद्वांतिक विषयों में वर्ष–2021 की परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर सम्मान रूपये 500/– की राशि एवं प्रशस्ति पत्र 3. **कु. हर्षिता डबकारा**, विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग को एम.एस.सी. उत्तरार्द्ध (भौतिक रसायन) (फिजिकल केमिस्ट्री) में सैद्वांतिक विषयों में वर्ष 2021 की परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर सम्मान रूपये 1000/– की राशि एवं प्रशस्ति पत्र।	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**
(5)	श्रीमति करूणा, शादीलाल आचार्य सम्मान निधि से विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग के बी.ए./बी. एस–सी./बी.काम. स्नातक स्तर परीक्षा वर्ष 2021 में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले दिव्यांग छात्र का सम्मान– राशि रूपये 1100/– एवं प्रशस्ति पत्र **कु. साक्षी जैन, बी.काम.** विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग, सागर	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**
(6)	डॉ. रवीन्द्र नाथ अग्रवाल द्वारा प्रदत्त राशि से श्री विमलचंद्र अग्रवाल स्मृति स्वर्ण पदक, वर्ष 2021 में सर्वश्रेष्ठ एन.सी.सी. कैडेट का सम्मान,– सम्मान राशि रू. 300/– , स्वर्ण पदक एवं प्रशस्ति पत्र, **श्री अर्पित पुरवार, बी.बी.ए. पंचम सेमिस्टर** विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग, **नोट :– यह सम्मान छात्र की अनुपस्थिति में उनके भाई श्री अर्चित पुरवार प्राप्त करेंगे**	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**
(7)	श्रीमती रमा दुबे, द्वारा प्रदत्त राशि से बी.ए.फाइनल की वर्ष 2021 की परीक्षा में हिन्दी साहित्य विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी का पद्म श्री आचार्य लक्ष्मीनारायण दुबे स्मृति स्वर्ण पदक एवं प्रंशस्ति पत्र द्वारा सम्मान **कु. पूनम कुर्मी,बी.ए. (हिन्दी साहित्य)** विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग, सागर	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**
(8)	डॉ. (श्रीमती) सुषमा शुक्ला एवं प्रो.संतोष शुक्ला द्वारा प्रदत्त राशि से एल.एल.बी. (आनर्स) पंचवर्षीय पाठ्यक्रम की वर्ष 2021 की परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी का एडवोकेट श्री अनिल तिवारी स्मृति स्वर्ण पदक एवं प्रशस्ति पत्र द्वारा सम्मान **श्री गौहर आलम,** विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग,सागर	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**
(9)	श्रीमती पुष्पा शर्मा द्वारा प्रदत्त राशि से एम.ए./एम.एस–सी. (गणित) की वर्ष 2021 की परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी का प्रो.पी.एल.शर्मा स्मृति स्वर्ण पदक एवं प्रशस्ति पत्र द्वारा सम्मान । **कु. मनश्री श्रीवास्तव, एम.एस.सी. गणित** विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**
(10)	श्री उमेश श्रीवास्तव द्वारा प्रदत्त राशि से एम.एस–सी. फाइनल प्राणी शास्त्र, (एन्टामालॉजी विषय) की वर्ष 2021 की परीक्षा में में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी का प्रो.बी.के.श्रीवास्तव स्मृति स्वर्ण पदक एवं प्रशस्ति पत्र द्वारा सम्मान। **कु. श्रद्धा व्यास,** विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग, सागर	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**

(11)	डा0 प्रदीप सिंह चौहान द्वारा प्रदत्त राशि से बी–फार्म. वर्ष 2021 की परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी का प्रो.सी.एस.चौहान स्मृति स्वर्ण पदक एवं प्रशस्ति पत्र द्वारा सम्मान **कु. हर्षिता सिंघई,** विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग, सागर	**माननीय कुलपति जो एवं अतिथियों द्वारा**
(12)	फार्मास्युटिकल साइंस एल्यूमिनि एवार्डः– प्रो.के.सी वर्मा, सेवानिवृत्त प्राध्यापक एवं फार्मेसी विभाग के पूर्व छात्र जो विदेश मे रहते हैं की ओर से प्रदत्त राशि से बी0फार्म तृतीय वर्ष एवं चतुर्थ वर्ष के नियमित विद्यार्थी को उनकी पिछली कक्षा में सर्वाधिक अंक अर्जित करने पर सम्मान राशि रू. 2000/– एवं प्रशस्ति पत्र 1 **कु. प्रिंसी लोधी**, बी. फार्म. द्वितीय वर्ष (तृतीय वर्ष में अध्ययनरत) 2 **कु. सोनालीदास गुप्ता**,बी. फार्म. तृतीय वर्ष (चतुर्थ वर्ष में अध्ययनरत)	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**
(13)	श्री सी.बी.शर्मा द्वारा प्रदत्त राशि से वर्ष 2021 की एम.फार्म परीक्षा में प्रावीण्य सूची में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी का नागार्जुना स्वर्णपदक एवं प्रशस्ति पत्र द्वारा सम्मान **कु. अर्पणा पुरोहित, एम. फार्म,** विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग, सागर	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**
(14)	डॉ0बी0एस0ठाकुर , रिटायर्ड मेडिकल आफीसर द्वारा प्रदत्त राशि से एल–एल.बी. (आनर्स) पंचवर्षीय पाठ्यक्रम की वर्ष 2021 की परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी का श्री शरद सिंह ठाकुर स्मृति स्वर्णपदक एवं प्रशस्ति पत्र द्वारा सम्मान– **श्री गौहर आलम, एल.एल.बी. आनर्स,** विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग,सागर	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**
(15)	डॉ. एन. पी. शर्मा द्वारा प्रदत्त राशि से एम.ए. समाज शास्त्र वर्ष 2021 की परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली **छात्रा** को श्रीमती रजनी शर्मा स्मृति स्वर्ण पदक एवं प्रशस्ति पत्र द्वारा सम्मान । **कु. अनुराधा शुक्ला,** विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग, सागर	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**
(16)	प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी द्वारा प्रदत्त राशि से एम.ए.– भाषा अध्ययन शाला की वर्ष 2021 की परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र को शिवम शांडिल्य स्मृति स्वर्ण पदक एवं प्रशस्ति पत्र द्वारा सम्मान– **श्री इमरान, उर्दू** विभाग, विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग, सागर	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**
(17)	डॉ. सुबोध कुमार जैन द्वारा प्रदत्त राशि से एम.एस–सी. बायोटेक्नालाजी को वर्ष 2021 की परीक्षा में प्रावीण्य सूची में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी का श्री एस.के.सी. जैन स्मृति स्वर्ण पदक एवं प्रशस्ति पत्र द्वारा सम्मान – **श्री कुलदीप गौलिया,** विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग, सागर	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**
(18)	श्री जगदीश कुमार श्रीवास्तव द्वारा प्रदत्त राशि से एम.ए./एम.एस–सी. मनोविज्ञान वर्ष 2021 की परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी का प्रो. विजया श्रीवास्तव स्मृति स्वर्ण पदक एवं प्रशस्ति पत्र द्वारा सम्मान – **कु. महशरा खान**, एम.एस.सी. मनोविज्ञान, विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग,	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**

(19)	श्री रघु ठाकुर द्वारा प्रदत्त राशि से वर्ष 2021 की राजनीति विज्ञान स्नातक स्तर की परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी का स्व. श्री रामचन्द्र सिंह ठाकुर स्मृति स्वर्ण पदक एवं प्रशस्ति पत्र द्वारा सम्मान – **कु. मिताली नेताम**, विश्वविद्यालय शिक्षण विभाग, सागर	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**
(20)	डॉ. रश्मि जैन, विभागाध्यक्ष शिक्षा शास्त्र विभाग द्वारा एल.एल.एम. सत्र 2020– 2021 में प्रथम स्थान अर्जित करने वाले छात्र **श्री आशीष मिश्र को स्व. डॉ. सुभाष कुमार जैन, सेवानिवृत्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश की स्मृति में उनकी धर्म पत्नि द्वारा रूपये 11000/– की राशि प्रदान।**	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**
(21)	श्रीमती पद्मजा गोपाल द्वारा प्रदत्त राशि से वर्ष 2021 हेतु विश्वविद्यालय के उत्कृष्ट तृतीय एवं चतुर्थ वर्ग कर्मचारी का श्री दिनेश दीक्षित स्मृति स्वर्ण पदक, प्रशस्ति पत्र द्वारा सम्मान – **1. तृतीय श्रेणी के लिए–श्री सुनील कुमार जैन,** **जवाहर लाल नेहरू पुस्तकालय विभाग** **2. चतुर्थ श्रेणी के लिए–श्री वनमाली सिंह राजपूत, वनस्पति विभाग**	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**
(22)	डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152 वें जन्म दिवस समारोह पर एन.सी.सी. परेड करने पर गार्ड ऑफ ऑनर करने वाले सभी कैडेट को प्रमाण पत्र – कन्टेनजेन्ट कमान्डर अंडर आफीसर **श्री राहुल साहू प्राप्त करेंगे**	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**
(23)	डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152 वें जन्म दिवस समारोह पर 7 एम.पी.गर्ल्स बटा. के केडैट द्वारा एन.सी.सी. परेड करने पर गार्ड ऑफ ऑनर करने वाले कैडेट को प्रमाण पत्र – एन.सी.सी. पायलेटिंग कैडेट **कु. शीतल रैकवार प्राप्त करेंगी**	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**
(24)	विश्वविद्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकार एवं कर्मचारियों को वर्ष 2019–20 का राजभाषा पदक एवं पुरस्कार 1. **डॉ. किरण माहेश्वरी,** (प्र.) चिकित्सा अधिकारी – राजभाषा पदक एवं पुरस्कार 2. **श्री अजय कुमार सेवते,** प्रवर श्रेणी लिपिक – राजभाषा पदक एवं प्रथम पुरस्कार 3. **श्री अजब सिंह अहिरवार,** प्रवर श्रेणी लिपिक – राजभाषा पदक एवं द्वितीय पुरस्कार 4. **श्रीमति मंजू जैन,** अवर श्रेणी लिपिक – राजभाषा पदक एवं तृतीय पुरस्कार	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**
(25)	**डॉ. अम्बिकादत्त शर्मा, आचार्य एवं अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र** का सांस्कृतिक–साभ्यतिक अध्ययन और भारतीय दर्शन के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान रहा है। आपकी अध्येतृता को सम्मानित करते हुए आचार्य शंकर सांस्कृतिक एकता न्यास, संस्कृति विभाग, मध्यप्रदेश शासन द्वारा सुप्रतिष्ठित शंकर फैलोशिप : 2021–2023 आपको प्रदान किया गया है। इससे पूर्व आपको मध्यप्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, भोपाल की ओर से श्री नरेश मेहता स्मृति वाङ्मय सम्मान एवं अखिल भारतीय दर्शन परिषद् के द्वारा प्रणवानन्द दर्शन पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। आपकी इन विशिष्ट उपलब्धियों से विश्वविद्यालय के मान–सम्मान में अभिवृद्धि हुई है। एतदर्थ 26 नवम्बर 2021, डॉ. हरीसिंह गौर की 152वीं जयन्ती के अवसर पर आपको सम्मानित करते हुए विश्वविद्यालय गौरवान्वित है।	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**

(26)	**डॉ. छबिल कुमार मेहेर, हिन्दी अधिकारी,** का साहित्य–सृजन व राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में उल्लेखनीय योगदान रहा है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से इस वर्ष आपके द्वारा रचित पुस्तक 'भाषा–प्रयक्ति और अनुवाद' को प्रतिष्ठित 'राजभाषा गौरव पुरस्कार' प्रदान किया गया है। इससे पूर्व आपको केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय की ओर से 'हिन्दीतर भाषी हिन्दी लेखक पुरस्कार' तथा संस्कृति विभाग, मध्यप्रदेश शासन के द्वारा 'हिन्दी भाषा–हिन्दी सेवा सम्मान' से सम्मानित किया जा चुका है। आपकी इन विशिष्ट उपलब्धियों से विश्वविद्यालय के मान–सम्मान में अभिवृद्धि हुई है। एतदर्थ 26 नवम्बर 2021, डॉ. हरीसिंह गौर की 152वीं जयन्ती के अवसर पर आपको सम्मानित करते हुए विश्वविद्यालय गौरवान्वित है।	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**
(27)	**श्री साहिल आदित्य अहिरवार,** इस विश्वविद्यालय के मानविकी एवं समाजविज्ञान अध्ययनशाला के स्नातक, पंचम सेमेस्टर के छात्र हैं। इन्होंने इस सदी के महानायक अमिताभ बच्चन के आतिथ्य में सोनी इण्टरटेन्मेंट चैनल द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर प्रायोजित 'कौन बनेगा करोड़पति' प्रतियोगिता में भाग लेकर एक करोड़ रुपये की धनराशि जीतने का गौरव प्राप्त किया है। आपकी इन विशिष्ट उपलब्धियों से विश्वविद्यालय के मान–सम्मान में अभिवृद्धि हुई है। एतदर्थ 26 नवम्बर 2021, डॉ. हरीसिंह गौर की 152वीं जयन्ती के अवसर पर आपको सम्मानित करते हुए विश्वविद्यालय गौरवान्वित है।	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**
(28)	विश्वविद्यालयीन शिक्षक एकादश एवं विश्वविद्यालयीन अधिकारी एवं कर्मचारी एकादश के बीच आयोजित 20–20 ओवर का क्रिकेट मैच में खेला गया जिसमें विजेता टीम का ट्राफी द्वारा सम्मान **विजेता टीम –अधिकारी एवं कर्मचारी एकादश –** श्री संतोष सोहगौरा एवं टीम के सदस्य	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**
(29)	विश्वविद्यालयीन विद्यार्थियों के लिये आयोजित कबड्डी (पुरूष) प्रतियोगिता में विजेता टीम का ट्राफी द्वारा सम्मान **विजेता टीम–** **स्कूल आफ सोसल साइंश** – श्री ऋशि राज यादव एवं टीम के सदस्य	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**
(30)	विश्वविद्यालयीन विद्यार्थियों के लिये आयोजित कबड्डी (पुरूष) प्रतियोगिता में उपविजेता टीम का ट्राफी द्वारा सम्मान **उपविजेता टीम–** **स्कूल आफ एजूकेशन** – श्री भगत सिंह एवं टीम के सदस्य	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**
(31)	विश्वविद्यालयीन विद्यार्थियों के लिये आयोजित कबड्डी (महिला)प्रतियोगिता में विजेता टीम का ट्राफी द्वारा सम्मान **विजेता टीम–** **स्कूल आफ एजूकेशन** – कु. दिव्यानी गोंड़ एवं टीम के सदस्य	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**
(32)	विश्वविद्यालयीन विद्यार्थियों के लिये आयोजित कबड्डी (महिला)प्रतियोगिता में उपविजेता टीम का ट्राफी द्वारा सम्मान **उपविजेता टीम – स्कूल आफ वायोलाजिकल साइंस –** कु. साक्षी पांन्डेय एवं टीम के सदस्य	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**

(33)	विश्वविद्यालयीन विद्यार्थियों के लिये आयोजित वॉलीवाल (पुरूष)प्रतियोगिता में विजेता टीम का ट्राफी द्वारा सम्मान **विजेता टीम–** **स्कूल आफ एजूकेशन** – श्री सचिन जैन एवं टीम के सदस्य	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**
(34)	विश्वविद्यालयीन विद्यार्थियों के लिये आयोजित वॉलीवाल (पुरूष)प्रतियोगिता में उपविजेता टीम का ट्राफी द्वारा सम्मान **उपविजेता टीम –स्कूल आफ सोसल साइंस** – श्री अभिषेक कुमार तिवारी एवं टीम के सदस्य	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**
(35)	विश्वविद्यालयीन शिक्षक संकाय एवं कर्मचारी एवं वि.वि. महिला क्लब के बीच आयोजित रस्साकशी (महिला) प्रतियोगिता में विजेता रही शिक्षक संकाय एवं कर्मचारी टीम को मेडिल द्वारा सम्मान प्रो. जे.डी. आही, प्रो. वर्षा शर्मा, प्रो. अस्मिता गजभिये, डॉ. संध्या पटैल, डॉ. सुषमा यादव, डॉ. उषा राणा, डॉ. नन्दी पटोदिया, डॉ. पुष्पा सूर्यवंशी, डॉ. पी. वकुला कुमारी, श्रीमति ए. लक्ष्मी, डॉ. दीपाली जाट, डॉ. पायल महोविया, डॉ. रश्मि सिंह, डॉ. नीलू रावत, डॉ. वंदना राजोरिया, डॉ. किरन आर्या, डॉ. रेखा, डॉ. सुमन पटेल, श्री दमयंती, श्रीमति कांति पेंकरा, डॉ. प्रीति बेगड़े **नोट :– उपरोक्त समस्त मेडिल प्रो. जे.डी. आही/ प्रो. वर्षा शर्मा/प्रो. अस्मिता गजभिये प्राप्त करेंगी।**	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**
(36)	विश्वविद्यालयीन शिक्षक संकाय, कर्मचारी एवं वि.वि. महिला क्लब म्यूजीकल चेयर रेस प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त विजेताओं का ट्राफी द्वारा सम्मान – **प्रथम स्थान – डॉ. अफरोज वेगम** **द्वितीय स्थान – श्रीमति अनीता सोनी** **तृतीय स्थान – डॉ. किरन माहेश्वरी**	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**
(37)	डॉ. हरीसिंह गौर के जीवन पर आधारित विश्वविद्यालय, महाविद्यालय एवं स्कूली स्तर पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त विद्यार्थियों का सम्मान **विश्वविद्यालय – यू.टी.डी. स्तर पर** प्रथम स्थान प्राप्त – श्री शेर सिंह लोधी, एम.ए., **यू.टी.डी., सागर** द्वितीय स्थान प्राप्त – कु. काजोल साहू, बी.ए.बी.एड., **यू.टी.डी., सागर** तृतीय स्थान प्राप्त – कु. भावना साहू, बी.ए.बी.एड., **यू.टी.डी., सागर** **महाविद्यालयीन स्तर पर** प्रथम स्थान प्राप्त – कु. निकिता जैन, टाइम्स कॉलेज आफ एजूकेशन दमोह द्वितीय स्थान प्राप्त – कु. राजनंदनी दांगी, शा.गर्ल्स पी.जी. कॉलेज सागर तृतीय स्थान प्राप्त – श्री अंकुर भारती, बी.टी.आई.टी.ई. कॉलेज, सागर **स्कूल स्तर – कक्षा 6 से 8** प्रथम स्थान प्राप्त – शानवी सेन, केन्द्रीय विद्यालय कं. 04 सागर द्वितीय स्थान प्राप्त – शुभ सक्सेना, केन्द्रीय विद्यालय कं. 04 सागर तृतीय स्थान प्राप्त – अरमान वाल्मिकी, केन्द्रीय विद्यालय कं. 04 सागर	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**

	स्कूल स्तर – कक्षा 9 से 12 प्रथम स्थान प्राप्त – स्नेहा साहू, शा. एक्सीलेन्स स्कूल, सागर द्वितीय स्थान प्राप्त – रूचि काछी, आर्य कन्या हा.से. स्कूल, सागर तृतीय स्थान प्राप्त – प्राची पटैल, आर्य कन्या हा.से. स्कूल, सागर	
(38)	डॉ. हरीसिंह गौर के जीवन पर आधारित विश्वविद्यालय, महाविद्यालय एवं स्कूली स्तर पर आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त विद्यार्थियों का सम्मान **विश्वविद्यालय – यू.टी.डी. स्तर** प्रथम स्थान प्राप्त – श्री अंकित विश्वकर्मा, फाइन आर्ट, यू.टी.डी. सागर द्वितीय स्थान प्राप्त –कु. प्रियंका यादव, बी.एस.सी.बी.एड., यू.टी.डी. सागर तृतीय स्थान प्राप्त – कु. अतिशय जैन, बी.बी.ए., यू.टी.डी. सागर **महाविद्यालयीन स्तर** प्रथम स्थान प्राप्त – कु. खुशी सोनी, गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, सागर द्वितीय स्थान प्राप्त– कु. साक्षी सोनी, टाइम्स कॉलेज आफ एजूकेशन दमोह तृतीय स्थान प्राप्त – कु. रिया जैन, शा. आई.टी.आई. कॉलेज सागर **स्कूल स्तर – कक्षा 1 से 5** प्रथम स्थान प्राप्त – मीहल भारके, केन्द्रीय विद्यालय क्रं. 04, सागर द्वितीय स्थान प्राप्त– अकिरा अरविन्द, केन्द्रीय विद्यालय क्रं. 04, सागर तृतीय स्थान प्राप्त – अमितेश पंडा, केन्द्रीय विद्यालय क्रं. 04, सागर **स्कूल स्तर – कक्षा 6 से 8** प्रथम स्थान प्राप्त – महक सूर्यवंशी, केन्द्रीय विद्यालय क्रं. 04, सागर द्वितीय स्थान प्राप्त– गौरी भारके, केन्द्रीय विद्यालय क्रं. 04, सागर तृतीय तृतीय स्थान प्राप्त – इप्सिता अपराजिता पंडा, केन्द्रीय विद्यालय क. 04, सागर **स्कूल स्तर – कक्षा 9 से 12** प्रथम स्थान प्राप्त – ललित लोधी, शासकीय एक्सीलेन्स स्कूल, सागर द्वितीय स्थान प्राप्त– कीर्ति कोरी, शासकीय एक्सीलेन्स स्कूल, सागर तृतीय स्थान प्राप्त – अंशिका साहू, शासकीय एक्सीलेन्स स्कूल, सागर	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**
(39)	कोविड–19 टीकाकरण में विशेष योगदान के लिये चिकित्सा अधिकारी एवं चिकित्सा कर्मियों का प्रमाण पत्र द्वारा सम्मान डॉ. किरण माहेश्वरी, प्रभारी चिकित्सा अधकारी डॉ. भूपेन्द्र पटेल, चिकित्सा अधिकारी श्री अरूण कुमार सिरोठिया, ड्रेसर श्री अर्जुन रैकवार, डी.डी.टी. बॉय	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**

	श्री भगत सिंह ठाकुर, भृत्य श्री जय प्रकाश, डी.डी.टी. बॉय श्रीमति ममता पटेल, भृत्य श्री विनोद, हेड अपमार्जक श्री प्रमोद राम, लेब टेक्नीशियन से.नि. श्री राकेश ओमरे, कम्पाउण्डर से.नि. श्री करोड़ीलाल रोहित, कम्पाउण्डर से.नि. श्री शेख मुहम्मद आरिफ, हिन्दी आशुलिपिक **नोट :– उक्त प्रमाण पत्र डॉ. किरण माहेश्वरी, (प्र.) चिकित्सा अधिकारी प्राप्त करेंगी।**	
(40)	विश्वविद्यालय परिसर में चन्दन के पेड़ काटने वाले चोरों को पकडने में साहस एवं जागरूकता का प्रदर्शन करने हेतु विश्वविद्यालय के सुरक्षा कर्मियों को प्रसंशा पत्र द्वारा सम्मान श्री शंकर लाल पटेल, श्री राजकुमार रजक, श्री मन्नूलाल रजक, श्री संतोष लोड़कर, श्री प्रमोद कन्नोजिया एवं श्री देवेन्द्र अहिरवार **नोट :– उक्त प्रशंसा पत्र डॉ. हिमांशु यादव, सुरक्षा अधिकारी प्राप्त करेंगे।**	**माननीय कुलपति जी एवं अतिथियों द्वारा**

गौर जयंती 2021

परीक्षा परिणाम घोषित होने के उपरान्त प्रदान किये जाने वाले पुरूस्कार

(1)	श्री राजेन्द्र नारद द्वारा प्रदत्त राशि से **कु. संगीता नारद मेधा छात्रवृत्ति,** बी.एस.सी. प्रथम वर्ष बॉयलाजी समूह	
(2)	डॉ. श्रीमति कुसुम श्रीवास्तव द्वारा प्रदत्त राशि से डॉ. हर्षबहादुर श्रीवास्तव स्मृति छात्रवृत्ति, एम.ए. पूर्वाद्व अंग्रेजी	
(3)	डॉ. श्रीमती शोभाशंकर द्वारा प्रदत्त राशि से आचार्य प्रेमशंकर स्मृति छात्रवृत्ति एम.ए. पूर्वाद्व हिन्दी	
(4)	श्रीमती उषा मिश्र द्वारा प्रदत्त राशि से प्रो.अर्जुन मिश्र छात्रवृत्ति एम.ए. पूर्वाद्व (दर्शन शास्त्र)	
(5)	प्रो0 एच.एस.माहेश्वरी द्वारा प्रदत्त राशि से .श्रीमती पुष्पा माहेश्वरी स्मृति छात्रवृत्ति एम.ए./एस.एस.सी. (पूर्वाघ्द्व) अपराध शास्त्र	
(6)	श्रीमती ज्योत्सना दुबे द्वारा प्रदत्त राशि से श्री सर्वेश्वर दुबे स्मृति प्रोत्साहन राशि बी0लिब. साइंस/एम.लिब. साइंस	
(7)	डॉ0(श्रीमती) मीना पिंपलापुरे द्वारा प्रदत्त राशि से स्व0 डॉ0 वनमाला भवालकर छात्रवृत्ति, एम. ए. पूर्वार्द्ध संस्कृत	
(8)	डॉ0(श्रीमती) मीना पिंपलापुरे द्वारा प्रदत्त राशि से स्व0 श्री बाबूराव पिंपलापुरे छात्रवृत्ति एम. काम. पूर्वार्द्ध	
(9)	श्रीमति लीला सिंह द्वारा प्रदत्त राशि से श्री सी.बी.सिंह स्मृति स्वर्ण पदक एम.ए./एम.एस–सी. मानव विज्ञान	

न्यूज़ गैलरी

पत्रकार वार्ता । कुलपति ने दी गौर सप्ताह में होने वाले कार्यक्रमों की जानकारी

डॉ. गौर के विराट व्यक्तित्व के प्रति जनमानस की भावनात्मक अभिव्यक्ति है 'गौर उत्सव': कुलपति

सागर, आचरण संवाददाता।

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के संस्थापक महान शिक्षाविद् एवं प्रख्यात विधिवेत्ता, संविधान सभा के सदस्य एवं दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में 21 नवंबर से 26 नवंबर तक 'गौर उत्सव' का आयोजन किया जा रहा है। इस संबंध में आयोजित पत्रकार-वार्ता में पत्रकारों को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि डॉ. गौर का व्यक्तित्व बहुआयामी है. समाज और राष्ट्र के निर्माण में उनकी भूमिका और उनके अवदान को किसी एक कार्य से नहीं जाना जा सकता. उनके समग्र अवदान को स्मरण करने और उनके द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलने का संकल्प लेने के लिए यह आवश्यक है कि उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को हमारी युवा पीढ़ी न केवल समझे बल्कि उसे आत्मसात भी करें। विश्वविद्यालय डॉ. गौर के अवदान को विद्यार्थियों, समुदाय और जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से गौर उत्सव को छह दिनों तक विभिन्न कार्यक्रम का आयोजन कर रहा है। सागर शहर निवासी और विश्वविद्यालय परिवार अपने पितृ पुरुष की जन्म जयन्ती को मिलजुलकर उत्साहपूर्वक मनायेगा. कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि डॉ. गौर के संकल्प और सपनों को साकार करना हमारा दायित्व है. हमें इसके लिए भरपूर ऊर्जा और उत्साह से काम करना है. गौर उत्सव को यादगार बनाने के उद्देश्य से पूरे सप्ताह कई अकादमिक-सांस्कृतिक गतिविधियाँ आयोजित की जाएगी। गौर उत्सव के दौरान ही विधि विभाग के मूट कोर्ट एवं समाज विज्ञान एवं मानविकी व्याख्यान भवन का लोकार्पण किया जायेगा। इस अवसर पर गौर व्याख्यानमाला के अंतर्गत आमंत्रित अतिथियों के विशेष व्याख्यान भी आयोजित किये गये हैं। उन्होंने कहा कि यह केवल विश्वविद्यालय का आयोजन नहीं बल्कि पूरे सागर शहर का आयोजन है। गौर उत्सव के विविध आयोजनों में शहर और विश्वविद्यालय से जुड़े प्रत्येक नागरिक का स्वागत और अभिनन्दन है। गौर उत्सव आयोजन के मुख्य समन्वयक प्रो. आर.के. त्रिवेदी ने छह दिवसीय आयोजन की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन मीडिया अधिकारी डॉ. विवेक जायसवाल ने किया तथा आभार कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने ज्ञापित किया। इस अवसर पर उपकुलसचिव सतीश कुमार, डॉ. पंकज तिवारी, डॉ. संजय शर्मा, डॉ. राकेश सोनी, डॉ. हिमांशु कुमार, माधव चंद्र आदि उपस्थित थे।

गौर जयंती पर रेडियो पर होंगे विशेष प्रसारण

- आकाशवाणी सागर से 20 से 26 नवम्बर तक प्रतिदिन गौर जयंती का प्रचार-प्रसार किया जाएगा है।
- 25 नवंबर की रात्रि 8.30 बजे कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता जी की वार्ता के साथ गौर गीत।
- 26 नवम्बर को सुबह 9.30 बजे विशेष रूपक, ज्ञानदानी सागर रत्न डॉ.गौर का प्रसारण होगा।
- स्वराज भवन भोपाल द्वारा निर्मित डॉ.गौर के व्यक्तित्त्व पर आधारित 'वतन का राग' कार्यक्रम का प्रसारण रविवार सुबह 9.30 बजे एफ एम गोल्ड दिल्ली, मुंबई के साथ विविध भारती, एफ एम लखनऊ, इंदौर, भोपाल, जबलपुर से एवं गुरुवार को सुबह 9.30 बजे मध्यप्रदेश के सभी आकाशवाणी केंद्रों से प्रसारित होगा
- स्वराज भवन भोपाल द्वारा वतन का राग कार्यक्रम के अंतर्गत देश के सौ से अधिक कम्युनिटी रेडियो को भी डॉ. गौर पर आधारित कार्यक्रम ऑन लाईन संप्रेषित किया गया है।

आज के आयोजित कार्यक्रम

महाविद्यालयीन छात्रों के लिए निबंध एवं चित्रकला प्रतियोगिता- शासकीय गर्ल्स डिग्री कॉलेज

स्कूली विद्यार्थियों के लिए निबंध एवं चित्रकला प्रतियोगिता- महारानी लक्ष्मीबाई कन्या विद्यालय, सागर

निबंध प्रतियोगिता- दोपहर 12.00 से 01.00 बजे

चित्रकला प्रतियोगिता- दोपहर 02.00 से 04.00 बजे

विश्वविद्यालय शिक्षकों का काव्य पाठ-

दोपहर 03.00 से 05.00 बजे तक , स्वर्ण जयन्ती सभागार, विवि

एक माह में जानकारी भेजेंगे डॉ. गौर को भारत रत्न दिलाने

सागर, आचरण। डॉ. हरीसिंह गौर को भारत रत्न दिलाने के लिए सागर से अब तक जो भी प्रयास हुए हैं उनकी जानकारी संग्रहित कर एक माह के अंदर कुलपति के हस्ताक्षर से पत्र सहित संपूर्ण जानकारी राष्ट्रपति और केन्द्र सरकार को भेजी जायेगी। यह बात विवि के कुल सचिव संतोष सहगौरा ने पत्रकारों से चर्चा के दौरान कही। उन्होंने कहा कि डॉ. गौर को भारत रत्न दिलाने के संबंध में सागर सहित विभिन्न स्थानों पर सामाजिक व राजनैतिक संगठनों की ओर से जो भी प्रयास हुए हैं। विवि प्रशासन की तरफ से इस संबंध में जो भी पत्राचार हुआ है। वह पूरी जानकारी संग्रहित कर कुलपति के माध्यम से वह संपूर्ण जानकारी राष्ट्रपति और केन्द्र सरकार को भेजेंगे जिससे डॉ. गौर को भारत रत्न दिलाने के प्रयास सफल हो सकें।

सागर विवि में कल से मनेगा छह दिन का गौर उत्सव, मूट कोर्ट का लोकार्पण 23 को

सागर | डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में इस बार छह दिन का गौर उत्सव मनाया जा रहा है। उत्सव की शुरुआत 21 नवंबर से की जाएगी। इस बार गौर उत्सव में मूट कोर्ट का लोकार्पण 23 नवंबर को होगा। वहीं, व्याख्यान, सांस्कृतिक कार्यक्रम, शोभायात्रा और खेल प्रतियोगिताएं आदि भी आयोजित की जाएंगी। हालांकि दीक्षांत समारोह के आयोजन को लेकर विश्वविद्यालय प्रशासन ने अपना मन बदल दिया है। अब दीक्षांत के लिए 20 नवंबर से 5 दिसंबर तक यूजी से लेकर पीएचडी उपाधि प्राप्त विद्यार्थी वेबसाइट पर रजिस्ट्रेशन करेंगे। इसके बाद 30 वें दीक्षांत समारोह की तारीख तय होगी।

गौर जयंती पर स्कूली बच्चों की सहभागिता करें सुनिश्चित

नवभारत न्यूज

सागर 19 नवम्बर. डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि डॉ. गौर के संकल्प और सपनों को साकार करना दायित्व है.

विवि अपनी गौरवशाली परम्परा को मजबूत करते हुए सर डॉ. हरीसिंह गौर की 152वीं जयंती मनाने जा रहा हैं. राष्ट्र निर्माण में उनकी भूमिका को विद्यार्थियों, समुदाय और जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से गौर उत्सव को छह दिनों तक विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जाएंगे. शहर के स्कूली एवं महाविद्यालय के बच्चों की सहभागिता भी विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से सुनिश्चित की जाएगी. गौर उत्सव को यादगार बनाने के उद्देश्य से विधि विभाग के मूट कोर्ट एवं समाज विज्ञान एवं मानविकी व्याख्यान भवन का लोकार्पण भी किया जायेगा. उन्होने कार्यक्रमों में शिक्षकों, अधिकारीयों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों का सहयोग की अपील की है.

विवि में आज से उत्सवः डॉ. गौर साहब को भारत रत्न दिलाने के लिए एक माह में बनेगा प्रस्ताव

शोभायात्रा से लेकर कवि सम्मेलन, खेल, व्याख्यान से विवि के साथ शहर को जोड़ने का प्रयास

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. गौर भारत रत्न दिलाने की मांग का मामला मेरे संज्ञान में आया है। मैं अब तक हुए प्रयासों और गौर साहब से जुड़े कार्यों का प्रस्ताव बनाकर एक माह के भीतर हाँ राष्ट्रपति के समक्ष लेकर जाऊंगी। मेरा पूरा प्रयास रहेगा कि गौर साहब को भारत रत्न मिले। क्योंकि वे इसके सच्चे हकदार भी हैं। यह बात डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने शनिवार को आयोजित पत्रकार वार्ता में कही। गौर उत्सव को लेकर हुई पत्रकार वार्ता में गौर साहब को भारत रत्न दिलाने के लिए चल रहे विश्वविद्यालय के प्रयासों को लेकर एक सवाल कुलपति से किया गया था। कुलपति ने बताया इस बार डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के संस्थापक और महान दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर की 152 वीं जन्म जयंती को बड़ी धूमधाम से मनाने की तैयारी है। शोभायात्रा से लेकर कवि सम्मेलन, खेल, व्याख्यान और सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे। इस दौरान गौर उत्सव आयोजन के मुख्य समन्वयक प्रो. आरके त्रिवेदी ने छह दिवसीय आयोजन की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन मीडिया अधिकारी डॉ. विवेक जायसवाल ने किया और आभार कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने माना। इस अवसर पर उपकुलसचिव सतीश कुमार, डॉ. पंकज तिवारी, डॉ. संजय शर्मा, डॉ. राकेश सोनी, डॉ. हिमांशु कुमार, समर्थ दीक्षित और माधव चंद्र आदि उपस्थित थे।

गौर के सपनों का सागर जैसे विषयों पर होगी परिचर्चा, खेलों में टग ऑफ वार भी शामिल

- 21 नवंबर- एमएलबी स्कूल क्रमांक-1, आर्ट्स एंड कॉमर्स व गर्ल्स कॉलेज में चित्रकला और निबंध प्रतियोगिता का आयोजन, विवि के शिक्षकों का काव्य पाठ
- 22 नवंबर- विश्वविद्यालय के खेल मैदान पर क्रिकेट, कबड्डी और टग ऑफ वार जैसी प्रतियोगिताओं का आयोजन।
- 23 नवंबर- मूट कोर्ट का लोकार्पण, हाईकोर्ट के पूर्व चीफ जस्टिस अमरेश्वर प्रताप साही का व्याख्यान।
- 24 नवंबर- भारतीय शिक्षण मंडल के राष्ट्रीय संगठन मंत्री मुकुल मुकुंद कानिटकर का व्याख्यान, विद्यार्थियों के फ्यूजन आर्ट, पेंटिंग और क्राफ्ट की प्रदर्शनी।
- 25 नवंबर- डॉ. गौर के सपनों का सागर विषय पर परिचर्चा, अखिल भारतीय कवि सम्मेलन।
- 26 नवंबर- गौर प्रतिमा पर माल्यार्पण, शोभायात्रा और गौर जयंती का मुख्य समारोह।

'डा. गौर के व्यक्तित्व के प्रति जनमानस की भावनात्मक अभिव्यक्ति है गौर उत्सव'

सागर (नवदुनिया प्रतिनिधि)। डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के संस्थापक एवं संविधान सभा के सदस्य दानवीर डा. सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 21 से 26 नवंबर तक गौर उत्सव का आयोजन किया जाएगा। देश में कई महान लोगों के नाम से शैक्षणिक संस्थान हैं, लेकिन सागर विवि जैसा उत्साह कहीं नहीं दिखता है। इसलिए गौर उत्सव के दौरान विवि ही नहीं बल्कि शहर के अन्य शैक्षणिक संस्थानों में भी कार्यक्रम होंगे।

पत्रकारों को जानकारी देती हुईं कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता। • नवदुनिया

विश्वविद्यालय में आज यह कार्यक्रम होंगे

- महाविद्यालयीन छात्रों के लिए निबंध एवं चित्रकला प्रतियोगिता शासकीय गर्ल्स डिग्री कॉलेज में होगी
- स्कूली विद्यार्थियों के लिए निबंध एवं चित्रकला प्रतियोगिता महारानी लक्ष्मीबाई कन्या विद्यालय मे होगी
- निबंध प्रतियोगिता दोपहर 12 से एक बजे, चित्रकला प्रतियोगिता दोपहर दो से चार बजे तक होगी
- विश्वविद्यालय शिक्षकों का काव्य पाठ दोपहर तीन से पांच बजे तक स्वर्ण जयन्ती सभागार मे होगा।

गौर जयंती पर रेडियो पर होंगे विशेष प्रसारण

- आकाशवाणी सागर से 20 से 26 नवंबर तक प्रतिदिन गौर जयंती का प्रचार-प्रसार किया जाएगा
- 25 नवंबर की रात 8:30 बजे कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की वार्ता के साथ गौर गीत
- 26 नवंबर को सुबह 9:30 बजे विशेष रूपक, ज्ञानदानी सागर रत्न डा. गौर का प्रसारण होगा।
- डा. गौर के व्यक्तित्व पर आधारित वतन का राग कार्यक्रम का प्रसारण रविवार सुबह 9:30 बजे होगा।

आयोजन के संबंध में पत्रकारों को जानकारी देते हुए कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि डा. गौर का व्यक्तित्व बहुआयामी है। समाज और राष्ट्र के निर्माण में उनकी भूमिका और उनके अवदान को किसी एक कार्य से नहीं जाना जा सकता। उनके समग्र अवदान को स्मरण करने और उनके द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलने का संकल्प लेने के लिए यह आवश्यक है कि उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को हमारी युवा पीढ़ी न केवल समझे बल्कि उसे आत्मसात भी करें। डा. गौर के अवदान को विद्यार्थियों, समुदाय और जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से गौर उत्सव को छह दिनों तक विभिन्न कार्यक्रम का आयोजन कर रहा है। सागर शहर निवासी और विश्वविद्यालय परिवार अपने पितृ पुरुष की जन्म जयन्ती को मिलजुलकर उत्साहपूर्वक मनाएगा। कुलपति प्रो. गुप्ता ने कहा कि डा. गौर के संकल्प और सपनों को साकार करना हमारा दायित्व है।

मूट कोर्ट एवं मानविकी व्याख्यान भवन का होगा लोकार्पण: गौर उत्सव के दौरान ही विधि विभाग के मूट कोर्ट एवं समाज विज्ञान एवं मानविकी व्याख्यान भवन का लोकार्पण किया जाएगा। इस अवसर पर गौर व्याख्यानमाला के अंतर्गत आमंत्रित अतिथियों के विशेष व्याख्यान भी होंगे। उन्होंने कहा कि यह केवल विवि का आयोजन नहीं बल्कि पूरे सागर शहर का आयोजन है।

गौर उत्सव के विविध आयोजनों में शहर और विवि से जुड़े प्रत्येक नागरिक का स्वागत है। उन्होंने कहा कि हम लोग डा. गौर को भारतरत्न दिलाने के लिए एक बार फिर से प्रयास शुरू करेंगे। कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने कहा कि विवि प्रशासन द्वारा सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। अकेले सागर ही नहीं बल्कि देश के अन्य संस्थानों में भी गौर जयंती मनाने की सूचनाएं व शुभकामनाएं मिल रही हैं। शहरवासी विवि के सभी आयोजनों में शामिल होकर इसे सफल बनाएं।

गौर उत्सव आयोजन के मुख्य समन्वयक प्रो. आरके त्रिवेदी ने छह दिवसीय आयोजन की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की।

कार्यक्रम का संचालन मीडिया अधिकारी डा. विवेक जायसवाल ने किया व आभार कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने ज्ञापित किया। इस अवसर पर उपकुलसचिव सतीश कुमार, डा. पंकज तिवारी, डा. संजय शर्मा, डा. राकेश सोनी, डा. हिमांशु कुमार, माधव चंद्र आदि उपस्थित थे।

आज से समूचे शहर के गौरमय होने का शुभारंभ, गौर जयंती तक आयोजनों की चरणबद्ध श्रृंखला

- 21 से 26 नवंबर तक मनाया चलेगा गौर उत्सव सप्ताह
- कार्यक्रमों के माध्यम से सभी को एक कड़ी में पिरोने का प्रयास

जागरण न्यूज, सागर

महान् शिक्षाविद्, प्रख्यात विधिवेत्ता, संविधान सभा के सदस्य, सागर विवि के संस्थापक और दानवीर डॉ.हरीसिंह गौर के स्मरण में रविवार से समूचा शहर गौरमय होना शुरू हो जाएगा। शहर ही क्यों, रेडियो प्रसारणों के माध्यम से डॉ.गौर आकाश पर भी छाए रहेंगे। आयोजनों की बेला 26 नवंबर तक यानी गौर जयंती तक चलेगी। गौर उत्सव सप्ताह की यह अनूठी पहल डॉ.गौर की 152वीं जयंती के मौके पर पहली बार की जा रही है। तमाम तरह के कार्यक्रम चलते रहेंगे और सभी के लिए भागीदारी का अवसर मिलेगा। शनिवार को गौर उत्सव सप्ताह को लेकर कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता ने पत्रकारों से संवाद किया। इस मौके पर मौजूद गौर उत्सव आयोजन के मुख्य समन्वयक प्रो.आरके त्रिवेदी ने कार्यक्रमों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि 21 नवंबर को शुरुआत महाविद्यालयीन एवं स्कूली विद्यार्थियों के लिए प्रतियोगिता से होगी। डॉ.गौर की जीवनी पर आधारित निबंध एवं चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन दोपहर 12 बजे से 1 बजे तक एवं दोपहर 2 बजे से शाम 4 बजे तक होगा। प्रतियोगिता कॉलेज विद्यार्थियों के लिए शासकीय गर्ल्स डिग्री कॉलेज और स्कूली विद्यार्थियों के लिए एमएलबी स्कूल में आयोजित की जाएगी। वहीं रविवार को दोपहर 3 बजे से शाम 5 बजे तक विश्वविद्यालयीन शिक्षकों का काव्य पाठ होगा। यह कार्यक्रम विवि के स्वर्ण जयंती सभागार में होगा। श्री त्रिवेदी ने सभी कार्यक्रमों की जानकारी दी जो गौर जयंती तक चलेंगे। इसमें मुख्य समारोह के साथ अखिल भारतीय कवि सम्मेलन, लोकार्पण कार्यक्रम, गौर व्याख्यानमाला शामिल हैं।

व्यक्ति नहीं, व्यक्तित्व हैं डॉ.गौर : कुलपति

प्रेसवार्ता में पत्रकारों से चर्चा करते हुए कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता ने कहा कि डॉ.गौर अमर हैं। वे आज भी अपने विचारों से जिंदा हैं। हम इस बार उनकी 152वीं जयंती मना रहे हैं और उम्मीदों के साथ इस बार कुछ नवाचार सामने आएंगे। उन्होंने कहा कि डॉ.हरीसिंह गौर एक व्यक्ति नहीं, विराट् व्यक्तित्व हैं। गौर उत्सव के बारे में कुलपति ने कहा कि यह आयोजन विवि परिवार पूरे शहर के साथ मिलकर कर रहा है। स्कूलों, कॉलेजों, संस्थाओं के साथ समूचा शहर इससे जुड़ेगा। गौर जयंती को केवल एक कार्यक्रम नहीं बल्कि समागम बनाने का प्रयास किया जा रहा है। गौरमय शहर के लिए छह दिवसीय उत्सव में सांस्कृतिक प्रस्तुति, चिंतन, प्रतियोगिताएं, साहित्यिक आयोजन, खेलकूद जैसे आयोजन सब के लिए हैं। उन्होंने कहा कि इसमें पूरे शहर को आमंत्रित किया जा रहा है और उम्मीद है कि शहरवासी बड़ी संख्या में इनसे जुड़ेंगे।

गौर जयंती पर रेडियो से विशेष प्रसारण

आकाशवाणी सागर से 20 से 26 नवम्बर तक प्रतिदिन गौर जयंती का स्पॉट प्रसारित हो रहा है। 25 नवंबर की रात्रि 8.30 बजे कुलपति की वार्ता के साथ गौर गीत, 26 नवम्बर को सुबह 9.30 बजे विशेष रूपक ज्ञानदानी सागर रत्न डॉ. गौर का प्रसारण होगा। स्वराज भवन भोपाल द्वारा निर्मित डॉ. गौर के व्यक्तित्व पर आधारित वतन का राग कार्यक्रम का प्रसारण रविवार सुबह 9.30 बजे एफएम गोल्ड दिल्ली, मुंबई के साथ विविध भारती एफएम लखनऊ, इंदौर, भोपाल, जबलपुर से एवं गुरुवार को सुबह 9.30 बजे मध्यप्रदेश के सभी आकाशवाणी केंद्रों से प्रसारित होगा। स्वराज भवन भोपाल द्वारा वतन का राग कार्यक्रम के अंतर्गत देश के सौ से अधिक कम्युनिटी रेडियो को भी डॉ. गौर पर आधारित कार्यक्रम ऑन लाईन संप्रेषित किया गया है।

सर गौर उत्सव का आगाज आज से

स्कूल-कॉलेजों में चित्रकला व निबंध स्पर्धा, स्वर्ण जयंती सभागार में काव्य पाठ से होगी शुरूआत

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के संस्थापक सर गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में रविवार से 26 नवंबर तक गौर उत्सव का आयोजन किया जा रहा है। आयोजन से पूर्व शनिवार को विवि में एक प्रेसवार्ता का आयोजन किया गया, जिसमें कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कार्यक्रम की विस्तार से जानकारी दी।

यह कार्यक्रम 6 दिन तक आयोजित किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि गौर का व्यक्तित्व बहुआयामी है। समाज और राष्ट्र के निर्माण में उनकी भूमिका और उनके अवदान को किसी एक कार्य से नहीं जाना जा सकता। उनके समग्र अवदान को स्मरण करने और उनके द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलने के संकल्प लेने के लिए यह आवश्यक है कि उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को हमारी युवा पीढ़ी न केवल समझे बल्कि उसे आत्मसात भी करें।

डॉ. गौर के अवदान को विद्यार्थियों, समुदाय और जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से गौर उत्सव को छह दिनों का किया गया है ताकि सागर शहर निवासी और विश्वविद्यालय परिवार अपने पितृ पुरुष की जन्म जयन्ती को मिलजुलकर उत्साहपूर्वक मनाएगा।

रेडियो पर होगा विशेष प्रसारण

सागर. आकाशवाणी सागर से 20 से 26 नवम्बर तक प्रतिदिन गौर जयंती का स्पॉट प्रसारित हो रहा है। 25 नवंबर की रात्रि 8.30 बजे कुलपति की वार्ता के साथ गौर गीत, 26 नवम्बर को सुबह 9.30 बजे विशेष रूपक ज्ञानदानी सागर र% डॉ.गौर का प्रसारण होगा। स्वराज भवन भोपाल द्वारा निर्मित डॉ. गौर व्यक्तित्व पर आधारित वतन का राग कार्यक्रम का प्रसारण रविवार सुबह 9.30 बजे एफ एम गोल्ड दिल्ली, मुंबई के साथ विविध भारती एफएम लखनऊ, इंदौर, भोपाल, जबलपुर से व गुरुवार को सुबह 9.30 बजे मध्यप्रदेश के सभी

आकाशवाणी केंद्रों से प्रसारित होगा। स्वराज भवन भोपाल द्वारा वतन का राग कार्यक्रम के अंतर्गत देश के सौ से अधिक कम्युनिटी रेडियो को भी डॉ गौर पर आधारित कार्यक्रम ऑन लाईन संप्रेषित किया गया है।

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि डॉ. गौर के संकल्प और सपनों को साकार करना हमारा दायित्व है। हमें इसके लिए भरपूर ऊर्जा और उत्साह से काम करना है। गौर उत्सव को यादगार बनाने के उद्देश्य से पूरे सप्ताह कई अकादमिक.सांस्कृतिक गतिविधियाँ आयोजित की जाएगी। गौर उत्सव के दौरान ही विधि विभाग के मूट कोर्ट, समाज विज्ञान व मानविकी व्याख्यान भवन का लोकार्पण किया जायेगा।

मुख्य समन्वयक प्रो. आरके त्रिवेदी ने छह दिवसीय आयोजन की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन मीडिया अधिकारी डॉ. विवेक जायसवाल ने किया तथा आभार कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने माना।

आज यह होंगे कार्यक्रम

शासकीय गर्ल्स डिग्री कॉलेज में छात्रों के लिए निबंध एवं चित्रकला प्रतिगोगिता, महारानी लक्ष्मीबाई कन्या विद्यालय में निबंध व चित्रकला प्रतियोगिता। दोपहर 3 से 5 बजे विवि के स्वर्ण जयंती सभागार में काव्य पाठ।

डॉ गौर के विराट व्यक्तित्व के प्रति जनमानस की भावनात्मक अभिव्यक्ति है गौर उत्सवः कुलपति

गौर जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित गौर उत्सव के संबंध में हुई पत्रकार वार्ता

सागर(एस.बी.न्यूज)। डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के संस्थापक महान शिक्षाविद् एवं प्रख्यात विधिवेत्ता संविधान सभा के सदस्य डॉ सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में 21 नवंबर से 26 नवंबर तक गौर उत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इस संबंध में आयोजित पत्रकार.वार्ता कार्यक्रम में पत्रकारों को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता ने कहा कि डॉ गौर का व्यक्तित्व बहुआयामी है। समाज और राष्ट्र के निर्माण में उनकी भूमिका और उनके अवदान को किसी एक कार्य से नहीं जाना जा सकता। उनके समग्र अवदान को स्मरण करने और उनके द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलने का संकल्प लेने के लिए यह आवश्यक है कि उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को हमारी युवा पीढी न केवल समझे बल्कि उसे आत्मसात भी करे।

विश्वविद्यालय डॉ गौर के अवदान को विद्यार्थियों, समुदाय और जन.जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से गौर उत्सव को छह दिनों तक विभिन्न कार्यक्रम का आयोजन कर रहा है।सागर शहर निवासी और विश्वविद्यालय परिवार अपने पितृ पुरुष की जन्म जयन्ती को मिलजुलकर उत्साहपूर्वक मनायेगा कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता ने पत्रकारों से बातचीत में कहा कि डॉ गौर के संकल्प और सपनों को साकार करना हमारा दायित्व है हमें इसके लिए भरपूर ऊर्जा और उत्साह से काम करना है गौर उत्सव को यादगार बनाने के उद्देश्य से पूरे सप्ताह कई अकादमिक.सांस्कृतिक गतिविधियाँ आयोजित की जाएगी। गौर उत्सव के दौरान ही विधि विभाग के मूट कोर्ट एवं समाज विज्ञान एवं मानविकी व्याख्यान भवन का लोकार्पण किया जायेगाण् इस अवसर पर गौर व्याख्यानमाला के अंतर्गत आमंत्रित अतिथियों के विशेष व्याख्यान भी आयोजित किये गये है। उन्होंने कहा कि यह केवल विश्वविद्यालय का आयोजन नहीं बल्कि पूरे सागर शहर का आयोजन है। गौर उत्सव के विविध आयोजनों में शहर और विश्वविद्यालय से जुडे प्रत्येक नागरिक का स्वागत और अभिनन्दन है।

गौर उत्सव आयोजन के मुख्य समन्वयक प्रो आर के त्रिवेदी ने छह दिवसीय आयोजन की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की कार्यक्रम का संचालन मीडिया अधिकारी डॉ विवेक जायसवाल ने किया।

गौर उत्सव सप्ताह के तहत होंगे कार्यक्रम

नवभारत न्यूज

सागर 20 नवम्बर. डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152 वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में 21 नवंबर से 26 नवंबर तक गौर उत्सव सप्ताह का आयोजन किया जा रहा है.

पत्रकारों को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि डॉ. गौर का व्यक्तित्व बहुआयामी है, समाज और राष्ट्र के निर्माण में उनकी भूमिका और उनके अवदान को किसी एक कार्य से नहीं जाना जा सकता. उनके समग्र अवदान को स्मरण करने और उनके द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलने का संकल्प लेने के लिए यह आवश्यक है कि उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को हमारी युवा पीढ़ी न केवल समझे बल्कि उसे आत्मसात भी करें. आकाशवाणी सागर से 20 से 26 नवम्बर तक प्रतिदिन गौर जयंती का प्रचार.प्रसार किया जाएगा. 21 नवम्बर को महाविद्यालयीन छात्रों के लिए निबंध एवं चित्रकला प्रतिगोगिता. शासकीय गर्ल्स डिग्री कॉलेज, स्कूली विद्यार्थियों के लिए निबंध एवं चित्रकला प्रतिगोगिता-महारानी लक्ष्मीबाई कन्या विद्यालय, निबंध प्रतियोगिता. दोपहर 12 बजे से से 1 बजे, चित्रकला प्रतियोगिता. दोपहर 2 बजे से 4 बजे तक, विश्वविद्यालय शिक्षकों का काव्य पाठ. दोपहर 3 से 5 बजे तक स्वर्ण जयन्ती सभागार विवि में होगा. गौर उत्सव आयोजन के मुख्य समन्वयक प्रो. आरके त्रिवेदी ने छह दिवसीय आयोजन की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की. संचालन मीडिया अधिकारी डॉ. विवेक जायसवाल ने किया तथा आभार कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने ज्ञापित किया. इस अवसर पर उपकुलसचिव सतीश कुमार, डॉ. पंकज तिवारी, डॉ. संजय शर्मा, डॉ. राकेश सोनी, डॉ. हिमांशु कुमार, माधव चंद्र, समर्थ दीक्षित आदि उपस्थित थे.

डॉ. गौर के विराट व्यक्तित्व के प्रति जनमानस की भावनात्मक अभिव्यक्ति है गौर उत्सव : कुलपति

सागर। डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के संस्थापक एवं संविधान सभा के सदस्य दानवीर डा. सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 21 से 26 नवंबर तक गौर उत्सव का आयोजन किया जाएगा। देश में कई महान लोगों के नाम से शैक्षणिक संस्थान हैं, लेकिन सागर विवि जैसा उत्साह कहीं नहीं दिखता है। इसलिए गौर उत्सव के दौरान विवि ही नहीं बल्कि शहर के अन्य शैक्षणिक संस्थानों में भी कार्यक्रम होंगे। आयोजन के संबंध में पत्रकारों को जानकारी देते हुए कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि डा. गौर का व्यक्तित्व बहुआयामी है। समाज और राष्ट्र के निर्माण में उनकी भूमिका और उनके अवदान को किसी एक कार्य से नहीं जाना जा सकता। उनके समग्र अवदान को स्मरण करने और उनके द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलने का संकल्प लेने के लिए यह आवश्यक है कि उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को हमारी युवा पीढ़ी न केवल समझे बल्कि उसे आत्मसात भी करें। डा. गौर के अवदान को विद्यार्थियों, समुदाय और जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से गौर उत्सव को छह दिनों तक विभिन्न कार्यक्रम का आयोजन कर रहा है। सागर शहर निवासी और विश्वविद्यालय परिवार अपने पितृ पुरुष की जन्म जयन्ती को मिलजुलकर उत्साहपूर्वक मनाएगा। कुलपति प्रो. गुप्ता ने कहा कि डा. गौर के संकल्प और सपनों को साकार करना हमारा दायित्व है। हमें इसके लिए भरपूर ऊर्जा और उत्साह से काम करना है गौर उत्सव को यादगार बनाने के उद्देश्य से पूरे सप्ताह कई अकादमिक सांस्कृतिक गतिविधियां आयोजित की जाएंगी। गौर उत्सव के दौरान ही विधि विभाग के मूट कोर्ट एवं समाज विज्ञान एवं मानविकी व्याख्यान भवन का लोकार्पण किया जाएगा। इस अवसर पर गौर व्याख्यानमाला के अंतर्गत आमंत्रित अतिथियों के विशेष व्याख्यान भी होंगे। उन्होंने कहा कि यह केवल विवि का आयोजन नहीं बल्कि पूरे सागर शहर का आयोजन है। गौर उत्सव के विविध आयोजनों में शहर और विवि से जुड़े प्रत्येक नागरिक का स्वागत है। उन्होंने कहा कि हम लोग डा. गौर को भारत रत्न दिलाने के लिए एक बार फिर से प्रयास शुरू करेंगे। कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने कहा कि विवि प्रशासन द्वारा सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। अकेले सागर ही नहीं बल्कि देश के अन्य संस्थानों में भी गौर जयंती मनाने की सूचनाएं व शुभकामनाएं मिल रही हैं। शहरवासी विवि के सभी आयोजनों में शामिल होकर इसे सफल बनाएं। गौर उत्सव आयोजन के मुख्य समन्वयक प्रो. आरके त्रिवेदी ने छह दिवसीय आयोजन की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन मीडिया अधिकारी डा. विवेक जायसवाल ने किया व आभार कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने ज्ञापित किया। इस अवसर पर उपकुलसचिव सतीश कुमार, डा. पंकज तिवारी, डा. संजय शर्मा, डा. राकेश सोनी, डा. हिमांशु कुमार, माधव चंद आदि उपस्थित थे।

गौर जयंती पर रेडियो से विशेष प्रसारण

सागर, देशबन्धु। आकाशवाणी सागर से 20 से 26 नवम्बर तक प्रतिदिन गौर जयंती का स्पॉट प्रसारित हो रहा है। 25 नवंबर की रात्रि 8.30 बजे कुलपति की वार्ता के साथ गौर गीत, 26 नवम्बर को सुबह 9.30 बजे विशेष रूपक ज्ञानदानी सागर रत्न डॉ.गौर का प्रसारण होगा। स्वराज भवन भोपाल द्वारा निर्मित डॉ.गौर के व्यक्तित्व पर आधारित वतन का राग कार्यक्रम का प्रसारण रविवार सुबह 9.30 बजे एफ एम गोल्ड दिल्ली ,मुंबई के साथ विविध भारती एफ एम लखनऊ, इंदौर, भोपाल, जबलपुर से एवं गुरुवार को सुबह 9.30 बजे मध्यप्रदेश के सभी आकाशवाणी केंद्रों से प्रसारित होगा। स्वराज भवन भोपाल द्वारा वतन का राग कार्यक्रम के अंतर्गत देश के सौ से अधिक कम्युनिटी रेडियो को भी डॉ गौर पर आधारित कार्यक्रम ऑन लाईन संप्रेषित किया गया है।

स्थापना दिवस समारोह में शामिल होने मंत्री गोपाल भार्गव को कुलपति ने दिया निमंत्रण

सागर। डॉ. हरी सिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय की कुलपति नीलिमा गुप्ता ने गढ़ाकोटा पहुंचकर मंत्री गोपाल भार्गव के निज निवास पर मुलाकात कर केंद्रीय विवि सागर के 26 नवंबर को आयोजित समारोह में शामिल होने आमंत्रित किया।

डॉ. हरि सिंह गौर : शिक्षाविद व समाज सुधारक

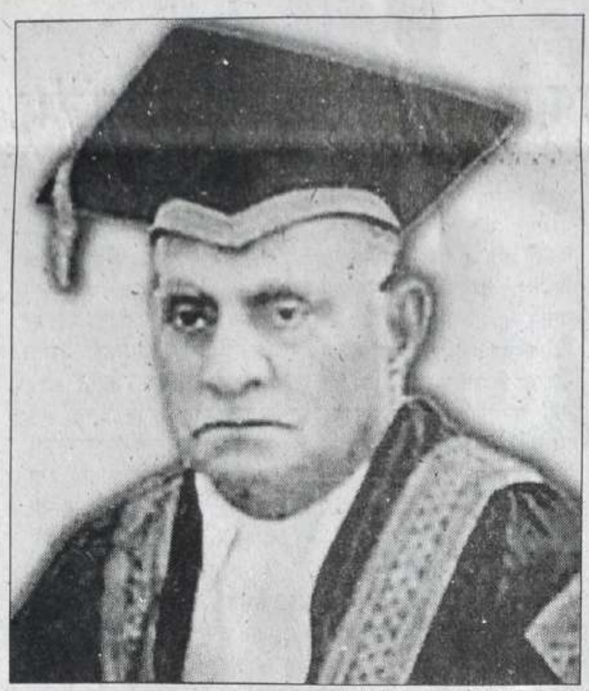

डॉ हरिसिंह गौर, (26 नवम्बर 1870 - 25 दिसम्बर 1949) सागर विश्वविद्यालय के संस्थापक, शिक्षाशास्त्री, ख्याति प्राप्त विधिवेत्ता, न्यायविद्, समाज सुधारक, साहित्यकार (कवि, उपन्यासकार) तथा महान दानी एवं देशभक्त थे. वह बीसवीं शताब्दी के सर्वश्रेष्ठ शिक्षा मनीषियों में से थे. वे दिल्ली विश्वविद्यालय तथा नागपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति रहे. वे भारतीय संविधान सभा के उपसभापति, साइमन कमीशन के सदस्य तथा रायल सोसायटी फार लिटरेचर के फेल्लो भी रहे थे.उन्होने कानून शिक्षा, साहित्य, समाज सुधार, संस्कृति, राष्ट्रीय आंदोलन, संविधान निर्माण आदि में भी योगदान दिया. उन्होंने अपनी गाढ़ी कमाई से 20 लाख रुपये की धनराशि से 18 जुलाई 1946 को अपनी जन्मभूमि सागर में सागर विश्वविद्यालय की स्थापना की तथा वसीयत द्वारा अपनी पैतृक सपत्ति से 2 करोड़ रुपये दान भी दिया था. इस विश्वविद्यालय के संस्थापक, उपकुलपति तो थे ही वे अपने जीवन के आखिरी समय (25 दिसम्बर 1949) तक इसके विकास व सहेजने के प्रति संकल्पित रहे. उनका स्वप्न था कि सागर विश्वविद्यालय, कैम्ब्रिज तथा ऑक्सफोर्ड जैसी मान्यता हासिल करे. उन्होंने ढाई वर्ष तक इसका लालन-पालन भी किया. डॉ सर हरीसिंह गौर एक ऐसा विश्वस्तरीय अनूठा विश्वविद्यालय है, जिसकी स्थापना एक शिक्षाविद् के द्वारा दान द्वारा की गई थी. डॉ. हरि सिंह गौर एक ऐेसी शख्सियत हैं, जो किसी परिचय की मोहताज नहीं है. सागर विश्वविद्यालय की स्थापना डॉ सर हरीसिंह गौर ने सन् 1946 में अपनी निजी पूंजी से की थी. यह भारत का सबसे प्राचीन तथा बड़ा विश्वविद्यालय रहा है. अपनी स्थापना के समय यह भारत का 18वां तथा किसी एक व्यक्ति के दान से स्थापित होने वाला यह देश का एकमात्र विश्वविद्यालय है.

डॉ. गौर बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के थे. प्राइमरी के बाद इन्होनें दो वर्ष मैं ही आठवीं की परीक्षा पास कर ली जिसके कारण इन्हैं सरकार से 2रुपये की छात्र वृति मिली जिसके बल पर ये जबलपुर के शासकीय हाई स्कूल गये. लेकिन मैट्रिक में ये फेल हो गये जिसका कारण था एक अनावश्यक मुकदमा. इस कारण इन्हें वापिस सागर आना पड़ा दो साल तक काम के लिये भटकते रहे फिर जबलपुर अपने भाई के पास गये जिन्होंने इन्हें फिर से पढ़ने के लिये प्रेरित किया.

डॉ. गौर फिर मैट्रिक की परीक्षा में बैठे और इस बार ना केवल स्कूल मैं बल्कि पूरे प्रान्त में प्रथम आये. इन्हें 50 रुपये नगद एक चांदी की घडी एवं बीस रूपये की छात्रवृति मिली. अगे की शिक्षा के लिये वे हिलसप कॉलेज मैं भर्ती हुये. पूरे कॉलेज में अंग्रेजी एव इतिहास मैं ऑनर्स करने वाले ये एकमात्र छात्र थे. 1909 में उनकी भारतीय दंड संहिता की तुलनात्मक विवेचना प्रकाशित हुई जो 3000 पृष्ठ की दो भागों में विभाजित पुस्तक थी. अंग्रेजी भाषा में इस विषय पर लिखी ये सर्वप्रथम पुस्तक आज भी नवयुवक वकीलों के लिये कारगर है. 1921 में जब दिल्ली विश्वविधालय की स्थापना हुई तो डॉ. गौर इसके प्रथम कुलपति बने 1924 तक वो इस पद पर रहे. 1928 एवं 1936 में वह नागपुर विश्वविधालय के कुलपति रहे. इंग्लैंड में ब्रिटिश साम्राज्य के अंतर्गत आने वाले 27 विश्वविधालयों का महाधिवेशन भी उनकी अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ.

स्कूल-कॉलेज के विद्यार्थियों ने शब्द, चित्र और रंगों से उकेरे अपने मन के डॉ. हरीसिंह गौर

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के संस्थापक और महान दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152 वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में रविवार से शहर में छह दिवसीय गौर उत्सव का शुभारंभ हुआ। पहले दिन गर्ल्स एक्सीलेंस कॉलेज और एमएलबी स्कूल क्रमांक-1 में दोपहर 12 बजे से निबंध और चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं का विषय डॉ. गौर की जीवनी पर केंद्रित था। इस दौरान विद्यार्थियों ने शब्द, चित्र और रंगों से अपने मन के डॉ. हरीसिंह गौर को दर्शाया। प्रतियोगिता के सह-संयोजक डॉ. राजेन्द्र यादव रहे। इस दौरान सागर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलसचिव संतोष सोहगौरा और उपकुलसचिव सतीश कुमार ने प्रतियोगिता स्थल पर पहुंचकर विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया।

कुछ मन की, कुछ माटी की काव्य पाठ आयोजन में शिक्षकों ने सुनाई कविताएं : वहीं देर शाम विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयन्ती सभागार में 'कुछ मन की, कुछ माटी की' शीर्षक से शिक्षकों के काव्य पाठ का आयोजन किया गया। इस दौरान प्रो. नवीन कांगो ने गजल की प्रस्तुति दी और डॉ. गौर के जीवन-चरित्र पर कविता भी सुनाई। डॉ. राकेश सोनी ने माउथ ऑर्गन बजाते हुए गीतकार संतोष आनंद की रचना 'इक प्यार का नगमा है..... से समां बांधा। सपनों की इस नगरी में, कुछ सपने लेकर आई हूं, शीर्षक से डॉ. वन्दना राजौरिया ने अपनी रचना का पाठ किया। डॉ. पंकज तिवारी ने डॉ. गौर के अवदान पर केंद्रित कविता पाठ किया। कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने महादानी डॉ. गौर पर स्वरचित कविता सुनाई। मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि विश्वविद्यालय के शिक्षकों में अपार प्रतिभाएं हैं, उनकी प्रतिभा के हर क्षेत्र का लाभ विश्वविद्यालय को मिलना चाहिए। इस दौरान गौर उत्सव के मुख्य समन्वयक प्रो. आरके त्रिवेदी, डॉ. जीएल पुणताम्बेकर, डॉ. संजय कुमार, प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत, डॉ. कालीनाथ झा मौजूद थे।

सागर। गौर उत्सव के दौरान आयोजित प्रतियोगिता के बाद पुरस्कार बांटे गए।

आज सुबह 8.30 बजे से शुरू होंगी खेल प्रतियोगिताएं

मीडिया अधिकारी डॉ. विवेक जायसवाल ने बताया कि 22 नवंबर को पूरे दिन खेल-कूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया है। सुबह 08.30 बजे से विश्वविद्यालय के शिक्षकों और अधिकारियों के बीच 20 ओवर का मैत्री क्रिकेट मैच होगा। 11 बजे से विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए कबड्डी प्रतियोगिता रखी गई है। 11 बजे से ही विश्वविद्यालय के विद्यार्थी वॉलीबाल प्रतियोगिता में भाग लेंगे। 12 बजे से विश्वविद्यालय के महिला शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी तथा महिला क्लब के सदस्यों के लिए म्यूजिकल चेयर और दोपहर 01.30 बजे से 'टग ऑफ़ वॉर' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। सभी प्रतियोगिताएं विश्वविद्यालय के खेल मैदान पर आयोजित की जाएंगी।

विद्यार्थियों ने उकेरे अपने मन के भाव

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. गौर उत्सव के पहले दिन रविवार को विद्यार्थियों ने शब्द चित्र और रंगों से अपने मन के डॉ. हरिसिंह गौर को दर्शाया। बता दें कि डॉ. गौर 21 से 26 नवंबर तक गौर उत्सव का आयोजन किया जा रहा है।

पहले दिन महाविद्यालयीन और स्कूल के विद्यार्थियों ने डॉ. गौर की जीवनी और उनके पर केंद्रित निबंध और चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लिया। यह दोनों प्रतियोगिताएं गर्ल्स डिग्री कॉलेज और एमएलबी स्कूल में आयोजित की गई थीं। आयोजन के सह-संयोजक डॉ. राजेन्द्र यादव ने बताया कि दोनों प्रतियोगिताओं में सौ से अधिक विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की।

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने प्रतियोगिता स्थलों पर पहुँचकर प्रतिभागी विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया। इस दौरान विश्वविद्यालय के कुलसचिव संतोष सोहगौरा और उपकुलसचिव सतीश कुमार मौजूद रहे।

आज दिन भर होंगी खेल प्रतियोगिताएं

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विवि में गौर उत्सव के दूसरे दिन सोमवार को दिन भर खेल प्रतियोगिताए आयोजित की जाएंगी। मीडिया प्रभारी डॉ. विवेक जायसवाल ने बताया कि पूरे दिन खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया है। सुबह 8.30 बजे से विश्वविद्यालय के शिक्षकों और अधिकारियों के बीच 20 ओवर का मैत्री क्रिकेट मैच होगा। 11 बजे से विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए कबड्डी प्रतियोगिता रखी गई है। 11 बजे से ही विश्वविद्यालय के विद्यार्थी वालीबाल प्रतियोगिता में भाग लेंगे। 12 बजे से विश्वविद्यालय के महिला शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी तथा महिला क्लब के सदस्यों के लिए म्यूजिकल चेयर और दोपहर 1.30 बजे से टग ऑफ वॉर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है।

सर गौर की प्रतिमा का दुग्धाभिषेक

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर की जन्म जयंती को लेकर रविवार से विश्वविद्यालय ने गौर उत्सव की शुरुआत कर दी है, लेकिन प्रबंधन का ध्यान अब तक सर गौर की प्रतिमा पर पर नहीं गया। विश्वविद्यालय में लगी प्रतिमा की धूल भी नहीं हटाई। हैरानी की बात यह है कि हर रोज सर गौर की प्रतिमा के सामने से ही कुलपति से लेकर तमाम जिम्मेदार अधिकारी निकल रहे हैं, लेकिन किसी का ध्यान सर गौर की प्रतिमा पर नहीं गया। रविवार दोपहर शहर के गौर प्रेमी युवा एकत्रित हुए और विश्वविद्यालय पहुंचे, जहां उन्होंने सर गौर की प्रतिमा की सफाई करते हुए दुग्धाभिषेक कर माल्यार्पण किया। इस अवसर पर हिंदूवादी नेता कपिल स्वामी, डॉ. मनीष बोहरे, जय मिश्रा, गुड्डू यादव, सुरेन्द्र गौतम, सुरेंद्र पांडे, हरिनारायण पांडे, दीपक स्वामी, नीलेश मिनू गौतम, गौरव पांडे, राहुल नगाइच उपस्थित थे।

प्रोफेसरों ने सुनाई कविताएं, युवाओं ने प्रतिमा का किया अभिषेक

डा. गौर उत्सव शुरू ● गर्ल्स डिग्री कालेज और एमएलबी स्कूल में आयोजित की गई निबंध और चित्रकला प्रतियोगिता

शहर के युवाओं ने विवि पहुचकर डॉ. गौर की प्रतिमा की धुलाई करते हुए उनका दूध से अभिषेक किया। ● नवदुनिया

सभागार में विवि के शिक्षकों ने अपनी कविताओं व गीतों की प्रस्तुति दी। ● नवदुनिया

डॉ. गौर के जीवन पर आधारित चित्रकला व निबंध प्रतियोगिता के दौरान कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बच्चों के बीच पहुचकर उनका उत्साह बढ़ाया। ● नवदुनिया

सागर (नवदुनिया प्रतिनिधि)। डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के संस्थापक एवं दानवीर सागर सपूत डा. हरीसिंह गौर की जयंती के अवसर पर रविवार से गौर उत्सव शुरू हो गया। कार्यक्रम के पहले दिन स्कूली बच्चों ने चित्रों के माध्यम से डा. गौर के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की तो वहीं विवि के शिक्षकों ने कविताओं का पाठ कर डा. गौर को याद किया। वहीं शहर के युवाओं ने भी आगे आते हुए डा. गौर की प्रतिमा की सफाई करके उनका दूध से अभिषेक किया। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की पहल पर एक सप्ताह तक चलने वाले गौर उत्सव के दौरान उन्होंने भी कई कार्यक्रमों में पहुचकर बच्चों का उत्साह बढ़ाया।

जिले भर में 21 से 26 नवंबर तक होने वाले गौर उत्सव कार्यक्रम के पहले दिन विद्यार्थियों ने शब्द, चित्र और रंगों से अपने मन के डा. हरीसिंह गौर को दर्शाया। सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में पहले दिन महाविद्यालयीन और स्कूल के विद्यार्थियों ने डा. गौर की जीवनी और उनके पर केंद्रित निबंध और चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लिया। यह दोनों प्रतियोगिताए गर्ल्स डिग्री कॉलेज और एमएलबी स्कूल में आयोजित की गई। आयोजन के सह संयोजक डा. राजेन्द्र यादव ने बताया कि दोनों प्रतियोगिताओं में सौ से अधिक विद्यार्थियों ने शामिल होकर अपनी रचनाए प्रस्तुत की। इस दौरान विवि की ओर से डा. अरविन्द कुमार, अरविन्द गौतम मौजूद थे, लेकिन कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने यहा पहुचकर आयोजन का जायजा लिया और विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया। इस दौरान विश्वविद्यालय के कुलसचिव संतोष सोहगौरा और उपकुलसचिव सतीश कुमार मौजूद थे।

कुछ मन की, कुछ माटी कीय आयोजन में शिक्षकों ने सुनाई कविताएं : विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयंती सभागार में कुछ मन की, कुछ माटी की शीर्षक से शिक्षकों के काव्य पाठ का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि विवि के शिक्षकों में अपार प्रतिभाए हैं। उनकी प्रतिभा के हर क्षेत्र का

आयोजन

- कुलपति ने कार्यक्रमों में पहुचकर बढ़ाया बच्चों का उत्साह
- जिले में 21 से 26 नवंबर तक होने वाले आयोजित किए जाएंगे कार्यक्रम

लाभ विश्वविद्यालय को मिलना चाहिए। साथ ही शिक्षकों को भी अपनी प्रतिभाओं को निखारने का अवसर मिलना चाहिए। विवि इसके लिए सबसे सुयोग्य स्थल है। यह शिक्षकों का, शिक्षकों द्वारा और शिक्षकों के लिए किया गया आयोजन है। उन्होंने सभी शिक्षक कवियों को शुभकामनाए दीं। कार्यक्रम की शुरुआत में डा. अवधेश तोमर ने वंदना प्रस्तुत की। कार्यक्रम के संयोजक प्रो. नवीन कांगो ने स्वागत वक्तव्य दिया। इस अवसर पर गौर उत्सव के मुख्य समन्वयक प्रो. आरके त्रिवेदी भी उपस्थित थे। मीडिया अधिकारी डा. विवेक जायसवाल ने बताया कि 22 नवंबर को पूरे दिन खेल-कूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। सुबह 8:30 बजे से विश्वविद्यालय के शिक्षकों और अधिकारियों के बीच 20 ओवर का मैत्री क्रिकेट मैच होगा। 11 बजे से विवि के विद्यार्थियों के लिए कबड्डी प्रतियोगिता होगी। इसी के सामानांतर 11 बजे से ही विवि के विद्यार्थी वालीबाल प्रतियोगिता में भाग लेंगे। 12 बजे से विवि के महिला शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी व महिला क्लब के सदस्यों के लिए म्युजिकल चेयर और दोपहर 1:30 बजे से टग ऑफ वार प्रतियोगिता होगी। 22 नवंबर को आयोजित सभी प्रतियोगिताए विश्वविद्यालय के शारीरिक शिक्षा विभाग के प्रांगण में होंगी।

डा. गौर की प्रतिमा का किया दुग्धाभिषेक: शहर के युवाओं ने विवि पहुचकर डा. गौर की प्रतिमा का दुग्धाभिषेक किया। युवाओं का कहना था कि गौर उत्सव के पूर्व सर गौर के नाम पर पूरे सप्ताह कार्यक्रम होंगे, लेकिन प्रतिमा पर धूल लगी मिली तो उन्होंने यहा दूध से डा. गौर की प्रतिमा का स्नान कराया। युवाओं ने प्रतिमा की सफाई करते हुए दुग्धाभिषेक कर माल्यार्पण किया। इस अवसर पर कपिल स्वामी, डा. मनीष बोहरे, जय मिश्रा, गुड्डू यादव, सुरेन्द्र गौतम, सुरेंद्र पांडे, हरिनारायण पांडे, दीपक, नीलेश आदि मौजूद थे।

कहकशां हूं मैं, सारे सितारे मुझ में बहता दरिया हूं, सारे किनारे मुझमें

प्रो. नवीन कांगो ने बेहतरीन गजल की प्रस्तुति दी और डा. गौर के जीवन चरित्र पर कविता भी सुनाई। डा. राकेश सोनी ने माउथ ऑर्गन बजाते हुए गीतकार संतोष आनंद की रचना इक प्यार का नगमा है की प्रस्तुति देकर महफिल में समा बांध दिया। डा. वन्दना राजौरिया ने अपनी रचना का पाठ किया। डा. पंकज तिवारी ने डा. गौर के अवदान पर केंद्रित कविता पाठ किया। कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने महादानी डा. गौर पर स्वरचित कविता सुनाई। इस दौरान डा. जीएल पुण्ताम्बेकर, डा. अफरोज, डा. अफरीन खान, डा. हिमांशु, डा. संजय कुमार, प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत, डा. कालीनाथ झा, प्रो. बीके श्रीवास्तव, डा. ललित मोहन, डा. किरण आर्या, डा. शशि कुमार सिंह, डा. रामहेत गौतम, डा. नीरज उपाध्याय, डा. त्रिलोकी नाथ ने अपनी काव्य रचनाओं का पाठ किया। कार्यक्रम के अंत में वरिष्ठ प्रो. पीपी सिंह, प्रो. पीके कठल, कुलसचिव संतोष सोहगौरा और संयोजक प्रो. नवीन कांगो ने सभी शिक्षक-कवियों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। संचालन सह संयोजक डा. राजेन्द्र यादव ने किया और डा. आशुतोष ने आभार माना।

मुहिम

जीवन पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने लिखा जनप्रतिनिधियों को पत्र

डा. हरीसिंह गौर को भारत रत्न दिलाने शुरू हुआ अभियान

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

देवरी कलां, सागर विश्व विद्यालय के संस्थापक, समाज सुधारक, साहित्यकार तथा संविधान सभा के सदस्य डॉ हरिसिंह गौर के अविस्मरणीय योगदान को देखते हुए भारत रत्न सम्मान दिलाने तथा उनकी जीवनी को कक्षा पांचवीं /आठवीं के पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के लिए अभियान प्रारंभ कर दिया गया है। जनांदोलन 'मुहिम भारत रत्न डॉ हरिसिंह गौर' के अंतर्गत राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, केंद्रीय मंत्रिपरिषद, राज्यपाल, मुख्यमंत्री सहित समस्त मंत्रिपरिषद, मध्यप्रदेश के समस्त सांसद, विधायक को प्रतिमाह ईमेल के माध्यम से ज्ञापन भेजे जाएंगे। ज्ञापन भेजने का यह क्रम निरंतर एनजीओ, समाजसेवी संस्था, स्कूल, कॉलेज के छात्रों के सहयोग से मांग पूरी होने तक अनवरत रूप से जारी रहेगा। इसी क्रम में आज रविवार को दूसरा ज्ञापन एस आर आठिया द्वारा ईमेल से राष्ट्रपति के नाम एसडीएम देवरी

को भी भेजा। ज्ञापन के माध्यम से कहा गया कि डॉ हरिसिंह गौर का जन्म 26 नवंबर 1870 को मध्य प्रदेश के सागर में हुआ था इनके पिता पुलिस विभाग के कर्मचारी थे। 25 दिसम्बर 1949 को आपका निधन हो गया। उन्होंने आपकी प्राथमिक शिक्षा सागर, महाविद्यालयीन शिक्षा नागपुर तथा सन 1889 में उच्च शिक्षा हेतु इंग्लैंड गए। 1896 में आपने एम ए 1902 में एल एल एम और 1908 में एलएलडी किया। आपने अंतर विश्वविद्यालयीन शिक्षा समिति में कैंब्रिज विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया जो उस समय किसी भारतीय के लिए गर्व की बात थी। सन 1912 में वह बैरिस्टर होकर स्वदेश लौटे और कुछ महीने डिप्टी कलेक्टर की नौकरी की फिर वकालत के लिए उन्होंने नौकरी छोड़ दी। डॉ गौर ने इलाहाबाद, मध्य प्रांत और कोलकाता के उच्च न्यायालयों में 20 वर्षों तक वकालत की। 4 वर्ष तक प्रिवी कौंसिल में वकालत कर शोहरत हासिल की। उन्हें एलएलडी तथा डी लिट की सर्वोच्च उपाधि से विभूषित किया गया। डॉ गौर पहले वकील थे जिन्होंने भारत में सर्वोच्च न्यायालय के गठन का सुझाव दिया था। उन्होंने 1929 में बौद्ध धर्म पर दी स्पिरिट आफ बुद्धिज्म नामक पुस्तक भी लिखी जिसे पढ़कर डॉक्टर बी आर अंबेडकर भी बहुत प्रभावित हुए तथा जापान में इस बौध्द दर्शन से गौर साहब को धर्म गुरु का सम्मान दिया गया। 1921 में दिल्ली विश्वविद्यालय की स्थापना होने पर वह उसके संस्थापक कुलपति नियुक्त किए गए। सन 1925 को शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के कारण उन्हे "सर" की उपाधि से विभूषित किया गया तत्पश्चात डॉ गौर को दो बार नागपुर विश्वविद्यालय का कुलपति नियुक्त किया गया था।

गौर उत्सव | आज भी होंगी अनेक प्रतियोगिताएं

कबड्डी, टग ऑफ वॉर सहित अनेक स्पर्धाएं हुईं

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. गौर उत्सव के दूसरे दिन सोमवार को क्रिकेट मैच के अलावा कबड्डी, टग ऑफवॉर प्रतियोगिता, म्यूजिकल चेयर व वॉलीबॉल बालक प्रतियोगिता आयोजित की।

इंटर स्कूल कबड्डी बालक वर्ग में फाइनल मैच स्कूल ऑफएजूकेशन बनाम स्कूल ऑफसोशल साइंस के मध्य खेला गया, जिसमें निर्धारित समय मे दोनों टीमों का स्कोर बराबर रहा। अतिरिक्त समय मे स्कूल ऑफसोशल साइंस 5 अंक से विजयी रही। बालिका वर्ग में फाइनल मुकाबला स्कूल ऑफ एजूकेशन एवं स्कूल ऑफ बॉयोलोजिकल साइंस के बीच रहा, जिसमें 14.03 से स्कूल ऑफ एजूकेशन विजयी रही। मैच के निर्णायक इंद्रपाल सिंह, शैलेन्द्र सिंह, जितेंद्र यादव थे।

विश्व विद्यालय महिला शिक्षक, कर्मचारी बनाम विश्व विद्यालय महिला क्लब के बीच टग ऑफवार प्रतियोगिता में महिला शिक्षक एवं कर्मचारी ने जीत अर्जित की। निर्णायक अनवर खान, विनय शुक्ला एवं महेंद्र कुमार रहे।

म्यूजिकल चेयर प्रतियोगिता- डॉ हरिसिंह गौर विश्व विद्यालय की महिला शिक्षक, कर्मचारी एवं महिला क्लब के बीच म्यूजिकल चैयर प्रतियोगिता का आयोजन हुआ, जिसमें अफरोज़ बेगम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। दूसरा स्थान अनीत सोनी व तीसरा स्थान डॉ. किरण महेश्वरी ने प्राप्त किया। निर्णायक प्रो. चंदा बेन, विनय शुक्ला एवं महेंद्र कुमार रहे।

वॉलीबॉल बालक, बालिका वर्ग प्रतोयोगिता

वॉलीबाल बालक वर्ग में फायनल मैच स्कूल ऑफएजूकेशन बनाम स्कूल ऑफसोशल साइंस के मध्य खेला गया, जिसमें स्कूल ऑफ एजूकेशन की टीम 2.1 सेट से विजयी रही। मैच के निर्णायक गीतेश रैकवार, दानिश खान, योगेश कोरी रहे।

मूट कोर्ट का उद्घाटन आज

सागर@पत्रिका. डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विवि में मंगलवार को दोपहर 3 बजे विधि विभाग परिसर स्थित नवनिर्मित मूट कोर्ट का लोकार्पण होगा। मुख्य अतिथि निदेशक, राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी, भोपाल व पूर्व मुख्य न्यायाधीश पटना एवं मद्रास उच्च न्यायालय अमरेश्वर प्रताप साही और कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की उपस्थिति में होगा। इसके बाद जवाहर लाल नेहरू पुस्तकालय सभागार में मुख्य अतिथि अमरेश्वर प्रताप साही का विशिष्ट व्याख्यान होगा।

कुलपति ने की राज्यपाल से मुलाकात

सागर @ पत्रिका. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने मध्य प्रदेश के राज्यपाल मंगूभाई छगनभाई पटेल से राजभवन भोपाल में मुलकात की। उन्होंने राज्यपाल को विश्वविद्यालय में किए जा रहे नवाचारों के संबंध में जानकारी दी।

स्वर्ण जयंती सभागार में डॉ. गौर पर व्याख्यान आज

सागर. डॉ हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयंती सभागार में मंगलवार को डॉ. गौर का अवदान एक विश्लेषण पर व्याख्यान आयोजित किया गया है। प्रस्तुत व्याख्यान में डॉ गौर के जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे उनके प्रारंभिक जीवन, उनकी शिक्षा, विधिवेत्ता के रूप में उनका योगदान, राजनीतिज्ञ तथा समाज सुधारक के रूप में उनका योगदान तथा धर्म संबंधी विचारों के साथ-साथ उनके साहित्य और कवि के रूप में उनके योगदान पर वृहद चर्चा की जाएगी। यह प्रयास किया गया है कि प्रस्तुत व्याख्यान में डॉ गौर के जीवन से संबंधित ऐसे पहलुओं पर भी बात हो जो पहले शायद अनछुए रह गए हो या लोगों को जानकारी नहीं है। इस कार्यक्रम में व्याख्यान के पश्चात ईएमआरसी के द्वारा बनाई गई डॉ. गौर साहब के जीवन पर एक लघु फिल्म का प्रदर्शन भी किया जाएगा। इस कार्यक्रम के संयोजक इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रो. बीके श्रीवास्तव तथा सहायक प्राध्यापक डॉ पंकज सिंह हैं।

शिक्षकों ने 14 ओवर में ही अधिकारी टीम को हराया

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय में गौर उत्सव के दूसरा दिन खेल प्रतियोगिताओं के नाम रहा। विश्वविद्यालय के शिक्षक और अधिकारियों के बीच टी-20 क्रिकेट मैच खेला गया। क्रिकेट मैच के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि खेल में कोई भी जीते या हारे लेकिन मैत्री भावना बनी रहनी चाहिए। खेल से आत्मीय संबंध बढ़ते हैं। क्रिकेट मैच में शिक्षक बनाम अधिकारी के बीच खेला गया। इसमें टॉस जीतकर अधिकारी.कर्मचारी ने गेंदबाजी करने का फैसला लिया। शिक्षकों की टीम ने बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवर में 9 विकेट खोकर 121 रन बनाए, जिसमे सर्वाधिक डॉ आरपी सिंह ने शानदार 38 रन की पारी खेली। हिमांशु कुमार ने 18 एवं बुद्ध सिंह 13 रन व प्रो र%श दास ने 8 रन की पारी खेली। अधिकारी कर्मचारी की ओर से गेंदबाजी करते हुए महेंद्र कुमार बाथम एवं भूपेंद्र पटेल 3-3 विकेट चटकाए। जबाब में अधिकारी कर्मचारी की टीम ने 14 ओवर में मैच समेट दिया और 2 विकेट खोकर 8 विकेट जीत हासिल की। समर्थ दीक्षित ने सर्वाधिक 33 रन, विनय शुक्ला ने 28 व निखलेश ने 25 और संतोष सहगौरा ने 16 रनों की नाबाद पारी खेली । मैच के निर्णायक अनवर खान, आकाश लिटोरिया डॉ सुमन पटेल व ऋषिकेश बर्दिया रहे।

क्रिकेट में 8 विकेट से जीते विवि के अधिकारी, टग ऑफ वार में महिला क्लब पर शिक्षिकाएं भारी

डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में प्रतियोगिताएं, प्रतिभागियों ने कबड्डी, वॉलीबॉल और म्यूजिक चेयर प्रतियोगिता में भी दिखाया दमखम

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित गौर उत्सव के दूसरे दिन सागर विश्वविद्यालय में खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं की शुरुआत विश्वविद्यालय के शिक्षक और अधिकारियों के बीच टी-20 क्रिकेट मैच से हुई। जिसमें विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने 8 विकेट से जीत हासिल की। वहीं विश्वविद्यालय महिला शिक्षक और विश्वविद्यालय महिला क्लब के बीच टग ऑफ वार प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। तीन राउंड के इस रस्सा-कसी के खेल में महिला शिक्षकों ने पहले ही दोनों राउंड जीतकर प्रतियोगिता अपने नाम कर ली। इसके अलावा विश्वविद्यालय के मैदान पर कबड्डी, वॉलीबॉल और म्यूजिक चेयर जैसी प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गईं। स्पोर्ट्स डे की मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि खेल में कोई भी जीते या हारे लेकिन मैत्री भावना बनी रहना चाहिए। खेल से आत्मीय संबंध बढ़ते हैं। इस अवसर पर गौर उत्सव के मुख्य समन्वयक प्रो. आर. के त्रिवेदी, प्रो. निवेदिता मैत्रा, प्रो. चंदा सोनी आदि उपस्थित थे।

शारीरिक शिक्षा विभाग के संचालक प्रो. रत्नेश दास ने जानकारी देते हुए बताया कि क्रिकेट मैच में टॉस जीतकर अधिकारी-कर्मचारी एकादश ने पहले गेंदबाजी करने का फैसला लिया। शिक्षकों की टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवर में 9 विकेट खोकर 121 रन बनाए। सर्वाधिक योगदान डॉ. आरपी सिंह ने 38 रनों की पारी खेल कर दिया। महेंद्र कुमार बाथम और भूपेंद्र पटेल 3-3 विकेट हासिल किए। लक्ष्य का पीछा करते हुए अधिकारी-कर्मचारी एकादश की टीम ने महज 14 ओवर में ही 2 विकेट खोकर मैच समेट दिया। समर्थ दीक्षित ने सर्वाधिक 33 रन, विनय शुक्ला ने 28 और संतोष सहगौरा ने 16 रनों की नाबाद पारी खेली। मैच के निर्णायक अनवर खान, आकाश लिटोरिया, डॉ. सुमन पटेल एवं ऋषिकेश बर्दिया रहे। वहीं इंटर स्कूल कबड्डी बालक वर्ग में फाइनल मैच स्कूल ऑफ एजुकेशन बनाम स्कूल ऑफ सोशल साइंस के मध्य खेला गया। इसमें दोनों टीमों का स्कोर बराबर रहा। अतिरिक्त समय में स्कूल ऑफ सोशल साइंस 5 अंक से विजयी रही। बालिका वर्ग में फाइनल मुकाबला स्कूल ऑफ एजुकेशन एवं स्कूल ऑफ बायोलॉजिकल साइंस के बीच हुए, जिसमें 14-03 से स्कूल ऑफ एजुकेशन जीती।

सागर| विवि में गौर सप्ताह के दौरान सोमवार को खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमें क्रिकेट, महिला व पुरुष कबड्डी, वॉलीबॉल एवं रस्सकशी, चेयर रेस आदि प्रतियोगिताएं हुईं।

म्यूजिकल चेयर में अफरोज बेगम रहीं विजेता

डॉ हरीसिंह गौर विश्व विद्यालय की महिला शिक्षक एवं महिला क्लब के बीच म्यूजिकल चेयर प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। जिसमें अफरोज बेगम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। दूसरा स्थान पर अनीता सोनी और तीसरा स्थान पर डॉ. किरण माहेश्वरी रहीं। वहीं वॉलीबॉल प्रतियोगिता स्कूल ऑफ एजुकेशन की टीम 2-1 से जीती।

आज के कार्यक्रम

- स्वर्ण जयंती सभागार में सुबह 11 बजे से डॉ. गौर का अवदान: एक विश्लेषण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा, इसमें डॉ. हरीसिंह गौर के जीवन पर आधारित वृत्त-चित्र का प्रदर्शन भी होगा।
- दोपहर 3 बजे मद्रास व पटना हाईकोर्ट के पूर्व चीफ जस्टिस अमरेश्वर प्रताप साही मूट-कोर्ट का लोकार्पण करेंगे और जवाहर लाल नेहरू पुस्तकालय सभागार में इनका विशिष्ट व्याख्यान होगा।

मैत्री, सहकार और तन्मयता का नैसर्गिक उल्लास हैं खेल प्रतियोगिताएं: प्रो. नीलिमा गुप्ता

गौर उत्सव का दूसरा दिन रहा खेल प्रतियोगिताओं के नाम

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के संस्थापक महान शिक्षाविद् एवं प्रख्यात विधिवेत्ता, संविधान सभा के सदस्य एवं दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में 21 नवंबर से 26 नवंबर तक आयोजित 'गौर उत्सव' का दूसरा दिन खेल प्रतियोगिताओं के नाम रहा। विश्वविद्यालय के शिक्षक और अधिकारियों के बीच टी-20 क्रिकेट मैच खेला गया। क्रिकेट मैच के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा खेल में कोई भी जीते या हारे लेकिन मैत्री भावना बनी रहनी चाहिए। खेल से आत्मीय संबंध बढ़ते हैं। इस मैत्री मैच के माध्यम से आत्मीयता, सामंजस्य, बंधुत्व और प्रेम का संदेश चारों ओर जाए, ऐसी मेरी कामना है। खेल के माध्यम से विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी और विद्यार्थी काम और पढ़ाई के दबाव को कम कर सकेंगे और उनका शरीर भी स्वस्थ रहेगा। हम सभी जानते हैं कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क होता है। उनकी ऊर्जा और स्वस्थ मस्तिष्क विश्वविद्यालय के विकास को एक नया आयाम देगा, ऐसा मेरा विश्वास है। अधिकारी टीम के कप्तान संतोष सोहगौरा और शिक्षक टीम के कप्तान प्रो. जी एस दुबे ने कुलपति से टीम के खिलाड़ियों का परिचय करवाया। कुलपति ने उन्होंने टॉस उछालकर और बल्लेबाजी करके मैच की शुरुआत की। इस अवसर पर गौर उत्सव के मुख्य समन्वयक प्रो. आर. के. त्रिवेदी, प्रो. निवेदिता मैत्रा, प्रो. चंदना सोनी और कई शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी उपस्थित थे। शारीरिक शिक्षा विभाग के संचालक प्रो. राकेश दास ने जानकारी दी कि शिक्षक बनाम अधिकारी क्रिकेट मैच में टॉस जीतकर अधिकारी-कर्मचारी ने गेंदबाजी करने का फैसला लिया। शिक्षकों की टीम ने बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवर में 9 विकेट खोकर 121 रन बनाए जिसमें सर्वाधिक डॉ आर पी सिंह ने शानदार 38 रनों की पारी खेली, हिमांशु कुमार ने 18 एवं बुद्ध सिंह 13 रन एवं प्रो राकेश दास ने 8 रनों की पारी खेली। अधिकारी कर्मचारी की ओर से गेंदबाजी करते हुए महेंद्र कुमार बाथम एवं भूपेंद्र पटेल 3-3 विकेट चटकाए। जवाब में अधिकारी कर्मचारी की टीम ने 14 ओवर में मैच समेट दिया और 2 विकेट खोकर 8 विकेट जीत हासिल की। समर्थ दीक्षित ने सर्वाधिक 33 रन, विनय शुक्ला ने 28 एवं निखलेश ने 25 एवं संतोष सहगौरा ने 16 रनों की नाबाद पारी खेली। मैच के निर्णायक अनवर खान एवं आकाश तिलोटिया, डॉ सुमन पटेल एवं ऋषिकेश बंदिया रहे।

कबड्डी बालक, बालिका वर्ग- इंटर स्कूल कबड्डी बालक वर्ग में फाइनल मैच स्कूल ऑफ एजूकेशन बनाम स्कूल ऑफ सोशल साइंस के मध्य खेला गया जिसमें निर्धारित समय में दोनों टीमों का स्कोर बराबर रहा। अतिरिक्त समय में स्कूल ऑफ सोशल साइंस 5 अंक से विजयी रही। बालिका वर्ग में फाइनल मुकाबला स्कूल ऑफ एजूकेशन एवं स्कूल ऑफ बॉयोलॉजिकल साइंस के बीच रहा जिसमें 14-03 से स्कूल ऑफ एजूकेशन विजयी रही। मैच के निर्णायक इंद्रपाल सिंह, शैलेन्द्र सिंह, जितेंद्र यादव थे।

टग ऑफ वॉर प्रतियोगिता- विश्व विद्यालय महिला शिक्षक, कर्मचारी बनाम विश्वविद्यालय महिला क्लब के बीच टग ऑफ वार प्रतियोगिता में महिला शिक्षक एवं कर्मचारी ने जीत अर्जित की। निर्णायक अनवर खान, विनय शुक्ला एवं महेंद्र कुमार रहे।

म्यूजिकल चेयर प्रतियोगिता- डॉ हरीसिंह गौर विश्व विद्यालय की महिला शिक्षक, कर्मचारी एवं महिला क्लब के बीच म्यूजिकल चेयर प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें अफरोज बेगम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। दूसरा स्थान श्रीमती अनीता सोनी एवं तीसरा स्थान डॉ किरण माहेश्वरी ने प्राप्त किया। निर्णायक प्रो. चंदा बेन, विनय शुक्ला एवं महेंद्र कुमार रहे।

वॉलीबॉल बालक-बालिका वर्ग प्रतियोगिता - वॉलीबाल बालक वर्ग में फायनल मैच स्कूल ऑफ एजूकेशन बनाम स्कूल ऑफ सोशल साइंस के मध्य खेला गया जिसमें स्कूल ऑफ एजूकेशन की टीम 2-1 सेट से विजयी रही। मैच के निर्णायक गीतेश रैकवार, दानिश खान, योगेश कोरी रहे। इस अवसर पर प्रो. निवेदिता मैत्रा, सतीश कुमार, सुरेंद्र पी गादेवार, आर के पाल, डॉ सुमन पटेल, अनवर खान, डी के तिवारी, हिम्मत सिंह, अनिल ब्रम्हकर, प्रकाश पटेल, जगदीश उपस्थित रहे। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने सभी खिलाड़ियों को शुभकामनाएं दी हैं।

आज आयोजित कार्यक्रम - प्रातः 11.00 बजे स्वर्ण जयंती सभागार में 'डॉ. गौर का अवदान:एक विश्लेषण' कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। इस आयोजन में डॉ. हरीसिंह गौर के जीवन पर आधारित वृत्त-चित्र का प्रदर्शन भी होगा। दोपहर 03.00 बजे विधि विभाग परिसर स्थित नवनिर्मित 'मूट-कोर्ट' का लोकार्पण मुख्य अतिथि अमरेश्वर प्रताप साही, निदेशक, राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी, भोपाल एवं पूर्व मुख्य न्यायाधीश, पटना एवं मद्रास उच्च न्यायालय और कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की उपस्थिति में सम्पन्न होगा। दोपहर 03.30 बजे विश्वविद्यालय के जवाहर लाल नेहरू पुस्तकालय सभागार में मुख्य अतिथि अमरेश्वर प्रताप साही का विशिष्ट व्याख्यान होगा।

गौर जयंती पर पुस्तक 'चिनगारी की विरासत' पर समीक्षा गोष्ठी

डॉ हरीसिंह गौर जयंती पर पाठक मंच सागर की पुस्तक समीक्षा गोष्ठी दिनांक 26 नवंबर शुक्रवार को दोपहर 1.30 बजे से पं. ज्वाला प्रसाद ज्योतिषी (जे जे) इंस्टिट्यूट सिविल लाइंस सागर में आयोजित होगी। गोष्ठी में प्रसिद्ध लेखक नर्मदा प्रसाद उपाध्याय के निबंध संग्रह 'चिनगारी की विरासत' पर डॉ सरोज गुप्ता समीक्षा आलेख का वाचन करेंगी। मुख्य अतिथि डॉ छाया चौकसे तथा अध्यक्ष डॉ. श्याम मनोहर सीरोठिया होंगे। संचालन म. प्र. हिंदी साहित्य सम्मेलन सागर के अध्यक्ष आशीष ज्योतिषी करेंगे।

डॉ. हरिसिंह गौर जन्मजयंती सप्ताह पर विशेष

सागर, देशबन्धु। नागपुर में डा. गौर को गणित के एक अच्छे शिक्षक भागीरथ प्रसाद का सानिध्य मिला। वे फ्री चर्च इन्स्टीट्यूट में कार्यरत थे। यही इन्स्टीट्यूट बाद में हिसलप कालेज में परिवर्तित हो गया। मिस्टर हिसलप नागपुर आने वाले पहले मिशनरी थे। उन्होंने नागपुर क्षेत्र का भूगर्भीय सर्वेक्षण किया था। उन्हीं के नाम पर नागपुर के कालेज को हिसलप कालेज का नाम दिया गया। डा. गौर ने अपनी इंटर मीडियेट की परीक्षा भी प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण कर ली थी। साथ ही - गणित के निपुणता के लिये भागीरथ प्रसाद पुरस्कार 50 रुपये का प्राप्त किया। भाषाओं में सर्वाधिक अंक 300 में से 240 लाने के लिये संस्कृत के प्रोफेसर द्वारा 50 रुपये का पुरस्कार प्राप्त किया। नागपुर की फ्री चर्च इन्स्टीट्यूट एक दूसरे दर्जे का शिक्षण संस्थान था। मिस्टर कूपर इस संस्थान के प्रिंसपल थे, एक अन्य प्रोफेसर मिस्टर व्हिटन, भागीरथ प्रसाद एवं सदाशिव जयराम थे। जब यह संस्थान प्रथम श्रेणी कालेज में परिवर्तित होकर हिसलपकालेज बना तब और स्टाफ भी आया। 1887 ई. में यहां 2 यूरोपियन प्रोफेसर आये थे - प्रो. जेम्स ब्रेमनर एवं श्री एलेक्जेंडर राबर्टसन। हरीसिंह गौर ने यहां बी.ए. ऑनर्स करने का निर्णय लिया। प्रो. ब्रेमनर ने यहां हरीसिंह गौर को अंग्रेजी, फिलासफी एवं राजनैतिक अर्थशास्त्र पढ़ाया। इतिहास उन्होंने स्वयं ही पढ़ा। हिसलप कालेज नागपुर में बी.ए. ऑनर्स करते समय हरीसिंह गौर प्रो. ब्रेमनर के व्यक्तित्व से अत्यन्त ही प्रभावित हुए। हरीसिंह गौर ने उस समय के सर्वाधिक कठिन विषय अंग्रेजी एवं फिलासफी लेकर बी.ए. ऑनर्स करने का साहसिक निर्णय लिया था। इस दौरान हरीसिंह गौर ने यूवरवेग की पुस्तक 'हिस्ट्री ऑफ फिलासफी' एवं कार्ड रचित 'क्रिटिसिज्म ऑफ कांट' जैसी कठिन पुस्तकों का अध्ययन किया। इन कठिन पुस्तकों के अध्ययन में प्रो. ब्रेमनर का सहयोग महत्वपूर्ण रहा। हरीसिंह गौर ने बचपन में रामायण पढ़ी थी, नागपुर के हिसलप कालेज में उन्हें बाईबिल के अध्ययन का लाभ मिला। कालेज का पहला आधा घंटा बाईबिल के अध्ययन हेतु निर्धारित था। प्रो. जेम्स ब्रेमनर ही सामान्यतः उस समय पवित्र धर्म ग्रंथों की संयुक्त कक्षायें लेते थे। प्रो. ब्रेमनर ने जब देखा कि छात्र बाईबिल के अध्ययन के दौरान कुछ बैचेन होने लगते हैं तब उन्होंने उस दौरान कुछ विविधता लाने का निर्णय लिया। इस विविधता स्वरूप उन्होंने प्रोफेसर ड्रमंड्स की पुस्तक 'स्प्रिचुअल ला इन द फिजीकल वर्ल्ड' पढ़ाने का निर्णय लिया। यह बदलाव सभी छात्रों को बहुत अच्छा लगा। प्रो. जेम्स ब्रेमनर को तो सभी छात्र चाहते थे मगर धीरे-धीरे प्रोफेसर ब्रेमनर हरीसिंह गौर को चाहने लगे। हरीसिंह गौर के जिज्ञासु नजरिया, पढ़ने के प्रति जीवटता से वे काफी प्रभावित हुए। मेट्रीकुलेशन परीक्षा में प्रवीणता सूची में प्रथम आने से कालेज का प्रबंधन भी हरीसिंह गौर को बहुत चाहने लगा था। आधार सिंह कैम्ब्रिज में अध्ययन करके आये थे, अतः वह चाहते थे कि उनका छोटा भाई भी वहीं जाके अध्ययन करे। कालेज प्रशासन ने भी कहा यदि हरीसिंह अच्छे अंकों से डिग्री पूरी कर ले तो कालेज की ओर से उसे विशेष छात्रवृत्ति दी जा सकती है जिसके द्वारा वह आगे की पढ़ाई एडिनबर्ग, इंग्लैण्ड में पूर्ण कर सकते हैं। इस तरह आधार सिंह एवं हरीसिंह दोनों भाई चाहते थे कि हरीसिंह गौर कैम्ब्रिज में आगामी पढ़ाई सम्पन्न करें। 1 मार्च 1889 को कालेज की सीनेट के समक्ष प्रस्ताव आया कि हरीसिंह गौर को अपनी डिग्री की पढ़ाई पूरी करने के लिये एडिनबर्ग जाने में सहायता दी जाये। संभवतः इस प्रस्ताव को लाने में प्रो. जेम्स ब्रेमनर की महत्वपूर्ण भूमिका रही होगी। हरीसिंह गौर ने यह खुश खबरी अपने भाई आधार सिंह को सुनाई तो वह अत्यन्त प्रसन्न हुये। उनके पुत्र मुरली मनोहर ने भी हाई स्कूल की परीक्षा पास की थी। आधार सिंह चाहते थे कि हरीसिंह गौर के साथ मुरली मनोहर भी कैम्ब्रिज में जाकर अध्ययन करे। इस तरह हरीसिंह गौर का अपने भतीजे के साथ कैम्ब्रिज जाना तय हो गया।

प्रो. बी.के.श्रीवास्तव की पुस्तक 'डा. हरीसिंह गौर: एक प्रेरक व्यक्तित्व' से साभार

मैत्री, सहकार और तन्मयता का नैसर्गिक उल्लास हैं खेल प्रतियोगिताएं : प्रो. नीलिमा गुप्ता

गौर उत्सव का दूसरा दिन रहा खेल प्रतियोगिताओं के नाम

सागर दिनकर, सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के संस्थापक महान शिक्षाविद् एवं प्रख्यात विधिवेत्ता, संविधान सभा के सदस्य एवं दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 21 नवंबर से 26 नवंबर तक आयोजित 'गौर उत्सव' का दूसरा दिन खेल प्रतियोगिताओं के नाम रहा। विश्वविद्यालय के शिक्षक और अधिकारियों के बीच टी.20 क्रिकेट मैच खेला गया। क्रिकेट मैच के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि खेल में कोई भी जीते या हारे लेकिन मैत्री भावना बनी रहनी चाहिए। खेल से आत्मीय संबंध बढ़ते है। इस मैत्री मैच के माध्यम से आत्मीयता, सामंजस्य, बंधुत्व और प्रेम का संदेश चारों ओर जाए, ऐसी मेरी कामना है। खेल के माध्यम से विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी और विद्यार्थी काम और पढ़ाई के दबाव को कम कर सकेंगे और उनका शरीर भी स्वस्थ रहेगा। हम सभी जानते हैं कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क होता है। उनकी ऊर्जा और स्वस्थ मस्तिष्क विश्वविद्यालय के विकास को एक नया आयाम देगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

अधिकारी टीम के कप्तान संतोष सोहगौरा और शिक्षक टीम के कप्तान प्रो. जी एम दुबे ने कुलपति से टीम के खिलाड़ियों का परिचय करवाया। कुलपति ने उन्होंने टॉस उछलकर और बल्लेबाजी करके मैच की शुरुआत की। इस अवसर पर गौर उत्सव के मुख्य समन्वयक प्रो. आर. के त्रिवेदी, प्रो. निवेदिता मैत्रा, प्रो. वंदना सोनी और कई शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी उपस्थित थे।

शारीरिक शिक्षा विभाग के संचालक प्रो. रवेश दास ने जानकारी दी कि शिक्षक बनाम अधिकारी क्रिकेट मैच में टॉस जीतकर अधिकारी.कर्मचारी ने गेंदबाजी करने का फैसला लिया। शिक्षकों की टीम ने बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवर में 9 विकेट खोकर 121 रन बनाए जिसमे सर्वाधिक डॉ आर पी सिंह ने शानदार 38 रनों की पारी खेली, हिमांशु कुमार ने 18 एवं बुद्ध सिंह 13 रन एवं प्रो रवेश दास ने 8 रनों की पारी खेली। अधिकारी कर्मचारी की ओर से गेंदबाजी करते हुए महेंद्र कुमार बाथम एवं भूपेंद्र पटेल 3.3 विकेट चटकाए। जवाब में अधिकारी कर्मचारी की टीम ने 14 ओवर में मैच समेट दिया और 2 विकेट खोकर 8 विकेट जीत हासिल की। समर्थ दीक्षित ने सर्वाधिक 33 रन, विनय शुक्ला जी ने 28 एवं निखिलेश ने 25 एवं संतोष सहगौरा जी ने 16 रनों की नाबाद पारी खेली। मैच के निर्णायक अनवर खान, एवं आकाश लिटोरिया, डॉ सुमन पटेल एवं ऋषिकेश बर्दिया रहे।

कबड्डी बालक-बालिका वर्ग

इंटर स्कूल कबड्डी बालक वर्ग में फाइनल मैच स्कूल ऑफ एजुकेशन बनाम स्कूल ऑफ सोशल साइंस के मध्य खेला गया। जिसमें निर्धारित समय में दोनों टीमों का स्कोर बराबर रहा। अतिरिक्त समय में स्कूल ऑफ सोशल साइंस 5 अंक से विजयी रही। बालिका वर्ग में फाइनल मुकाबला स्कूल ऑफएजूकेशन एव स्कूल ऑफ बॉयोलोजिकल साइंस के बीच रहा, जिसमें 14.03 से स्कूल ऑफएजूकेशन विजयी रही। मैच के निर्णायक इंद्रपाल सिंह, शैलेन्द्र सिंह, जितेंद्र यादव थे।

टग ऑफ वॉर प्रतियोगिता

विश्व विद्यालय महिला शिक्षक, कर्मचारी बनाम विश्व विद्यालय महिला क्लब के बीच टग ऑफ वार प्रतियोगिता में महिला शिक्षक एव कर्मचारी ने जीत अर्जित की। निर्णायक अनवर खान, विनय शुक्ला एव महेंद्र कुमार रहे।

केंद्रीय विवि के संस्थापक डॉ. हरीसिंह गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित गौर उत्सव का दूसरा दिन रहा खेल प्रतियोगिताओं के नाम

मैत्री, सहकार व तन्मयता का नैसर्गिक उल्लास हैं प्रतियोगिताएं : कुलपति

सागर (आरएनएन)। डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉ सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित गौर उत्सव का दूसरा दिन खेल प्रतियोगिताओं के नाम रहा। विश्वविद्यालय के शिक्षक और अधिकारियों के बीच टी-20 क्रिकेट मैच खेला गया। क्रिकेट मैच के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता ने कहा कि खेल में कोई भी जीते या हारे लेकिन मैत्री भावना बनी रहनी चाहिए। खेल से आत्मीय संबंध बढ़ते हैं। इस मैत्री मैच के माध्यम से आत्मीयता, सामंजस्य, बंधुत्व और प्रेम का संदेश चारों ओर जाए, ऐसी मेरी कामना है। खेल के माध्यम से विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी और विद्यार्थी काम और पढ़ाई के दबाव को कम कर सकेंगे और उनका शरीर भी स्वस्थ रहेगा। अधिकारी टीम के कप्तान संतोष सोहगौरा और शिक्षक टीम के कप्तान प्रो जीएम दुबे ने कुलपति से टीम के खिलाड़ियों का परिचय करवाया। कुलपति ने उन्होंने टॉस उछालकर और बल्लेबाजी करके मैच की शुरुआत की। इस अवसर पर गौर उत्सव के मुख्य समन्वयक प्रो आरके त्रिवेदी, प्रो निवेदिता मैत्रा, प्रो वंदना सोनी और कई शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी उपस्थित थे।

शिक्षक बनाम अधिकारी क्रिकेट मैच में टॉस जीतकर अधिकारी कर्मचारी ने गेंदबाजी करने का फैसला लिया। शिक्षकों की टीम ने बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवर में 9 विकेट खोकर 121 रन बनाए जिसमें सर्वाधिक डॉ आरपी सिंह ने शानदार 38 रनों की पारी खेली, हिमांशु कुमार ने 18 एवं बुद्ध सिंह 13 रन एवं प्रो रवेश दास ने 8 रनों की पारी खेली। अधिकारी कर्मचारी की ओर से महेंद्र बाथम व भूपेंद्र पटेल 3-3 विकेट चटकाए। जवाब में टीम ने 14 ओवर में मैच समेट दिया और 2 विकेट खोकर 8 विकेट जीत हासिल की।

बालक बालिका वर्ग कबड्डी प्रतियोगिता

इंटर स्कूल कबड्डी बालक वर्ग में फाइनल मैच स्कूल ऑफएजूकेशन बनाम स्कूल ऑफसोशल साइंस के मध्य खेला गया जिसमें निर्धारित समय में दोनों टीमों का स्कोर बराबर रहा। अतिरिक्त समय में स्कूल ऑफ सोशल साइंस 5 अंक से विजयी रही। बालिका वर्ग में फाइनल मुकाबला स्कूल ऑफ एजूकेशन एव स्कूल ऑफ बॉयोलॉजिकल साइंस के बीच रहा जिसमें 14-03 से स्कूल ऑफ एजूकेशन विजयी रही।

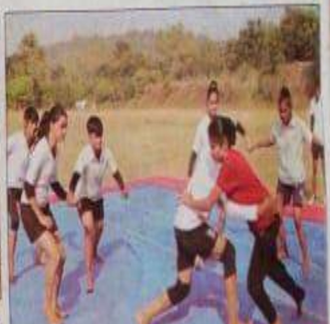

अन्य प्रतियोगिताओं में भी खिलाड़ियों ने दिखाया हुनर

विश्व विद्यालय महिला शिक्षक, कर्मचारी बनाम विश्व विद्यालय महिला क्लब के बीच टग ऑफ वार प्रतियोगिता में महिला शिक्षक एव कर्मचारी ने जीत अर्जित की। डॉ हरीसिंह गौर विवि की महिला शिक्षक, कर्मचारी एव महिला क्लब के बीच म्यूजिकल चेयर प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें अफरोज बेगम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। दूसरा स्थान अनीता सोनी एवं तीसरा डॉ किरण मोघरी को मिला। वहीं वॉलीबाल बालक वर्ग में फायनल मैच स्कूल ऑफ एजूकेशन बनाम स्कूल ऑफ सोशल साइंस के मध्य खेला गया जिसमें स्कूल ऑफएजूकेशन 2-1 सेट से विजयी रही।

डा. गौर का विराट व्यक्तित्व समझना होगा : प्रो. नीलिमा गुप्ता

गौर जन्मोत्सव ● तीसरे दिन डा. गौर का अवदान- एक विश्लेषण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, अतिथियों ने दिए व्याख्यान, मूट कोर्ट का हुआ लोकार्पण

विधि विभाग परिसर में निर्मित मूट कोर्ट, विक्रमादित्य भवन का लोकार्पण करते न्यायमूर्ति एपी साही सहित अन्य अतिथि। ● नवदुनिया

कार्यक्रम को संबोधित करतीं कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता। ● नवदुनिया

सागर (नवदुनिया प्रतिनिधि)। डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के संस्थापक डा. सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित गौर उत्सव के तीसरे दिन डा. गौर का अवदान- एक विश्लेषण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। डा. गौर और मातृवंदन के दौरान डा. अवधेश तोमर ने किया।

मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि डा. गौर का समग्र जीवन-दर्शन समझने के लिए उनके विराट व्यक्तित्व के हर पहलू को समझना होगा। विशिष्ट अतिथि प्रो. बीके श्रीवास्तव ने डा. गौर के महत्वपूर्ण योगदानों पर चर्चा करते हुए उनके जीवन से जुड़ी कई घटनाओं की चर्चा की। सह-संयोजक डा. पंकज सिंह ने महिला सशक्तीकरण में डा. गौर की महती भूमिका पर प्रकाश डाला।

डा. मनोज श्रीवास्तव ने डा. गौर के विधि वक्ता के रूप में उनके योगदान पर बोलते हुए कहा कि ट्रांसफर ऑफ प्रॉपर्टी एक्ट तथा हिंदू कोड नाम की दो किताबें विधि के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कार्य है। डा. वंदना राजौरिया ने डा. गौर के साहित्यिक अभिरुचि और उनकी कृतियों पर प्रकाश डाला और कहा कि डाक्टर गौर की कविताओं में हमें एक जीवन के प्रति सकारात्मकता दिखाई पड़ती है। प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने कहा कि डा. गौर को जीवन से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए तथा उनके पद चिन्हों पर चलते हुए उनके सपनों को साकार करना चाहिए।

इस प्रकार के व्याख्यानमाला आयोजित किए जाने से न केवल छात्रों को लाभ होगा बल्कि वह डा. सर गौर के विचार तथा चिंतन से अवगत हो पाएंगे। कार्यक्रम का संचालन डा. वंदना राजौरिया ने किया और आभार डा. संजय बरौलिया ने आभार ज्ञापित किया।

कार्यक्रम में प्रो. अशोक अहिरवार, प्रो. जीएल पुणताम्बेकर, प्रो. नवीन कांगो, प्रो. चंदा बेन प्रो. केके जैन प्रो. ममता पटेल प्रो. आरटी बेद्रे, डा. शशि कुमार सिंह डा. आरपी सिंह, डा. किरण आर्य, डा. अरुण साव, डा. अरविंद गौतम, डा. रेखा सोलंकी, डा. नीलम थापा, डा. हिमांशु, डा. प्रीति, डा. सुमन पटेल, केंद्रीय विद्यालय के डा. बृजेश कुमार पांडे उपस्थित थे।

आयोजन

- डा. गौर के योगदानों पर चर्चा कर उनसे जुड़ी कई घटनाओं की चर्चा की
- डा. गौर की कविताओं में जीवन के प्रति सकारात्मकता दिखाई पड़ती है

न्यायमूर्ति एके साही ने किया मूट कोर्ट का लोकार्पण : मुख्य अतिथि राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी के निदेशक न्यायमूर्ति एपी साही और कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की उपस्थिति में विधि विभाग परिसर में निर्मित मूट कोर्ट-विक्रमादित्य भवन का लोकार्पण हुआ। इस अवसर पर अधिष्ठाता प्रो. पीपी सिंह, प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा, कुलसचिव संतोष सोहगौरा, प्रो. आशीष वर्मा, प्रो. पुणताम्बेकर, प्रो. गिरीश मोहन दुबे सहित विधि विभाग के समस्त शिक्षक, विद्यार्थी और कर्मचारी उपस्थित थे। गौर व्याख्यानमाला के दौरान न्यायमूर्ति एपी साही ने कहा कि आज के समय में सबसे बड़ी जरूरत विवेकपूर्ण न्याय की है। बुद्धि और विवेक, निर्णय और न्याय में फर्क करना होगा।

आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस कोई नया आविष्कार नहीं है लेकिन न्यायिक प्रक्रिया में इसका उपयोग बहुत ही संवेदना और विवेक के साथ करना होगा। आज मोबाइल युग में डेटा का इधर से उधर होना आम बात हो गई है। इसकी गति बहुत ही तीव्र है। उन्होंने कहा कि मनुष्य अब प्रकृति को नियंत्रित करने की कोशिश करने लगा है जबकि पहले प्रकृति के अनुसार मनुष्य कार्य को ढालता था। हम अप्राकृतिक चीजों से प्रकृति को नियंत्रित कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि साहित्य और कानून का बहुत प्रगाढ़ संबंध है। बिना साहित्य अध्ययन के कोई भी कानूनविद नहीं बन सकता। मनुष्य की क्षमता असीमित है। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस एक क्रियेटेड इन्वेंशन है। मनुष्य ही इसका सर्जक है। इसके इस्तेमाल के लिए कानून बनाते समय इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि किसी भी व्यक्ति की सामान्य दिनचर्या पर इसकी तीव्रता और गतिशीलता का प्रभाव न पड़े। डाटा एनालिसिस और पैटर्न रीडिंग के माध्यम से कुछ कार्यों के लिए न्यायिक व्यवस्था में इसका इस्तेमाल होना चाहिए जो सुविधा प्रदान करे। आज के समय में उत्साह से इस विषय की पढ़ाई भी होनी जरूरी है। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि मूट कोर्ट की आवश्यकता लंबे समय से महसूस की जा रही थी। आज उद्घाटित यह स्थल न्यायपूर्ण समाज की स्थापना की आधारशिला साबित होगी। विद्यार्थी और शिक्षक अब इसका उपयोग कर पाएंगे और एक समतामूलक समाज की निर्मिति में सहयोग कर पाएंगे, जो गौर साहब की संकल्पना थी।

152वीं गौर जयंती • डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में गौर उत्सव के तीसरे दिन विधि विभाग परिसर में मूट कोर्ट का लोकार्पण

आर्टिफिसियल इंटेलीजेंस नया आविष्कार नहीं है, लेकिन न्यायिक प्रक्रिया में इसका उपयोग विवेक के साथ करना होगा : एपी साही

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में गौर उत्सव के तीसरे दिन मंगलवार को विधि विभाग परिसर में बने मूट कोर्ट-विक्रमादित्य भवन का लोकार्पण हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी भोपाल के निदेशक न्यायमूर्ति एपी साही थे।

एपी साही

इस दौरान हाईकोर्ट के पूर्व चीफ जस्टिस एपी साही ने न्यायिक प्रशासन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की प्रत्याशित भूमिका एवं प्रयोग विषय पर बोलते हुए कहा कि आज के समय में सबसे बड़ी जरूरत विवेकपूर्ण न्याय की है। बुद्धि और विवेक, निर्णय और न्याय में फर्क करना होगा। आर्टिफिसियल इंटेलीजेंस कोई नया आविष्कार नहीं है, लेकिन न्यायिक प्रक्रिया में इसका उपयोग बहुत ही संवेदना और विवेक के साथ करना होगा। आज मोबाइल युग में डेटा का इधर से उधर होना आम बात हो गई है। इसकी गति बहुत ही तीव्र है। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस एक क्रियेटेड इन्वेंशन है। मनुष्य ही इसका सर्जक है। इसके इस्तेमाल के लिए कानून बनाते समय इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि किसी भी व्यक्ति की सामान्य दिनचर्या पर इसकी तीव्रता और गतिशीलता का प्रभाव न पड़े।

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि मूट कोर्ट की आवश्यकता लंबे समय से महसूस की जा रही थी। आज उद्घाटित यह स्थल न्यायपूर्ण समाज की स्थापना की आधारशिला साबित होगी। विद्यार्थी और शिक्षक अब इसका उपयोग कर पाएंगे और एक समतामूलक समाज की निर्मिति में सहयोग कर पाएंगे, जो गौर साहब की संकल्पना थी। वहीं विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी ने कहा कि मनुष्य की संवेदना को समझना बहुत ही आवश्यक है। संवेदनापूर्ण न्याय मनुष्य के विकास को नया मुकाम देगा। कार्यक्रम में स्वागत वक्तव्य विधि विभाग के प्रो. पीपी सिंह ने दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. विकास अग्रवाल ने किया और आभार कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने माना।

क्या है मूट कोर्ट

मीडिया अधिकारी डॉ. विवेक जायसवाल ने बताया कि एलएलबी की पढ़ाई के दौरान स्टूडेंट्स को नकली अदालत बनाकर प्रैक्टिस करवाई जाती है, जिसे मूट कोर्ट कहा जाता है। मूट कोर्ट में विद्यार्थी वकील बनकर अपनी जिरह करते हैं और विद्यार्थी ही जज बनकर फैसला सुनाते हैं।

कुलपति ने किया लॉकडाउन में बनाई 21 पेंटिंग का अनावरण

प्रो. पुणताम्बेकर ने कोरोना महामारी के दौरान समय का सदुपयोग करते हुए 'लॉकडाउन' में बनाई गई 21 पेंटिंग विश्वविद्यालय को भेंट की। जिसका अनावरण कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने किया। इस अवसर पर सागर शहर निवासी सत्यम कला संस्कृति संग्रहालय के संचालक दामोदर अग्निहोत्री ने डॉ. गौर की लेखनी की कुछ प्रकाशित प्रतियां कुलपति को भेंट की।

गौर साहब के जीवन पर आधारित डॉक्यूमेंट्री का प्रदर्शन : स्वर्ण जयंती सभागार में डॉ. गौर का अवदान- एक विश्लेषण' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान ईएमआरसी के निदेशक डॉ. पंकज तिवारी द्वारा निर्देशित डॉ. गौर के जीवन, विचारों पर आधारित डॉक्यूमेंट्री सूर्य से प्रचंड गौर का प्रदर्शन किया गया और डॉ. गौर के जीवन पर कुलपति समेत अन्य शिक्षकों ने अपने विचार व्यक्त किए।

डॉ. गौर के महान संकल्प की देन है डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय:कुलपति

सागर,देशबन्धु। मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि डॉ. गौर का समग्र जीवन-दर्शन समझने के लिए उनके विराट व्यक्तित्व के हर पहलू को समझना होगा। हम सब सौभाग्यशाली हैं कि हम उनके परिवार के अंग हैं। यह विश्वविद्यालय उनके ही महान संकल्प की देन है। इस विश्वविद्यालय को गढ़ने-रचने की जिम्मेदारी हम सबके कन्धों पर है। डॉ. गौर के जीवन के विविध आयामों पर केंद्रित कार्यक्रमों की लंबी श्रृंखला के माध्यम से हम उनके सपनों को साकार करने के लिए कार्यरत हैं। डॉक्टर गौर हम सभी के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। डॉ गौर का योगदान न केवल विश्वविद्यालय की स्थापना तक सीमित है बल्कि उनका योगदान एक विधिवेत्ता के रूप में, एक राजनीतिज्ञ, एक समाज सुधारक तथा महिला सशक्तिकरण के सशक्त प्रणेता के रूप में है। विशिष्ट अतिथि प्रो. बीके श्रीवास्तव ने डॉ. गौर के महत्वपूर्ण योगदानों पर चर्चा करते हुए उनके जीवन से जुड़ी कई घटनाओं की चर्चा की। जहां सागर में कभी स्याही तक नहीं मिलती थी, उस सागर शहर में उन्होंने कैंब्रिज और ऑक्सफोर्ड जैसे विश्वविद्यालय की स्थापना करने की सोची। यह उनकी मातृभूमि एवं शिक्षा के प्रति उनका समर्पण बताता है। कार्यक्रम के सह-संयोजक डॉ. पंकज सिंह ने महिला सशक्तीकरण में डॉ. गौर की महती भूमिका पर प्रकाश डाला। स्त्री शिक्षा और उनके अधिकारों को लेकर डॉ. गौर ने लंबी लड़ाई लड़ी। 1921 से लेकर 1935 तक सेंट्रल लेजिस्लेटिव एसेंबली के मेंबर रहने के दौरान उन्होंने महिला सशक्तिकरण के लिए अभूतपूर्व प्रयास किए। कार्यक्रम का संचालन डॉ. वंदना राजौरिया ने किया और आभार डॉ. संजय बरौलिया ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में प्रो.अशोक अहिरवार, प्रो. जी. एल पुणताम्बेकर, प्रो.नवीन कांगो प्रो. चंदना सेनी प्रो. जेके जैन प्रो. ममता पटेल प्रो. आर टी बेंद्रे, डॉ शशि कुमार सिंह डॉ. आरपी सिंह डॉ किरण आर्य, डॉ.अरुण साव, डॉ. अरविंद गौतम, डॉ रेखा सोलंकी, डॉ. नीलम थापा, डॉ हिमांशु, डॉ प्रीति, डॉ. सुमन पटेल, केंद्रीय विद्यालय के डॉ. बृजेश कुमार पांडे उपस्थित थे।

ईएमआरसी द्वारा बनाई डॉक्युमेंट्री का प्रदर्शन- कार्यक्रम में ईएमआरसी के निदेशक डॉ. पंकज तिवारी द्वारा निर्देशित डॉ. गौर के जीवन, विचार और दर्शन को समग्रता में प्रस्तुत करती हुई डॉक्युमेंट्री ' सूर्य से प्रचंड गौर' का प्रदर्शन किया गया जिसे 2015 में निर्मित किया गया था।

कुलपति ने किया पेंटिंग का अनावरण

प्रो. पुणताम्बेकर ने कोरोना महामारी के दौरान समय का सदुपयोग करते हुए 'लॉकडाउन' में बनाई गई 21 पेंटिंग विश्वविद्यालय को भेंट की जिसका अनावरण कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने किया। कुलपति ने प्रो. पुणताम्बेकर को बधाई देते हुए कहा कि मुझे प्रसन्नता है कि मैं क्रियाशील और रचनात्मक शिक्षकों के बीच हूँ और ऐसे सृजनशील विश्वविद्यालय में मुझे कार्य करने का अवसर मिला है। इस अवसर पर सागर शहर निवासी मध्यम कला संस्कृति संग्रहालय के संचालक दामोदर अग्निहोत्री ने डॉ. गौर की लेखनी की कुछ प्रकाशित प्रतियां कुलपति को भेंट की।

आज के समय में निर्णय नहीं विवेकपूर्ण न्याय की जरूरत है- न्यायमूर्ति ए. पी. साही

गौर व्याख्यानमाला के अंतर्गत मुख्य अतिथि के रूप में पधारे राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी, भोपाल के निदेशक न्यायमूर्ति ए. पी. साही ने न्यायिक प्रशासन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की प्रत्याशित भूमिका एवं प्रयोग विषय पर बोलते हुए कहा कि आज के समय में सबसे बड़ी जरूरत विवेकपूर्ण न्याय की है। बुद्धि और विवेक, निर्णय और न्याय में फर्क करना होगा। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस कोई नया आविष्कार नहीं है लेकिन न्यायिक प्रक्रिया में इसका उपयोग बहुत ही संवेदना और विवेक के साथ करना होगा। आज मोबाइल युग में डेटा का इधर से उधर होना आम बात हो गई है। इसकी गति बहुत ही तीव्र है। मनुष्य आज प्रकृति को नियंत्रित करने की कोशिश करने लगा है जबकि पहले प्रकृति के अनुसार मनुष्य स्वयं को ढालता था। हम अप्राकृतिक चीजों से प्रकृति को निर्मित कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि साहित्य और कानून का बहुत प्रगाढ़ संबंध है।

डॉ. गौर की धरती पर निर्मित 'मूट कोर्ट' न्यायपूर्ण समाज की आधारशिला साबित होगी : कुलपति

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि 'मूट कोर्ट' की आवश्यकता लम्बे समय से महसूस की जा रही थी। आज उद्घाटित यह स्थल न्यायपूर्ण समाज की स्थापना की आधारशिला साबित होगी। विद्यार्थी और शिक्षक अब इसका उपयोग कर पायेंगे और एक समतामूलक समाज की निर्मिति में सहयोग कर पायेंगे, जो गौर साहब की संकल्पना थी। उन्होंने न्यायमूर्ति साही के विश्वविद्यालय आगमन की सहमति के लिए उन्हें धन्यवाद दिया। विषय प्रवर्तन करते हुए उन्होंने कहा कि आज रोबोट का युग आ गया है। हमें यह देखना होगा कि क्या सचमुच मनुष्य की संवेदनशीलता भी रोबोट जैसी अप्राकृतिक चीजें सृजित करने में सक्षम हो सकेगी।

मनुष्य की संवेदना की समझ न्याय प्रक्रिया का अहम हिस्सा: कुलाधिपति

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो बलवंतराय शांतिलाल जानी ने कहा मनुष्य की संवेदना को समझना बहुत ही आवश्यक है। इसको समझे बगैर न्याय प्रक्रिया पूर्ण नहीं हो सकती। इस मशीनी युग में भी हमें देशज ज्ञान परम्परा की अवहेलना नहीं करनी चाहिए। इसकी अपनी विशिष्ट महत्ता है। संवेदनापूर्ण न्याय मनुष्य के विकास को नया मुकाम देगा। कार्यक्रम में स्वागत वक्तव्य विधि अध्ययनशाला के अधिष्ठाता प्रो. पीपी सिंह ने दिया। मुख्य अतिथि का परिचय डॉ. अनुपमा सक्सेना ने और संचालन डॉ. विकास अग्रवाल ने किया। आभार कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने माना। कार्यक्रम में सागर शहर के अनेक अधिवक्तागण, जिला अधिवक्ता संघ के पदाधिकारी गण, नागरिक गण, विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी और विद्यार्थी उपस्थित थे।

'मूट कोर्ट' का हुआ लोकार्पण

मुख्य अतिथि के रूप में पधारे राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी के निदेशक न्यायमूर्ति ए. पी. साही और कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता की गरिमामयी उपस्थिति में विधि विभाग परिसर में निर्मित 'मूट कोर्ट'- विक्रमादित्य भवन का लोकार्पण हुआ। इस अवसर पर अधिष्ठाता प्रो. पीपी सिंह, प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा, कुलसचिव संतोष सोहगौरा, प्रो. आशीष वर्मा, प्रो. पुणताम्बेकर, प्रो. गिरीश मोहन दुबे सहित विधि विभाग के समस्त शिक्षक, विद्यार्थी और कर्मचारी उपस्थित थे।

डॉ. हरीसिंह गौर जन्मजयंती सप्ताह पर विशेष

सागर, देशबन्धु। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में माइकल मास सत्र आरम्भ होने के पहले कुछ परीक्षायें ऐसी होती थीं जिनमें पारितोषिक पहले से ही घोषित कर दिया जाता था। गणित विषय की प्रतियोगिता होती थी और सर्वाधिक अंक लाने वाले को 50 पौण्ड का पुरस्कार देने की घोषणा कर दी गई। इस प्रतियोगिता में हरीसिंह गौर ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता के परिणाम की घोषणा ही नहीं की गई। नोटिस बोर्ड पर सूचना चस्पा कर दी गई, इस बार किसी भी छात्र को स्कॉलरशिप नहीं दी जावेगी। यहां वास्तविकता यह थी कि प्रतियोगिता में सर्वाधिक अंक हरीसिंह गौर ने प्राप्त किये थे। चूँकि व्यवस्थापक किसी गैर यूरोपीय को प्रथम पुरस्कार नहीं देना चाहते थे अतः उस वर्ष यह पुरस्कार किसी को भी नहीं दिया गया। विश्वविद्यालय स्तर पर भेदभाव का यह पुख्ता प्रमाण था। योग्य होते हुए भी हरीसिंह गौर को पक्षपातपूर्ण व्यवहार का सामना करना पड़ा। इसी प्रकार की एक अन्य घटना भी घटित हुई। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा को निखारने का मौका देने हेतु अंग्रेजी भाषा में सर्वश्रेष्ठ कविता लिखने वाले विद्यार्थी को चांसलर का स्वर्णपदक दिया जाता था। 1890 ई. की प्रतियोगिता का विषय था (परिव्राजक जहाज)। हरीसिंह गौर ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया और अपनी कविता 'स्टेपिंग वेस्टवर्ड' पुरस्कार प्राप्ति हेतु जमा की। अप्रैल 1889 ई. में जब वह अपनी मातृभूमि छोड़कर पश्चिम की भूमि में प्रवेश कर रहे थे। इसी दौरान हरीसिंह गौर को अपनी कविता 'स्टेपिंग वेस्टवर्ड' की प्रेरणा मिली। निर्णायक समिति के सदस्यों ने हरीसिंह गौर से उनके सामने इस कविता को बुलवाया। हरीसिंह ने अत्यन्त ही प्रभावशाली तरीके से इस कविता का पाठ निर्णायक मण्डल के समक्ष पूरे आत्मविश्वास से किया। निर्णायकों ने इस कविता को सर्वश्रेष्ठ कविता होने की सहमति प्रकट की। एक बार फिर नोटिस बोर्ड पर सूचना चस्पा की गई कि इस वर्ष किसी भी प्रतियोगी को पुरस्कार नहीं दिया जा रहा है। हरीसिंह गौर ने अपनी यह कविता, वास्तविकता जानने हेतु उस समय के प्रख्यात साहित्यकार एवं कवि लार्ड टेनिसन एवं डब्लू.ई. ग्लेडस्टन को पढ़ने हेतु दी। टेनिसन ने इस रचना की काफी प्रशंसा की। एनुअल लिटररी रिव्यू ऑफ इंग्लिश वर्ल्ड में जो संपादकीय विचार इस कविता के बारे में व्यक्त किये गये वह इस प्रकार थे कि - "मिस्टर हरीसिंह गौर की छोटी सी रचना स्टेपिंग वेस्टवर्ड एण्ड अदर पोयमस अंग्रेजी कविता के प्रेमियों द्वारा प्रसन्नता से पढ़ी जायेगी। उनका साहित्यिक मूल्य इसलिये और बढ़ जाता है कि उनका लेखक भारतीय है, जिनके पास अंग्रेजी भाषा में कविता लिखने की असाधारण योग्यता है। एकाध त्रुटि को छोड़कर यह कहना उचित होगा कि किशोर लेखक काव्य सर्जना शक्ति सम्पन्न है। कुछ कवितायें लेखक की समृद्ध कल्पना प्रदर्शित करती हैं। जो भी पाठक इस पुस्तक (रेण्डम राइम्स) को पढ़ेगा इससे उसे आनन्द ही प्राप्त होगा। लेखक से उत्कृष्ट ग्रंथों की रचना संभाव्य है।"विश्वविद्यालय ने भले ही हरीसिंह गौर की कविता पर पुरस्कार नहीं दिया, मगर उनकी वह कविता एवं कविता संग्रह 'रेण्डम राइम्स' को प्रसिद्धि मिलने लगी। 1891 ई. में उन्हें रायल सोसाइटी ऑफ लिटरेचर का सदस्य चुना गया। वे लेखक क्लब के सदस्य भी बन गये। कैम्ब्रिज एवं ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालयों के मध्य वाद-विवाद प्रतियोगिता होती थी। यह प्रतियोगिता भावी राजनीतिज्ञों की क्रीड़ा स्थली भी मानी जाती थी। इसमें वक्तव्य देने वाले कुछ लोग तो प्रधानमंत्री पद तक भी पहुंचे थे। धीरे-धीरे हरीसिंह गौर की वाक्पटुता एवं वक्तव्य कला की धाक जमती जा रही थी। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय ने हरीसिंह गौर को वाद-विवाद प्रतियोगिता के लिये अपना प्रतिनिधि बनाया। इस प्रतियोगिता में वे सफल हुये और हरीसिंह को सर्वश्रेष्ठ वक्ता करार दिया गया। ऑक्सफोर्ड रिव्यू ने भी उनके भाषण की तारीफ की। इस तरह हरीसिंह गौर की ख्याति बढ़ने लगी। लन्दन में एक राजनीतिक सभा के दौरान लिबरल पार्टी के प्रमुख नेता जॉन मोरले का स्वागत किया जाना था। यह समारोह लन्दन के गिल्डहाल में सम्पन्न होना था। इस कार्यक्रम में धन्यवाद प्रस्ताव देने एवं स्वागत भाषण देने के लिए हरीसिंह गौर को विशेषतः बुलाया गया था। उपस्थित समस्त जनसमूह ने हरीसिंह गौर की वाक्पटुता की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। पाल माल गजट के संपादक ने हरीसिंह गौर को अपना कैम्ब्रिज संवाददाता नियुक्त कर दिया। अब तो लंदन के कई लिबरल क्लब उन्हें भाषण देने बुलाने लगे। इन्हीं दिनों ब्रिटेन में आम चुनाव होना थे। हरीसिंह गौर 'नेशनल लिबरल क्लब' के सदस्य बन गये। भारत के प्रख्यात राजनीतिज्ञ दादा भाई नौरोजी इस समय इंग्लैण्ड में ही थे। वह पहले से ही इस क्लब के सदस्य थे। वे भी हरीसिंह गौर की वक्तव्य कला से प्रभावित हुये। दादाभाई नौरोजी सेन्ट्रल फिन्सबरी से चुनाव के लिये उम्मीदवार खड़े हुये उन्होंने अपने चुनाव अभियान में भाषण देने हरीसिंह गौर को आमंत्रित किया। दादा भाई नौरोजी चुनाव जीत गये। उन्होंने हरीसिंह गौर की उनके भाषणों के लिए सराहना की।

प्रो. बी.के.श्रीवास्तव की पुस्तक 'डा. हरीसिंह गौर: एक प्रेरक व्यक्तित्व' से साभार

डॉ. गौर के अवदान पर हुए व्याख्यान, मूट कोर्ट का हुआ लोकार्पण

गौर उत्सव-तीसरा दिन

जागरण न्यूज, सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के संस्थापक, महान शिक्षाविद् एवं प्रख्यात विधिवेत्ता, संविधान सभा के सदस्य एवं दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में 21 नवंबर से 26 नवंबर तक आयोजित गौर उत्सव के तीसरे दिन डॉ. गौर का अवदान एक विश्लेषण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। डॉ. गौर और माल्यार्पण के दौरान डॉ. अवधेश तोमर ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि डॉ. गौर का समग्र जीवन दर्शन समझने के लिए उनके विराट व्यक्तित्व के हर पहलू को समझना होगा। हम सब सौभाग्यशाली हैं कि हम उनके परिवार के अंग हैं। यह विश्वविद्यालय उनके ही महान संकल्प की देन है। इस विश्वविद्यालय को गढ़ने रचने की जिम्मेदारी हम सबके कन्धों पर है। डॉ. गौर के जीवन के विविध आयामों पर केंद्रित कार्यक्रमों की लंबी श्रृंखला के माध्यम से हम उनके सपनों को साकार करने के लिए कार्यरत हैं। डॉक्टर गौर हम सभी के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। डॉ. गौर का योगदान न केवल विश्वविद्यालय की स्थापना तक सीमित है बल्कि उनका योगदान एक विधिवेत्ता के रूप में, एक राजनीतिज्ञ, एक समाज सुधारक तथा महिला सशक्तिकरण के सशक्त प्रणेता के रूप में है। उन्होंने सभी वक्ताओं को शुभकामनाएं दीं। विशिष्ट अतिथि प्रो. बीके श्रीवास्तव ने डॉ. गौर के महत्वपूर्ण योगदानों पर चर्चा करते हुए उनके जीवन से जुड़ी कई घटनाओं की चर्चा की। प्रोफेसर श्रीवास्तव ने बताया कि जहां सागर में कभी स्याही तक नहीं मिलती थी, उस सागर शहर में उन्होंने कैंब्रिज और ऑक्सफोर्ड जैसे विश्वविद्यालय की स्थापना करने की सोची। यह उनकी मातृभूमि एवं शिक्षा के प्रति उनका समर्पण बताता है। कार्यक्रम में प्रो. अशोक अहिरवार, प्रो. जीएल पुणतांबेकर, प्रो. नवीन कांगो, प्रो. वंदना सोनी, प्रो. जेके जैन, प्रो. ममता पटेल, प्रो. आर टी बेदरे, डॉ. शशि कुमार सिंह, डॉ. आरपी सिंह डॉ. किरण आर्य, डॉ. अरुण साव, डॉ. अरविंद गौतम, डॉ. रेखा सोलंकी, डॉ. नीलम थापा, डॉ. हिमांशु, डॉ. प्रीति, डॉ. सुमन पटेल, केंद्रीय विद्यालय के डॉ. बृजेश कुमार पांडे उपस्थित थे।

गौर उत्सव सप्ताह में आज

बुधवार को दोपहर 1.30 बजे आचार्य शंकर भवन मानविकी एवं समाज विज्ञान व्याख्यान कक्ष कॉम्प्लेक्स का लोकार्पण मुकुल मुकुंद कानिटकर राष्ट्रीय संगठन मंत्री, भारतीय शिक्षण मंडल, नागपुर एवं कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की गरिमामयी उपस्थिति में संपन्न होगा। दोपहर 2 बजे स्वर्ण जयंती सभागार में डॉ. हरीसिंह गौर के जीवनवृत्त का प्रदर्शन होगा। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय और आरएफआरएफ के साथ शैक्षणिक एमओयू हस्ताक्षर कार्यक्रम के उपरान्त गौर व्याख्यानमाला के अंतर्गत राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 उच्च शिक्षा संस्थानों की नवाचारी भूमिका पर मुकुल मुकुंद कानिटकर, राष्ट्रीय संगठन मंत्री, भारतीय शिक्षण मंडल, नागपुर एवं सुश्री अरुंधती कावडकर, अखिल भारतीय महिला एकल्प सहप्रमुख एवं पालक अधिकारी, महाकौशल प्रान्त एवं मध्यभरत भारतीय शिक्षण मंडल का व्याख्यान होगा। इसी स्थल पर प्रातः 10 बजे से अपराह्न 3 बजे तक विधि विद्यार्थियों द्वारा फाईन आर्ट, पेंटिंग क्राफ्ट की प्रदर्शनी भी आयोजित होगी।

आज के समय में निर्णय नहीं, विवेकपूर्ण न्याय की जरूरत है : न्यायमूर्ति एपी साही

गौर व्याख्यानमाला के अंतर्गत मुख्य अतिथि के रूप में पधारे राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी भोपाल के निदेशक न्यायमूर्ति एपी साही ने न्यायिक प्रशासन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की प्रत्याशित भूमिका एवं प्रयोग विषय पर बोलते हुए कहा कि आज के समय में सबसे बड़ी जरूरत विवेकपूर्ण न्याय की है। बुद्धि और विवेक, निर्णय और न्याय में फर्क करना होगा। आर्टिफिसियल इंटेलीजेंस कोई नया आविष्कार नहीं है लेकिन न्यायिक प्रक्रिया में इसका उपयोग बहुत ही संवेदना और विवेक के साथ करना होगा। आज मोबाइल युग में डेटा का इधर से उधर होना आम बात हो गई है। इसकी गति बहुत ही तीव्र है। उन्होंने कहा कि मनुष्य आज प्रकृति को नियंत्रित करने की कोशिश करने लगा है जबकि पहले प्रकृति के अनुसार मनुष्य स्वयं को ढालता था। हम अप्राकृतिक चीजों से प्रकृति को निर्णीत कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि साहित्य और कानून का बहुत प्रगाढ़ संबंध है। बिना साहित्य अध्ययन के कोई भी कानूनवेत्ता नहीं बन सकता। मनुष्य की क्षमता असीमित है। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस एक क्रिएटेड इन्वेंशन है। मनुष्य ही इसका सर्जक है। इसके इस्तेमाल के लिए कानून बनाते समय इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि किसी भी व्यक्ति की सामान्य दिनचर्या पर इसकी तीव्रता और गतिशीलता का प्रभाव न पड़े। डाटा एल्गोरिदम और पैटर्न रीडिंग के माध्यम से कुछ कामों के लिए न्यायिक व्यवस्था में इसका इस्तेमाल होना चाहिए जो सुविधा प्रदान करे। आज के समय में अलग से इस विषय की पढ़ाई भी होनी जरूरी है।

डॉ. गौर के अवदान पर हुई चर्चा, मातृभूमि के प्रति था गौर का समर्पण

सागर, आचरण संवाददाता।

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के संस्थापक महान शिक्षाविद् एवं प्रख्यात विधिवेत्ता, संविधान सभा के सदस्य एवं दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में 21 नवंबर से 26 नवंबर तक आयोजित 'गौर उत्सव' के तीसरे दिन 'डॉ. गौर का अवदान- एक विश्लेषण' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। डॉ. गौर और माल्यार्पण के दौरान डॉ. अवधेश तोमर ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि डॉ. गौर का समग्र जीवन-दर्शन समझने के लिए उनके विराट व्यक्तित्व के हर पहलू को समझना होगा। हम सब सौभाग्यशाली हैं कि हम उनके परिवार के अंग हैं। यह विश्वविद्यालय उनके ही महान संकल्प की देन है। इस विश्वविद्यालय को गढ़ने-रचने की जिम्मेदारी हम सबके कन्धों पर है. डॉ. गौर के जीवन के विविध आयामों पर केंद्रित कार्यक्रमों की लंबी श्रृंखला के माध्यम से हम उनके सपनों को साकार करने के लिए कार्यरत है. डॉक्टर गौर हम सभी के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। डॉ गौर का योगदान न केवल विश्वविद्यालय की स्थापना तक सीमित है बल्कि उनका योगदान एक विधिवेत्ता के रूप में, एक राजनीतिज्ञ, एक समाज सुधारक तथा महिला सशक्तिकरण के सशक्त प्रणेता के रूप में है। उन्होंने सभी वक्ताओं को शुभकामनाएं दीं। विशिष्ट अतिथि प्रो. बीके श्रीवास्तव ने डॉ. गौर के महत्वपूर्ण योगदानों पर चर्चा करते हुए उनके जीवन से जुड़ी कई घटनाओं की चर्चा की. प्रोफेसर श्रीवास्तव ने बताया कि जहां सागर में कभी स्याही तक नहीं मिलती थी, उस सागर शहर में उन्होंने कैंब्रिज और ऑक्सफोर्ड जैसे विश्वविद्यालय की स्थापना करने की सोची। यह उनकी मातृभूमि एवं शिक्षा के प्रति उनका समर्पण बताता है।

कार्यक्रम के सह-संयोजक डॉ. पंकज सिंह ने महिला सशक्तीकरण में डॉ. गौर की महती भूमिका पर प्रकाश डाला. उन्होंने कहा कि स्त्री शिक्षा और उनके अधिकारों को लेकर डॉ. गौर ने लंबी लड़ाई लड़ी. आज हर क्षेत्र में स्त्रियों का आगे होना डॉ. गौर के अवदानों की फलश्रुति है. 1921 से लेकर 1935 तक सेंट्रल लेजिस्लेटिव एसेंबली के मेंबर रहने के दौरान उन्होंने महिला सशक्तिकरण के लिए अभूतपूर्व प्रयास किए। डॉ मनोज श्रीवास्तव ने डॉक्टर गौर के विधि वक्ता के रूप में उनके योगदान पर बोलते हुए कहा कि ट्रांसफर ऑफ प्रॉपर्टी एक्ट तथा हिंदू कोड नाम की दो किताबें विधि के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कार्य है। डॉ. वंदना राजोरिया ने डॉ. गौर के साहित्यिक अभिरुचि और उनकी कृतियों पर प्रकाश डाला और कहा कि डॉक्टर गौर की कविताओं में हमें एक जीवन के प्रति सकारात्मकता दिखाई पड़ती है। उन्होंने शंकराचार्य के अद्वैत के साथ भी डॉक्टर गौर की विचारों की साम्यता को बताया। प्रसिद्ध रंगकर्मी नाटककार शुभम उपाध्याय ने डॉक्टर गौर के धार्मिक चिंतन पर अपने विचार प्रस्तुत किए और कहा कि डॉ गौर का धर्म मानवतावादी धर्म था। प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने कहा कि डॉ. गौर की जीवन से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए तथा उनके पद चिन्हों पर चलते हुए उनके सपनों को साकार करना चाहिए।

इस प्रकार के व्याख्यानमाला आयोजित किए जाने से न केवल छात्रों को लाभ होगा बल्कि वह डॉक्टर गौर के विचार तथा चिंतन से अवगत हो पाएंगे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. वंदना राजोरिया ने किया और आभार डॉ. संजय बरौलिया ने आभार ज्ञापित किया. कार्यक्रम में प्रो.अशोक अहिरवार, प्रो. जी. एल पुणतांबेकर, प्रो.नवीन कांगो प्रो. वंदना सोनी प्रो. जेके जैन प्रो. ममता पटेल प्रो. आर टी बेदरे, डॉ शशि कुमार सिंह डॉ. आरपी सिंह डॉ किरण आर्य, डॉ.अरुण साव, डॉ. अरविंद गौतम, डॉ रेखा सोलंकी, डॉ. नीलम थापा, डॉ हिमांशु, डॉ प्रीति, डॉ. सुमन पटेल, केंद्रीय विद्यालय के डॉ. बृजेश कुमार पांडे उपस्थित थे।

ईएमआरसी द्वारा बनाई डॉक्युमेंट्री का प्रदर्शन

कार्यक्रम में ईएमआरसी के निदेशक डॉ. पंकज तिवारी द्वारा निर्देशित डॉ. गौर के जीवन, विचार और दर्शन को समग्रता में प्रस्तुत करती हुई डॉक्युमेंट्री 'सूर्य से प्रचंड गौर' का प्रदर्शन किया गया जिसे 2015 में निर्मित किया गया था.

कुलपति ने किया पेंटिंग का अनावरण

प्रो. पुणताम्बेकर ने कोरोना महामारी के दौरान समय का सदुपयोग करते हुए 'लॉकडाउन' में बनाई गई 21 पेंटिंग विश्वविद्यालय को भेंट की जिसका अनावरण कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने किया. कुलपति ने प्रो. पुणताम्बेकर को बधाई देते हुए कहा कि मुझे प्रसन्नता है कि मैं क्रियाशील और रचनात्मक शिक्षकों के बीच हूं और ऐसे सृजनशील विश्वविद्यालय में मुझे कार्य करने का अवसर मिला है. इस अवसर पर सागर शहर निवासी सत्यम कला संस्कृति संग्रहालय के संचालक दामोदर अग्निहोत्री ने डॉ. गौर की लेखनी की कुछ प्रकाशित प्रतियां कुलपति को भेंट की।

आयोजन: विश्वविद्यालय में गौर सप्ताह के तहत मूट कोर्ट का हुआ लोकार्पण

आज के समय में निर्णय नहीं विवेकपूर्ण न्याय की जरूरत है: न्यायमूर्ति साही

सागर आचरण

गौर व्याख्यानमाला के अंतर्गत मुख्य अतिथि के रूप में पधारे राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी, भोपाल के निदेशक न्यायमूर्ति ए. पी. साही ने न्यायिक प्रशासन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की प्रत्याशित भूमिका एव प्रयोग विषय पर बोलते हुए कहा कि आज के समय मे सबसे बड़ी जरूरत विवेकपूर्ण न्याय की है. बुद्धि और विवेक, निर्णय और न्याय मे फर्क करना होगा. आर्टिफिसियल इंटेलीजेंस कोई नया आविष्कार नहीं है लेकिन न्यायिक प्रक्रिया मे इसका उपयोग बहुत ही संवेदना और विवेक के साथ करना होगा. आज मोबाइल युग मे डेटा का इधर से उधर होना आम बात हो गई है. इसकी गति बहुत ही तीव्र है. उन्होंने कहा कि मनुष्य आज प्रकृति को नियंत्रित करने की कोशिश करने लगा है जबकि पहले प्रकृति के अनुसार मनुष्य स्वयं को ढालता था. हम अप्राकृतिक चीजों से प्रकृति को निर्णीत कर रहे हैं. उन्होंने कहा कि साहित्य और कानून का बहुत प्रगाढ़ संबंध है. बिना साहित्य अध्ययन के कोई भी कानूनवेत्ता नहीं बन सकता. मनुष्य की क्षमता असीमित है. आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस एक क्रियेटेड इन्वेंशन है. मनुष्य ही इसका सर्जक है. इसके इस्तेमाल के लिए कानून बनाते समय इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि किसी भी व्यक्ति की सामान्य दिनचर्या पर इसकी तीव्रता और गतिशीलता का प्रभाव न पड़े. डाटा एल्गोरिदम और पैटर्न रीडिंग के माध्यम से कुछ कामों के लिए न्यायिक व्यवस्था में इसका इस्तेमाल होना चाहिए जो सुविधा प्रदान करे. आज के समय में अलग से इस विषय की पढ़ाई भी होनी जरूरी है.

डॉ. गौर की धरती पर निर्मित 'मूट कोर्ट' न्यायपूर्ण समाज की आधारशिला साबित होगी- कुलपति: कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि 'मूट कोर्ट' की आवश्यकता लम्बे समय से महसूस की जा रही थी. आज उद्घाटित यह स्थल न्यायपूर्ण समाज की स्थापना की आधारशिला साबित होगी. विद्यार्थी और शिक्षक अब इसका उपयोग कर पायेंगे और एक समतामूलक समाज की निर्मिति मे सहयोग कर पायेंगे, जो गौर साहब की संकल्पना थी. उन्होंने न्यायमूर्ति साही के विश्वविद्यालय आगमन की सहमति के लिए उन्हें धन्यवाद दिया. विषय प्रवर्तन करते हुए उन्होंने कहा कि आज रोबोट का युग आ गया है. हमें यह देखना होगा कि क्या सचमुच मनुष्य की संवेदनशीलता भी रोबोट जैसी अप्राकृतिक चीजें सृजित करने में सक्षम हो सकेगी. उन्होंने कहा कि न्यायालयों मे लंबित प्रकरणों को हल करने मे आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के उपयोग की संभावनाओं को तलाशा जा सकता है. इस दिशा में अभी बहुत से प्रयोग किये जाने की आवश्यकता है ताकि मनुष्य की संवेदना बने रहने के साथ ही तकनीक आधारित न्याय व्यवस्था मददगार साबित हो. विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. बलवतराय शांतिलाल जानी ने कहा कि मनुष्य की संवेदना को समझना बहुत ही आवश्यक है. इसको समझे बगैर न्याय प्रक्रिया पूर्ण नहीं हो सकती. इस मशीनी युग मे भी हमें देशज ज्ञान परम्परा की अवहेलना नहीं करनी चाहिए. इसकी अपनी विशिष्ट महत्ता है. संवेदनापूर्ण न्याय मनुष्य के विकास को नया मुकाम देगा. हमें कोगनिटिव साइंस जैसे पाठ्यक्रम को शुरू किये जाने की भी बात कही. कार्यक्रम मे स्वागत वक्तव्य विधि अध्ययनशाला के अधिष्ठाता प्रो. पीपी सिंह ने दिया. मुख्य अतिथि का परिचय डॉ. अनुपमा सक्सेना ने और संचालन डॉ. विकास अग्रवाल ने किया. आभार कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने माना. कार्यक्रम में सागर शहर के अनेक अधिवक्तागण, जिला अधिवक्ता संघ के पधाधिकारी गण, नागरिक गण, विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी और विद्यार्थी उपस्थित थे.

'मूट कोर्ट' का हुआ लोकार्पण

मुख्य अतिथि के रूप में पधारे राष्ट्रीय न्यायिक अकादमी के निदेशक न्यायमूर्ति ए. पी. साही और कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की गरिमामयी उपस्थिति में विधि विभाग परिसर में निर्मित 'मूट कोर्ट'- विक्रमादित्य भवन का लोकार्पण हुआ. इस अवसर पर अधिष्ठाता प्रो. पीपी सिंह, प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा, कुलसचिव संतोष सोहगौरा, प्रो. आशीष वर्मा, प्रो. पुणताम्बेकर, प्रो. गिरीश मोहन दुबे सहित विधि विभाग के समस्त शिक्षक, विद्यार्थी और कर्मचारी उपस्थित थे.

24 नवंबर 2021 को आयोजित कार्यक्रम

24 नवंबर दोपहर 1.30 बजे 'आचार्य शंकर भवन' (मानविकी एवं समाज विज्ञान व्याख्यान कक्ष कॉम्प्लेक्स) का लोकार्पण मुकुल मुकुंद कानिटकर, राष्ट्रीय संगठन मंत्री, भारतीय शिक्षण मंडल, नागपुर एवं कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की गरिमामयी उपस्थिति में संपन्न होगा. दोपहर 02.00 बजे स्वर्ण जयन्ती सभागार मे डॉ. हरीसिंह गौर के जीवनवृत्त का प्रदर्शन होगा. डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय और आर.एफ.आर.एफ के साथ शैक्षणिक एमओयू हस्ताक्षर कार्यक्रम के उपरान्त गौर व्याख्यानमाला के अंतर्गत राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 उच्च शिक्षा संस्थानों की नवाचारी भूमिका पर मुकुल मुकुंद कानिटकर, राष्ट्रीय संगठन मंत्री, भारतीय शिक्षण मंडल, नागपुर एवं अरुंधती कावडकर, अखिल भारतीय महिला प्रकल्प सहप्रमुख एवं पालक अधिकारी, महाकौशल प्रान्त एवं मध्यभारत, भारतीय शिक्षण मंडल का व्याख्यान होगा. इसी स्थल पर प्रातः 10 बजे से अपरान्ह 3.00 बजे तक विश्वविद्यालयीन विद्यार्थियों द्वारा फाईन आर्ट, पेंटिंग क्राफ्ट की प्रदर्शनी भी आयोजित होगी.

गौर उत्सव • भारतीय शिक्षण मंडल के राष्ट्रीय संगठन मंत्री ने किया आचार्य शंकर भवन का लोकार्पण

एक शिक्षक को नवाचार करने के लिए संस्था और सरकारों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए: कानिटकर

भास्कर संवाददाता | सागर

भारतीय शिक्षण मंडल के राष्ट्रीय संगठन मंत्री मुकुल मुकुंद कानिटकर विवि में कार्यक्रम को संबोधित करते हुए।

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में गौर उत्सव के चौथे दिन बुधवार को आचार्य शंकर भवन का लोकार्पण भारतीय शिक्षण मंडल के राष्ट्रीय संगठन मंत्री मुकुल मुकुंद कानिटकर ने किया। इस अवसर पर स्वर्ण जयंती सभागार में उच्च शिक्षा की नवाचारी भूमिका विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि मुकुल मुकुंद कानिटकर ने कहा कि यह भवन आचार्य शंकर के नाम पर रखा गया है। सभी को बराबर भाव से देखना ही अद्वैत है। उनकी अद्वैत परम्परा को पुनर्जीवित करने का काम यहां के विद्यार्थी और शिक्षक करेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। गुरु के बिना भारत का विश्वगुरु बनाना असंभव है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में ऐसे कई बिंदु हैं जो शिक्षक को नवाचार की पूरी स्वायत्तता देते हैं। एक शिक्षक को नवाचार करने के लिए संस्था और सरकारों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। शासन केंद्रित व्यवस्था से समाज के अंतिम व्यक्ति का हित नहीं संभव है। समाज केंद्रित व्यवस्था से ही अंतिम व्यक्ति का कल्याण संभव है। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से देश को बदलने का संकल्प लिया गया है। हम भाग्यशाली हैं कि डॉ. गौर के जन्मोत्सव पर हम उनके ही शिक्षा के केंद्र में शिक्षा में नवाचार पर चर्चा कर रहे हैं। इंडस्ट्री कोलैबोरेशन, एमओयू के माध्यम से शिक्षा एवं शोध को नई दिशा मिलेगी। विशिष्ट अतिथि अखिल भारतीय महिला प्रकल्प सहप्रमुख अरुंधति कावडकर ने कहा कि विश्वविद्यालय ज्ञान और गुरुत्व के केंद्र के रूप में होने चाहिए। विद्यार्थी गुरुत्व के स्पर्श से ही आगे बढ़ता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. बलवंत राय शांतिलाल जानी ने की। इस दौरान स्वागत वक्तव्य अधिष्ठाता प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने दिया और संचालन कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने किया।

विश्वविद्यालय और रिसर्च फॉर रिसर्जेन्स फाउंडेशन के बीच हुआ अकादमिक अनुबंध : कार्यक्रम के दौरान डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय और रिसर्च फॉर रिसर्जेन्स फाउंडेशन, नागपुर के बीच अकादमिक समझौता पत्रक पर हस्ताक्षर हुए। विश्वविद्यालय की ओर से कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने और फाउंडेशन की ओर से मुकुल कानिटकर ने समझौता-पत्रक पर हस्ताक्षर किए। इस अकादमिक समझौते के तहत सेंटर फॉर रिसर्च एंड रिसर्जेंस स्थापित किया जाएगा। इससे अकादमिक शोध और नवाचारी गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा।

फ़ाईन आर्ट, पेंटिंग क्राफ्ट की प्रदर्शनी आयोजित: विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा बनाई गई फ़ाईन आर्ट, पेंटिंग क्राफ्ट की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। यह प्रदर्शनी डॉ. ललित मोहन और डॉ. सुप्रभा दास के संयोजन में आयोजित की गई थी। डॉ सुप्रभा दास ने डॉ. गौर की स्वनिर्मित मूर्ति कुलपति को भेंट की। कार्यक्रम में अतिथियों द्वारा डॉ सरोज गुप्ता द्वारा लिखित पुस्तक 'आज़ादी की आग- बुंदेलखंड की वीरांगनाओं की शौर्य गाथा' का विमोचन भी किया गया।

डॉ. गौर के सपनों का सागर विषय पर परिचर्चा आज

स्वर्ण जयंती सभागार में सुबह 11 बजे डॉ. गौर के सपनों का सागर और उनका विश्वविद्यालय विषय पर परिचर्चा होगी। इसमें कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता, वरिष्ठ समाजवादी चिन्तक रघु ठाकुर, डॉ. जीएस चौबे, प्रो. एसपी व्यास और प्रो. सुरेश आचार्य अपने विचार प्रस्तुत करेंगे। वहीं शाम 7 बजे अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन होगा। इसमें अशोक मिज़ाज बद्र, अशोक सुन्दरानी, विभा सिंह आदि कवियों के द्वारा काव्य पाठ की प्रस्तुति होगी।

गौर उत्सव | स्वर्ण जयन्ती सभागार में गौर व्याख्यानमाला आयोजित

अनुभवजनित शिक्षा से बनेगा आत्मनिर्भर भारत: कुलपति

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क

patrika.com

सागर. विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयन्ती सभागार में आयोजित गौर व्याख्यानमाला अंतर्गत राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 उच्च शिक्षा की नवाचारी भूमिका विषय पर आयोजित कार्यक्रम में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि आज के समय में विद्यार्थियों को केवल कक्षाओं तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए। बल्कि उन्हें अनुभव आधारित शिक्षा की [illegible]

[illegible]

सर गौर के सपनों का सागर पर परिसंवाद आज

डॉ. गौर के सपनों का सागर और उनका विश्वविद्यालय पर आधारित परिसंवाद कार्यक्रम का आयोजन होगा। इस कार्यक्रम में विशेषज्ञ के रूप में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता, वरिष्ठ समाजवादी चिन्तक रघु ठाकुर, डॉ. जीएस चौबे पूर्व कुलपति प्रो. एसपी व्यास, प्रो. सुरेश आचार्य उपस्थित रहेंगे। शाम 7 बजे अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन होगा, जिसमें शायर अशोक मिज़ाज बद्र सागर, अशोक सुन्दरानी सतना, विभा सिंह, बनारस, संतोष शर्मा सागर [illegible]

आचार्य शंकर भवन का हुआ लोकार्पण

डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉ. सर गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में गौर उत्सव के चौथे दिन आचार्य शंकर भवन, मानविकी एवं समाज विज्ञान व्याख्यान कक्ष कॉम्प्लेक्स का लोकार्पण राष्ट्रीय संगठन मंत्री भारतीय शिक्षण मंडल नागपुर मुकुल मुकुंद कानिटकर, कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी व कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की उपस्थिति में हुआ। कानिटकर ने कहा कि यह भवन आचार्य शंकर के नाम पर रखा गया है। सभी को बराबर भाव से देखना ही अद्वैत है। उनकी अद्वैत परम्परा को पुनर्जीवित करने का काम यहां के विद्यार्थी और शिक्षक करेंगे। ऐसा मेरा विश्वास है। आचार्य शंकर [illegible] [illegible] यह भवन उनके इस सिद्धांत का केंद्र बनेगा। स्वागत वक्तव्य अधिष्ठाता प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने दिया और संचालन कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने किया। इस अवसर पर संयोजक डॉ. ललित मोहन व विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष, शिक्षक, कर्मचारी और विद्यार्थी उपस्थित थे।

विवि और रिसर्च फॉर रिसर्जेन्स फाउंडेशन के बीच अकादमिक अनुबंध

स्वर्ण जयंती सभागार में कार्यक्रम के दौरान डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय और रिसर्च फॉर रिसर्जेन्स फाउंडेशन नागपुर के बीच अकादमिक समझौता पत्रक पर हस्ताक्षर हुए। विश्वविद्यालय की ओर से कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने और फाउंडेशन की ओर से मुकुल कानिटकर ने समझौता पत्रक पर हस्ताक्षर किए। इस अकादमिक समझौते के तहत सेंटर फॉर रिसर्च एंड रिसर्जेंस स्थापित किया जाएगा। इससे अकादमिक शोध और नवाचारी गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा। इस दौरान विद्यार्थियों द्वारा बनाई गई फाइन आर्ट पेंटिंग क्राफ्ट की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। [illegible]

गौर उत्सव–तीसरा दिन, तीसरे दिन डॉ. गौर के अवदान पर हुए व्याख्यान, 'मूट कोर्ट' का हुआ लोकार्पण

डॉ. गौर के महान संकल्प की देन है डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय: कुलपति

सागर(एस.बी.न्यूज)। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के संस्थापक महान शिक्षाविद् एवं प्रख्यात विधिवेत्ता, संविधान सभा के सदस्य एवं दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152 वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 21 नवंबर से 26 नवंबर तक आयोजित 'गौर उत्सव' के तीसरे दिन 'डॉ. गौर का अवदान- एक विश्लेषण' कार्यक्रम का आयोजन किया गया. डॉ. गौर और माल्यार्पण के दौरान डॉ. अवधेश तोमर ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की।

डॉ. वंदना राजौरिया ने डॉ. गौर के साहित्यिक अभिरुचि और उनकी कृतियों पर प्रकाश डाला और कहा कि डॉक्टर गौर की कविताओं में हमें एक जीवन के प्रति सकारात्मकता दिखाई पड़ती है। उन्होंने शंकराचार्य के अद्वैत के साथ भी डॉक्टर गौर की विचारों को साम्यता को बताया। प्रसिद्ध रंगकर्मी नाटककार शुभम उपाध्याय ने डॉक्टर गौर के धार्मिक चिंतन पर अपने विचार प्रस्तुत किए और कहा कि डॉ गौर का धर्म मानवतावादी धर्म था।

प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने कहा कि डॉ. गौर की जीवन से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए तथा उनके पद चिन्हों पर चलते हुए उनके सपनों को साकार करना चाहिए। इस प्रकार के व्याख्यानमाला आयोजित किए जाने से न केवल छात्रों को लाभ होगा बल्कि वह डॉक्टर गौर के विचार तथा चिंतन से अवगत हो पाएंगे. कार्यक्रम का संचालन डॉ. वंदना राजौरिया ने किया और आभार डॉ. संजय बरौलिया ने आभार ज्ञापित किया।

कार्यक्रम में प्रो.अशोक अहिरवार, प्रो. जी. एल पुणतांबेकर, प्रो.नवीन कांगो प्रो. वंदना सोनी प्रो.

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि डॉ. गौर का समग्र जीवन-दर्शन समझने के लिए उनके विराट व्यक्तित्व के हर पहलू को समझना होगा। हम सब सौभाग्यशाली हैं कि हम उनके परिवार के अंग हैं। यह विश्वविद्यालय उनके ही महान संकल्प की देन है। इस विश्वविद्यालय को गढ़ने-रचने की जिम्मेदारी हम सबके कन्धों पर है। डॉ. गौर के जीवन के विविध आयामों पर केंद्रित कार्यक्रमों की लंबी श्रृंखला के माध्यम से हम उनके सपनों को साकार करने के लिए कार्यरत हैं। डॉक्टर गौर हम सभी के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। डॉ गौर का योगदान न केवल विश्वविद्यालय की स्थापना तक सीमित है बल्कि उनका योगदान एक विधिवेत्ता के रूप में, एक राजनीतिज्ञ, एक समाज सुधारक तथा महिला सशक्तिकरण के सशक्त प्रणेता के रूप में है। उन्होंने सभी वक्ताओं को शुभकामनाएं दीं। विशिष्ट अतिथि प्रो. बीके श्रीवास्तव ने डॉ. गौर के महत्वपूर्ण योगदानों पर चर्चा करते हुए उनके जीवन से जुड़ी कई घटनाओं की

जेके जैन प्रो. ममता पटेल प्रो. आर टी बेदरे, डॉ शशि कुमार सिंह डॉ. आरपी सिंह डॉ किरण आर्य, डॉ.अरुण साव, डॉ. अरविंद गौतम, डॉ रेखा सोलंकी, डॉ. नीलम थापा, डॉ हिमांशु, डॉ प्रीति, डॉ. सुमन पटेल, केंद्रीय विद्यालय के डॉ. बृजेश कुमार पांडे उपस्थित थे।

ईएमआरसी द्वारा बनाई डोक्युमेंट्री का प्रदर्शन

कार्यक्रम में ईएमआरसी के निदेशक डॉ. पंकज तिवारी द्वारा निर्देशित डॉ. गौर के जीवन, विचार और दर्शन को समग्रता में प्रस्तुत करती हुई डोक्युमेंट्री ' सूर्य से प्रचंड गौर' का प्रदर्शन किया गया जिसे 2015 में निर्मित किया गया था।

कुलपति ने किया पेंटिंग का अनावरण

प्रो. पुणताम्बेकर ने कोरोना महामारी के दौरान समय का सदुपयोग करते हुए 'लॉकडाउन' में बनाई गई 21 पेंटिंग विश्वविद्यालय को भेंट की जिसका अनावरण कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने किया. कुलपति ने प्रो. पुणताम्बेकर को बधाई देते हुए कहा

चर्चा की. प्रोफेसर श्रीवास्तव ने बताया कि जहां में कभी स्याही तक नहीं मिलती थी, उस सागर में उन्होंने कैंब्रिज और ऑक्सफोर्ड जैसे विश्ववि[illegible] की स्थापना करने की सोची। यह उनकी मातृभू[illegible] शिक्षा के प्रति उनका समर्पण बताता है। कार्यक्र[illegible] सह-संयोजक डॉ. पंकज सिंह ने म[illegible] सशक्तीकरण में डॉ. गौर की महती भूमिका पर प्र[illegible] डाला। उन्होंने कहा कि स्त्री शिक्षा और [illegible] अधिकारों को लेकर डॉ. गौर ने लंबी लड़ाई [illegible] आज हर क्षेत्र में स्त्रियों का आगे होना डॉ. गौर [illegible] अवदानों की फलश्रुति है। 1921 से लेकर 19[illegible] तक सेंट्रल लेजिस्लेटिव एसेंबली के मेंबर रहने [illegible] दौरान उन्होंने महिला सशक्तिकरण के लिए अभूतपूर्व प्रयास किए। डॉ मनोज श्रीवास्तव ने डॉक्टर गौर के विधि वक्ता के रूप में उनके योगदान पर बोलते [illegible] कहा कि ट्रांसफर ऑफ प्रॉपर्टी एक्ट तथा हिं[illegible] नाम की दो किताबें विधि के क्षेत्र में एक [illegible] कार्य है।

मूट कोर्ट' का हुआ लोक[illegible]

मुख्य अतिथि के रूप में पधारे रा[illegible] न्यायिक अकादमी के निदेशक न्यायमूर्ति ए. पी. [illegible] पाही औ[illegible] कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की गरिमामयी [illegible] में विधि विभाग परिसर में निर्मित 'मूट [illegible] विक्रमादित्य भवन का लोकार्पण हुआ. इस [illegible] पर अधिष्ठाता प्रो. पीपी सिंह, प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा, कुलसचिव संतोष सोहगौरा, प्रो. आशीष वर्मा, प्रो पुणताम्बेकर, प्रो. गिरीश मोहन दुबे सहित विधि विभाग के समस्त शिक्षक, विद्यार्थी और कर्मचा[illegible] उपस्थित थे।

कि मुझे प्रसन्नता है कि मैं क्रियाशील और रचनात्मक शिक्षकों के बीच हूँ और ऐसे सृजनशील विश्वविद्यालय में मुझे कार्य करने का अवसर मिला है. इस अवसर पर सागर शहर निवासी सत्यम कला संस्कृति संग्रहालय के संचालक दामोदर अग्निहो[illegible] ने डॉ. गौर की लेखनी की कुछ प्रकाशित प्रति[illegible] कुलपति को भेंट की।

रवींद्र भवन में अथग के पांच दिवसीय नाट्य समारोह का शुभारंभ

मनुष्य जीवन की आर्थिक ट्रेजडी और महंगाई से उपजे विडंबना मूलक हास्य का महाकाव्यात्मक अफसाना है नाटक 'भाग अवंती भाग'

समीक्षा : डॉ. आशुतोष, पत्रकार, कला विधि में हिंदी विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर

अन्वेषण थियेटर ग्रुप सागर का नाट्य समारोह एक बार फिर पूरे साज-बाज के साथ लौट आया है। नाट्य समारोह अलयुक्त सागर के अभिनव शिल्पकार डॉ. हरीसिंह गौर को समर्पित है। 5 दिन के इस खास रंगोत्सव के पहले दिन भोपाल थियेटर्स, भोपाल की ओर से योगेश संभल के नाटक 'भाग अवंति भाग' का प्रदर्शन हुआ। नाटक का निर्देशन प्रख्यात रंगकर्मी और फिल्म अभिनेता राजीव वर्मा ने किया है।

नाटक का मूल कथानक आम आदमी और महंगाई के बीच के जद्दोजहद पर केंद्रित है। आम आदमी का जीवन कमाई और खर्च के एक अत्यंत बारीक संतुलन पर टिका होता है। यह इसी संतुलन को साधने की कोशिश में हास्यास्पद होते जाने की कथा है।

एक मध्यवर्गीय परिवार मुकुंद जोशी, पत्नी शालिनी और पुत्री अवंति के जीवन को आधार बनाकर नाटककार ने एक सर्वकालिक आख्यान रचा है। खर्च बचाने के लिए बेटी को अपने मन से भाग कर शादी करने के लिए तैयार करते पिता की कोशिशें हास्य पैदा करती हैं किंतु यह नाटक हास्य के शिल्प में हमारी समूचे तंत्र पर एक गंभीर व्यंग है। यह एक ऐसा हास्य है जिसका उत्स ट्रेजडी है।

महज चार किरदारों वाले इस नाटक का मुख्य किरदार प्रवीण महूवाले ने निभाया है। उन्होंने इस नाटक को हिन्दी भाषा में रूपांतरित भी किया है उनके काम से ऐसा लगता है कि रूपांतरण की प्रक्रिया में वे खुद भी जैसे मुकुंद जोशी में रूपांतरित हो गए हैं। शालिनी के रूप में रीता वर्मा का काम बहुत महीन है। उनका अभिनय, आंगिक चेष्टाएं, मुद्राएं, भाषा अत्यंत परिपक्व हैं। अदिशा नायर (अवंति) का अभिनय कथा संरचना की संगति है जो उन्हें महत्वपूर्ण बनाता है।

निर्देशक राजीव वर्मा ने इस नाटक के माध्यम से अपनी विशिष्ट निर्देशकीय क्षमता का परिचय कराया ही है साथ ही वे कला के सामाजिक सरोकार और एक चेतना सम्पन्न नागरिक होने की भूमिका के साथ भी न्याय करते हैं। प्रकाश व्यवस्था में दिनेश नायर, संगीत निर्माण में रविन्द्र टाक के साथ मंच व्यवस्था में पवित्र नस्कर, रविकांत पटेल और अभिषेक ने बेहतर काम किया है। निर्देशकीय स्पर्श और पात्रों के नैसर्गिक अभिनय ने 'भाग अवंति भाग' नाटक को खास बना दिया है।

सागर : पहले दिन भोपाल थियेटर द्वारा हास्य नाटक भाग अवंती भाग का मंचन किया गया। नाटक देखने बड़ी संख्या में लोग पहुंचे। मंच पर प्रस्तुति देते कलाकार।

• आज का मंचन : 25 नवम्बर को जगदीश शर्मा निर्देशित नाटक 'तुम कितनी खूबसूरत हो' का मंचन स्वयं आयोजक संस्था अन्वेषण थियेटर ग्रुप द्वारा किया जाएगा।

गौर उत्सव-चौथा दिन : आचार्य शंकर भवन का लोकार्पण और राष्ट्रीय शिक्षा नीति : 2020 पर हुआ व्याख्यान

सागर, देशबन्धु। 21 नवंबर से 26 नवंबर तक आयोजित 'गौर उत्सव' के चौथे दिन 'आचार्य शंकर भवन' (मानविकी एवं समाज विज्ञान व्याख्यान कक्ष कॉम्प्लेक्स) का लोकार्पण मुकुल मुकुंद कानिटकर, राष्ट्रीय संगठन मंत्री, भारतीय शिक्षण मंडल, नागपुर, कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी एवं कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की गरिमामयी उपस्थिति में संपन्न हुआ। लोकार्पण के अवसर पर कानिटकर ने बोलते हुए कहा कि यह भवन आचार्य शंकर के नाम पर रखा गया है। सभी को बराबर भाव से देखना ही अद्वैत है। उनकी अद्वैत परम्परा को पुनर्जीवित करने का काम यहाँ के विद्यार्थी और शिक्षक करेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। स्वागत वक्तव्य अधिष्ठाता प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने दिया और संचालन कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने किया। इस अवसर पर संयोजक डॉ. ललित मोहन, विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष, शिक्षक, कर्मचारी और विद्यार्थी उपस्थित थे।

अनुभवजनित शिक्षा से बनेगा आत्मनिर्भर भारत : कुलपति

विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयन्ती सभागार में आयोजित गौर व्याख्यानमाला श्रृंखला के अंतर्गत राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 उच्च शिक्षा की नवाचारी भूमिका विषय पर आयोजित कार्यक्रम में स्वागत उद्बोधन में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा आज के समय में विद्यार्थियों को केवल कक्षाओं तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए बल्कि उन्हें अनुभव आधारित शिक्षा की तरफ प्रेरित करना चाहिए ताकि वे स्वयं के अनुभवों से बहुत कुछ सीख सकें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में हमें नवाचारी तरीके से बहुआयामी कार्य करने होंगे। हम भाग्यशाली हैं कि डॉ. गौर के जन्मोत्सव पर हम उनके ही शिक्षा के केंद्र में शिक्षा में नवाचार पर चर्चा कर रहे हैं।

विश्वविद्यालय बनें ज्ञान-गुरुत्व के केंद्र- अरुंधति कावड़कर

विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए सुश्री अरुंधती कावडकर, अखिल भारतीय महिला प्रकल्प सहप्रमुख एवं पालक अधिकारी, महाकौशल प्रान्त ने कहा विश्वविद्यालय ज्ञान और गुरुत्व के केंद्र के रूप में होने चाहिए। विद्यार्थी गुरुत्व के स्पर्श से ही आगे बढ़ता है। उसके जीवन में गुरु का बहुत महत्त्व होता है। गुरु को भी अपने विद्यार्थियों को समझने की योग्यता होनी चाहिए। शिक्षक अपने विद्यार्थियों के कारण ही शिक्षक कहलाता है। बिना विद्यार्थी के शिक्षक अस्तित्वहीन है।

गुरु ही बनाएंगे भारत को विश्वगुरु- मुकुल कानिटकर

मुख्य अतिथि मुकुल कानिटकर ने कहा गुरु के बिना भारत का विश्वगुरु बनना असंभव है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में ऐसे कई बिंदु हैं जो शिक्षक को नवाचार की पूरी स्वायत्तता देते हैं। एक शिक्षक को नवाचार करने के लिए संस्था और सरकारों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। शासन केंद्रित व्यवस्था से समाज के अंतिम व्यक्ति का हित नहीं संभव है। समाज केंद्रित व्यवस्था से ही अंतिम व्यक्ति का कल्याण संभव है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति पढ़ते समय उसमें हमें स्व मन का भाव मिलता है। उसमें बहुत सी जीवनोपयोगी और तार्किक बातें हैं जिनके माध्यम से भारतीयता का बोध पैदा होता है। गौर

उत्सव चरित्र निर्माण का उत्सव है- कुलाधिपति

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. बलवंत राय शांतिलाल जानी ने कहा डॉ. हरीसिंह गौर की दैवीय विलक्षणता ही है कि हम प्रतिवर्ष उनके जन्मदिन को एक उत्सव के रूप में मनाते हैं। वह एक विश्वविद्यालय स्थापित करने और सब कुछ दान कर देने वाले एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक स्वप्नद्रष्टा थे जो उन्होंने भावी भारतीय युवा पीढ़ी के लिए देखा था। आज बहुत सी विदेश की संस्थायें भारतीय युवा मेधा को अपने यहाँ शिक्षा और रोजगार के लिए आकर्षित कर रही हैं। डॉ गौर ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने कैम्ब्रिज में पढ़ाई तो की लेकिन वे भारतीय युवा पीढ़ी के लिए भारत में कैम्ब्रिज जैसी संस्था शुरू करने का संकल्प लेकर भारत वापस आ गये। यह विश्वविद्यालय उसी सपने की देन है। संचालन डॉ. शशि कुमार सिंह ने किया। प्रो. अर्चना पाण्डेय ने अतिथियों का परिचय वाचन किया। कार्यक्रम के मध्य में संगीत विभाग की शिक्षका डॉ. स्मृति त्रिपाठी ने गीत प्रस्तुत किया। कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने आभार ज्ञापन किया। इस अवसर पर शिक्षक, विद्यार्थी, कर्मचारी, सागर शहर एवं मध्य प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से पधारे गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

विश्वविद्यालय और रिसर्च फॉर रिसर्जेन्स फाउंडेशन के बीच हुआ अकादमिक अनुबंध

कार्यक्रम के दौरान डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय और रिसर्च फॉर रिसर्जेन्स फाउंडेशन, नागपुर के बीच अकादमिक समझौता पत्रक पर हस्ताक्षर हुए। विश्वविद्यालय की ओर से कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने और फाउंडेशन की ओर से मुकुल कानिटकर ने समझौता-पत्रक पर हस्ताक्षर किये। इस अकादमिक समझौते के तहत सेंटर फॉर रिसर्च एंड रिसर्जेंस स्थापित किया जाएगा। इससे अकादमिक शोध और नवाचारी गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा.

फ़ाईन आर्ट, पेंटिंग क्राफ्ट की प्रदर्शनी आयोजित

विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा बनाई गई फ़ाईन आर्ट, पेंटिंग क्राफ्ट की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसमें प्रो. पुणताम्बेकर द्वारा बनाई गई पेंटिंग भी प्रदर्शनी के लिए रखी गई थी। सभी अतिथियों ने प्रदर्शनी का अवलोकन कर कलाकारों को शुभकामनाएं दीं। यह प्रदर्शनी डॉ. ललित मोहन और डॉ. सुप्रभा दास के संयोजन में आयोजित की गई थी। डॉ सुप्रभा दास ने डॉ. गौर की स्वनिर्मित मूर्ति कुलपति को भेंट की।

'आज़ादी की आग- बुंदेलखंड की वीरांगनाओं की शौर्य गाथा' पुस्तक का विमोचन

कार्यक्रम में अतिथियों द्वारा डॉ सरोज गुप्ता द्वारा लिखित पुस्तक 'आज़ादी की आग- बुंदेलखंड की वीरांगनाओं की शौर्य गाथा' का विमोचन भी किया गया।

डॉ. हरीसिंह गौर जन्मजयंती सप्ताह पर विशेष

सागर, देशबन्धु। डा. गौर और वकीलों से हटकर थे। उन्होंने वकालात का अध्ययन अत्यन्त ही मेहनत के साथ किया था। वे कानून के अच्छे जानकार तो थे ही, कानून में कहां चूक है, इन पर भी उन्होंने गम्भीर चिन्तन-मनन किया था। कैम्ब्रिज में अध्ययन के दौरान धन की कमी को उन्होंने साहित्य सृजन एवं उससे प्राप्त रायल्टी से पूरा किया था। उस समय तो यह कार्य धन की कमी को दूर करने के उद्देश्य से किया था मगर उस कार्य ने अब अभिरुचि का रूप ले लिया था। उस समय भारतीय कानून का कोई ऐसा महत्वपूर्ण ग्रंथ नहीं था जो वकीलों की जटिल गुत्थियों को सुलझाने में मदद कर सके। अतः उन्होंने निश्चय कर लिया कि वे अपने वकालत के सूक्ष्म ज्ञान का उपयोग कानून की बेहतर पुस्तकें लिखने में करेंगे। इससे दो लाभ थे एक ओर तो वकालत करने के लिये कानून की उपलब्ध पुस्तकों को पढ़ना पड़ता था, तो दूसरी ओर इससे एक बेहतर पुस्तक तैयार करने हेतु आवश्यक सामग्री संकलित हो जाती थी। इस क्रम में डा. हरीसिंह गौर ने अपनी पहली पुस्तक 1895 ई. में 'सम्पत्ति का हस्तांतरण' लिखी। प्रेस, न्यायाधीशों एवं कानून विदों ने इस ग्रंथ को अपने विषय का 'महानतम् ग्रंथ' बताया।

डा. गौर ने वकालात के पेशे में भी यथा संभव नैतिक मानदण्डों पर बात की है। उन्होंने एक और समस्या यह भी बताई थी कि वकील जिसका केस लड़ रहे हैं, वह मुवक्किल और उसके सहयोगी कभी सत्य नहीं बताते। वे वकील के पास एक कहानी गढ़कर जाते हैं और यह बताते हैं कि वे निर्दोष हैं एवं उन्हें कोर्ट द्वारा दोषमुक्त कराया जाये। डा. गौर ने लिखा है - 'वे अपना किस्सा ऐसे बयान करते हैं जैसे वह ध्रुव सत्य हो और उसी को सही सिद्ध कराने के लिए वो वकील को अनुबंधित करते हैं।'

1914 में डा. हरीसिंह गौर का एक और महत्वपूर्ण ग्रंथ 'पीनल लॉ' (दण्ड विधि) प्रकाशित हुआ। यह भी एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण ग्रंथ था। विषय वस्तु, भाषा शैली, छपाई, हर दृष्टिकोण से यह एक उत्कृष्ट ग्रंथ था जिसने डा. गौर को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति दिलायी।

साइमन कमीशन के एक सदस्य के रूप में भी वे रंगून रहे। वर्मा में डा. गौर की आमदनी बहुत अच्छी थी। प्रतिदिन की फीस ही 3000 रुपये थी। इसके बावजूद उन्होंने नागपुर को अपना मुख्यालय बनाया था जहां 3000 रुपये एक माह की वकालत में मिल पाते थे। इसलिए लोग डा. गौर के मित्र व अन्य लोग भी यह आश्चर्य करते थे कि इसके बावजूद भी डा. गौर ने अपना मुख्यालय नागपुर क्यों बनाया है। नागपुर में 4 एकड़ जमीन खरीदकर उन्होंने एक बड़ा घर बनवाया था। अपनी पुस्तकों के विशाल भण्डार को प्रथक से एक कमरे में जमाया था। एक शिक्षक एवं एक वकील की सबसे बड़ी पूंजी तो उसकी पुस्तकें ही रहती हैं। वह शिक्षक ही क्या? वह वकील ही क्या? जिनके पास पुस्तकों का संग्रह न हो। डा. गौर ने नागपुर को ही कम आमदनी के बावजूद अपने निवास हेतु चुना। आमदनी भले ही कम हुई परन्तु नागपुर डा. गौर को हर तरह से फला। यहीं रहकर उनके भाग्य का सितारा कई बार चमका।

वकालात के क्षेत्र में डा. हरीसिंह गौर की योग्यता का डंका समस्त भारतवर्ष में बज उठा। कठिन से कठिन केस भी डा. गौर अपनी बुद्धिमता की दम पर जीत लेते थे। उनकी वकालात की ख्याति इतनी अधिक बढ़ गई थी कि लोग यह कहने लगे थे कि यदि किसी की मोटर कार का पहिया मार्ग में पंचर हो जाये तो उसे डा. हरीसिंह गौर को वकील बना लेना चाहिए। डा. हरीसिंह गौर उस व्यक्ति को नवीन ट्यूब-टायर के पैसे म्युनिसपैलिटी से वसूल करा सकते हैं। इस प्रकार की कई कहानियां प्रचलित होने लगीं थीं। कहानियों में अतिश्योक्ति हो सकती है मगर यह कहना अतिश्योक्ति नहीं थी कि डा. हरीसिंह गौर इस दौर के भारत के सर्वश्रेष्ठ वकील थे। वकालात के प्रकरणों में उनका सफलता का प्रतिशत अत्यधिक था। इस समय का प्रख्यात से प्रख्यात वकील भी यही चाहता था कि प्रतिपक्षी वकील के रूप में उनका सामना डा. हरीसिंह गौर से न हो। जिस तरह अपने युग का सर्वश्रेष्ठ गदाधर भीम था, सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर अर्जुन था, यूरोप में अपने युग का सर्वश्रेष्ठ राजनीतिज्ञ बिस्मार्क था उसी तरह हम यह कह सकते हैं कि अपने युग के सर्वश्रेष्ठ वकील डा. हरीसिंह गौर थे।

प्रो. बी.के. श्रीवास्तव की पुस्तक 'डा. हरीसिंह गौर: एक प्रेरक व्यक्तित्व' से साभार

काशी हिंदू विवि में भी मनेगी जयंती

सागर (नवदुनिया प्रतिनिधि)। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में कार्यरत सागर विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र एवं पूर्व में कार्यरत शिक्षक बनारस में गौर जयंती मनाएंगे। यहां वह पिछले 13 सालों से आयोजन करते आ रहे हैं।

आयोजन समिति के संयोजक बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में पदस्थ डिप्टी लाइब्रेरियन डॉ. संजीव सराफ ने बताया कि इस वर्ष भी गौर जयंती पर विभिन्न आयोजन किए जाएंगें, जिनमें गौर जयंती की पूर्व संध्या पर डॉ. गौर के जीवन पर ऑफलाईन एवं ऑनलाईन मोड में संगोष्ठी एवं गौर जयंती के दिन बुंदेलखंड के पूज्य संत गणेश प्रसाद वर्णी जी की प्रेरणा से भदैनी स्थित स्याद्वाद महाविद्यालय के जैन घाट पर दीपदान का आयोजन किया जाएगा। आयोजन के संबंध में एक समिति का गठन किया गया है जिसमें प्रो. धमेन्द्र मिश्रा, प्रो. हेमंत मालवीय, डॉ. विवेकानंद जैन, डॉ. आरएन सिंह, डॉ. नवलकुमार मिश्रा, डॉ. रामकुमार दांगी, डॉ. नीरज खरे, डॉ. ओमप्रकाश सिंह, सुरेन्द्र कुमार जैन, मनीष शास्त्री एवं अंकित दांगी शामिल हैं।

कुलसचिव से लेकर प्रोफेसर व समाजसेवी तैयार कर रहे हैं गीत और कविताएं

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। डॉ. हरीसिंह गौर जयंती को धूमधाम से मनाने के लिए विवि परिवार के अलावा शहरवासी भी बड़े स्तर पर तैयारियां कर रहे हैं। कोरोना महामारी के प्रकरण खत्म होने के बाद इस साल डॉ. गौर की जयंती पर विवि प्रबंधन व शहरवासियों द्वारा कई आयोजन किए जाएंगे। विवि के कुलसचिव डॉ. संतोष सोहगौरा से लेकर अन्य प्रोफेसर जहां कविताएं तैयार कर रही हैं तो वहीं समाजसेवी संगठन भी गीतों को तैयार कर कुलपति के लिए सौंप रहे हैं।

गौर जयंती के चलते विवि के स्वर्ण जयंती सभागार में पिछले दिनों विवि के कई युवा एवं वरिष्ठ शिक्षकों व प्रोफेसर द्वारा कविताओं, गीतों की प्रस्तुति दी गई थी। वहीं कुलसचिव डॉ. संतोष सोहगौरा द्वारा भी आप गौर धन्य है रचना तैयार की है, जिसमें पीढ़ी दर पीढ़ी को दिया है अमूल्य दान, आप गौर धन्य हैं आपका कृत्रित्व है महान ....समय शिला पर अंकित तव यश अष्ट दोहे एवं दानवीर है डॉ. गौरजी आदि रचनाएं तैयार की हैं। विवि के शिक्षकों व शहरवासियों के उत्साह को देखते हुए लग रहा है कि इस बार गौर जयंती पर कई रंगारंग कार्यक्रम होने वाले हैं।

कुलपति को गीत की पेनड्राइव भेंट की गई। • नवदुनिया

योग गीत किया कुलपति को किया भेंट: गौर जयंती महोत्सव पर डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय के जवाहर लाल नेहरू पुस्तकालय सभागार में आयोजित विधि विभाग के कार्यक्रम में समाजसेवी डॉ. वंदना गुप्ता ने गौर साहब की स्मृति में स्वरचित योग गीत पेन ड्राइव भेंट की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति अमरेश्वर प्रताप साही, कुलाधिपति बलवंतराय शांति लाल जानी के हाथों कुलपति डॉ. नीलिमा गुप्ता एवं रजिस्ट्रार संतोष सोहगौरा को भेंट की है। इस योग गीत को डॉ वन्दना गुप्ता ने सागर के ही संगीतज्ञ आशीष मिश्रा के साथ गाया है। यह गीत आयुष मंत्रालय द्वारा आयोजित प्रतियोगिता के लिए डॉ वंदना गुप्ता ने 2015 में तैयार किया गया था जिसे आज विश्वविद्यालय को योग विभाग के लिए समर्पित किया।

बनाई गई पेंटिंग भी प्रदर्शनी के लिए रखी गई। सभी अतिथियों ने प्रदर्शनी का अवलोकन कर कलाकारों को शुभकामनाएं दी। यह प्रदर्शनी डॉ. ललित मोहन और डॉ. सुप्रभा दास के संयोजन में आयोजित की गई थी। डॉ. सुप्रभा दास ने डॉ. गौर की स्वनिर्मित मूर्ति कुलपति को भेंट की। कार्यक्रम में अतिथियों द्वारा डॉ सरोज गुप्ता द्वारा लिखित पुस्तक आदी की आग बुंदेलखंड की वीरांगनाओं की शौर्य गाथा का विमोचन भी किया गया। 25 नवंबर को डॉ. गौर के सपनों का सागर और उनका विश्वविद्यालय पर आधारित परिसंवाद कार्यक्रम का आयोजन होगा।

कार्यक्रम | राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर हुआ व्याख्यान

विवि में आचार्य शंकर भवन का लोकार्पण

सागर, आचरण संवाददाता।

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के संस्थापक महान शिक्षाविद् एवं प्रख्यात विधिवेत्ता, संविधान सभा के सदस्य एवं दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में 21 नवंबर से 26 नवंबर तक आयोजित 'गौर उत्सव' के चौथे दिन 'आचार्य शंकर भवन' (मानविकी एवं समाज विज्ञान व्याख्यान कक्ष कॉम्प्लेक्स) का लोकार्पण मुकुल मुकुंद कानिटकर, राष्ट्रीय संगठन मंत्री, भारतीय शिक्षण मंडल, नागपुर, कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतीलाल जानी एवं कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की गरिमामयी उपस्थिति में संपन्न हुआ. बुन्देली परम्परा से अतिथियों का स्वागत हुआ। लोकार्पण के अवसर पर कानिटकर ने बोलते हुए कहा कि यह भवन आचार्य शंकर के नाम पर रखा गया है। सभी को बराबर भाव से देखना ही अद्वैत है. उनकी अद्वैत परम्परा को पुनर्जीवित करने का काम यहाँ के विद्यार्थी और शिक्षक करेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है. आचार्य शंकर मत वैभिन्नता का सम्मान करते थे, यह भवन उनके इस सिद्धांत का केंद्र बनेगा. स्वागत वक्तव्य अधिष्ठाता प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने दिया और संचालन कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने किया. इस अवसर पर संयोजक डॉ. ललित मोहन, विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष, शिक्षक, कर्मचारी और विद्यार्थी उपस्थित थे।

अनुभवजनित शिक्षा से बनेगा आत्मनिर्भर भारत- कुलपति

विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयन्ती सभागार में आयोजित गौर व्याख्यानमाला श्रृंखला के अंतर्गत राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 उच्च शिक्षा की नवाचारी भूमिका विषय पर आयोजित कार्यक्रम में स्वागत उद्बोधन में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि आज के समय में विद्यार्थियों को केवल कक्षाओं तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए बल्कि उन्हें अनुभव आधारित शिक्षा की तरफ प्रेरित करना चाहिए ताकि वे स्वयं के अनुभवों से बहुत कुछ सीख सकें. राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में हमें नवाचारी तरीके से बहुआयामी कार्य करने होंगे। इस शिक्षा नीति के माध्यम से देश को बदलने का संकल्प लिया गया है. देश तभी बदलेगा जब शिक्षा बदलेगी. हम भाग्यशाली हैं कि डॉ. गौर के जन्मोत्सव पर हम उनके ही शिक्षा के केंद्र में शिक्षा में नवाचार पर चर्चा कर रहे हैं. इंडस्ट्री कोलेबोरेशन, एमओयू के माध्यम से शिक्षा एवं शोध को नई दिशा मिलेगी. भारत एक कृषि प्रधान देश है, इसलिए हम रूरल डेवलेपमेंट के लिए नए प्रोग्राम बना रहे हैं. इससे गाँवों की आर्थिकी के साथ-साथ देश की अर्थव्यवस्था में भी सुधार होगा।

विश्वविद्यालय बनें ज्ञान-गुरुत्व के केंद्र: अरुंधति कावड़कर

विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए सुश्री अरुंधती कावड़कर, अखिल भारतीय महिला प्रकल्प सहप्रमुख एवं पालक अधिकारी, महाकौशल प्रान्त एवं मध्यभारत, भारतीय शिक्षण मंडल ने कहा कि विश्वविद्यालय ज्ञान और गुरुत्व के केंद्र के रूप में होने चाहिए. विद्यार्थी गुरुत्व के स्पर्श से ही आगे बढ़ता है. उसके जीवन में गुरु का बहुत महत्व होता है. गुरु को भी अपने विद्यार्थियों को समझने की योग्यता होनी चाहिए. शिक्षक अपने विद्यार्थियों के कारण ही शिक्षक कहलाता है. बिना विद्यार्थी के शिक्षक अस्तित्वहीन है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति मातृभाव से प्रेरित है. अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन की संकल्पना राष्ट्रीय शिक्षा नीति का अहम हिस्सा है. यहीं से एक विद्यार्थी की नींव पड़ती है. उन्होंने कहा कि नए भारत को गढ़ने के लिए भारतमाता को जानना बहुत ही आवश्यक है. नदियों, पर्वतों और प्रकृति के सभी घटकों को जानना-पहचानना एक विद्यार्थी के लिए बहुत ही जरूरी है।

गुरु ही बनाएंगे भारत को विश्वगुरु- मुकुल कानिटकर

मुख्य अतिथि मुकुल कानिटकर ने कहा कि गुरु के बिना भारत का विश्वगुरु बनना असंभव है. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में ऐसे कई बिंदु हैं जो शिक्षक को नवाचार की पूरी स्वायत्तता देते हैं. एक शिक्षक को नवाचार करने के लिए संस्था और सरकारों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए. शासन केंद्रित व्यवस्था से समाज के अंतिम व्यक्ति का हित नहीं संभव है. समाज केंद्रित व्यवस्था से ही अंतिम व्यक्ति का कल्याण संभव है. राष्ट्रीय शिक्षा नीति पढ़ते समय उसमें हमें स्व मन का भाव मिलता है. उसमें बहुत सी जीवनोपयोगी और तार्किक बातें हैं जिनके माध्यम से भारतीयता का बोध पैदा होता है।

शिक्षक और संस्था दोनों का कार्य नवोन्मेष करना है. आज के शिक्षक और विद्यार्थी को लीक से हटकर सोचना चाहिए. यही समय की मांग है. पहले हम आयातित ज्ञान पर निर्भर थे लेकिन आज इस शिक्षा नीति के माध्यम से हम भारतीय शिक्षा पद्धति की बात कर पा रहे हैं. यही इसका सुफल है. मातृभाषा में पठन-पाठन के लिए हमें अनुवाद पर निर्भरता खत्म करते हुए मातृभाषा में पाठ्य सामग्री तैयार करना चाहिए. यह काम शिक्षकों का है. यह चुनौती भी है. हमें इसी को अवसर में बदलना है और यही नवाचार है. यह सृजनशीलता का अवसर भी है।

गौर उत्सव चरित्र निर्माण का उत्सव है: कुलाधिपति

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. बलवंत राय शांतिलाल जानी ने कहा कि डॉ. हरीसिंह गौर की दैवीय विलक्षणता ही है कि हम प्रतिवर्ष उनके जन्मदिन को एक उत्सव के रूप में मनाते हैं. वह एक विश्वविद्यालय स्थापित करने और सब कुछ दान कर देने वाले एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक स्वप्नदृष्टा थे जो उन्होंने भावी भारतीय युवा पीढ़ी के लिए देखा था. आज बहुत सी विदेश की संस्थायें भारतीय युवा मेधा को अपने यहाँ शिक्षा और रोजगार के लिए आकर्षित कर रही है. डॉ गौर ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने कैम्ब्रिज में पढ़ाई तो की लेकिन वे भारतीय युवा पीढ़ी के लिए भारत में कैम्ब्रिज जैसी संस्था शुरू करने का संकल्प लेकर भारत वापस आ गये. यह विश्वविद्यालय उसी सपने की देन है. भारतीय युवाशक्ति प्रचंड मेधा संपन्न है, इसका पलायन नहीं होना चाहिए. राष्ट्रीय शिक्षा नीति इसके लिए संकल्पित है कि भारतीय मेधा का सदुपयोग राष्ट्र निर्माण के लिए हो, ताकि हम परमवैभवशाली राष्ट्र निर्माण में गति ला सकें. राष्ट्रीय शिक्षा नीति के बहुआयामी क्रियान्वयन के माध्यम से डॉ. गौर द्वारा स्थापित यह विश्वविद्यालय केवल सागर और मध्य प्रदेश ही नहीं बल्कि पूरे देश के लिए अनुकरणीय बनेगा।

कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. हरीसिंह गौर और देवी सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण से हुई जिसमें संगीत विभाग की छात्राओं ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की. संचालन डॉ. शशि कुमार सिंह ने किया. प्रो. अर्चना पाण्डेय ने अतिथियों का परिचय वाचन किया. कार्यक्रम के मध्य में संगीत विभाग की शिक्षिका डॉ. स्मृति त्रिपाठी ने गीत प्रस्तुत किया. कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने आभार ज्ञापन किया. राष्ट्रगीत वन्देमातरम के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ. इस अवसर पर प्रो.अशोक अहिरवार, प्रो. जी. एल पुणताम्बेकर, प्रो.नवीन कांगो, प्रो. चंदा सोनी, प्रो. जेके जैन, प्रो. ममता पटेल, प्रो. आर टी बेंद्रे, डॉ. आरपी सिंह, डॉ किरण आर्य, डॉ.अरुण साव, डॉ. अरविंद गौतम, डॉ रेखा सोलंकी, डॉ. नीलम थापा, डॉ हिमांशु, डॉ प्रीति सहित कई शिक्षक, विद्यार्थी, कर्मचारी, सागर शहर एवं मध्य प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से पधारे गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

विश्वविद्यालय और रिसर्च फॉर रिसर्जेन्स फाउंडेशन के बीच हुआ अकादमिक अनुबंध

कार्यक्रम के दौरान डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय और रिसर्च फॉर रिसर्जेन्स फाउंडेशन, नागपुर के बीच अकादमिक समझौता पत्रक पर हस्ताक्षर हुए. विश्वविद्यालय की ओर से कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने और फाउंडेशन की ओर से मुकुल कानिटकर ने समझौता-पत्रक पर हस्ताक्षर किये। इस अकादमिक समझौते के तहत सेंटर फॉर रिसर्च एंड रिसर्जेंस स्थापित किया जाएगा. इससे अकादमिक शोध और नवाचारी गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा।

फाइन आर्ट, पेंटिंग क्राफ्ट की प्रदर्शनी आयोजित

विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा बनाई गई फाइन आर्ट, पेंटिंग क्राफ्ट की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया. इसमें प्रो. पुणताम्बेकर द्वारा बनाई गई पेंटिंग भी प्रदर्शनी के लिए रखी गई थी. सभी अतिथियों ने प्रदर्शनी का अवलोकन कर कलाकारों को शुभकामनाएं दीं. यह प्रदर्शनी डॉ. ललित मोहन और डॉ. सुप्रभा दास के संयोजन में आयोजित की गई थी. डॉ सुप्रभा दास ने डॉ. गौर की स्वनिर्मित मूर्ति कुलपति को भेंट की।

'आज़ादी की आग- बुंदेलखंड की वीरांगनाओं की शौर्य गाथा' पुस्तक का विमोचन कार्यक्रम में अतिथियों द्वारा डॉ सरोज गुप्ता द्वारा लिखित पुस्तक 'आज़ादी की आग- बुंदेलखंड की वीरांगनाओं की शौर्य गाथा' का विमोचन भी किया गया।

25 नवंबर 2021 को आयोजित कार्यक्रम

25 नवंबर प्रातः 11.00 बजे 'डॉ. गौर के सपनों का सागर और उनका विश्वविद्यालय' पर आधारित परिसंवाद कार्यक्रम का आयोजन होगा। इस कार्यक्रम में विशेषज्ञ के रूप में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता, रघु ठाकुर वरिष्ठ समाजवादी चिन्तक, डॉ. जी.एस. चौबे वरिष्ठ चिकित्सक, प्रो.एस.पी. व्यास शिक्षाशास्त्री एवं पूर्व कुलपति डॉ.हरीसिंह गौर वि.वि सागर एवं प्रो सुरेश आचार्य, वरिष्ठ साहित्कार विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे। सायं 07.00 बजे अखिल भारतीय कवि सम्मलेन का आयोजन होगा जिसमें शायर अशोक मिजाज बद्र, सागर, अशोक सुन्दरानी सतना, सुश्री विभा सिंह, बनारस, संतोष शर्मा सागर, विदिशा, राम भदावर, इटावा द्वारा काव्य पाठ की प्रस्तुति होगी। दोनों कार्यक्रम स्वर्ण जयन्ती सभागार में आयोजित होंगे।

कैम्ब्रिज जैसी बने यूनिवर्सिटी

क्योंकि केंद्रीय विवि बनने से अब हर साल मिल रहा 200 करोड़ का बजट, इसका सही उपयोग कर

साकार करे गौर साहब का सपना

भास्कर विचार
गौर साहब के सपनों का विश्वविद्यालय बनाना अब हमारी जिम्मेदारी

श्रीकांत त्रिपाठी | सागर

शुक्रवार को पूरा सागर डॉ.सर हरीसिंह गौर साहब का 152वां जन्मदिन मनाएगा। महान दानवीर गौर साहब ने अपनी पूरी संपत्ति अर्जित कर 2 करोड़ रुपए जुटाए और 18 जुलाई 1946 को सागर विवि की स्थापना की। उनका सपना था- यह कैम्ब्रिज-हावर्ड जैसा विश्वविद्यालय बने लेकिन पैसों के अभाव में अच्छे उपकरण और किताबें बमुश्किल ही जुट पाईं। 63 साल तक यह विवि राज्य सरकार के अधीन चलता रहा, ऐसे में किसी भी साल बजट का अभाव कम नहीं हुआ। 2009 में इसे केंद्रीय विवि का दर्जा मिला। अब 12 साल से बजट का अभाव नहीं है। हर साल 200 करोड़ रुपए मिल रहे हैं। अब गौर साहब का सपना पूरा हो सकता है, बस जरूरत है- सही योजना बनाकर अमल करने की, ताकि इन रुपयों का सदुपयोग हो सके।

शुभ संकेत... केंद्रीय विवि बनने के बाद शोध बढ़ा, अब हर साल ढाई गुना ज्यादा पीएचई अवॉर्ड हो रही

चुनौती... शहर के सामाजिक लोगों की अब प्रत्यक्ष भागीदारी नहीं लेकिन फिर भी हमें गौर साहब का सपना नहीं भूलना है

गौर साहब का सपना- सागर में बने एयरपोर्ट, ताकि दुनिया से जुड़ सके

- सागर विवि के विद्यार्थी डिग्रीधारी नहीं, बल्कि नॉलेज से परिपूर्ण हों।
- ऐसे विद्यार्थी तैयार हों जो देश निर्माण में भूमिका अदा कर सकें।
- सागर में हवाई अड्डा बने ताकि विश्वविद्यालय दुनिया से जुड़ सके।
- शिक्षा से सागर ही नहीं बल्कि पूरे भारत की संस्कृति को बदलना।

विश्वविद्यालय को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने के लिए कई बड़े संस्थानों से अनुबंध कर रहे हैं

विश्वविद्यालय को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने के लिए हम इस वर्ष विभिन्न संस्थाओं के साथ अकादमिक अनुबंध कर रहे हैं। इसमें कामधेनु चेयर, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास से चरित्र निर्माण, वैदिक गणित, पर्यावरण जैसे पाठ्यक्रम और भारतीय शिक्षण मंडल के साथ रिसर्च फॉर रिसर्जेन फाउंडेशन का अनुबंध हो चुका है। विश्वविद्यालय की रैंकिंग सुधारना, इंटरनेशनल कोलेबरेशन और नैक का निरीक्षण कराने के साथ अच्छी ग्रेडिंग मेरी पहली प्राथमिकता होगी। रिसर्च वर्क और स्किल बेस्ड एजुकेशन पर अधिक से अधिक फोकस रहेगा। विश्वविद्यालय में कक्षाओं से लेकर खेल मैदान तक हम वर्ल्ड क्लास सुविधाएं देंगे।

- प्रो.नीलिमा गुप्ता, कुलपति, डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

गौर जयंती पर रोशनी से जगमगाया कैंपस

गौर जयंती की पूर्व संध्या पर विश्वविद्यालय में आकर्षक लाइटिंग की। फोटो- मयूर नामदेव

चार बिंदुओं से समझें केंद्रीय विवि बनने के बाद अब तक हुए बदलाव

विद्यार्थी • » पहले- राजकीय विवि के समय मेरिट के आधार पर यूजी से पीएचडी तक 6 हजार विद्यार्थियों के दाखिले होते थे।
» अब- केंद्रीय दर्जा मिलने के बाद प्रवेश परीक्षा शुरू हुई और 3300 विद्यार्थियों के दाखिले हो रहे हैं।

बजट • » पहले- फाइनेंस कोड ऑफ कंडक्ट लागू था, राज्य सरकार वेतन के लिए 5 करोड़ रुपए देता था। बाकी खर्च विवि उठाता था।
» अब-भारत सरकार के उच्च शिक्षा के कुल बजट में से 7 प्रतिशत केंद्रीय विश्वविद्यालयों को दिया जाता है। ए ग्रेड विश्वविद्यालय होने से 200 करोड़ रुपए सालाना मिलते हैं।

शोध • » पहले- सागर विश्वविद्यालय में अब तक 6 हजार पीएचडी अवॉर्ड हुई, इनमें राज्यकीय विवि के 63 साल में 3900 पीएचडी अवॉर्ड हुईं।
» अब- केंद्रीय विवि बनने के बाद के 12 साल में 2100 पीएचडी अवॉर्ड हैं। इस साल 250 सीट पर शोध विद्यार्थियों के दाखिले होंगे। शोध छात्रों में 90 फीसदी नेट क्वालिफाइड और अधिकांश के पास फैलोशिप भी है।

जनभागीदारी • » पहले- कार्य परिषद में कोर्ट मेंबर द्वारा चुने गए सदस्य शहर के गणमान्य नागरिक या समाजसेवी होते थे।
» अब-अब शहर के लोगों को शामिल करने का कोई प्रावधान नहीं है। इससे शहर के लोगों की भागीदारी कम हो गई।

विद्यार्थियों में नवाचार, निष्ठा जैसे मूल्य विकसित करने होंगे

डॉ. गौर द्वारा स्थापित यह विवि प्राचीन तक्षशिला एवं नालंदा विश्वविद्यालयों की तरह सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्रों में राष्ट्र का पथ प्रदर्शक बना। विवि अनुभवजन्य, नवाचारी, गुणवत्तापरक, विद्यार्थी केंद्रित उच्च शिक्षा प्रदान करके विद्यार्थियों में निष्ठा, समर्पण, त्याग जैसे मानवीय मूल्यों को विकसित करने की दिशा में प्रवृत्त हो। ऐसे कृत-संकल्पित कार्य करना ही गौर जयंती पर सच्चे श्रद्धा सुमन हैं।

- प्रो.आरपी तिवारी, पूर्व कुलपति, सागर विवि

दुनिया के 2% वैज्ञानिकों में सागर के पूर्व छात्र भी

सबसे पहले फैकल्टी को विश्व में पहला स्थान बनाने की बात आत्मसात करने की जरूरत है। सागर विवि का फार्मेसी विभाग अपने शिक्षकों और विद्यार्थियों के दम पर ही विश्व में अपनी पहचान बना सका। खुशी की बात है कि विश्व के 2 फीसदी वैज्ञानिकों में सागर विवि के शिक्षक और पूर्व छात्र शामिल हैं।

- प्रो. ओपी कटारे, पूर्व छात्र और डीन फार्मेसी विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय

गौर जयंती आजः सबसे पहले पढ़िए उनके जीवन की 5 बातें, जो हमें प्रेरित करती हैं

जो भी हो, हर हाल में सिर्फ सच ही कहें

1 हर हाल में सिर्फ सच ही कहें और लिखें। जैसा कि डॉ. गौर ने अपनी आत्मकथा सेवन लाइव्स में लिखा है कि जब 1892 में, मैं भारत लौटा तो डिग्री होने के बाद भी वकालत शुरू नहीं कर पा रहा था। क्योंकि वकालत शुरू करने से पहले मुझे 100 पौंड की फीस भरना पड़ती थी, जो उस समय मेरी क्षमता से बाहर थी।

असफलता के आगे भी दुनिया बहुत है

2 डॉ. गौर जबलपुर के शासकीय हाई स्कूल में मैट्रिक परीक्षा में फेल हो गए। छात्रवृत्ति बंद कर दी गई। निराश होकर सागर आकर लोक कर्म विभाग में कुलियों के ऊपर मेटगिरी की। जेब में कुल जमा पूंजी 10 रुपए लेकर रोजी-रोटी कमाने के खोज में घर से निकल पड़े। इसके बाद गौर साहब आगे बढ़ते ही गए।

लक्ष्य तय कर लो, फिर बढ़ते चलो

3 मार्च 1946 को डॉ. गौर अपनी जन्मभूमि सागर वापस लौटे तो देखा कि सागर को जैसा छोड़ गए थे, लगभग वैसा ही था। मन में जन्मभूमि के लिए कुछ करने के संकल्प के आयाम उभर रहे थे। पर इसे साकार रूप देना इतना भी आसान नहीं था। अपनी जिंदगी की संपूर्ण पूंजी अर्पित कर 18 जुलाई 1946 को सागर विवि प्रारंभ करवाया।

समाज को देने की भावना सदैव बनाएं

4 गौर साहब ने हर क्षण शिक्षा को समर्पित किया। हर परीक्षा में वह अव्वल आए। गौर साहब के बारे में कहा जाता है कि वह सागर आकर बहुत ही मितव्ययी हो गए थे। पर अपने लंबे समय तक की वकालत से उन्होंने भारी रकम अर्जित की। इसको सर्व समाज से उन्होंने सागर विवि की स्थापना में लगा दिया।

जिनसे कुछ भी पाया है, उन्हें श्रेय जरूर दें

5 डॉ. गौर ने विपरीत परिस्थितियों से [illegible] सिर्फ उच्च मुकाम हासिल किया, [illegible] अनुपम और अद्वितीय देन सागर को [illegible] जिन्होंने भी जिस स्तर पर सहयोग किया उसकी मुक्त कंठ से उन्होंने प्रशंसा की। श्रेय दिया। डॉ. गौर ने अपनी आत्मकथा में प्रो.ब्रेमनर, प्रो.मिडहॉक आदि से मिले शिक्षा का कई बार जिक्र किया है।

दैनिक भास्कर

सागर सिटी

सूर्यास्त (शुक्रवार) सायं 5:32 बजे
सूर्योदय (शनिवार) प्रातः 6:56 बजे

कला • अन्वेषण नाट्य समारोह के दूसरे दिन जगदीश शर्मा द्वारा निर्देशित नाटक का का मंचन किया

सौंदर्य के आंतरिक उजाले की रचनात्मक गवाही 'तुम कितनी खूबसूरत हो'

समीक्षा : डॉ. आशुतोष, कथाकार, सागर विवि में हिंदी विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर

अन्वेषण नाट्य समारोह के दूसरे दिन मेजबान संस्था अन्वेषण थियेटर ग्रुप, सागर और जगदीश शर्मा द्वारा निर्देशित नाटक 'तुम कितनी खूबसूरत हो' का मंचन हुआ। प्रख्यात कथाकार यशपाल की कहानी 'तुमने क्यों कहा था, मैं सुन्दर हूं' पर केंद्रित यह नाटक सुंदरता के वास्तविक अर्थ को मनुष्य जीवन में उतारने की एक कामयाब कोशिश है।

मूल कथा जीवन से हताश सुगंधा नामक एक लड़की की है जो अस्पताल में पड़ी हुई है। वहां एक नया मरीज उमंग आता है, सुगंधा और उमंग का जीवन और जगत के प्रति परस्पर विरोधी दृष्टिकोण के ताने-बाने में पूरी कथा विकसित होती है। खुशी-उदासी, खूबसूरती और कुरूपता के विपर्यय को निर्देशक जगदीश शर्मा ने अपनी सपष्ट रंगमंचीय समझ से कभी न भूल पाने वाले एक मर्मस्पर्शी अहसास में बदल दिया है।

सागर। रवींद्र भवन में चल रहे नाट्य समारोह के दौरान तुम कितनी खूबसूरत हो की प्रस्तुति देते कलाकार।

सीमित पात्रों, अपनी शांत और एक रेखीय कथानक के बावजूद नाटक के कलाकारों ने एक दूसरे का हाथ थामें एक आत्मीय रचनात्मक यात्रा करते हैं. जाहिर सी बात है कि उस यात्रा का पड़ाव दर्शकों का दिल भी है। आशीष चौबे की गीतों ने और पार्थो घोष के संगीत ने नाटक की व्यंजना को गाढ़ा कर दिया है।

मुख्य किरदार सुगंधा के रूप में करिश्मा गुप्ता का अभिनय हमेशा की तरह 'करिश्माई है'। वे प्रगाढ़ भावों और बारीक अनुभूतियों की प्रभावशाली अभिनेत्री हैं। मामा के किरदार में वरिष्ठ रंगकर्मी रवीन्द्र दुबे 'कक्का' की सहजता, निपुणता चमत्कृत करते हैं। 'कक्का' का अभिनय देखे जाने के साथ ही पढ़ा भी जाना चाहिए। नाटक के अन्य किरदारों को समर पाण्डेय, प्रवीण केम्या, समता झुड़ेले, ग्राम्या चौबे, दीपक राय जैसे मझे हुए कलाकारों ने निभाया है। इन कलाकारों ने अपनी परस्पर की 'बॉन्डिंग' से नाटक के प्यार को बड़ा कर दिया है। नाटक के अत्यंत महत्वपूर्ण पात्र 'उमंग' के रूप में कपिल नाहर ने चकित कर दिया है। कपिल नाहर अभिनेता संजीव कुमार की तरह अभिनय नहीं सिर्फ कमाल करते हैं। आरम्भ में नाटक के कथ्य को अपने नृत्य के माध्यम से साकार करती हुई आस्था बानो प्रभावित करती हैं।

नितिन दुबे का मंच सज्जा, संतोष दांगी की प्रकाश योजना, राजीव जाट की दृश्य परिकल्पना, राहुल सेन की ध्वनि व्यवस्था ने अपना काम बखूबी किया है। कुछेक जगह कलाकारों की आवाज दबने से सुकून में थोड़ा खलल पड़ रहा था। पर वह कलाकारों की नहीं स्टेज और सभागार की समस्या है। समग्रता में यह नाटक सौन्दर्य के आन्तरिक उजाले की रचनात्मक गवाही की तरह है।

• आज का मंचन :

कटनी के संप्रेषण नाट्य मंच द्वारा सादात भारती के निर्देशन में नाटक 'गांधी ने कहा था' की प्रस्तुति होगी।

डॉ. गौर के जीवन पर केंद्रित प्रदर्शनी लगीं, 8 घंटे में बनाया 6 बाय 4 फीट का चित्र

भास्कर संवाददाता | सागर

गौर जयंती की पूर्व संध्या पर गुरुवार को शहर में प्रदर्शनी व चित्रकला कार्यशाला के आयोजन हुए। स्वर्ण जयंती सभागार और कटरा स्थित मिडिल स्कूल में प्रदर्शनी लगाई गई। जबकि सिविल लाइन में एक दिवसीय चित्रकला कार्यशाला हुई। इस दौरान चित्रों के माध्यम से कलाकारों ने डॉ. गौर के जीवन से जुड़े विभिन्न चित्रों को उकेरा। अंकित विश्वकर्मा ने डॉ. गौर के कई चित्र बनाए। इन्हीं में से एक चित्र उन्होंने 8 घंटे में 4 किलो रंग से तैयार किया। इसकी ऊंचाई 6 फीट तो चौड़ाई 4 फीट है। एग्जीबिशन में जिसने भी इसे देखा सभी ने सराहा।

रंग के साथी ग्रुप ने एक दिवसीय कार्यशाला की : गौर जयंती की पूर्व संध्या पर रंग के साथी ग्रुप के चित्रकार असरार अहमद ने रंग आर्ट इंस्टीट्यूट में एक दिवसीय कार्यशाला की। जिसमें डॉ.गौर का चित्र बनाया गया। अंशिता बजाज ने चित्रों के माध्यम से बताया कि किस तरह से गौर साहब ने अपने सपने को साकार किया।

डॉ. गौर के जीवन पर आधारित प्रदर्शनी लगाई गई : कटरा स्थित शासकीय माध्यमिक गांधी कन्या शाला में डॉ. गौर के जीवन पर आधारित प्रदर्शनी लगाई गई। अल्का जैन ने कहा यदि डॉ.गौर विश्वविद्यालय की स्थापना नहीं करते तो यहां शिक्षा का स्तर बिल्कुल शून्य रहता। इस दौरान स्टाफ, विद्यार्थियों सहित अन्य लोग मौजूद थे।

पत्रिका विशेष: मध्यभारत का ऑक्सफोर्ड बनाने की धुन में आये कई विद्वान

देश-दुनिया से चुन-चुनकर विशेषज्ञों को सागर लाये थे गौर

क्रिमिनोलॉजी एंड फॉरेंसिक साइंस, फॉर्मेसी जैसे विषयों को स्थापित कराकर खींचा था विश्व भर का ध्यान

पत्रिका न्यूज नेटवर्क

ये थे वह देश-विदेश की प्रसिद्ध हस्तियां

मारवाड़ी को कराया था दोषमुक्त

50 पाउंड का पुरुस्कार जीता पर गैर यूरोपीय होने की वजह से नहीं मिली ईनाम राशि

आखिर कब मिलेगा सर गौर को भारत रत्न, सात साल से दौड़ रहे कागजी घोड़े

सर गौर ने वजीफा मिलने पर मां से चरखा न चलाने की कही थी बात, वे नहीं मानी

गौर उत्सव • स्वर्ण जयंती सभागार में डॉ. गौर के सपनों का सागर और उनका विश्वविद्यालय विषय पर हुई परिचर्चा

विवि को पूरी दुनिया से जोड़ने के लिए हवाई अड्डा बनाने को लेकर डॉ. गौर ने विमानन मंत्रालय को दिया था ज्ञापनः रघु

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के संस्थापक और महान दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित गौर उत्सव के पांचवें दिन स्वर्ण जयन्ती सभागार में डॉ. गौर के सपनों का सागर और उनका विश्वविद्यालय विषय पर परिसंवाद आयोजित हुआ। इस दौरान कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी ने कहा कि डॉ. गौर जानते थे कि भौतिक युग में ग्रामीण संस्कृति को बढ़ावा नहीं मिलेगा। इसीलिए उन्होंने एक विश्वविद्यालय के लिए ग्रामीण परिवेश चुना ताकि समकालीन विचारों के साथ यह विश्वविद्यालय अद्यतन ज्ञान का केंद्र बने। आने वाले समय में यह विश्वविद्यालय नवाचार के प्रयोग के माध्यम से साहित्य, संस्कृति, परम्परा के महत्व की स्थापना का विश्वस्तरीय केंद्र बनेगा। समाजवादी चिन्तक रघु ठाकुर ने कहा कि डॉ. गौर ने गरीबी का निकट से अनुभव किया था। उन्होंने इस पूरे अंचल को विकास के रास्ते पर लाने के लिए विश्वविद्यालय को आधार बनाया। उन्होंने शहर और विश्वविद्यालय को पूरी दुनिया से जोड़ने के लिए विमानन मंत्रालय को हवाई अड्डा बनाने के लिए ज्ञापन दिया। रेल सुविधाओं को अद्यतन करने के लिए ज्ञापन दिए। वे सागर को देश की उप राजधानी बनाना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने कई पत्राचार किये जिसमें तर्कसंगत बातों से तत्कालीन सरकार को सहमत करने का प्रयास किया। सागर में टेक्नीकल एजुकेशन के लिए कॉलेज और विश्वविद्यालय स्थापित करने के लिए भी उन्होंने पत्र लिखे। डॉ. जीएस चौबे ने कहा कि डॉ. गौर का जन्म जिस दशक में हुआ, वह देश में प्रतिभाओं के जन्म का दशक था।

वरिष्ठ शिक्षाशास्त्री एवं वैज्ञानिक प्रो. एसपी व्यास ने कहा कि डॉ. गौर के व्यक्तित्व को शब्दों में उतारना बड़ा ही कठिन कार्य है। डॉ. गौर के प्रयासों से महिलाओं के लिए वकालत का रास्ता खुला। वे एक व्यक्ति नहीं विचार थे। विश्वविद्यालय की स्थापना करके एक छोटे से ग्रामीण इलाके को विश्वपटल पर सम्मान दिलाने वाले वे पहले व्यक्ति थे।

सागर| गौर उत्सव के पांचवें दिन स्वर्ण जयंती सभागार में परिचर्चा का आयोजन किया गया।

डॉ. गौर द्वारा स्थापित कल्पवृक्ष की कीर्ति पताका फहराना हमारा कर्तव्य- प्रो. सुरेश आचार्य

वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. सुरेश आचार्य ने कहा कि पूरे बुंदेलखंड में डॉ. हरीसिंह गौर 'गौर बब्बा' के नाम से जाने जाते हैं। यह लोगों का उनके प्रति अगाध प्रेम है और यह रिश्ता बड़ा ही नायाब है। उनके द्वारा स्थापित इस विश्वविद्यालय की रक्षा, इसकी समृद्धि, वृद्धि और इसकी कीर्ति पताका चारों ओर फहराना हम सबका कर्तव्य है। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि आज लोग अपने परिवार और बच्चों के लिए पूंजी इकट्ठा करते हैं, लेकिन डॉ. गौर ने परिवार के साथ-साथ समाज के लिए एक बड़ा हिस्सा भी रखा और एक अद्भुत शिक्षा का केंद्र हमें विरासत में मिला है। हमारी यह जिम्मेदारी है कि हम उनके अवदानों को याद करते हुए उनके संकल्पों को पूरा करने में अपनी ऊर्जा लगाएं. उन्होंने हाल ही में हुए विभिन्न संस्थाओं के साथ हुए अकादमिक अनुबंधों की चर्चा करते हुए कहा कि हम नए-नए पाठ्यक्रमों के माध्यम से ऐसी पीढ़ी तैयार करेंगे कि आने वाले समय में यह विश्वविद्यालय अपने शिखर पर पहुंचेगा। डॉ. संजय शर्मा ने डॉ. गौर के सागर शहर और शिक्षा के मंदिर के सपने के पीछे के ऐतिहासिक कारणों का जिक्र किया। कार्यक्रम में आभार कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने माना।

सर्वश्रेष्ठ एनसीसी कैडेट को सम्मानित करने के लिए डॉ. ललित मोहन ने राशि दी

कार्यक्रम में डॉ. ललित मोहन ने एक लाख एक सौ पच्चीस रूपए का चेक कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी को सौंपा। इस राशि से आगामी वर्षों में विश्वविद्यालय के सर्वश्रेष्ठ एनसीसी कैडेट को गौर जयन्ती के अवसर पर सम्मानित किया जाएगा। डॉ. ललित मोहन विश्वविद्यालय में दस वर्षों तक एनसीसी अधिकारी रह चुके हैं।

प्यार जताए आसानी से

सागौर के गौरव

सागौर के गौरव डॉ. हरिसिंह गौर
'सागौर' सागरीय भूमि के भाल पर,
शिक्षण की मुकुट-मणियों को सजा
दिया।
खेलते रहे झंझावातों-तूफानों से, शिक्षा
के मूंगा-मोतियों को मथ डाला।।
श्रेष्ठतम रूपी शैक्षिक समर में, एक नाम
सुनहरा रच डाला।
पहाड़ियों के भुवन-भंवर में, कंटकाधीन
थी ये रेगिस्तान-सी धरती।।
विश्वविद्यालयी फसल उगाकर, शिक्षा
का परचम लहराया।
विद्या की भाव-भीनी खुशबू को, प्रभु-
भास्कर सा अवलंब मिला ।।
चहुं ओर पहुंच गई शैक्षिक हरियाली,
हर घर में, हर आंगन में ।
नवल-धवल-सजल संगीत बज उठा
वीणापाणि का, श्रृंगार हो गया शिक्षा
का।।
वतन की मिट्टी ने ली अंगड़ाई, कलम-
दावात के साम्राज्य की शुभ घड़ी थी
आई ।
जड़ें जम गईं विद्या की, सागर रुपी
बुंदेली भूमि पर।।
शिक्षालय भवसागर में लहराया, उन्मुक्त
गगन में बांहें फैलाकर।
स्पंदित हुई दुनिया सारी, ऐसे
महामनीषी की कर्मठता पर।।
अचंभित हो गया जहाँ सारा, ऐसे वरद्-
पुत्र की जीवटता पर ।
शिक्षा के साथ ही थे वे, कानून व
संविधान की गहरी पैठ के महान
तपस्वी।।
बौद्धिक संपदा के अकूत-भंडारी से,
बड़भागी-पुण्यभागी हुये सागरवासी ।
हे शिक्षा के विश्व विजेता! हे ज्ञान रत्न!
हे बुद्धि रत्न! हे शिक्षा रत्न! हे भारत
रत्न!!
हम नवाजें आपको किन-किन उपाधियों
से!!!!...आप ही हो शाश्वत् परम् रत्न!!
नतमस्तक हैं 'पांडित्य' के गहन समंदर
में, 'श्रीयुत' के 'श्री चरणों' में ।
उच्च-शिक्षा गौरवान्वित हुई, शिक्षांजलि
की परम् अभिव्यक्ति से।।

-डॉ. संगीता श्रीवास्तव, सागर

गौर जयंती आज

सर गौर की प्रतिमा पर कुलपति करेंगी माल्यार्पण

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरसिंह गौर की 152 वीं जन्म जयंती के उपलक्ष्य पर शुक्रवार को सुबह 8 बजे तीन बत्ती स्थित गौर मूर्ति पर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता द्वारा गौर प्रतिमा पर माल्यार्पण किया जाएगा। इसके बाद उनके उद्‌बोधन होंगे। 8.30 बजे तीन बत्ती, कटरा से विश्वविद्यालय परिसर के लिए पर शोभा यात्रा प्रस्थान करेगी।

विश्वविद्यालय के गौर प्रांगण में सुबह 11 बजे से मुख्य समारोह आयोजित होगा, जिसमें मुख्य अतिथि नगरीय विकास एवं आवास मंत्री भूपेंद्र सिंहए होंगे। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता का उद्बोधन होगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शातिलाल जानी करेंगे।

शाम 6 बजे 1971 के भारत पाक युद्ध में विजय के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भारतीय सेना के विक्टरी फ्लेम का विश्वविद्यालय में स्वागत किया जाएगा। शाम 6.30 बजे विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति होगी।

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ के तहत महिला समाज ने किया आयोजन

सागर @ पत्रिका. विश्वविद्यालय की महिला समाज ने ग्राम पथरिया स्थित माध्यमिक विद्यालय में बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ के तहत स्कूली बच्चों के लिए कार्यक्रम का आयोजन किया। महिला समाज की अध्यक्ष डॉ. रत्ना शुक्ला ने कहा कि आज बेटियों का अनुपात हर क्षेत्र में बढ़ रहा है। इसे और अधिक सशक्त बनाए जाने की आवश्यकता है।

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि बेटी तभी बचेगी जब बेटी पढ़ेगी। शिक्षा एक ऐसा हथियार है जिसको प्राप्त कर लेने के बाद बेटियाँ स्वयं आत्मनिर्भर हो जाती हैं और परिवार चलाने में सक्षम हो जाती हैं। कार्यक्रम में विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजित बच्चों को पुरस्कार दिया गया। इस अवसर पर प्राचार्य श्रद्धा दुबे ने उनके विद्यालय में शिक्षा की स्थिति और उसमें बालिकाओं के श्रेष्ठ प्रदर्शन की जानकारी दी। सभी बच्चों को पाठ्य सामग्री और फल वितरित किया गया। कार्यक्रम का संचालन महिला समाज की सचिव रेणु शुक्ला ने किया। आभार प्रदर्शन ओमिका सिंह ने माना।

गौर उत्सव का पांचवा दिन : डॉ. गौर के सपनों का सागर और उनका विश्वविद्यालय पर परिसंवाद आयोजित

सागर(एस.बी.न्यूज)। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के संस्थापक डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152 वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में 21 नवंबर से 26 नवंबर तक आयोजित गौर उत्सव के पांचवें दिन विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयन्ती सभागार में डॉ गौर के सपनों का सागर और उनका विश्वविद्यालय विषय पर परिसंवाद आयोजित हुआ। डॉ गौर और मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण, दीप प्रज्जवलन और अतिथियों के स्वागत के उपरान्त विषय प्रवर्तन करते हुए डॉ. संजय शर्मा ने डॉ. गौर के सागर शहर और शिक्षा के मंदिर के सपने के पीछे के ऐतिहासिक कारणों का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि वे अपने समकालीन विचारकों और संस्थानों से प्रभावित थे। वे सागर ही नही पूरे भारत की संस्कृति को बदलना चाहते थेण् यह बदलाव शिक्षा के माध्यम से ही होगा। यह मानने वाले डॉ. गौर ने इसके लिए एक विश्वविद्यालय स्थापित करने का प्रण लिया। उन[illegible] वह संकल्प एक विश्वविद्यालय के रूप में हमारे सामने है डॉ. गौर विश्वविद्यालय को समाज निर्मिति के केंद्र के रूप मे देखते थ।

डॉ.गौर की आंतरिक छवि विराट थीः कुलाधिपति

कुलाधिपति प्रो.बलवंतराय शांतिलाल जानी ने कहा कि डॉ.गौर स्वप्नद्रष्टा थे। उनके सपनों के बारे में जानने के लिए सबसे पहले उनके अन्तः हृदय को जानना होगा। ऊपरी तौर पर हम उनके बारे में बहु त सी बातें जानते हैं लेकिन उनकी आंतरिक छवि विराट थी। वे समय के अनुकूल नए ज्ञान और सृजन के प्रति सचत थेण् वे जानते थे कि भौतिक युग में ग्रामीण संस्कृति को बढावा नहीं मिलेगा।

मनुष्य को लोकतांत्रिक और प्रगतिशील बनाने वाली शिक्षा के हिमायती थे डॉ. गौरः रघु ठाकुर

प्रसिद्ध समाजवादी चिन्तक रघु ठाकुर ने कहा कि डॉ.गौर ने गरीबी का निकट से अनुभव किया था। उन्होंने इस पूरे अंचल को विकास के रास्ते पर लाने के लिए विश्वविद्यालय को आधार बनाया उन्होंने शहर और विश्वविद्यालय को पूरी दुनिया से जोडने के लिए विमानन मंत्रालय को हवाई अड्डा बनाने के लिए ज्ञापन दिया। रेल सुविधाओं को अद्यतन करने के लिए ज्ञापन दिए। वे सागर को देश की उप राजधानी बनाना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने कई पत्राचार किये जिसमें तर्कसंगत बातों से तत्कालीन सरकार को सहमत करने का प्रयास किया।

डॉ. गौर के जन्म का दशक प्रतिभाओं के जन्म का दशक हैःडॉ.चौबे

डॉ.जी एस चौबे ने कहा कि डॉ. गौर का जन्म जिस दशक में हुआ। वह देश में प्रतिभाओं के जन्म का दशक था। 1861 में जन्मे रवींद्र ना[illegible] ठाकुर को नोबल पुरस्कार से नवाजा गया। 1863 में जन्में स्वामी विवेकानंद के विचार और कार्यों ने ने पूरी दुनिया में भारत को विश्व[illegible] के रूप में स्थापित किया। 1869 में जन्मे गांधीजी ने सत्य और अहिंसा के रास्ते पर पूरे देश को चलने की प्रेरणा दी।

डॉ. गौर के सपनों ने सागर को विश्वपटल पर स्थापित कियाः प्रो. व्यास

वरिष्ठ शिक्षाशास्त्री एवं वैज्ञानिक प्रो एस[illegible] व्यास ने कहा कि डॉ. गौर के व्यक्तित्व को[illegible] में उतारना बडा ही कठिन कार्य है। उनके स[illegible] के अनुरूप बहुत से मंगल कार्य किये जा[illegible] हैं। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

डॉ. गौर के सपनों के अनुरूप अप[illegible] सामाजिक भागीदारी सुनिश्चित करेगा विश्वविद्यालयः कुलपति

कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता ने कहा कि डॉ. के जीवन संघर्ष और उनके अवदानों की सुनते हुए मुझे उनका समकालीन परि[illegible] दिखाई दे रहा है।

डॉ.गौर बेहद अभा[illegible] की स्थिति से निकलकर उच्च शिखर पर पहुँचने वाले महान व्यक्तित्व थे। आज लोग अपने परिवार और बच्चों के लिए पूंजी इकट्ठा करते हैं। लेकिन डॉ. गौर ने परिवार के साथ.साथ समाज के लिए एक बडा हिस्सा भी रखा और एक अद्भुत शिक्षा का केंद्र हमें विरासत में मिला है। हमारी यह जिम्मेदारी है कि हम उनके अवदानों को याद करते हुए उनके संकल्पों को पूरा करने में अपनी ऊर्जा लगाएं, उन्होंने हाल ही में हुए विभिन्न संस्थाओं के साथ हुए अकादमिक अनुबंधो की चर्चा करते हुए कहा कि हम नए.नए पाठ्यक्रमों के माध्यम से ऐसी पीढी तैयार करेंगे कि आने वाले समय में यह विश्वविद्यालय अपने शिखर पर पहुंचेगा।

कुलपति ने लिया गौर जयन्ती उत्सव की तैयारियों का जायजा दिए जरूरी निर्देश

सागर। डॉ हरीसिंह गौर डा. सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में गौर उत्सव मनाया जा रहा है। इस क्रम में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने गौर जयन्ती 26 नवंबर को आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की तैयारियों का जायजा लिया। उन्होंने गौर प्रांगण का निरीक्षण किया और आयोजन समिति को यथोचित दिशा निर्देश दिए। इसके बाद वे तीनबत्ती पहुंची और आयोजन स्थल का निरीक्षण कर तैयारियों का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने दीप प्रज्जवलित कर डॉ. गौर को श्रद्धांजलि दी। गौरतलब है कि डॉ. गौर के जन्मदिवस पर तीनबत्ती स्थित गौर प्रतिमा पर माल्यार्पण और कुलपति के उद्बोधन के पश्चात शोभा यात्रा निकलने की परंपरा ह। यह शोभायात्रा विश्वविद्यालय पहुंचने के उपरान्त मुख्य समारोह का आयोजन होता है। तीनबत्ती स्थल पर प्रवीण पाण्डेय, राजेश केशरवानी, पत्रकार संघ के अध्यक्ष सुदेश तिवारी, सिंटू कटारे, शहर के गणमान्य नागरिक और विश्वविद्यालय के शिक्षक और अधिकारी मौजूद रहे।

डा. गौर ने महिलाओं को दिलाया वकालत का अधिकार

गौर जयंती ● डा. गौर ने अज्ञान के अंधेरे को दूर करने की थी विवि की स्थापना, जिलेभर में हुए कई आयोजन

सागर (नवदुनिया प्रतिनिधि)। जिले के लोगों को शिक्षित करने के लिए दानवीर, संविधान सभा के सदस्य डा. हरीसिंह गौर की जयंती पर शुक्रवार को जिले व देश के कई स्थानों पर धूमधाम से गौर जयंती मनाई जाएगी। डा. गौर ने महिलाओं के उत्थान से लेकर जिले के लोगों को शिक्षित करने अपनी जमा पूंजी दान करके विवि की स्थापना की, जिसमें पढ़ाई करके आज पूरे विश्व में यहां के लोग उच्च पदों पर कार्य कर रहे हैं। डा. गौर के कई ऐसे कार्य रहे हैं जो आज युवाओं के लिए प्रेरणादायी हैं। उनके जीवनकाल में कई ऐसे कार्य रहे जो आज लोगों को सिर ऊंचा करके जीवनयापन करने में मददगार साबित हो रहे हैं। नवदुनिया ने ऐसी ही कुछ जानकारी एकत्रित कर पाठकों के सामने रखने का प्रयास किया है।

डा. गौर ने लिखा है कि अज्ञानता दासत्व की सहेली होती है, यदि आप लोगों को दबाकर रखना चाहते हैं, तो आपको चाहिए कि आप उन्हें अज्ञानी बनाए रखें। इसी अज्ञान के अंधेरे को दूर करने के लिए डा गौर ने ज्ञान के प्रकाश को फैलाने के लिए सागर विश्वविद्यालय की स्थापना की। इस विवि में पढ़ने वाला अपने लिए गौरवान्वित समझता है और यहां नौकरी व पढ़ाई करने वाले शिक्षक, छात्र व कर्मचारी आज जहां भी हैं वह उधर किसी न किसी कार्यक्रम के रूप में डा. गौर को याद करते हैं। विवि परिवार के अलावा कई जगह आज डा. गौर की पूजा तक की जाती है। विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता व कुलसचिव संतोष सोहगौरा के निर्देशन में जिले भर इस बार गौर उत्सव गौर सप्ताह के रूप में मनाया जा रहा है, जिसके चलते यहां कई कार्यक्रमों व प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया जा रहा है। शुक्रवार को शहर में कई जगह गाजे-बाजे के साथ शोभायात्रा निकलेगी व प्रतिभावान विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए सम्मानित किया जाएगा।

समुद्र पार करने पर जाति से करते थे बहिष्कृत, डा. गौर ने कराया था विधेयक पास: यदि कोई दूसरी जाति में विवाह करता था तो उस विवाह को मान्यता नहीं मिलती थी। उस समय उच्च अध्ययन के लिए लोग विदेश पढ़ने जाते थे। समुद्रपार यात्रा करने वाले को जाति बहिष्कृत कर दिया जाता था। इस कारण डा. गौर ने ठान लिया कि वे कानून द्वारा

डा. हरीसिह गौर। ● फाइल फोटो

अन्तर्जातीय विवाह (इंटरकास्ट मैरिज) को कानूनी मान्यता दिला कर रहेंगे। डा. गौर ने केंद्रीय धारा सभा में अन्तर्जातीय विवाह विधेयक पेश किया तो अनुदार सदस्यों ने इसका बार-बार विरोध किया। डा. गौर ने हिम्मत नहीं हारी, वे इसे पास करने के लिए प्रयास करते रहे। अंततः यह विधेयक पास हो ही गया। यह विशेष विवाह (संशोधित) विधेयक, सिविल मैरिज एक्ट 30, 1923 के रूप में पास हो गया।

12 दिन में ऐसे तर्क दिए कि रेलवे का वकील जबाव तक नहीं दे सका: डा. गौर ने एक प्रभावशाली एवं समृद्ध मारवाड़ी का केस भी लड़ा। पुलिस ने मारवाड़ी के पास से सोने-चांदी का माल बरामद किया था। यह मारवाड़ी एक लोकप्रिय राष्ट्रवादी था। यंग इंडिया का कट्टर समर्थक था। पुलिस का कहना था कि यह माल चोरी का है। मारवाड़ी का कहना था कि यह सामग्री जिन लोगों ने गिरवी रखी है वह चोरी कर ही नहीं सकते। पुलिस मानने को तैयार नहीं थी। मामला कोर्ट तक पहुंचा। डा.गौर ने इस मारवाड़ी को दोष मुक्त सिद्ध कराया। वहीं उनकी ख्याती अखबारों में पढ़कर मद्रासी ईसाई व लकड़ी का करोड़पति ठेकेदार मिस्टर जोसेफ ने डा. गौर से मुलाकात कर रेलवे के खिलाफ केस दिया। रेल्वे कम्पनी ने अपने पक्ष में एक से एक होश्यार वकील को अनुबंधित कर रखा था। केस पूरे 12 दिन तक चला और डा. गौर ने इतने आकाट्य तर्क प्रस्तुत किए कि विरोधी पक्ष के वकील उनका जवाब नहीं दे सके।

महिलाओं को दिलाया वकालत का अधिकार: डा. हरीसिह गौर भारत

डा. गौर की जयंती की पूर्व संध्या पर गुरुवार को कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलसचिव संतोष सोहगौरा सहित शहर के अन्य कई समाजसेवियों ने तीनबत्ती स्थित डॉ. गौर की प्रतिमा के सामने मोमबत्ती जलाकर उन्हें याद किया। ● नवदुनिया

18 जुलाई 1946 में की विश्वविद्यालय की स्थापना

डॉ. गौर ने अपनी गाढ़ी कमाई से 20 लाख रुपये की धनराशि से 18 जुलाई 1946 को अपनी जन्मभूमि सागर में सागर विश्वविद्यालय की स्थापना की। वसीयत द्वारा अपनी निजी सपंति से 2 करोड़ रुपये दान भी दिया था। उनका जन्म शनिचरी के पास एक निर्धन परिवार में 26 नवंबर 1870 को हुआ था।

में नारियों की स्थिति को लेकर अत्यन्त

की बराबरी में खड़ा देखना चाहते थे।

चिंतित थे। वे न केवल नारी को पुरुषों की बराबरी में खड़ा देखना चाहते थे। उनका स्पष्ट मानना था कि पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त करने के लिए स्त्री को शिक्षित होना अति आवश्यक है। उस समय महिलाओं को वकालात का अधिकार नहीं था। डा. गौर ने विधान परिषद में एक्ट 29 सन 1923 पारित कराकर पास करवा कर महिलाओं को वकालात करने का अधिकार दिलाया। इस एक्ट द्वारा स्त्रियों का भी वकील के रूप में रजिस्ट्रेशन होने लगा।

वकालत के क्षेत्र में बजा डा. गौर का डंका: वकालात के क्षेत्र में डा. हरीसिंह गौर की योग्यता का डंका समस्त भारतवर्ष में बज उठा। प्रो. बीके श्रीवास्तव की पुस्तक डा. हरीसिंह गौर एक प्रेरक व्यक्तित्व में उल्लेख है कि उनकी वकालात की ख्याति इतनी अधिक बढ़ गई थी कि लोग वह कहने लगे थे कि यदि किसी की मोटर कार का पहिया मार्ग में पंचर हो जाए तो उसे डा. गौर को वकील बना लेना चाहिए, क्योंकि वह उस व्यक्ति को नए ट्यूब टायर के पैसे म्युनिसपैलिटी से वसूल करा सकते हैं।

महिलाओं को दिलाया वकालत का अधिकार: डा. हरीसिंह गौर भारत में नारियों की स्थिति को लेकर अत्यन्त चिन्तित थे। वे न केवल नारी को पुरुषों

उनका स्पष्ट मानना था कि पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त करने के लिए स्त्री को शिक्षित होना अति आवश्यक है। उस समय महिलाओं को वकालात का अधिकार नहीं था। डा. गौर ने विधान परिषद में एक्ट 29 सन 1923 पारित कराकर पास करवा कर महिलाओं को वकालात करने का अधिकार दिलाया। इस एक्ट द्वारा स्त्रियों का भी वकील के रूप में रजिस्ट्रेशन होने लगा।

संविधान निर्माण में निभाई अहम भूमिका : डा. हरीसिंह गौर ने देश के संविधान निर्माण सहित राष्ट्र निर्माण में अहम भूमिका निभाई थी। इस सबके बाद वो अपनी जन्मस्थली सागर लौट आए, जहां उन्होंने अपने जीवनभर की जमापूंजी से सागर विश्विद्यालय की स्थापना की। सर गौर का सागर में विश्विद्यालय खोलने का एक मात्र उद्देश्य था, क्षेत्र का शैक्षणिक विकास और 1946 में उन्होंने सागर विश्विद्यालय की स्थापना की। इसका नाम बाद में उनके ही नाम पर कर दिया गया। किसी एक व्यक्ति के दान से स्थापित होने वाला यह देश का एकमात्र विश्वविद्यालय है। आज दानवीर डा गौर के नाम से ही सागर की अलग ही पहचान है। सागर विश्विद्यालय से महान दार्शनिक रजनीश ओशो जैसे अनेक छात्रों ने कीर्तिमान स्थापित किया। यही वजह है यहां के छात्र आज भी सर गौर को अपना आदर्श मानकर उनसे प्रेरणा लेते हैं।

देवदासी प्रथा को कानून बनाकर किया बंद

प्रो. बीके श्रीवास्तव की पुस्तक में कहा गया है कि डा. गौर ने इस देवदासी प्रथा को समाप्त करने असेम्बली में बिल प्रस्तुत किया। रूढ़िवादियों एवं धर्म के ठेकेदारों ने इस बिल का विरोध किया। उन्होंने तब कहा कि नैतिकता सभी धर्मों में सर्वोपरि है यदि उसमें अनैतिकता की स्वीकृति दिखाई न दे, लेकिन देवदासी प्रथा में अनैतिकता स्पष्टतः दिखाई दे रही है। डा. गौर की इस दलील ने अपना काम किया। डा. गौर का प्रस्ताव सरकार ने स्वीकृत कर लिया। सारा सदन तालियों की गढ़-गढ़ाहट के साथ हरी, हरी, हरी की हर्ष ध्वनि से गूंज उठा। 1924 ई. में भारतीय दण्ड संहिताओं की धाराओं 372 एवं 373 के तहत यह व्यवस्था दी गई कि देवदासियों का मंदिर को अर्पण किया जाना व ग्रहण किया जाना दोनों ही अपराध होंगे। ऐसा करने वालों को दंडित किया जाएगा। इस प्रकार डा. हरीसिंह गौर के प्रयासों ने देवदासी प्रथा कानून द्वारा बंद करा दी गई।

नागपुर में बनवाया था चार एकड़ की भूमि पर घर: नागपुर में 4 एकड़ जमीन खरीदकर उन्होंने एक बड़ा घर बनवाया था। अपनी पुस्तकों के विशाल भण्डार को प्रथक् से एक कमरे में जमाया था। एक शिक्षक एवं एक वकील की सबसे बड़ी पूंजी तो उसकी पुस्तकें ही रहती हैं। वह शिक्षक ही क्या? वह वकील ही क्या? जिनके पास पुस्तकों का संग्रह न हो। डा. गौर ने नागपुर को ही कम आमदनी के बावजूद अपने निवास के लिए चुना।

पहली पुस्तक लिखी संपत्ति का हस्तांतरण, न्यायाधीशों ने बताया महानतम ग्रंथ: डा. गौर और वकीलों से हटकर थे। उन्होंने वकालात का अध्ययन अत्यंत ही मेहनत के साथ किया था। वे कानून के अच्छे जानकार तो थे ही, कानून में कहां चूक है, इन पर भी उन्होंने गंभीर चिन्तन, मनन किया था। कैम्ब्रिज में अध्ययन के दौरान धन की कमी को उन्होंने साहित्य सृजन एवं उससे प्राप्त रायल्टी से पूरा किया था।

गौर जयंती आजः डॉक्टर गौर के सपनों का सागर और उनका विवि पर परिसंवाद हुआ

जागरण न्यूज, सागर

महान् शिक्षाविद् एवं प्रख्यात विधिवेत्ता, संविधान सभा के सदस्य एवं दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर की 152वीं जयंती शुक्रवार को मनाई जाएगी। वहीं जन्मदिवस के उपलक्ष्य में 21 नवंबर से 26 नवंबर तक आयोजित गौर उत्सव के पांचवें दिन विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयन्ती सभागार में डॉ. गौर के सपनों का सागर और उनका विश्वविद्यालय विषय पर परिसंवाद आयोजित हुआ। डॉ. गौर और मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण, दीप प्रज्वलन और अतिथियों के स्वागत के उपरान्त विषय प्रवर्तन करते हुए डॉ. संजय शर्मा ने डॉ. गौर के सागर शहर और शिक्षा के मंदिर के सपने के पीछे के ऐतिहासिक कारणों का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि वे अपने समकालीन विचारकों और संस्थानों से प्रभावित थे। वे सागर ही नहीं पूरे भारत की संस्कृति को बदलना चाहते थे। यह बदलाव शिक्षा के माध्यम से ही होगा। यह मानने वाले डॉ. गौर ने इसके लिए एक विश्वविद्यालय स्थापित करने का प्रण लिया। उनका वह संकल्प एक विश्वविद्यालय के रूप में हमारे सामने है। डॉ. गौर विश्वविद्यालय को समाज निर्मिति के केंद्र के रूप में देखते थे। कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी ने कहा कि डॉ. गौर स्वप्नद्रष्टा थे। उनके सपनों के बारे में जानने के लिए सबसे पहले उनके अन्तः ह्रदय को जानना होगा। ऊपरी तौर पर हम उनके बारे में बहुत-सी बातें जानते हैं लेकिन उनकी आंतरिक छवि विराट थी। वे समय के अनुकूल नए ज्ञान और सृजन के प्रति सचेत थे। ख्यातिलब्ध चिकित्सक डॉ.जीएस चौबे ने कहा कि डॉ.गौर का जन्म जिस दशक में हुआ, वह देश में प्रतिभाओं के जन्म का दशक था। 1870 में जन्मे डॉ.गौर ने अपना सर्वस्व धन दानकर विद्या के एक मंदिर की स्थापना की। ऐसा उदाहरण पूरी दुनिया में कहीं नहीं मिलेगा।

आज होंगे विविध आयोजन

26 नवंबर को सुबह 8 बजे तीनबत्ती स्थित गौरमूर्ति पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता द्वारा माल्यार्पण और उद्बोधन के पश्चात 8.30 बजे कटरा से विश्वविद्यालय परिसर के लिए पर शोभायात्रा प्रस्थान करेगी। विवि के गौर प्रांगण में सुबह 11 बजे से मुख्य समारोह आयोजित होगा। जिसमें मुख्य अतिथि कैबिनेट मंत्री भूपेंद्र सिंह होंगे। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता का उद्बोधन होगा। अध्यक्षता कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी करेंगे। शाम 6 बजे 1971 के भारत-पाक युद्ध में विजय के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भारतीय सेना के विक्टरी फ्लेम का विश्वविद्यालय में स्वागत किया जायेगा। शाम 6.30 बजे विश्वविद्यालयीन विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति होगी।

सामाजिक भागीदारी सुनिश्चित करेगा विवि

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि डॉ. गौर के जीवन संघर्ष और उनके अवदानों की चर्चा सुनते हुए मुझे उनका समकालीन परिदृश्य दिखाई दे रहा है। डॉ. गौर बेहद अभाव की स्थिति से निकलकर उच्च शिखर पर पहुंचने वाले महान व्यक्तित्व थे। आज लोग अपने परिवार और बच्चों के लिए पूंजी इकट्ठा करते हैं। लेकिन डॉ. गौर ने परिवार के साथ-साथ समाज के लिए एक बड़ा हिस्सा भी रखा और एक अद्भुत शिक्षा का केंद्र हमें विरासत में मिला है। हमारी यह जिम्मेदारी है कि हम उनके अवदानों को याद करते हुए उनके संकल्पों को पूरा करने में अपनी ऊर्जा लगाएं। कार्यक्रम का मॉडरेशन और आभार ज्ञापन कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने किया। कार्यक्रम में विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष, शिक्षक, कर्मचारी और विद्यार्थी और सागर शहर के अनेक सम्माननीय नागरिकगण उपस्थित थे।

आयोजन । डॉ. गौर के सपनों का सागर और उनका विवि पर परिसंवाद आयोजित

सागर को आत्मनिर्भर बनाने का सपना था डॉ. गौर का: रघु

सागर, आचरण संवाददाता।

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के संस्थापक महान शिक्षाविद् एवं प्रख्यात विधिवेत्ता, संविधान सभा के सदस्य एवं दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में 21 नवंबर से 26 नवंबर तक आयोजित 'गौर उत्सव' के पांचवें दिन विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयन्ती सभागार में 'डॉ. गौर के सपनों का सागर और उनका विश्वविद्यालय' विषय पर परिसंवाद आयोजित हुआ। डॉ. गौर और मां. सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण, दीप प्रज्जवलन और अतिथियों के स्वागत के उपरान्त विषय प्रवर्तन करते हुए डॉ. संजय शर्मा ने डॉ. गौर के सागर शहर और शिक्षा के मंदिर के सपने के पीछे के ऐतिहासिक कारणों का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि वे अपने समकालीन विचारकों और संस्थानों से प्रभावित थे। वे सागर ही नहीं पूरे भारत की संस्कृति को बदलना चाहते थे. यह बदलाव शिक्षा के माध्यम से ही होगा, यह मानने वाले डॉ. गौर ने इसके लिए एक विश्वविद्यालय स्थापित करने का प्रण लिया. उनका वह संकल्प एक विश्वविद्यालय के रूप में हमारे सामने है. डॉ. गौर विश्वविद्यालय को समाज निर्मिति के केंद्र के रूप में देखते थे।

डॉ. गौर की आंतरिक छवि विराट थी

कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी ने कहा कि डॉ. गौर स्वप्नद्रष्टा थे। उनके सपनों के बारे में जानने के लिए सबसे पहले उनके अन्तः ह्दय को जानना होगा. ऊपरी तौर पर हम उनके बारे में बहुत सी बातें जानते हैं लेकिन उनकी आंतरिक छवि विराट थी. वे समय के अनुकूल नए ज्ञान और सृजन के प्रति सचेत थे. वे जानते थे कि भौतिक युग में ग्रामीण संस्कृति को बढ़ावा नहीं मिलेगा. इसीलिये उन्होंने एक विश्वविद्यालय के लिए ग्रामीण परिवेश चुना ताकि समकालीन विचारों के साथ यह विश्वविद्यालय अद्यतन ज्ञान का केंद्र बने. आने वाले समय में यह विश्वविद्यालय नवाचार के प्रयोग के माध्यम से साहित्य, संस्कृति, परम्परा के महत्त्व की स्थापना का विश्वस्तरीय केंद्र बनेगा।

प्रसिद्ध समाजवादी चिन्तक रघु ठाकुर ने कहा कि डॉ. गौर ने गरीबी का निकट से अनुभव किया था. उन्होंने इस पूरे अंचल को विकास के रास्ते पर लाने के लिए विश्वविद्यालय को आधार बनाया. उन्होंने शहर और विश्वविद्यालय को पूरी दुनिया से जोड़ने के लिए विमानन मंत्रालय को हवाई अड्डा बनाने के लिए ज्ञापन दिया. रेल सुविधाओं को अद्यतन करने के लिए ज्ञापन दिए. वे सागर को देश की उप राजधानी बनाना चाहते थे. इसके लिए उन्होंने कई पत्राचार किये जिसमें तर्कसंगत बातों से तत्कालीन सरकार को सहमत करने का प्रयास किया. सागर में टेक्नीकल एजुकेशन के लिए कॉलेज और विश्वविद्यालय स्थापित करने के लिए भी उन्होंने पत्र लिखे. विकास के जितने भी मापदंड हो सकते हैं, वे सागर को सबसे परिपूर्ण करना चाहते थे. उनका सपना सागर को आत्मनिर्भर बनाने का सपना था. उनका मानना था कि लोग पढ़कर केवल डिग्री न हासिल करें बल्कि लोकतांत्रिक व्यवहार भी सीखें. वे मानते थे कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो लोकतांत्रिकता और प्रगतिशीलता के रास्ते पर व्यक्ति को ले जाए और विश्वविद्यालय इसका केंद्र बने. वे हिन्दू धर्म और परम्पराओं का नवजागरण चाहते थे. महिलाओं की शिक्षा और उनके अधिकारों के लिए उन्होंने बहुत से काम किये. वे ऐसी शिक्षा के हिमायती थे जो केवल सूचना प्रदान करने तक सीमित न हो बल्कि विवेक भी जुड़ा हो।

डॉ. गौर के जन्म का दशक प्रतिभाओं के जन्म का दशक

ख्यातिलब्ध चिकित्सक डॉ. जी एस चौबे ने कहा कि डॉ. गौर का जन्म जिस दशक में हुआ, वह देश में प्रतिभाओं के जन्म का दशक था. 1861 में जन्मे रवींद्र नाथ ठाकुर को नोबल पुरस्कार से नवाजा गया. 1863 में जन्में स्वामी विवेकानंद के विचारों और कार्यों ने पूरी दुनिया में भारत को विश्वगुरु के रूप में स्थापित किया. 1869 में जन्मे गांधीजी ने सत्य और अहिंसा के रास्ते पर पूरे देश को चलने की प्रेरणा दी और अप्रतिम

त्याग का परिचय दिया. 1870 में जन्मे डॉ. गौर ने अपना सर्वस्व धन दानकर विद्या के एक मंदिर की स्थापना की. ऐसा उदाहरण पूरी दुनिया में कहीं नहीं मिलेगा।

गौर के सपनों ने सागर को विश्वपटल पर स्थापित किया

वरिष्ठ शिक्षाशास्त्री एवं वैज्ञानिक प्रो. एस पी व्यास ने कहा कि डॉ. गौर के व्यक्तित्व को शब्दों में उतारना बड़ा ही कठिन कार्य है. उनके सपने के अनुरूप बहुत से मंगल कार्य किये जा रहे हैं. यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है. डॉ. गौर के सद्प्रयासों से महिलाओं के लिए वकालत का रास्ता खुला. वे एक व्यक्ति नहीं विचार थे। विश्वविद्यालय की स्थापना करके एक छोटे से ग्रामीण इलाके को विश्वपटल पर सम्मान दिलाने वाले वे पहले व्यक्ति थे। उनका व्यक्तित्व संत का व्यक्तित्व था. उनके जन्म दिवस के अवसर पर हमें यह प्रण लेना होगा कि हम हर दिन की शुरुआत उनके संकल्पों के अनुरूप कार्य करने से करेंगे. अनुशासित रहकर इस शिक्षा के केंद्र को एक नई ऊंचाई पर ले जाने के लिए सदैव श्रमशील रहेंगे।

डॉ.गौर के सपनों के अनुरूप अपनी सामाजिक भागीदारी सुनिश्चित करेगा विवि

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि डॉ. गौर के जीवन संघर्ष और उनके अवदानों की चर्चा सुनते हुए मुझे उनका समकालीन परिदृश्य दिखाई दे रहा है. डॉ. गौर बेहद अभाव की स्थिति से निकलकर उच्च शिखर पर पहुँचने वाले महान व्यक्तित्व थे. आज लोग अपने परिवार और बच्चों के लिए पूंजी इकट्ठा करते हैं. लेकिन डॉ. गौर ने परिवार के साथ-साथ समाज के लिए एक बड़ा हिस्सा भी रखा और एक अद्भुत शिक्षा का केंद्र हमें विरासत में मिला है। हमारी यह जिम्मेदारी है कि हम उनके अवदानों को याद करते हुए उनके संकल्पों को पूरा करने में अपनी ऊर्जा लगाएं. उन्होंने हाल ही में हुए विभिन्न संस्थाओं के साथ हुए अकादमिक अनुबंधों की चर्चा करते हुए कहा कि हम नए-नए पाठ्यक्रमों के माध्यम से ऐसी पीढ़ी तैयार करेंगे कि आने वाले समय में यह विश्वविद्यालय अपने शिखर पर पहुंचेगा।

ग्रामीण विकास, स्किल डेवलेपमेंट पाठ्यक्रमों के जरिये हम आदर्श गाँव भी बनायेंगे. समाज और समुदाय की बेहतरी के लिए भी विश्वविद्यालय अपनी भागीदारी सुनिश्चित करेगा। डॉ. गौर ने विश्वविद्यालय के रूप में जो बीजारोपण किया है हम उनके संकल्पों और सपनों के अनुरूप इसे हरा-भरा बनाएंगे. उन्होंने कहा कि जल्द ही गौर म्यूजियम बनकर तैयार होगा. उन्होंने अपील की कि जिनके पास भी उनसे जुड़ी हुई वस्तुएं हों वे विश्वविद्यालय को सौंपकर अपना योगदान दें ताकि म्यूजियम के माध्यम से वे वस्तुएं सभी के लिए उपलब्ध हो पायें।

गौर जयंती पर आज निकलेगी भव्य शोभायात्रा

सागर, आचरण। 26 नवंबर प्रातः 08 बजे तीन बत्ती स्थित गौरमूर्ति पर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता द्वारा गौर प्रतिमा पर माल्यार्पण और उद्बोधन के पश्चात 08:30 बजे तीन बत्ती, कटरा से विवि परिसर के लिए पर शोभा यात्रा प्रस्थान करेगी. विश्वविद्यालय के गौर प्रांगण में सुबह 11.00 बजे से आयोजित मुख्य समारोह आयोजित होगा जिसमें मुख्य अतिथि मध्यप्रदेश सरकार के कैबिनेट मंत्री भूपेंद्र सिंह, नगरीय विकास एवं आवास विभाग होंगे। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता का सारस्वत उद्बोधन होगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी करेंगे। सायं 06.00 बजे 1971 के भारत पाक युद्ध में विजय के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भारतीय सेना के 'विक्टरी फ्लेम' का विश्वविद्यालय में स्वागत किया जायेगा। सायं 06:30 पर विश्वविद्यालयीन विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति होगी।

सागर, आचरण। डॉ. हरीसिंह गौर की जयंती की पूर्व संध्या पर विवि पुस्तकालय और गौर समाधि परिसर में आकर्षक विद्युत सजावट की गई। छाया: गोविन्द सर्वैया

तीन बत्ती गौर प्रतिमा पर मोमबत्तियां प्रज्जवलित कीं

सागर, आचरण संवाददाता।

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के संस्थापक महान शिक्षाविद् एवं प्रख्यात विधिवेत्ता, संविधान सभा के सदस्य एवं दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में 'गौर उत्सव' मनाया जा रहा है. इस क्रम में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने गौर जयन्ती 26 नवंबर को आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की तैयारियों का जायजा लिया. उन्होंने गौर-प्रांगण का निरीक्षण किया और आयोजन समिति को यथोचित दिशा-निर्देश दिए. इसके बाद वे तीनबत्ती पहुँची और आयोजन स्थल का निरीक्षण कर तैयारियों का जायजा लिया. इस दौरान उन्होंने दीप प्रज्जवलित कर डॉ. गौर को श्रद्धांजलि दी। गौरतलब है कि डॉ. गौर के जन्मदिवस पर तीनबत्ती स्थित गौर प्रतिमा पर माल्यार्पण और कुलपति के उद्बोधन के पश्चात शोभा यात्रा निकलने की परंपरा है. यह शोभायात्रा विश्वविद्यालय पहुँचने के उपरान्त मुख्य समारोह का आयोजन होता है. तीनबत्ती स्थल पर कुलपति के साथ, संतोष सहगौरा, प्रो. आरके त्रिवेदी, शुकदेव प्रसाद तिवारी, सुरेश आचार्य, मुन्ना यादव, राजेश बोहरे, प्रदीप तिवारी, संदीप बाल्मीकि, प्रवीण पाण्डेय, राजेश केशरवानी, पत्रकार संघ के अध्यक्ष सुदेश तिवारी, सिंटू कटारे, शहर के गणमान्य नागरिक और विश्वविद्यालय के शिक्षक और अधिकारी मौजूद रहे।

प्रदर्शनी लगाई

सागर, आचरण। सर हरीसिंह गौर की 152 वीं जयंती की पूर्व संध्या पर एकीकृत शास. माध्यमिक गांधी कन्या शाला कटरा सागर में गौर साहब के जीवन पर आधारित छायाचित्रों की प्रदर्शनी छटवीं कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा लगाई गई। कक्षा शिक्षिका श्रीमती अल्का जैन ने पहले गौर साहब के बारे में कक्षा छठवीं के विद्यार्थियों ने उनकी जीवनी के बारे में बताया और कहा कि यदि गौर साहब सागर में विश्वविद्यालय की स्थापना नहीं करते तो यहाँ पर शिक्षा का स्तर तो बिल्कुल शून्य ही रहता। इस अवसर पर स्कूल की अन्य शिक्षिकायें भी उपस्थित थी।

गौर जयंती पर विशेष

डॉक्टर हरीसिंह गौर न केवल सागर, मध्यप्रदेश अपितु भारत के गौरव पुरुष थे

सागरवासियों का गर्व और गौरव : डॉ. हरीसिंह गौर

गौर अंधविश्वास, अंधकार, अंधानुकरण, जात-पांत का भेद, पर्दा प्रथा सहित अन्य दकियानूसी परंपराओं व रूढ़ियों के घनघोर विरोधी थे। उन्होंने देवदासी प्रथा जैसे नाना प्रकार के पाखण्डों के विरुद्ध वैधानिक मंच से आवाज उठाई, परिणामस्वरूप धर्म का कवच ओढ़े अधर्मियों का पर्दाफाश हुआ। वे लैंगिक भेदभाव के खिलाफ और सामाजिक समानता के प्रबल पक्षधर थे। उन्होंने महिलाओं को वकालत का हक दिलाया साथ ही महिला उत्थान हेतु ठोस कार्य किये। पुरातन जंजीरें तोड़ी, नई दुनिया का निर्माण किया।

डॉक्टर हरीसिंह गौर न केवल सागर, मध्यप्रदेश अपितु भारत के गौरव पुरुष थे।

डॉ. गौर पर सरस्वती और लक्ष्मी दोनों की कृपा थी। वे कानून के महारथी थे। देश के जन-मन में उनकी कुशाग्र बुद्धि की प्रखरता का बोलबाला था। भारत में उनकी कोटि के दिग्गज विधिशास्त्री बहुत कम हुए है। आज डॉ. गौर का 151वाँ जन्मदिन हम मना रहे है। हालांकि विश्वविद्यालय ने अपने आमंत्रण में इसे 152वाँ बताया है। खैर..युग पुरुष डॉ. गौर का व्यक्तित्व बहुआयामी (Multidimensional) था। वे ख्यातनाम शिक्षाविद, कानूनविद, दार्शनिक, कवि, साहित्यकार और कुशल लेखक के रूप में स्थापित है। महामानव गौर के विभिन्न ग्रंथों और उनके कृतित्व को गहराई से देखें तो उनके व्यक्तित्व में हमें एक अद्‌भुद समाज सुधारक (Social Reformer) की छवि स्पष्ट दिखाई देती है।

गौर अंधविश्वास, अंधकार, अंधानुकरण, जात-पांत का भेद, पर्दा प्रथा सहित अन्य दकियानूसी परंपराओं व रूढ़ियों के घनघोर विरोधी थे। उन्होंने देवदासी प्रथा जैसे नाना प्रकार के पाखण्डों के विरुद्ध वैधानिक मंच से आवाज उठाई, परिणामस्वरूप धर्म का कवच ओढ़े अधर्मियों का पर्दाफाश हुआ। वे लैंगिक भेदभाव के खिलाफ और सामाजिक समानता के प्रबल पक्षधर थे। उन्होंने महिलाओं को वकालत का हक दिलाया साथ ही महिला उत्थान हेतु ठोस कार्य किये। पुरातन जंजीरें तोड़ी, नई दुनिया का निर्माण किया। इस दौरान वे पंडित नेहरू, सरदार पटेल व अम्बेडकर के संपर्क में आये और 1946 में गठित संविधान निर्माण सभा के सदस्य मनोनीत हुए।

ईसा मसीह ने भी इसी प्रकार विद्रोह किया था। मोहम्मद पैगम्बर ने भी पाखंडी रूढ़ियों को उखाड़ फेंका। डॉ. हरीसिंह गौर भी बुन्देलखण्ड को इस धरा पर पैगम्बर बन आये, जिन्होंने शिक्षा के माध्यम से सामाजिक क्रांति की। इस रूप में हम उन्हें राजाराम मोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती एवं महात्मा गांधी के समक्ष रख सकते है। महात्मा गांधी और गौर समकालीन थे। समान आयु भी पाई। गांधी और गौर दोनों पेशे से वकील थे। दोनों को माँ और मातृ भूमि से बेहद प्यार रहा। दोनों समाज सुधारक रहे। राजनीति में भी रुचि रही। कर्म के प्रति दोनों की दृढ़ निष्ठा व निष्ठा प्राथमिक शर्त रही। दोनों कर्मयोगी महापुरुष जीवन काल में न्याय के प्रबल पक्षधर रहे। गौर और गांधी दोनों ने लंदन जाकर बैरिस्टर की डिग्री हासिल की। दोनों ने जनता का अटूट भरोसा जीता, समग्र कीर्ति व यश अर्जित किया। गौर-गांधी दोनों दादा भाई नौरोजी से प्रेरित हुए। इस तरह दोनों प्रेरक पुरुष का कर्म काल लगभग एक समान है। लेकिन हरीसिंह गौर और महात्मा गांधी का संवाद, मुलाकात और संबंध का कोई ब्यौरा उपलब्ध नहीं है।

सागर विश्वविद्यालय द्वारा 25 दिसंबर,1957 को संस्थापक की आठवीं पुण्य तिथि पर दिल्ली में प्रकाशित गौर स्मृति ग्रंथ की भूमिका में तत्कालीन कुलपति डॉ. द्वारका प्रसाद मिश्र ने लिखा है कि महात्मा गांधी के कांग्रेस में सक्रिय प्रवेश से पहले हरीसिंह गौर का बोलबाला था। गौर साब 1921 से 1935 तक विधानसभा के सदस्य रहे। इसी दौरान उन्होंने कांग्रेस छोड़ी और डेमोक्रेटिक पार्टी बनाई। राजनीति के चाणक्य समझे जाने वाले डी. पी. मिश्र कहते है कि आलम ये था कि गौर साब और कांग्रेस एक दूसरे को आंख से आंख नहीं सुहाते थे। हालांकि हरीसिंह गौर ने राष्ट्रीय मुद्दों व जनहित के मामलों में कई मर्तबा कांग्रेस का समर्थन भी किया। विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में डॉ. डी. पी. मिश्र इस ऐतिहासिक स्मारक ग्रंथ के संरक्षक थे। प्रो. नंददुलारे बाजपेई, डॉ.ए.के.भट्टाचार्य, प्रो. एस. आर. स्वामीनाथन एवं डॉ.रामरतन भटनागर ने स्मृति ग्रंथ का संपादन किया। ग्रंथ में देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, उपराष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन सहित अनेक राज्यों के राज्यपाल, मुख्यमंत्रियों, सुप्रीम कोर्ट के माननीय न्यायाधीशों ने गौर साब की कर्मनिष्ठा व बहुआयामी व्यक्तित्व का लोहा मानते हुए विचार संदेश दिए है। जिसमें सागर के गौरव पुरुष का राष्ट्रीय महत्व स्पष्ट है।

आश्चर्य और दुर्भाग्य है, द्वारकाप्रसाद मिश्र के बाद न केवल विश्वविद्यालय ने अपितु सागर के जनप्रतिनिधियों ने इस अप्रतिम धरोहर के साथ न्याय क्यों नहीं किया। जो स्थान गौर साब को मिलना चाहिए वो अब तक क्यों नहीं मिला?

कानून के क्षेत्र में गौर साब का कोई सानी नहीं था, उनके वकालत के अनेक किस्से किवदंती बन गए, नजीर बन गए। विपक्ष की भूमिका में प्रबलतम विरोध और पक्ष की ओर हो, तो हर सम्भव बचाव। गौर साब का ज्ञान, अनुभव, दूरदर्शिता, भाषा पर पकड़, विलक्षण स्मरण शक्ति, गहन आत्मविश्वास व आत्मबल, तर्क शक्ति, प्रस्तुतिकरण, मौलिक सूझ-बूझ ऐसा था, कि जब वे कोर्ट में उपस्थित हुआ करते, जज भी सावधान रहते थे। रायपुर, नागपुर, लाहौर, रंगून में वकालत के दौरान इतने केस स्टडी कर डालीं कि उन्हें 'कानून के पंडित' उपाधि से नवाजा गया। गौर साब की 'इंडियन पीनल कोड-कंपेरेटिव एनालिसिस', (3000 पेज, दो खण्ड) के बिना देश में बार काउंसिल का कोई भी पुस्तकालय आज भी अधूरा है। नवागत वकील आज भी इसी से प्रेरणा लेकर अपना कार्य आरम्भ करते है। डॉ. गौर 1921 दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलपति बने। वे दो मर्तबा नागपुर विश्वविद्यालय के कुलपति भी रहे।

स्पिरिट ऑफ बुद्धिज्म, रैंडम राइम्स, हिज ओनली लव, फैक्ट एंड फैन्सीज, सेविन लाइव्स (आटोबायोग्राफी) जैसे ग्रंथों ने गौर साब को साहित्य के क्षेत्र में खासी ख्याति मिली।

1944 में डॉ. गौर मातृ भूमि में वापिस लौटे। सागर में विश्वविद्यालय खोलने का प्रस्ताव दिया, पंडित रविशंकर शुक्ल का सहयोग मिला। 18 जुलाई, 1946 को गौर के युग अवस्था में चुने गये सपने ने आकार लिया। एक भव्य समारोह में सागर विश्वविद्यालय का उद्घाटन हुआ। गौर साब स्वयं इस कार्यक्रम में मौजूद नहीं रहे, वे विश्वविद्यालय विधेयक पास कराने हेतु तत्कालीन राजधानी नागपुर में थे। गौर द्वारा नियुक्त 17 शिक्षकों और 290 विद्यार्थियों से मकरोनिया के सैनिक बैरिक्स में विश्वविद्यालय आरम्भ हो गया। बाद में गौर साब द्वारा चयनित पथरिया हिल्स पर स्थानांतरित हो गया। उल्लेखनीय है कि अगस्त,15, 1948 को स्वयं हरीसिंह गौर ने पथरिया पहाड़ी पर विश्वविद्यालय के नए भवनों की आधार शिला रखी थी।

गौर साब की बदौलत हमें क्या नहीं मिला ...जीविका, हम आईएएस, आईपीएस बन गए, विधायक, मंत्री बन गए, प्रोफेसर, कुलपति बन गए, वकील साब, जज साब बन गए, सिने-अभिनेता, पत्रकार और ओशो (भगवान) तक बन गए....और हमने क्या दिया, विश्वविद्यालय को? चिंतन, मनन, मंथन, आत्मावलोकन करें हम।

विश्वविद्यालय के पास आज गौर साब की कोई धरोहर मौजूद नहीं है.. कहां गया उनका चश्मा, उनके परिधान, उनका ऐतिहासिक हैट, उनकी छड़ी और उनके जीवन संसार से जुड़ी अमूल्य वस्तुएं! गौर साब की एक भी स्पीच, (आवाज) विश्वविद्यालय के पास उपलब्ध न होना दुर्भाग्य ही नहीं, खुली लापरवाही है।

कई मर्तबा गौर जयंती पर गौर साब के साहित्य को हिंदी में अनुवाद करने की बात केवल घोषणा ही रह गई। भला हो युवा पत्रकार मित्र राजेश श्रीवास्तव और राजेश केशरवानी का, जिन्होंने मिलकर गौर साब की आत्मकथा 'सेविन लाइव्स' को हिंदी में उपलब्ध करवा दिया। विश्वविद्यालय को इस बात के लिए शर्मिंदा होना चाहिए कि वह अपने संस्थापक की धरोहर को संरक्षित नहीं कर पाया।

अब भी समय है, विश्वविद्यालय गौर साब के संदर्भ में उच्च स्तरीय शोध करवाये- दिल्ली, नागपुर और उन सभी स्थानों पर गौर साब से जुड़े सभी यादों की तलाश की जाए। दिल्ली स्थित आर्काइव्स में गौर साब के भाषण तलाशे जाएं। इंग्लैंड में जहां गौर रहे, वहां से उनकी यादें संजोये। जाकर एक वृत्त चित्र निर्मित करवाकर भारत सरकार और प्रधानमंत्री मोदीजी के समक्ष प्रस्तुत करें ताकि इस गौरव पुरुष को देश 'भारत रत्न' स्वीकार करे।

अभाव व संघर्ष से भरे आरम्भिक काल में ही अपनी जन्मभूमि में सर्व सुविधा सम्पन्न बड़े शैक्षणिक संस्थान खोलने का स्वप्न बीज हरी सिंह गौर के मन-मस्तिष्क में अंकुरित हो गया था। आजाद भारत का सौगात और अविभाजित मध्यप्रदेश का प्रथम उच्च शिक्षा केन्द्र सागर विश्वविद्यालय सर गौर की साधना, तपस्या और उनके आदर्शों का मूर्तिमान प्रत्यक्ष प्रमाण है। एशिया के किसी भी देश में शिक्षा के लिए दानशीलता का यह एकमात्र उदाहरण है।

सागर में हवाई अड्डा, तकनीकी शैक्षणिक संस्थान सहित सागर के समग्र विकास का गौर का सपना पूर्ण हो, यह संकल्प हम सब लें, उनके जन्मदिन पर।

मेरे लहजे में जी हुजूर नहीं था, इसके अलावा मेरा कोई कुसूर नहीं था, पल भर को यदि मैं बे-जमीर हो जाता, यकीन मानिए जनाब मैं-कब का वजीर हो जाता।

- लेखक : डॉ. राकेश शर्मा

गौर उत्सव पांचवा दिन

'डॉ. गौर के सपनों का सागर और उनका विश्वविद्यालय' पर परिसंवाद आयोजित

सागर, देशबन्धु। 'गौर उत्सव' के पांचवें दिन विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयन्ती सभागार में 'डॉ. गौर के सपनों का सागर और उनका विश्वविद्यालय' विषय पर परिसंवाद आयोजित हुआ। डॉ. गौर और मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण, दीप प्रज्वलन और अतिथियों के स्वागत के उपरान्त विषय प्रवर्तन करते हुए डॉ. संजय शर्मा ने डॉ. गौर के सागर शहर और शिक्षा के मंदिर के सपने के पीछे के ऐतिहासिक कारणों का जिक्र किया। वे अपने समकालीन विचारकों और संस्थानों से प्रभावित थे। वे सागर ही नहीं पूरे भारत की संस्कृति को बदलना चाहते थे। यह बदलाव शिक्षा के माध्यम से ही होगा, यह मानने वाले डॉ. गौर ने इसके लिए एक विश्वविद्यालय स्थापित करने का प्रण लिया। उनका वह संकल्प एक विश्वविद्यालय के रूप में हमारे सामने है।

डॉ. गौर की आंतरिक छवि विराट थी- कुलाधिपति

कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी ने कहा डॉ. गौर स्वप्नदृष्टा थे। उनके सपनों के बारे में जानने के लिए सबसे पहले उनके अन्तः हृदय को जानना होगा। ऊपरी तौर पर हम उनके बारे में बहुत सी बातें जानते हैं लेकिन उनकी आंतरिक छवि विराट थी। वे समय के अनुकूल नए ज्ञान और सृजन के प्रति सचेत थे।

मनुष्य को लोकतांत्रिक और प्रगतिशील बनाने वाली शिक्षा के हिमायती थे डॉ. गौर- रघु ठाकुर

समाजवादी चिन्तक रघु ठाकुर ने कहा डॉ. गौर ने गरीबी का निकट से अनुभव किया था। उन्होंने इस पूरे अंचल को विकास के रास्ते पर लाने के लिए विश्वविद्यालय को आधार बनाया। उन्होंने शहर और विश्वविद्यालय को पूरी दुनिया से जोड़ने के लिए विमानन मंत्रालय को हवाई अड्डा बनाने, रेल सुविधाओं को अद्यतन करने के लिए ज्ञापन दिए। वे सागर को देश की उप राजधानी बनाना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने कई पत्राचार किये जिसमें तर्कसंगत बातों से तत्कालीन सरकार को सहमत करने का प्रयास किया। उनका सपना सागर को आत्मनिर्भर बनाने का था। उनका मानना था कि लोग पढ़कर केवल डिग्री न हासिल करें बल्कि लोकतांत्रिक व्यवहार भी सीखें। वे मानते थे कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो लोकतांत्रिकता और प्रगतिशीलता के रास्ते पर व्यक्ति को ले जाए और विश्वविद्यालय इसका केंद्र बने। वे हिन्दू धर्म और परम्पराओं का नवजागरण चाहते थे। महिलाओं की शिक्षा और उनके अधिकारों के लिए उन्होंने बहुत से काम किये। वे ऐसी शिक्षा के हिमायती थे जो केवल सूचना प्रदान करने तक सीमित न हो बल्कि विवेक भी जुड़ा हो।

डॉ. गौर के जन्म का दशक प्रतिभाओं के जन्म का दशक है- डॉ. चौबे

डॉ. जी एस चौबे ने कहा डॉ. गौर का जन्म जिस दशक में हुआ, वह देश में प्रतिभाओं के जन्म का दशक था। 1861 में जन्मे रवींद्र नाथ ठाकुर को नोबल पुरस्कार से नवाजा गया। 1863 में जन्मे स्वामी विवेकानंद के विचारों और कार्यों ने ने पूरी दुनिया में भारत को विश्वगुरु के रूप में स्थापित किया। 1869 में जन्मे गांधीजी ने सत्य और अहिंसा के रास्ते पर पूरे देश को चलने की प्रेरणा दी और अप्रतिम त्याग का परिचय दिया। 1870 में जन्मे डॉ. गौर ने अपना सर्वस्व धन दानकर विद्या के एक मंदिर की स्थापना की। ऐसा उदाहरण पूरी दुनिया में कहीं नहीं मिलेगा।

डॉ. गौर के सपनों ने सागर को विश्वपटल पर स्थापित किया- प्रो. व्यास

वरिष्ठ शिक्षाशास्त्री एवं वैज्ञानिक प्रो. एस पी व्यास ने कहा डॉ. गौर के व्यक्तित्व को शब्दों में उतारना बड़ा ही कठिन कार्य है। उनके सपने के अनुरूप बहुत से मंगल कार्य किये जा रहे हैं। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। डॉ. गौर के सद्प्रयासों से महिलाओं के लिए वकालत का रास्ता खुला। वे एक व्यक्ति नहीं विचार थे। विश्वविद्यालय की स्थापना करके एक छोटे से ग्रामीण इलाके को विश्वपटल पर सम्मान दिलाने वाले वे पहले व्यक्ति थे।

आज आयोजित कार्यक्रम

प्रातः 8 बजे तीन बत्ती स्थित गौर मूर्ति पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता द्वारा गौर प्रतिमा पर माल्यार्पण और उद्बोधन के पश्चात 8:30 बजे तीनबत्ती, कटरा से विश्वविद्यालय परिसर के लिए पर शोभा यात्रा प्रस्थान करेगी। विश्वविद्यालय के गौर प्रांगण में सुबह 11 बजे से आयोजित मुख्य समारोह आयोजित होगा जिसमें मुख्य अतिथि कैबिनेट मंत्री भूपेंद्र सिंह होंगे। अध्यक्षता कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी करेंगे। सायं 6 बजे 1971 के भारत पाक युद्ध में विजय के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भारतीय सेना के 'विक्टरी फ्लेम' का विश्वविद्यालय में स्वागत किया जायेगा। सायं 6:30 पर विश्वविद्यालयीन विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति होगी।

डॉ.गौर के सपनों के अनुरूप अपनी सामाजिक भागीदारी सुनिश्चित करेगा विश्वविद्यालय- कुलपति

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा डॉ. गौर के जीवन संघर्ष और उनके अवदानों की चर्चा सुनते हुए मुझे उनका समकालीन परिदृश्य दिखाई दे रहा है। डॉ. गौर बेहद अभाव की स्थिति से निकलकर उच्च शिखर पर पहुँचने वाले महान व्यक्तित्व थे. आज लोग अपने परिवार और बच्चों के लिए पूंजी इकट्ठा करते हैं। लेकिन डॉ. गौर ने परिवार के साथ-साथ समाज के लिए एक बड़ा हिस्सा भी रखा और एक अद्भुत शिक्षा का केंद्र हमें विरासत में मिला है। हमारी यह जिम्मेदारी है कि हम उनके अवदानों को याद करते हुए उनके संकल्पों को पूरा करने में अपनी ऊर्जा लगाएं। समाज और समुदाय की बेहतरी के लिए भी विश्वविद्यालय अपनी भागीदारी सुनिश्चित करेगा। डॉ. गौर ने विश्वविद्यालय के रूप में जो बीजारोपण किया है हम उनके संकल्पों और सपनों के अनुरूप इसे हरा-भरा बनाएंगे।

सर्वश्रेष्ठ एनसीसी कैडेट को सम्मानित करने के लिए डॉ. ललित मोहन ने राशि दी

कार्यक्रम में डॉ. ललित मोहन ने एक लाख एक सौ पच्चीस रुपये का चेक कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी को सौंपा। इस राशि से आगामी वर्षों में विश्वविद्यालय के सर्वश्रेष्ठ एनसीसी कैडेट को गौर जयन्ती के अवसर पर सम्मानित किया जाएगा। कार्यक्रम का मॉडरेशन और आभार ज्ञापन कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने किया। इस कार्यक्रम में विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष, शिक्षक, कर्मचारी और विद्यार्थी और सागर शहर के अनेक सम्माननीय नागरिकगण उपस्थित थे।

बेटी बचाओ- बेटी पढ़ाओ के तहत महिला समाज ने किया आयोजन

विश्वविद्यालय की महिला समाज ने ग्राम पथरिया स्थित माध्यमिक विद्यालय में बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ के तहत स्कूली बच्चों के लिए कार्यक्रम का आयोजन किया। महिला समाज की अध्यक्ष डॉ. रश्मि शुक्ला ने कहा कि आज बेटियों का अनुपात हर क्षेत्र में बढ़ रहा है।

इसे और अधिक सशक्त बनाए जाने की आवश्यकता है। शिक्षा के माध्यम से हम बेटियों को एक सुनहरा भविष्य दे सकते हैं। इसके लिए हम सबको मिलकर प्रयास करना चाहिए। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा बेटी तभी बचेगी जब बेटी पढ़ेगी। शिक्षा एक ऐसा हथियार है जिसको प्राप्त कर लेने के बाद बेटियाँ स्वयं आत्मनिर्भर हो जाती हैं और परिवार चलाने में सक्षम हो जाती हैं। आज हर क्षेत्र में बेटियाँ आगे हैं। कोई भी क्षेत्र उनसे अछूता नहीं है। कार्यक्रम का संचालन महिला समाज की सचिव रेणु शुक्ला ने किया। आभार प्रदर्शन ओपिका सिंह ने किया।

डा. हरीसिंह गौर जयंती पर विशेष

सागर, देशबन्धु। डा. हरीसिंह गौर भारत में नारियों की स्थिति को लेकर अत्यन्त चिन्तित थे। वे न केवल नारी को पुरुषों की बराबरी में खड़ा देखना चाहते थे, वरन् उसकी अस्मिता की रक्षा, स्थिति में सुधार एवं आजादी के लिये दृढ़ प्रतिज्ञ थे। नारी की सोचपूर्ण स्थिति को लेकर डा. हरीसिंह गौर अत्यन्त आहत थे। कानून के ज्ञाता होने के पश्चात् उन्होंने ठान लिया कि नारी के सम्मान के लिये, उसकी अस्मिता की रक्षा के लिये, उसकी स्थिति में सुधार के लिये वे जहाँ तक हो सकेगा प्रयास करेंगे। डा. गौर स्त्री एवं पुरुष को एक दूसरे का पूरक मानते थे। स्त्री के बिना पुरुष नहीं रह सकता और पुरुष के बिना स्त्री का अस्तित्व निरर्थक है। दोनों का योग एक-दूसरे की सार्थकता है। स्त्री को पुरुष की अर्धांगिनी कहा जाता है। जिस प्रकार पुरुष व्यक्ति है उसी प्रकार स्त्री भी एक व्यक्ति है, बल्कि पुरुष यह भूल जाता है कि स्त्री पुरुष से अच्छा व्यक्ति है। उसमें पुरुष से अधिक सम्मान की भावना है, वह पुरुष से अधिक अच्छी सौन्दर्य कला की पारखी है और सबसे श्रेष्ठ बात तो यह है कि वह पुरुष की जननी है।

डा. हरीसिंह गौर एक महान् शिक्षा शास्त्री थे। उनका स्पष्ट मानना था कि पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त करने के लिये स्त्री को शिक्षित होना अति आवश्यक है। डा. गौर ने लिखा भी है कि अज्ञानता दासत्व की सहेली होती है. यदि आप लोगों को दबाकर रखना चाहते हैं, तो आपको चाहिए कि आप उन्हें अज्ञानी बनाये रखें, जिससे उनकी जागरूकता व आत्म विश्वास सुप्त बना रहे। इस तथ्य को महिलाओं को भी समझना आवश्यक है। इसी अज्ञान के अंधेरे को दूर करने के लिये डा. हरीसिंह गौर ने ज्ञान के प्रकाश को फैलाने के लिए सागर विश्वविद्यालय की स्थापना की। उस समय महिलाओं को वकालत का अधिकार नहीं था। डा. हरीसिंह गौर ने विधान परिषद में एक्ट 29 सन् 1923 पारित कराकर पास करवा कर महिलाओं को वकालत करने का अधिकार दिलाया। इस एक्ट द्वारा स्त्रियों का भी वकील के रूप में रजिस्ट्रेशन होने लगा। यदि कोई दूसरी जाति में विवाह करता था तो उस विवाह को मान्यता नहीं मिलती थी। उस समय उच्च अध्ययन हेतु लोग विदेश पढ़ने जाते थे। समुद्री यात्रा करने वाले को जाति बहिष्कृत कर दिया जाता था। इस कारण डा. हरीसिंह गौर ने ठान लिया कि वे कानून द्वारा अन्तर्जातीय विवाह (इंटरकास्ट मैरिज) को कानूनी मान्यता दिला कर रहेंगे। जब डा. हरीसिंह गौर ने केन्द्रीय धारा सभा में अन्तर्जातीय विवाह विधेयक पेश किया तो अनुदार सदस्यों ने इसका बार-बार विरोध किया। डा. गौर ने हिम्मत नहीं हारी, वे इसे पास करने के लिए प्रयास करते रहे। अन्ततः यह विधेयक पास हो ही गया। यह विशेष विवाह (संशोधित) विधेयक, सिविल मैरिज एक्ट 30, 1923 के रूप में पास हो गया। सिविल मैरिज एक्ट 30, सन् 1923 डा. हरीसिंह गौर की एक महान् उपलब्धि था। आज अन्तर्जातीय विवाह करने वालों को डा. हरीसिंह गौर का शुक्रगुजार होना चाहिए क्योंकि उन्हीं के प्रयासों से अन्तर्जातीय विवाह को कानूनी मान्यता प्राप्त हुई थी, विवाह से उत्पन्न बच्चे को पिता की सम्पत्ति का कानून उत्तराधिकारी माना गया। भारतीय उत्तराधिकार कानून द्वारा भी इसका अनुमोदन किया गया। समाज सुधारक डा. हरीसिंह गौर का ध्यान देवदासी प्रथा की ओर भी गया। नारी मुक्ति के लिये प्रयत्नशील डा. गौर भला देवदासियों की पतित स्थिति को कैसे बर्दाश्त कर सकते थे। डा. हरीसिंह गौर की इस दलील ने अपना काम किया। डा. गौर का प्रस्ताव सरकार ने स्वीकृत कर लिया। सारा सदन तालियों की गड़-गड़ाहट के साथ-साथ हरी-हरी-हरी की हर्ष ध्वनि से गूंज उठा। 1924 ई. में भारतीय दण्ड संहिताओं की धाराओं 372 एवं 373 के तहत् यह व्यवस्था दी गई कि देवदासियों का मंदिर को अर्पण किया जाना तथा ग्रहण किया जाना दोनों ही अपराध होंगे। ऐसा करने वालों को दण्डित किया जायेगा। इस प्रकार डा. हरीसिंह गौर के प्रयासों ने देवदासी प्रथा कानून द्वारा बन्द करा दी गई। डा. हरीसिंह गौर ने महिलाओं की स्थिति में सुधार एवं समाज सुधार के क्षेत्र में जो प्रयास किये उन्हें इतिहास में कभी भुलाया नहीं दिया गया। सदैव याद रखेगा।

प्रो. बी.के.श्रीवास्तव की पुस्तक 'डा. हरीसिंह गौर: एक प्रेरक व्यक्तित्व' से साभार

गौर जयंती की पूर्व संध्या पर स्कूल में लगी प्रदर्शनी

सागर. एकीकृत शासकीय माध्यमिक गांधी कन्या शाला कटरा में गौर जयंती की पूर्व संध्या पर गौर साहब के जीवन पर आधारित छायाचित्रों की प्रदर्शनी छटवीं कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा लगाई गई. कक्षा शिक्षिका अलका जैन ने डॉ गौर के जीवनी के बारे में बताया और कहा कि यदि गौर साहब सागर में विश्वविद्यालय की स्थापना नहीं करते तो यहाँ पर शिक्षा का स्तर तो बिल्कुल शून्य ही रहता.

बेटी बचाओ– बेटी पढ़ाओ के तहत विवि महिला समाज ने किया आयोजन

(दैनिक सागर सरोज)

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की महिला समाज ने ग्राम पथरिया स्थित माध्यमिक विद्यालय में बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ के तहत स्कूली बच्चों के लिए कार्यक्रम का आयोजन किया. महिला समाज की अध्यक्ष डॉ. रत्ना शुक्ला ने इस अभियान के तहत आयोजित कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए कहा कि आज बेटियों का अनुपात हर क्षेत्र में बढ़ रहा है. इसे और अधिक सशक्त बनाए जाने की आवश्यकता है. शिक्षा के माध्यम से हम बेटियों को एक सुनहरा भविष्य दे सकते हैं. इसके लिए हम सबको मिलकर प्रयास करना चाहिए. कार्यक्रम की मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि बेटी तभी बचेगी जब बेटी पढ़ेगी. शिक्षा एक ऐसा हथियार है जिसको प्राप्त कर लेने के बाद बेटियाँ स्वयं आत्मनिर्भर हो जाती है और परिवार चलाने में सक्षम हो जाती है. आज हर क्षेत्र में बेटियाँ आगे हैं. कोई भी क्षेत्र उनसे अछूता नहीं है. बस बेटियों को सपने देखने की जरूरत है. एक बार पढ़कर बढ़ने का संकल्प ले लिया फिर कोई भी रास्ता उनके लिए कठिन नहीं है. कार्यक्रम में विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजित बच्चों को पुरस्कृत किया गया. इस अवसर पर प्राचार्य श्रद्धा दुबे ने उनके विद्यालय में शिक्षा की स्थिति और उसमें बालिकाओं के श्रेष्ठ प्रदर्शन की जानकारी दी. सभी बच्चों को पाठ्य सामग्री और फल वितरित किया गया. कार्यक्रम का संचालन महिला समाज की सचिव रेणु शुक्ला ने किया. आभार प्रदर्शन ओमिका सिंह ने किया. इस अवसर पर डॉ. ऋतु यादव, ब्रिजेश दुबे, रीना बासु, त्रिवेणिका रे सहित महिला समाज की सभी पदाधिकारी, सदस्य और विद्यालय के शिक्षक और बच्चे उपस्थित थे.

152वीं डॉ. गौर जयंती

विवि में प्रवेश पर 50% आरक्षण बुंदेलखंड के विद्यार्थियों को मिले, बायलॉज में इसके लिए प्रावधान जरूरी: मंत्री सिंह

भास्कर संवाददाता | सागर

हमारी मांग है कि सागर और बुंदेलखंड के छात्रों को प्रवेश में 50% आरक्षण मिले। बनारस विश्वविद्यालय और अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में 50% आरक्षण मिलता है। ऐसा ही लाभ हमें भी मिले। विवि का बायलॉज अभी बनना है। उसमें हम इसकी व्यवस्था कर सकते हैं कि 50% आरक्षण बुंदेलखंड के छात्रों को मिलना ही चाहिए। यह बात बतौर मुख्य अतिथि नगरीय विकास एवं आवास मंत्री भूपेंद्र सिंह ने 152वीं गौर जयंती पर विवि में हुए समारोह में कही। उन्होंने कहा महादानी कर्ण के बाद के बाद यदि किसी का नाम लिया जा सकता है तो वे डॉ. गौर थे। डॉ. गौर के समय में यहां अनेक विषय शुरू हुए जो आज भी चल रहे हैं। दानवीर कर्ण के बाद डॉ. गौर ही हैं। इतिहास में कर्ण के बाद अन्य कोई उदाहरण नहीं मिलता। उन्हें भारत रत्न मिलना चाहिए। केंद्रीय विवि बनाने कई आंदोलन चले। नगर के कई लोगों ने इसके लिए प्रयास किया। केंद्रीय विवि के आंदोलन के लिए 7 महीने तक मुझे प्रदेश की अनेक जेलों में रहना पड़ा। सभी के बड़े लंबे संघर्ष के बाद केंद्रीय विवि का दर्जा मिल सका। परंतु केंद्रीय विवि बनने के बाद जो लाभ हमें मिलना था वह हमें नहीं मिल सका। जैसे कुलपति आना था, वैसे नहीं आ सके। प्रो. गुप्ता को सुनने के बाद लगा वह हमारे सपनों को पूरा करेंगी। हम भी इसमें सहयोग करेंगे। सेंट्रल यूनिवर्सिटी बनने की हमें प्रसन्नता है। इसके पूर्व सुबह परंपरानुसार विवि की कुलपति ने तीनबत्ती स्थित डॉ. गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया और संबोधन दिया। इसके बाद शोभायात्रा निकाली गई। गौर स्मारक पर भी कुलपति ने पुष्पांजलि दी। शोभायात्रा के विवि पहुंचने पर उन्होंने गौर मूर्ति पर माल्यार्पण किया और गौर समाधि पर पुष्प अर्पित किया। विश्वविद्यालय के 3 एमपी सिग्नल एनसीसी कैडेट्स द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने स्वागत भाषण दिया। गौर उत्सव के मुख्य समन्वयक प्रो. आरके त्रिवेदी ने छह दिवसीय गौर उत्सव की विस्तृत जानकारी दी। इस मौके पर अलग-अलग श्रेणी में विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। पत्रकारिता विभाग के प्रायोगिक समाचार-पत्र 'समय' और 'मध्य भारती' शोध पत्रिका के 80वें अंक के विमोचन के साथ ही कई शिक्षकों की पुस्तकों का भी विमोचन हुआ। इस मौके पर उत्कृष्ट कार्यों और सेवाओं के लिए विश्वविद्यालय के शिक्षकों, अधिकारियों और कर्मचारियों को सम्मानित किया गया।

विश्वविद्यालय में हुए कार्यक्रम के दौरान कुलपति ने मंत्री को स्मृति चिह्न दिया।

लोकसभा में उठाई भारत रत्न की मांग, सरकार कर रही विचार

विशिष्ट अतिथि सांसद राजबहादुर सिंह ने कहा गौर साहब की 150 वीं जयंती पर मैंने लोकसभा में डॉ. गौर को भारत रत्न देने की मांग उठाई थी। सरकार भी मेरी इस मांग पर विचार कर रही है लेकिन इस मुहिम में जनसहयोग भी उतना ही आवश्यक है। मैं उम्मीद करता हूं डॉ. गौर को भारत रत्न मिले, इसके लिए जनभागीदारी और सबका सहयोग मिलेगा। उन्होंने भी बुंदेलखंड के छात्रों के लिए 50 फीसदी आरक्षण मिलने की मांग उठाई। अध्यक्षता कर रहे कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी ने कहा बौद्धिक समुदाय और जनभागीदारी को देखकर ऐसा लग रहा है कि यह उत्सव नहीं बल्कि अनुष्ठान है। पूर्व विद्यार्थियों की विश्वविद्यालय के प्रति सोच की मैं प्रशंसा करता हूं। डॉ. गौर अर्वाचीन समय के भामाशाह हैं।

हमारा विवि केवल बुंदेलखंड ही नहीं पूरे देश के लिए ज्ञान का अभिनव तीर्थ है : कुलपति

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा डॉ. गौर द्वारा स्थापित हमारा विवि केवल बुंदेलखंड के लिए ही नहीं बल्कि पूरे देश के लिए ज्ञान का अभिनव तीर्थ है। विवि कोरोना की महामारी के दौरान भी लगातार क्रियाशील रहा। दुनिया भर के शीर्ष वैज्ञानिकों में 20 वैज्ञानिक हमारे विश्वविद्यालय के छात्र रहे हैं। इस प्रतिष्ठित सूची में सम्मिलित हमारे विवि के भी शिक्षक हैं।

गौर भवन सहित विवि की एक इंच जमीन किसी सरकार को देने का सवाल नहीं

मंत्री सिंह ने कहा छात्रसंघ के पूर्व अध्यक्ष डॉ. राकेश शर्मा ने गौर भवन में स्मार्ट सिटी द्वारा किये जा रहे कार्यों को लेकर मुझे एक पत्र दिया है। जिसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद देता हूं। और साफ कहता हूं कि एक इंच जगह भी विवि से किसी भी सरकार को देने का सवाल ही नहीं उठता। मंत्री ने कहा सागर को एजुकेशन हब बनाने एयरपोर्ट बने। इसके लिए हम केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया से प्रयास करेंगे तो हम एयरपोर्ट ला सकते हैं।

अखिल भारतीय कवि सम्मेलन • विवि में आयोजन, शायर अशोक मिजाज ने भी कविता पढ़ी

कवि संतोष सागर ने पढ़ी कविता-चांद, सूरज, सितारों का हम क्या करें, तू नहीं तो बहारों का हम क्या करें

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर के 152वें जन्मदिवस पर स्वर्ण जयंती सभागार में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन हुआ। जिसमें अशोक मिजाज बद्र, अशोक सुंदरानी, विभा सिंह, संतोष शर्मा और राम भदावर ने काव्य पाठ किया।कवियित्री सोनाली सेन ने कविता के माध्यम से वंदना की।अध्यक्षता कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतीलाल जानी ने की। मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता थीं। विशिष्ट अतिथि प्रो.डीके गुप्ता थे। कवि संतोष सागर ने कहा चांद सूरज सितारों का हम क्या करें, तू नहीं तो बहारों का हम क्या करें। कवि राम भदावर ने उपवन समूचा बाद में, पहले कुली स्वीकार करो कविता अपने अंदाज में सुनाई। हास्य कवि अशोक सुंदरानी ने जूते पर केंद्रित अपनी रचना सुनाई। कवि अशोक मिजाज ने कहा मुझे जिंदगी की खबर नहीं, मुझे छोड़कर किधर गईं। विभा सिंह ने संगीतमयी प्रस्तुति दी। स्वागत भाषण कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने दिया। आभार डॉ. अवधेश तोमर ने माना। इस दौरान शिक्षक, विद्यार्थी, कर्मचारी सहित अन्य लोग मौजूद थे।

सागर| सम्मेलन के दौरान अपनी कविता पढ़ते कवि।

चतुर्दिक उमंग, उत्साह और उल्लास से मनाई गई गौर जयंती

सागर, देशबन्धु। डॉ.सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 21 नवंबर से 26 नवंबर तक आयोजित 'गौर उत्सव' में 26 नवंबर गौर जयन्ती चतुर्दिक उमंग, उत्साह और उल्लास से मनाई गई। परम्परानुसार विश्वविद्यालय की कुलपति ने तीनबत्ती स्थल पर डॉ.गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया और अपने संबोधन में कहा कि सागर शहर के नागरिकों, बुद्धिजीवियों, विद्यार्थियों और जन-जन का का डॉ. गौर के प्रति प्रेम, अगाध श्रद्धा और भाव देखकर मैं भाव विह्वल हूँ। डॉ गौर ने विश्वविद्यालय के रूप में एक शिक्षा और ज्ञान का केंद्र स्थापित किया है जिसके माध्यम से इस समूचे अंचल ने पूरे विश्व में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। आप सभी विश्वविद्यालय के विकास में अपना सहयोग करें ताकि सर गौर के सपनों को साकार किया जा सके। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उद्बोधन पश्चात तीन बत्ती से शोभायात्रा निकाली गई , शोभायात्रा के विश्वविद्यालय पहुँचने पर उन्होंने गौर मूर्ति पर माल्यार्पण किया और गौर समाधि पर पुष्प अर्पित किया। मुख्य अतिथि भूपेन्द्र सिंह, कैबिनेट मंत्री, कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी ने भी डॉ. गौर की समाधि पर पुष्प अर्पित किया।

एनसीसी कैडेट्स ने दिया गार्ड ऑफ़ऑनर

विश्वविद्यालय के 3 एम पी सिग्नल एनसीसी कैडेट्स तीनबत्ती और विश्वविद्यालय परिसर में लेण् कर्नल डॉ धर्मेन्द्र सर्राफ,डॉ गौतम प्रसाद और ऊषा राणा के नेतृत्व में कुलपति महोदया को गार्ड ऑफ़ऑनर दिया। गौर प्रांगण में मुख्य समारोह आयोजित किया गया। अतिथियों ने डॉ.गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया और दीप प्रज्जवलित किया। कुलसचिव संतोष सोहगौरा के स्वागत भाषण के पश्चात गौर उत्सव के मुख्य समन्वयक प्रो.आर के त्रिवेदी ने छह दिवसीय गौर उत्सव में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी दी।

डॉ.गौर का समूचा जीवन मनुष्य के अपराजेय जिजीविषा की जय यात्रा है: कुलपति

इस अवसर पर कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता ने ज्ञान.दान के अन्यतम पुरोधा, शैक्षिक उन्नयन के अभिनव सुत्रधार और भारतीय मेधा के वैश्विक पहचान विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉ.हरीसिंह गौर की 152 वीं जयंती पर सभी को बधाई दी।

डॉ गौर की जयंती न केवल हमारे विश्वविद्यालय के लिए बल्कि समूचे बुन्देलखण्ड के लिए अज्ञानता के अंधेरे के विरुद्ध ज्ञान के उजाले का नूतन विवेक है। आज का दिन उज्ज्वल चेतना का पावन अभिषेक है। डॉ. गौर अपने प्रगतिशील सरोकारों के साथ व्यक्तिगत मुक्ति की जगह सामूहिक मुक्ति के हिमायती थे। अपनी मातृभूमि के लिए ज्ञान के उजाले का जो सपना देखा था, उसे उन्होंने अपनी आस्था और त्याग से पूरा किया, आज उनके जन्मदिवस पर हम सबका कर्तव्य बनता है कि हम अपने संस्थापक के सपनों को कभी बेरंग नहीं होने देंगे। मुख्य अतिथि कैबिनेट मंत्री भूपेन्द्र सिंह ने कहा महादानी कर्ण के बाद के बाद यदि किसी का नाम लिया जा सकता है तो वे डॉ गौर थे,यह ऐसा शुभ दिन है जो समूचा बुंदेलखंड एक उत्सव के रूप में मनाता है। डॉ.गौर के समय में यहाँ अनेकानेक विषय शुरू हुए जो आज भी चल रहे हैं। उनके द्वारा स्थापित विश्वविद्यालय को आज केन्द्रीय दर्जा मिल चुका है। वक्त की मांग है कि कुछ नए अकादमिक पाठ्यक्रम शुरू किये जाएँ और बुंदेलखंड के अंचल में भी विश्वस्तरीय पढ़ाई होने लगे इसके प्रयास किये जाने चाहिए। हम डॉ गौर का ऋण कभी नहीं चुका सकते हमारी इस शहर की पहचान उन्हीं के कारण ही है। कुछ ऐसे प्रयास किये जाएँ कि बुंदेलखंड अंचल के विद्यार्थियों को इस विश्वविद्यालय में प्रवेश में प्राथमिकता मिले। अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलाधिपति प्रो.बलवंतराय शांतिलाल जानी ने कहा डॉ.गौर की जयंती पर बौद्धिक समुदाय और जनभागीदारी को देखकर ऐसा लग रहा है कि यह उत्सव नहीं बल्कि अनुष्ठान है। लोगों की डॉ. गौर के प्रति श्रद्धा और सम्मान देखकर मेरा मन आह्लादित है। इस अवसर पर अलग-अलग श्रेणी में विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया पत्रकारिता विभाग के प्रायोगिक समाचार पत्र समय और मध्य भारती शोध पत्रिका के 80 वें अंक के विमोचन के साथ ही कई शिक्षकों की पुस्तकों का भी विमोचन हुआ। उत्कृष्ट कार्यों और सेवाओं के लिए विश्वविद्यालय के शिक्षकों, अधिकारियों और कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ.ललित मोहन ने किया। आभार ज्ञापन मुख्य समन्वयक प्रो.आर के त्रिवेदी ने किया।

152वीं गौर जयंती • विवि सहित शहर भर में हुए विभिन्न आयोजन, डॉ. गौर को भारत रत्न दिलाने की मांग को लेकर हस्ताक्षर अभियान शुरू, कैंडल मार्च भी निकाला

गौर साहब की 5वीं मूर्ति कबूलापुल चौराहे पर लगेगी, जनवरी में होगी स्थापना, गौर युवा मंच सदर का संकल्प होगा पूरा

भास्कर संवाददाता | सागर

सागर संस्थापक डॉ. हरीसिंह गौर की 5वीं मूर्ति कबूलापुल गौर चौराहा पर लगेगी। जनवरी 2022 में इसकी स्थापना होगी। प्रतिमा आदमकद होगी। मूर्ति भी लगभग बनकर तैयार हो गई है। यह घोषणा गौर युवा मंच सदर के अध्यक्ष अधिवक्ता रवींद्र अवस्थी ने डॉ. हरीसिंह गौर की 152वीं जयंती पर कबूलापुल चौराहा पर हुए समारोह में कही। मंच द्वारा डॉ. गौर की पालकी यात्रा निकाली गई। मंच के अध्यक्ष अवस्थी ने कहा मंच का वर्षों पुराना संकल्प अब पूरा होने जा रहा है। पालकी यात्रा डॉ. गौर के जयघोष के साथ कबूलापुल से शुरू होकर चौदा मुहाल, बारह मुहाल, शास्त्री चौक, शिवाजी चौक, तीन मुहाल होते हुए वापस कबूलापुल गौर चौराहे पर संपन्न हुई। पालकी यात्रा का सदर क्षेत्र के लोगों द्वारा पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया। संचालन मंच के प्रवक्ता अनिल दुबे ने किया। आभार डॉ. विशाल मिश्रा ने माना। कार्यक्रम में निगं सदस्य अरविंद तोमर, प्राचार्य स्नेहलता जैन, प्राचार्य सुशील केशरवानी, सौरभ केशरवानी, अतुल मिश्रा, वीके विश्वकर्मा, राजेन्द्र सोनी, पंकज मुखारया, दिनेश सोनी, उत्तमचंद लड्डे, सोनू सिंह बग्गा, बिरजू बिल्थरे, रामचरण राजपूत, शिवप्रसाद तिवारी, श्यामसुंदर मिश्रा, बलवंत राठौर, नीरज पंडित, मुकेश नायक, अजय मिश्रा, मुकेश हरयानी, दीपक पौराणिक, राकेश यादव, राकेश तिवारी आदि मौजूद थे।

सागर। डॉ. गौर की जयंती पर कबूलापुल पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान संबोधित करते गौर युवा मंच के पदाधिकारी।

गौर साहब के त्याग को सागरवासी कभी भूल नहीं सकते : डॉ. तिवारी

मंच के संरक्षक स्वामी विवेकानंद विवि के संस्थापक कुलपति डॉ. अनिल तिवारी ने कहा गौर युवा मंच द्वारा जो संकल्प लिया गया, उसे पूर्ण किया जा रहा है। हम सभी नगरवासियों को भी यह सोचने वाली बात है कि हम आज प्रदेश, देश एवं विदेशों में भी जाने जाते हैं यह सब डॉ. गौर की ही बदौलत है। उनके त्याग को हम सभी सागरवासी कभी भूल नहीं सकते।

एनएसयूआई ने गौर जयंती को राष्ट्रीय दिवस घोषित करने की मांग की, सुंदरकांड किया

सागर | एनएसयूआई की विश्वविद्यालय इकाई ने शुक्रवार को विवि स्थित गौर मूर्ति पर माल्यार्पण कर सुंदरकांड का पाठ किया। युवक कांग्रेस के प्रदेश सचिव राहुल खरे ने कहा कि डॉ. गौर साहब सागर ही नहीं संपूर्ण देश की आस्था का केंद्र है। हम सरकार से मांग करते है कि गौर जयंती को राष्ट्रीय दिवस के रूप में घोषित करें। साथ ही इस दिन राष्ट्रीय अवकाश भी दिया जाए। यह गौर साहब के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी। विश्वविद्यालय एनएसयूआई के अध्यक्ष अंकित ठाकुर ने कहा कि डॉ. गौर को भारत रत्न मिलने तक एनएसयूआई की लड़ाई जारी रहेगी। इस दौरान जय ठाकुर, उत्कर्ष चौबे, ओम दीक्षित, अजय कुर्मी, सत्यम व्यास, अनुराग मेहरा, आलोक मिश्रा आदि मौजूद थे।

प्रवाह समिति ने मनाई डॉ. गौर की जयंती, आज होगा कवि सम्मेलन

सागर | सांस्कृतिक, साहित्यिक, कला गतिविधि मंच प्रवाह द्वारा शुक्रवार को मकरोनिया चौराहे पर गौर जयंती मनाई गई। इस दौरान चौराहे पर स्थित गौर स्मृति द्वार पर डॉ. गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर मिठाई वितरित की गई। गौरतलब है कि संस्था द्वारा प्रतिवर्ष मकरोनिया में गौर जयंती पर कवि सम्मेलन का आयोजन किया जाता है। जिसके तहत शनिवार को कवि सम्मेलन होगा। संस्था ने सभी साहित्य व काव्य प्रेमी जनों से कार्यक्रम में उपस्थित होकर सफल बनाने की अपील की है। कार्यक्रम में संस्था अध्यक्ष संतोष रोहित, उपाध्यक्ष डॉ. मनीष मिश्र, सचिव राजेश दुबे, कोषाध्यक्ष देवेश नोखरा, तीरथ सिंह, राजेश गौतम, मनोज जैन, नवल रॉबर्ट्स, मनोज राय, काशीदास दुबे आदि मौजूद थे।

डॉ. गौर को भारत रत्न दिलाने की मांग को लेकर फोरम ने शुरू किया अभियान

सागर | शुक्रवार को गौर यूथ फोरम द्वारा डॉ. गौर को भारत रत्न दिलाने की मांग को लेकर हस्ताक्षर अभियान चलाया गया। नगरीय प्रशासन मंत्री भूपेन्द्र सिंह, सांसद राजबहादुर सिंह समेत विवि और शहर के लोगों ने इस अभियान में हिस्सा लिया। फोरम के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. विवेक तिवारी ने बताया यह अभियान आगे भी जारी रहेगा।

केंद्रीय विद्यालय के छात्रों ने मूक अभिनय से मंच पर उतारे महात्मा गांधी के आदर्श

सागर | डॉ. सर हरीसिंह गौर जयंती की शाम सागर विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयंती सभागार में सांस्कृतिक कार्यक्रमों से सजी। तबला वादन से इस कार्यक्रम का आगाज हुआ। इस दौरान संगीत विभाग के विद्यार्थियों तबला वादन की प्रस्तुति दी। इसके बाद कनैया याद है कुछ भी कव्वाली की और स्किट अंतिम इच्छा का मंचन हुआ। सांस्कृतिक कार्यक्रम में केंद्रीय विद्यालय क्रमांक-4 के विद्यार्थियों ने भी सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। जिसमें उन्होंने माइम के जरिए महात्मा गांधी के आदर्श और सिद्धांतों को कलाने मंच पर उतारी। इसके बाद 26/11 की घटना पर भी एक माइम संरचना की प्रस्तुति हुई। संगीत विभाग के विद्यार्थियों ने एकल गायन और राजस्थानी लोक नृत्य कालबेलिया से समा बांधा। कार्यक्रम और गौर उत्सव का समापन बधाई लोक नृत्य से हुआ। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में प्रो. एडी शर्मा और डॉ. राकेश सोनी का विशेष योगदान रहा। यहाँ कार्यक्रम की मुख्य अतिथि के रूप में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता और विशिष्ट अतिथि प्रो. डीके गुप्ता, कुलसचिव संतोष सोहगौरा आदि मौजूद थे।

सागर। विश्वविद्यालय में सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति देते कलाकार।

बड़ा बाजार छात्रसंघ ने निकाली बाइक रैली, लोगों ने जगह-जगह किया स्वागत

भास्कर संवाददाता | सागर

शुक्रवार को बड़ा बाजार छात्रसंघ के द्वारा नरेंद्र चौबे के नेतृत्व में बाइक रैली निकाली गई। जिसको सांसद राजबहादुर सिंह, पूर्व विधायक सुनील जैन, नेवी जैन और प्रो. आरके त्रिवेदी ने रामबाग मंदिर से हरीझंडी दिखाकर रवाना किया।

सांसद सिंह ने कहा कि डॉ. गौर ने कानून के जरिए देश में समाज सुधारक की भूमिका निभाई। हम उनके ऋणी रहेंगे। पूर्व विधायक सुनील जैन ने कहा डॉ. गौर और उनके द्वारा स्थापित विवि से देश और दुनिया में हमारी पहचान है। हमें इसका संरक्षण और संवर्धन करने की जरूरत है। नेवी जैन और प्रो. आरके त्रिवेदी ने भी अपने विचार रखे। बड़ा बाजार छात्रसंघ के संयोजक नरेंद्र चौबे ने डॉ. गौर के सपनों के अनुरूप विवि को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। आभार छात्रसंघ के अध्यक्ष अर्पित मिश्रा ने माना। रैली गाजे बाजे और बुंदेली नृत्यों के साथ बड़ा बाजार, तीनबत्ती होते हुए विवि परिसर पहुंची। यहां पर रैली का समापन हुआ। रैली में जगन्नाथ गुरैया, लक्ष्मण सिंह, अनूप उर्मिल, सिंटू कटारे, मिथलेश गुप्ता, सपन तामकर आदि मौजूद थे।

सागर | बड़ा बाजार छात्र संघ की बाइक रैली को रवाना करते अतिथि।

विद्यार्थियों ने निकाला कैंडल मार्च

सागर | गौर जयंती के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय छात्र प्रतिनिधि शुभांक चाचौंदिया, राहुल, पुष्पराज, अपित सोनी, आकाश सोनी, संदीप, गजेंद्र, अनिरुद्ध, सत्यार्थ, शैलेश, अंकुर आदि विवि के छात्रों ने मिलकर एक शाम गौर साहब के नाम कार्यक्रम किया। इसमें सांसद राजबहादुर सिंह, कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता, प्रो. आशीष वर्मा आदि की मौजूदगी में छात्रों ने कैंडल मार्च निकाला। गौर मूर्ति पर माल्यार्पण कर आतिशबाजी की।

आयोजन

डॉ. हरिसिंह गौर की जन्म जयंती पर गौर प्रांगण में आयोजित हुआ मुख्य कार्यक्रम

डॉ. गौर का समूचा जीवन मनुष्य के अपराजेय जिजीविषा की जय यात्रा है: कुलपति

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. गौर प्रांगण में आयोजित मुख्य कार्यक्रम सुबह 11 बजे शुरू हुआ। इस दौरान कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने मौजूद सभी लोगो को सर गौर के 152 वे जन्मदिवस की बधाई दी। उन्होंने कहा कि डॉ. गौर की जयंती न केवल हमारे विश्वविद्यालय के लिए बल्कि समूचे बुन्देलखण्ड के लिए अज्ञानता के अंधेरे के विरुद्ध ज्ञान के उजाले का नूतन विवेक है। आज का दिन उज्ज्वल चेतना का पावन अभिषेक है। उन्होंने कहा कि डॉ. गौर का समूचा जीवन मनुष्य के अपराजेय जिजीविषा की जय यात्रा है। उन्होंने जीवन भर सर्वोच्चता की संकल्पना को अपने ढंग से सिरजा, सहेजा और साकार किया। आसमान की बुलंदी पर रहते हुए भी डॉ. गौर ने सागर की जमीनी हकीकतो को कभी भुलाया नहीं। मुख्य अतिथि कैबिनेट मंत्री भूपेन्द्र सिंह ने कहा कि महादानी कर्ण के बाद के बाद यदि किसी का नाम लिया जा सकता है तो वे डॉ. गौर थे। उन्होंने कहा कि यह ऐसा शुभ दिन है जो समूचा बुंदेलखंड एक उत्सव के रूप में मनाता है। डॉ. गौर के समय में यहाँ अनेकानेक विषय शुरू हुए जो आज भी चल रहे हैं। उनके द्वारा स्थापित विश्वविद्यालय को आज केन्द्रीय दर्जा मिल चुका है। वक्त की मांग है कि कुछ नए अकादमिक पाठ्यक्रम शुरू किए जाएं और बुंदेलखंड के अंचल में भी विश्वस्तरीय पढ़ाई होने लगे। इसके प्रयास किए जाने चाहिए। सांसद राजबहादुर सिंह ने कहा कि मैंने लोकसभा में डॉ गौर को भारत रत्न देने की मांग उठाई थी। सरकार भी मेरी इस मांग पर विचार कर रही है, लेकिन इस मुहिम में जनसहयोग भी उतना ही आवश्यक है। मैं उम्मीद करता हूँ कि कि डॉ. गौर को भारत रत्न मिले। कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी ने कहा कि डॉ. गौर की जयन्ती पर बौद्धिक समुदाय और जनभागीदारी को देखकर ऐसा लग रहा है कि यह उत्सव नहीं बल्कि अनुष्ठान है। कार्यक्रम का संचालन डॉ. ललित मोहन ने किया। आभार मुख्य समन्वयक प्रो. आरके त्रिवेदी ने माना।

डॉ. गौर के प्रति प्रेम और भाव देखकर भाव विभोर हूं

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विवि के संस्थापक, महान शिक्षाविद् दानवीर डॉ.सर का 152 वीं जन्म जयंती शुक्रवार को हर्षोल्लास से मनाई गई। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने तीनबत्ती स्थल पर डॉ. गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। उन्होंने कहा कि सागर शहर के नागरिकों, बुद्धिजीवियों, विद्यार्थियों और जन-जन का डॉ. गौर के प्रति प्रेम, अगाध श्रद्धा और भाव देखकर मैं भाव विभोर हो गई हूं। डॉ. गौर ने विश्वविद्यालय के रूप में एक शिक्षा और ज्ञान का केंद्र स्थापित किया है जिसके माध्यम से इस समूचे अंचल ने पूरे विश्व में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। आप सभी विश्वविद्यालय के विकास में अपना सहयोग करें ताकि सर गौर के सपनों को साकार किया जा सके। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इसके बाद तीन बत्ती से शोभायात्रा निकाली गई। गौर स्मारक स्थल पर भी कुलपति ने पुष्पांजलि दी। शोभायात्रा के विश्वविद्यालय पहुँचने पर उन्होंने गौर मूर्ति पर माल्यार्पण किया और गौर समाधि पर पुष्प अर्पित किया। इस दौरान मुख्य अतिथि कैबिनेट मंत्री भूपेन्द्र सिंह, कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी ने भी डॉ. गौर की समाधि पर पुष्प अर्पित किया।

एनसीसी केडेट्स ने दिया गार्ड ऑफ ऑनर: विश्वविद्यालय के 3 एम पी सिग्नल एनसीसी केडेट्स तीनबत्ती स्थल और विश्वविद्यालय परिसर में ले. कर्नल डॉ धर्मेन्द्र सराफ, डॉ. गौतम प्रसाद और ऊषा राणा के नेतृत्व में कुलपति को गार्ड ऑफ़ ऑनर दिया। गौर प्रांगण में मुख्य समारोह आयोजित किया गया। अतिथियों ने डॉ. गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया और दीप प्रज्ज्वलित किया। कुलसचिव संतोष सोहगौरा के स्वागत भाषण के पश्चात गौर उत्सव के मुख्य समन्वयक प्रो.आरके त्रिवेदी ने छह दिवसीय गौर उत्सव में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी दी।

छात्रों न कैंडिल मार्च निकालकर किया याद

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर विवि के छात्रों ने देर शाम परिसर स्थित गौर मूर्ति सर गौर की जन्म जयंती मनाई। पहली बार सभी छात्रों ने मिलकर अलग तरीके से सर गौर को याद किया। एक शाम गौर साहब कार्यक्रम रखा गया, जिसमें विवि की कुलपति व सांसद राजबहादुर सिंह को आमंत्रित किया। कार्यक्रम में अतिथियों ने आकर सर गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। इस दौरान छात्रों ने कैंडिल मार्च भी निकाला। छात्र प्रतिनिधि शुभांक चावोदिया, राहुल, पुष्पराज, अमित सोनी, आकाश सोनी, संदीप, गर्वेद, अनिरुद्ध, सत्यार्थ, शैलेश, अंकुर समस्त छात्र शामिल थे। इस अवसर पर प्रो आशीष वर्मा मुख्य रूप से उपस्थित थे।

विवि में हुआ विक्ट्री फ्लेम का स्वागत, जवानों का हुआ सम्मान

26 नवंबर की शाम 1971 के भारत पाक युद्ध में विजय के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य मे भारतीय सेना के 'विक्टरी फ्लेम' का विश्वविद्यालय में स्वागत किया गया। इस अवसर पर सेना के जवानों का स्वागत किया गया।

गौर जयन्ती पर हुई सांस्कृतिक संध्या: शाम को विश्वविद्यालयपर्यन्त विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम में की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम की शुरुआत तालवाद्य से हुई जो संगीत विभाग के विद्यार्थियों ने प्रस्तुत किया। केन्द्रीय विद्यालय के बच्चों ने गांधी जी थीम पर मूक अभिनय(माइम) प्रस्तुत किया। विवि के परफॉर्मिंग आर्ट्स के छात्रों ने डॉ राकेश सोनी द्वारा निर्देशित प्रहसन 'अंतिम इच्छा' की प्रस्तुति दी। केन्द्रीय विद्यालय के बच्चों ने राजस्थानी लोकनृत्य कालबेलिया का प्रदर्शन किया। संगीत विभाग की छात्राओं ने एकल गायन प्रस्तुत किया। अंत में बुन्देली लोकनृत्य बधाई की प्रस्तुति हुई। पूरा गौर प्रांगण दर्शकों से भरा हुआ था। इस अवसर पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता विशिष्ट अतिथि प्रो. डी के गुप्ता, कुलसचिव संतोष सोहगौरा तथा शिक्षक कर्मचारी, विद्यार्थी और कर्मचारी मौजूद थे। उनके परिवार के लोग भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

26 नवम्बर राष्ट्रीय अवकाश घोषित हो

सागर. गौर जयंती के उपलक्ष में एनएसयूआई ने गौर मूर्ति पर माल्यार्पण करने के बाद सुंदरकांड पाठ कर डॉ. गौर का जन्म दिवस मनाया। भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन विश्वविद्यालय इकाई के अध्यक्ष अंकित ठाकुर के तत्वावधान में विश्वविद्यालय एनएसयूआई द्वारा दोपहर 12 बजे गौर मूर्ति के समीप एकत्रित होकर गौर साहब को माल्यार्पण किया। मूर्ति के समीप ही संगठन के कार्यकर्ताओं द्वारा सुंदरकांड पाठ किया। इस अवसर पर संगठन के पूर्व जिला अध्यक्ष युवक कांग्रेस के प्रदेश सचिव राहुल खरे ने कहा कि डॉ. गौर सागर ही नहीं संपूर्ण देश की आस्था का केंद्र है। हम सरकार से मांग करते हैं कि गौर जयंती को एक राष्ट्रीय दिवस के रूप में घोषित किया जाए।

बीएमसी में भी मनाई गई गौर जयंती: सागर. बुंदेलखंड मेडिकल कॉलेज में भी सर गौर को याद कर उन्हें पुष्पांजलि अर्पित की गई। सभागार में आयोजित कार्यक्रम में अधिष्ठाता डॉ आर एस वर्मा, अधीक्षक डॉ एसके पिप्पल ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन डॉ. उमेश पटेल ने किया। बीएमसी के चिकित्सक, नर्सिंग स्टाफ हाइट कंपनी से श्रवण दुबे, सोनू घुटीले व अन्य कर्मचारी उपस्थित रहे।

इंफिनिटी कॉलेज में मनाई गौर जयंती

सागर. इंफिनिटी मैनेजमेंट एवं इंजीनियरिंग कॉलेज द्वारा शुक्रवार को डॉ.हरिसिंह गौर की 152 वीं जन्म जयंती मनाई गई। इस अवसर पर संस्था के वाइस चेयरमैन दिलीप मलैया ने डॉ.गौर के जीवन पर प्रकाश डाला एवं उनकी उपलब्धियों चर्चा की। इसके बाद सभी शिक्षक एवं महाविद्यालय के सभी छात्रों ने डॉ. गौर की प्रतिमा माल्यार्पण किया।

प्रेरणादायी है गौर का कृतित्व व व्यक्तित्व: अशोक कुमार

सागर. स्थानीय तिली क्षेत्र स्थित शासकीय ज्ञानोदय आवासीय विद्यालय ज्ञानोदय विद्यालय की एनएसएस यूनिट के संयुक्त तत्वाधान में डॉ. हरी सिंह गौर जयंती एवं संविधान दिवस को हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। मुख्य अतिथि संस्था प्राचार्य अशोक कुमार अस्ताटी ने कहा कि डॉ. गौर साहब बुंदेलखंड ही नहीं बल्कि देश के लिए देवता है। उच्च माध्यमिक शिक्षक शिवचरण अहिरवार ने कहा कि 26 नवंबर को संविधान दिवस के रूप में मनाया जाता है। राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी महेन्द्र कुमार लोधी ने संविधान के रोचक तथ्यों से छात्रों को अवगत कराया। देवेंद्र पटेल ने कहा संविधान का उद्देश्य देश में न्याय व्यवस्था व समतामूलक समाज की स्थापना करना है। इस मौके पर एनएसएस छात्र अभय व संजू अहिरवार एवं गाइड्स मौसम अहिरवार व राधा अहिरवार ने भी डॉ. गौर साब के कृतित्व व व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। संचालन गाइड प्रभारी शालिनी जैन ने किया।

स्काउड गाइड शिविर में मनाई जयंती

सागर. बेसिक स्काउट मास्टर एवं गाइड कैप्टन शिविर का आयोजन 22 से 28 नवंबर तक ब्राइट कॅरियर एकेडमी मकरोनिया में आयोजित किया जा रहा है। शिविर के पांचवे दिन हाइक कार्यक्रम में प्रतिभागियों द्वारा स्काउटिंग प्रथा अनुसार बिना बर्तनों के भोजन तैयार किया गया। हाइक कार्यक्रम को 10 वीं बटालियन हनुमान मंदिर में आयोजित किया गया। उसके बाद आज 26 नवंबर को संविधान दिवस एवं डॉ.हरीसिंह गौर जयंती के रूप मनाया गया। जिला कोषाध्यक्ष आलोक गुप्ता ने डॉ. हरीसिंह गौर जयंती पर हरीसिंह गौर के जीवन पर प्रकाश डाला और संविधान दिवस पर चर्चा की।

मकरोनिया में दिन भर प्रतिमा पर होता रहा माल्यार्पण

सागर. बुंदेलखण्ड में शिक्षा की अलख जगाने और अपना सर्वस्व अर्पण कर विश्वविद्यालय की स्थापना करने वाले डॉ.हरिसिंह गौर की जयंती शुक्रवार को मकरोनिया में भी उल्लास के साथ मनाई गई। बटालियन के प्रवेश द्वार पर स्थित डॉ. गौर की प्रतिमा पर सुबह से शाम तक उन्हें याद कर माल्यार्पण का सिलसिला चलता रहा। सांस्कृतिक, साहित्यिक और कला गतिविधियों में सक्रिय रहने वाली संस्था प्रवाह द्वारा डॉ.गौर की जयंती जन्मोत्सव के रूप में मनाई गई। इस दौरान गौर साहब के योगदान व त्याग को याद करते हुए [illegible] की मौजूदगी में संस्था द्वारा गौर प्रतिमा पर माल्यार्पण कर मिष्ठान्न वितरण किया गया। संस्था अध्यक्ष संतोष रोहित, उपाध्यक्ष डॉ. मनीष मिश्र, सचिव राजेश दुबे, कोषाध्यक्ष देवेश नीखरा, सहसचिव तीरथ सिंह, [illegible] गुप्ता, राजेश गौतम, मनोज जैन, कालीदास दुबे, जितेन्द्र शर्मा, जय चौरसिया, रंजीत गौर, अजय मौर्य, भवानसिंह व अन्य ने प्रतिमा पर माल्यार्पण कर कृतज्ञता प्रकट की। 27 नवम्बर को मकरोनिया में कवि सम्मेलन एवं मुशायरे का आयोजन किया गया है।

गौर युवा मंच जनवरी में स्थापित करेगी डॉ. गौर की प्रतिमा

सागर @ पत्रिका. डॉ. सर हरिसिंह गौर की 152वीं जयंती के उपलक्ष्य पर प्रतिवर्ष अनुसार इस वर्ष भी शुक्रवार को सुब 9 बजे कबुलापुल स्थित गौर चौराहा से गौर युवा मंच द्वारा डॉ. सर हरिसिंह गौर की पालकी यात्रा निकाली गयी। गौर युवा मंच के अध्यक्ष अधिवक्ता रविन्द्र अवस्थी ने कहा कि मंच की वर्षों पुराना संकल्प आज पूरा होने जा रहा है। जनवरी माह में डॉ. सर हरिसिंह गौर की मूर्ति कबुलापुल स्थित गौर चौराहे पर स्थापित की जाएगी। एसडीएन विवि के संस्थापक गौर युवा मंच के संरक्षक डॉ. अनिल ने कहा कि गौर युवा मंच द्वारा जो संकल्प लिया गया। इसके बाद सभी अतिथियों एवं स्कूली छात्रों द्वारा डॉ. गौर के चित्र को पालकी में विराजमान किया गया।

'डा. गौर का जीवन मनुष्य के अपराजेय जिजीविषा की जय यात्रा है'

डा. गौर जयंती ● शहर में सुबह से लेकर देर शाम तक रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किए गए, कहीं वाहन रैली निकली गई तो कहीं लोगों ने निकाली पदयात्रा

सागर (नवदुनिया प्रतिनिधि)। डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के संस्थापक महान शिक्षाविद्, संविधान सभा के सदस्य एवं दानवीर डा. सर हरीसिंह गौर की 152 वीं जन्म जयंती पर शुक्रवार को पूरा शहर डा. हरीसिंह गौर के जयकारों से गूंज उठा। जिले के लोगों की अज्ञानता दूर कर उन्हें शिक्षित करने अपनी जमा पूंजी दान कर विवि का निर्माण कराने वाले डा. गौर को याद करने शहर में सुबह से लेकर देर शाम तक रंगारंग कार्यक्रम होते रहे। कहीं वाहन रैली निकली तो कहीं पदयात्रा। विवि में आयोजित मुख्य कार्यक्रम में प्रतिभावान विद्यार्थियों से लेकर शिक्षकों व कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। डा. गौर के लिए अकेले सागर ही नहीं बल्कि देश के अलग-अलग स्थानों पर भी कार्यक्रम आयोजित कर लोगों ने उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

कार्यक्रम की शुरुआत में परंपरानुसार विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने तीनबत्ती स्थित डा. हरीसिंह गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। इसके बाद मुख्य कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि सागर शहर के नागरिकों, बुद्धिजीवियों, विद्यार्थियों और जन-जन का डा. गौर के प्रति प्रेम, अगाध श्रद्धा और भाव देखकर मैं भाव विभोर हूं। डा. गौर ने विवि के रूप में एक शिक्षा और ज्ञान का केंद्र स्थापित किया है, जिसके माध्यम से इस समूचे अंचल ने पूरे विश्व में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। आप सभी विवि के विकास में अपना सहयोग करें ताकि सर गौर के सपनों को साकार किया जा सके और यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। उद्बोधन के बाद तीन बत्ती से शोभायात्रा निकाली गई। गौर स्मारक स्थल पर भी कुलपति ने पुष्पांजलि दी। शोभायात्रा के विवि पहुंचने पर उन्होंने गौर मूर्ति पर माल्यार्पण किया और गौर समाधि पर पुष्प अर्पित किया। विवि के 3 एम पी सिग्नल एनसीसी कैडेट्स तीनबत्ती स्थल और विश्वविद्यालय परिसर में ले. कर्नल डा. धर्मेंद्र सर्राफ, डा. गौतम प्रसाद और ऊषा राणा के नेतृत्व में कुलपति को गार्ड ऑफ ऑनर दिया। कुलसचिव संतोष सोहगौरा के स्वागत भाषण दिया। गौर उत्सव के मुख्य समन्वयक प्रो. आरके त्रिवेदी ने छह दिवसीय गौर उत्सव की जानकारी दी।

गौर साहब ने ऐसा अफसाना लिखा जिसे आज सारी दुनिया गुनगुना रही है: विवि में आयोजित मुख्य कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो. गुप्ता ने कहा कि डा. गौर का समूचा जीवन मनुष्य के अपराजेय जिजीविषा की जय यात्रा है। उन्होंने जीवन भर सर्वोच्चता की संकल्पना को अपने ढंग से सिरजा, सहेजा और साकार किया। आसमान की बुलंदी पर रहते हुए भी डा. गौर ने सागर की जमीनी हकीकतों को कभी भुलाया नहीं वे जानते थे कि बुन्देलखंड की जय यात्रा ज्ञान के रास्ते से होकर ही जाएगी।

दुनिया के शीर्ष विज्ञानियों में सागर विवि के 20 विज्ञानी विवि के छात्र : विवि कोरोना की महामारी के दौरान भी लगातार क्रियाशील रहा। दुनिया भर के शीर्ष विज्ञानियों की में 20 वैज्ञानिक हमारे विश्वविद्यालय के छात्र रहे हैं। इस प्रतिष्ठित सूची में सम्मिलित हमारे विवि के भी शिक्षक हैं। ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र शिक्षकों, विद्यार्थियों और अधिकारियों की उपलब्धियों के लिए बधाई दी और कहा कि यह कोशिश हमारे संस्थापक के सपनों को पूरा करने की दिशा में एक जागृत पहल है। उन्होंने कहा कि विवि अपने विद्यार्थियों के चतुर्दिक विकास और अपनी अकादमिक प्रतिबद्धता के साथ ही अपने सामाजिक सरोकारों को भी नए ढंग से सृजित कर रहा है। अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी ने कहा कि डा. गौर की जयन्ती पर बौद्धिक समुदाय और जनभागीदारी को देखकर ऐसा लग रहा है कि यह उत्सव नहीं बल्कि अनुष्ठान है। डा. गौर अर्वाचीन समय के भामाशाह हैं। निश्चित तौर पर यह विवि तेजस्वी विकास करेगा। इस अवसर पर अलग-अलग श्रेणी के प्रतिभावान विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। पत्रकारिता विभाग के प्रायोगिक समाचार-पत्र समय और मध्य भारती शोध पत्रिका के 80 वें अंक के विमोचन के साथ ही कई शिक्षकों की पुस्तकों का भी विमोचन हुआ। कार्यक्रम का संचालन डा. ललित मोहन ने किया। आभार ज्ञापन मुख्य समन्वयक प्रो. आरके त्रिवेदी ने किया।

पूर्व विधायक सुनील जैन, भाजपा नेता नेवी जैन, डा. आरके त्रिवेदी, डा. गौर को याद किया। बड़ा बाजार छात्रसंघ के संयोजक नरेंद्र चौबे ने डा. गौर के सपनों के अनुरूप विवि को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। छात्रसंघ के अध्यक्ष अर्पित मिश्रा ने सभी का आभार जताया। बाइक रैली बाजे गाजे के साथ और बुंदेली नृत्यों के साथ बड़ा बाजार, तीनबत्ती होती विवि परिसर पहुंची। यहां यात्रा का समापन हुआ। रैली में नरेंद्र चौबे, जगन्नाथ गुरैया, लक्ष्मण सिंह, अनूप उर्मिल, सिंटू कटारे, निकेश गुप्ता, सपन ताम्रकार, शिवशंकर यादव, रीतेश मिश्रा, जयदीप नगरिया, प्रतिभा चौबे, मेघा दुबे, आदि शामिल हुए।

भारत रत्न दिलाने गौर यूथ फोरम ने चलाया हस्ताक्षर अभियान : गौर यूथ फोरम द्वारा डाण गौर को भारत रत्न दिलाने की मांग को लेकर हस्ताक्षर अभियान चलाया गया। कार्यक्रम में नगरीय आवास विकास मंत्री भूपेन्द्र सिंह, सांसद राजबहादुर सिंह, फोरम के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. विवेक तिवारी सहित कई लोग मौजूद थे।

कौन बनेगा करोड़पति में एक करोड़ जीतकर विवि का नाम रोशन करने वाले छात्र को कुलपति ने सम्मानित किया। ● नवदुनिया

डॉ. गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण करती हुई कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता। ● नवदुनिया

कुशाभाऊ ठाकरे के नाम पर हुआ मिंटो हाल

मिंटो हाल के नाम को लेकर शहर में चर्चा का बाजार गरम हो गया है। नगरीय विकास एवं आवास मंत्री भूपेंद्र सिंह ने भोपाल के मिंटो हाल का नाम डा. हरीसिंह गौर के नाम पर रखने की मांग पर सहमति जताई, लेकिन शाम को ही इसका नाम मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने मिंटो हाल का नाम कुशाभाऊ ठाकरे के नाम से करने की घोषणा कर दी है। भाजपा प्रदेशाध्यक्ष बीडी शर्मा ने इस पर अपनी बाइट भी दी, जिससे सागर के कुछ लोगों ने इंटरनेट मीडिया पर इस मामले पर नाराजगी भी जताई।

बड़ा बाजार छात्रसंघ ने निकाली विशाल वाहन रैली

सागर विवि के संस्थापक कुलपति व संविधान सभा के सदस्य डा. हरीसिंह गौर की जयंती पर बड़ा बाजार छात्रसंघ द्वारा शुक्रवार को रैली संयोजक नरेंद्र चौबे के नेतृत्व में वाहन रैली निकाली गई। रैली को सांसद राजबहादुर सिंह, पूर्व विधायक सुनील जैन और नेवी जैन, प्रो आर के त्रिवेदी ने रामबाग मंदिर से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। सांसद राजबहादुर सिंह ने कहा कि डा. गौर शिक्षा और दान के क्षेत्र में एक मिसाल थे। इसके साथ ही उन्होंने कानून के जरिए देश में समाज सुधारक की भूमिका निभाई। हम उनके ऋणी रहेंगे।

बड़ा बाजार छात्र संघ ने गौर जयंती पर वाहन रैली निकाली, जिसे सांसद राजबहादुर सिंह ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। ● नवदुनिया

गौर युवा मंच ने निकाली पालकी यात्रा

कबुलापुल स्थित गौर चौराहा से गौर युवा मंच द्वारा डा. सर हरीसिंह गौर की पालकी यात्रा निकाली गई। सर्वप्रथम डा. गौर के चित्र पर माल्यार्पण कर उनके जयकारे लगाए गए। गौर युवा मंच के अध्यक्ष अधिवक्ता रविन्द्र अवस्थी ने कहा कि मंच का वर्षों पुराना संकल्प आज पूरा होने जा रहा है जनवरी माह तक में डा. गौर की मूर्ति कबुलापुल स्थित गौर चौराहे पर स्थापित की जाएगी। मंच के संरक्षक व स्वामी विवेकानंद विवि संस्थापक कुलपति डा. अनिल तिवारी ने कहा कि प्रदेश, देश एवं विदेशों में डा. गौर की ही बदौलत ही हमारी पहचान है। डा. गौर के इस त्याग को हम सभी सागरवासी कभी भूल नहीं सकते। इसके बाद डा. गौर के चित्र को पालकी में विराजमान कर पालकी यात्रा प्रारंभ की गई जो क्षेत्र के प्रमुख मार्गों से होकर वापिस कबुलापुल गौर चौराहे पर समाप्त हुई। पालकी यात्रा का सदर क्षेत्र के निवासियों द्वारा पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया। इस दौरान अनिल दुबे, डा. विशाल मिश्रा, जिला पंचायत सदस्य अरविंद तोमर, प्राचार्य स्नेहलता जैन, सुशील केशरवानी, सौरभ केशरवानी, अतुल मिश्रा, पंकज मुखारया आदि उपस्थित थे।

सदर बाजार में गौर युवा मंच ने पालकी यात्रा निकाली। ● नवदुनिया

महादानी कर्ण के बाद कोई है तो वह है डा. गौर : भूपेंद्र सिंह

मुख्य अतिथि कैबिनेट मंत्री भूपेन्द्र सिंह ने कहा कि महादानी कर्ण के बाद के बाद यदि किसी का नाम लिया जा सकता है तो वे डा. गौर थे। उन्होंने कहा कि यह ऐसा शुभ दिन है जो समूचा बुंदेलखंड एक उत्सव के रूप में मनाता है। डा. गौर के समय में यहां अनेकानेक विषय शुरू हुए जो आज भी चल रहे हैं। उनके द्वारा स्थापित विश्वविद्यालय को आज केन्द्रीय दर्जा मिल चुका है। वक्त की मांग है कि कुछ नए अकादमिक पाठ्यक्रम शुरू किए जाएं और बुंदेलखंड के अंचल में भी विश्वस्तरीय पढ़ाई होने लगे, इसके प्रयास होने चाहिए।

शोभायात्रा के पूर्व कार्यक्रम को संबोधित करती हुई कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता। ● नवदुनिया

आयोजन

- कार्यक्रम में प्रतिभावान विद्यार्थियों से लेकर शिक्षकों व कर्मचारी सम्मानित
- शोभायात्रा निकाली, गौर स्मारक स्थल पर भी कुलपति ने पुष्पांजलि दी

गांधी कन्या शाला में लगाई प्रदर्शनी

सागर। डा. सर हरीसिंह गौर की 152 वीं जयंती की पूर्व संध्या पर एकीकृत शास. माध्यमिक गांधी कन्या शाला कटरा बाजार में गौर साहब के जीवन पर आधारित छायाचित्रों की प्रदर्शनी लगाई गई। कक्षा छटवीं के विद्यार्थियों द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी में शिक्षिका अलका जैन ने पहले गौर साहब के बारे में कक्षा छटवीं के विद्यार्थियों ने उनकी जीवनी के बारे में बताया और कहा कि यदि गौर साहब सागर में विश्वविद्यालय की स्थापना नहीं करते तो यहां पर शिक्षा का स्तर तो बिल्कुल शून्य ही रहता। सागर शहर पर उनके द्वारा किए गए इस उपकार को सारे शहर के जनमानस को मानना चाहिए और गौर साहब की जन्म जयंती पर हम सभी को गौरमूर्ति स्थित गौर प्रतिमा पर माल्यार्पण अवश्य करना चाहिए। (नप्र)

आयोजन शासकीय गर्ल्स कॉलेज में निबंध, भाषण और चित्रकला प्रतियोगिता में छात्र-छात्राओं ने लिया बढ़-चढ़कर हिस्सा

डा. गौर समाज के लिए आदर्श हैं : डा. चंदा रत्नाकर

बीना (नवदुनिया न्यूज)। दानवीर डा. हरीसिंह गौर की जयंती एवं संविधान दिवस के उपलक्ष्य में शासकीय गर्ल्स कॉलेज में निबंध, भाषण और चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में शामिल हुई छात्राओं ने डा. गौर की सुंदर चित्र बनाए तो कुछ छात्राओं उनके जीवन पर निबंध लिखे। इसके अलावा भाषण प्रतियोगिता में छात्राओं ने डा. गौर के जीवन में अपने विचार व्यक्त किए।

प्रतियोगिता का शुभारंभ करते हुए प्राचार्य डा. चंदा रत्नाकर ने कहा कि डा. हरीसिंह गौर महान शिक्षाविद, विधि वेत्ता, न्यायविद, दानवीर एवं अद्भुत प्रतिभा के धनी थे। वह समाज के लिए आदर्श हैं। उनके जीवन से प्रेरणा लेकर उनके महान आदर्शों पर चलना चाहिए। इसी तरह डा. निशा जैन ने संविधान दिवस के अवसर पर मौलिक अधिकारों की जानकारी देते हुए कहा कि हम सदैव अपने अधिकारों के प्रति जागरूक रहना चाहिए। इसके अलावा कर्तव्यों का भी पालन करना चाहिए। क्योंकि अधिकार पाने के लिए कर्तव्यों का निर्वहन करना आवश्यक है। प्रभारी डा. उमा लवानिया ने कहा कि हमें अपने जीवन में सत्य पर आधारित, लक्ष्य पूर्ण एवं हमेशा ऐसी भावना से ओतप्रोत जीवन जीना चाहिए जो सदैव समाज के लिए हितकारी हो। डा. रश्मि द्विवेदी ने कहा कि हमें डा. गौर के जीवन प्रेरणा लेनी चाहिए कि हमेशा आवश्यकता से अधिक धन संपदा होने पर उसका सदुपयोग करेंगे। जरूरतमंद की शिक्षा, स्वास्थ्य और उनकी अनिवार्य आवश्यकताओं पर खर्च करना चाहिए, तभी हमारा जीवन सार्थक होगा। डा. रश्मि जैन ने कहा कि हमें हमेशा सकारात्मक सोच रखना चाहिए, ताकि हम इस संसार में अच्छे विचारों को ग्रहण कर सकें। नम्रता गर्ग ने कहा कि गौर साहब हमारे बीच में नहीं हैं, लेकिन वह अमर हैं। हमें भी ऐसे ही काम करने चाहिए कि समाज हमेशा याद करे। कार्यक्रम के अंत में प्रतियोगिताओं के परिणाम घोषित किए गए।

गर्ल्स कालेज में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करती वक्ता। ● नवदुनिया

इस तरह रहे परिणाम: डा. गौर की जयंती के उपलक्ष्य में डा. गौर का व्यक्तित्व, कृतित्व एवं संविधान की अवधारणा पर भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें नंदिनी प्रथम, सुदीक्षा दूसरे और श्वेता, रूबी तीसरे स्थान पर रहीं। डा. गौर के जीवन पर आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में सुमैया प्रथम, श्वेता द्वितीय स्थान पर रहीं। इसी तरह भारतीय संविधान में निर्मित मौलिक अधिकार पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता में सुदीक्षा ने पहला, रूबी ने दूसरा, श्वेता ने तीसरा और समैया को सांत्वना पुरस्कार दिया गया।

बनारस के अलावा अमरकंटक के इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विवि में मनाई गौर जयंती

सागर (नवदुनिया प्रतिनिधि)। डा. हरीसिंह गौर की जयंती सागर सहित देश के अन्य कई स्थानों पर भी धूमधाम से मनाई गई। बनारस विवि के अलावा अमरकंटक के इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विवि में भी गौर जयंती मनाई गई। यहां अकादमिक निदेशक प्रो. आलोक श्रोत्रिय ने डा. गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। इस दौरान प्राध्यापक डा. राकेश सोनी, डा. मोहनलाल चढ़ार, डा. जिनेंद्र जैन, डा. ऋषि पालीवाल, डा. केबी सूलाखिया, डा. विनोद सेन आदि मौजूद थे।

प्रवाह के सदस्यों ने मिठाई बांटकर मनाया डा. गौर का जन्मोत्सव : सांस्कृतिक, साहित्यिक कला गतिविधि मंच प्रवाह द्वारा मकरोनिया चौराहा स्थित गौर स्मृति द्वार पर गौर प्रतिमा पर माल्यार्पण कर व मिष्ठान वितरण कर गौर जन्मोत्सव मनाया गया। कार्यक्रम में संस्था अध्यक्ष संतोष रोहित, उपाध्यक्ष डा. मनीष मिश्र, सचिव एडवोकेट राजेश दुबे, कोषाध्यक्ष देवेश नीखरा, सहसचिव तीरथ सिंह, वकील चंद गुप्ता, राजेश गौतम ने लोगों मिठाई बांटी। शनिवार को यहां कवि सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा।

गौर जयंती पर आयोजित हुआ कवि सम्मेलन: सागर सपूत डा. हरीसिंह गौर की जयंती पर मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा जेजे इंस्टीट्यूट सिविल लाइंस में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम बुंदेली गायक शिवरतन यादव के मुख्य आतिथ्य, कवि वृंदावन राय सरल की विशिष्ट उपस्थिति व कवयित्री डा. चंचला दवे की अध्यक्षता में किया गया। संस्था के अध्यक्ष आशीष ज्योतिषी ने कहा कि डा. गौर दैदीप्तिमान नक्षत्र थे। उन्होंने संविधान शिक्षा और साहित्य के लिए उत्कृष्ट प्रतिमान स्थापित किए। इस अवसर पर बाल कवि इडु पांडे, अर्पण कटारे, के तिवारी, आदर्श दुबे, प्रशांत ढेकले आदि उपस्थित रहे।

जयंती पर प्रवाह के सदस्यों ने मकरोनिया में माल्यार्पण कर मिठाई बांटी। ● नवदुनिया

मध्यरात्रि में की आतिशबाजी

डा. हरीसिंह गौर की 152 जयंती के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय छात्र नेता उज्जवल तिवारी के नेतृत्व में मध्यरात्रि के समय विवि छात्रवास के सभी छात्रों द्वारा विश्वविद्यालय स्थित डा. सर गौर की मूर्ति के समक्ष माल्यार्पण किया। छात्रों द्वारा बड़े ही हर्ष उल्लास से आतिशबाजी के साथ केक काट कर जन्म दिन को उत्साह पूर्वक मनाया गया। जिसमें दीपेश ठाकुर, अंकित ठाकुर, वंश ठाकुर, आदर्श जयसवाल, नीरज, शुभम, आयुष रावत, दीपू राजा, मनीष मिश्रा अन्य छात्र उपस्थित थे।

आयोजन । उमंग, उत्साह और उल्लास से मनाई गौर जयन्ती, तीनबत्ती और विवि परिसर में हुए भव्य कार्यक्रम

हम डॉ. गौर का ऋण कभी नहीं चुका सकते: भूपेन्द्र

सागर, आचरण संवाददाता।

गार्ड ऑफ़ ऑनर दिया

डॉ. गौर के विवि की एक इंच भूमि भी शासन अधिग्रहित नहीं करेगा: भूपेन्द्र

Tweet

Shivraj Singh Chouhan
@ChouhanShivraj

सागर विश्वविद्यालय के संस्थापक, शिक्षाशास्त्री, समाज सुधारक डॉ. हरिसिंह गौर जी की जयंती पर उनके चरणों में सादर नमन करता हूं।

शिक्षा और सेवा के माध्यम से राष्ट्र व समाज की उन्नति की जो राह आपने दिखाई है, वह सदैव हम सबको निष्ठापूर्वक कर्तव्य पथ पर चलने के लिए प्रेरित करती रहेगी।

Translate Tweet

मुख्यमंत्री ने डॉ. गौर की जयंती पर किया नमन

भोपाल। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने डॉ. हरिसिंह गौर की जयंती पर उन्हें नमन किया। मुख्यमंत्री ने निवास स्थित सभागार में उनके चित्र पर माल्यार्पण किया।

दानवीर को शहर ने किया नमन, उत्साह और संकल्प के साथ मनाई गौर जयंती

जागरण न्यूज, सागर

शुक्रवार सुबह माल्यार्पण के बाद तीनबत्ती से शोभायात्रा निकाली गई। गौर स्मारक स्थल पर भी कुलपति ने पुष्पांजलि दी। शोभायात्रा के विश्वविद्यालय पहुंचने पर उन्होंने गौर मूर्ति पर माल्यार्पण किया और गौर समाधि पर पुष्प अर्पित किए। मुख्य अतिथि भूपेन्द्र सिंह कैबिनेट मंत्री, कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी ने भी डॉ. गौर की समाधि पर पुष्प अर्पित किया। विश्वविद्यालय के 3 एमपी सिग्नल एनसीसी कैडेट्स तीनबत्ती स्थल और विश्वविद्यालय परिसर में ले. कर्नल डॉ.

महान शिक्षाविद्, प्रख्यात विधिवेत्ता, संविधान सभा के सदस्य एवं दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर की 152वीं जयंती शुक्रवार को चतुर्दिक उमंग, उत्साह और उल्लास से मनाई गई। परम्परानुसार विश्वविद्यालय की कुलपति ने तीनबत्ती स्थित डॉ. गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। मुख्य समारोह विवि में आयोजित किया गया। इसी के साथ 21 नवंबर से चल रहे गौर उत्सव सप्ताह का भी समापन हुआ। विविध कार्यक्रमों में विभिन्न गतिविधियों के साथ डॉ.गौर को स्मरण किया गया।

- विवि के गौर प्रांगण में मुख्य समारोह हुआ आयोजित
- तीनबत्ती से निकाली गई भव्य शोभायात्रा

धर्मेन्द्र सराफ, डॉ. गौतम प्रसाद और ऊषा राणा के नेतृत्व में कुलपति को गार्ड ऑफ ऑनर दिया। गौर प्रांगण में मुख्य समारोह आयोजित किया गया। अतिथियों ने डॉ. गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया और दीप प्रज्वलित किया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने डॉ. गौर की 152 वीं जयंती पर सभी को बधाई दी। उन्होंने कहा कि डॉ. हरीसिंह गौर की जयंती न केवल हमारे विश्वविद्यालय के लिए बल्कि समूचे बुन्देलखण्ड के लिए अज्ञानता के अंधेरे के विरुद्ध ज्ञान के उजाले का नूतन विवेक है। आज का दिन उज्ज्वल चेतना का पावन अभिषेक है। उन्होंने कहा कि डॉ.गौर का समूचा जीवन मनुष्य के अपराजेय जिजीविषा की जय-यात्रा है। हमारा विश्वविद्यालय केवल बुन्देलखण्ड के लिए ही नहीं बल्कि पूरे देश के लिए ज्ञान का अभिनव तीर्थ है। उन्होंने विश्वविद्यालय में जारी परियोजनाओं और भविष्य की योजनाओं के बारे में रूपरेखा भी प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों के चतुर्दिक विकास और अपनी अकादमिक प्रतिबद्धता के साथ ही अपने सामाजिक सरोकारों को भी नये ढंग से सृजित कर रहा है।

महादानी कर्ण के समान है डॉ.गौर का दान

मुख्य अतिथि भूपेन्द्र सिंह ने कहा कि महादानी कर्ण के बाद के बाद यदि किसी का नाम लिया जा सकता है तो वे डॉ. गौर हैं। उन्होंने कहा कि यह ऐसा शुभ दिन है जो समूचा बुंदेलखंड एक उत्सव के रूप में मनाता है। डॉ. गौर के समय में यहां अनेकानेक विषय शुरू हुए जो आज भी चल रहे हैं। उनके द्वारा स्थापित विश्वविद्यालय को आज केन्द्रीय दर्जा मिल चुका है। वक्त की मांग है कि कुछ नए अकादमिक पाठ्यक्रम शुरू किये जाएं और बुंदेलखंड के अंचल में भी विश्वस्तरीय पढ़ाई होने लगे, इसके प्रयास किये जाने चाहिए। उन्होंने कहा कि हम डॉ. गौर का ऋण कभी नहीं चुका सकते। हमारी इस शहर की पहचान उन्हीं के कारण ही है। कुछ ऐसे प्रयास किए जाएं कि बुंदेलखंड अंचल के विद्यार्थियों को इस विश्वविद्यालय में प्रवेश में प्राथमिकता मिले। अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी ने कहा कि डॉ. गौर की जयंती पर बौद्धिक समुदाय और जनभागीदारी

को देखकर ऐसा लग रहा है कि यह उत्सव नहीं बल्कि अनुष्ठान है। लोगों की डॉ. गौर के प्रति श्रद्धा और सम्मान देखकर मेरा मन आह्लादित है। पूर्व विद्यार्थियों की विश्वविद्यालय के प्रति सोच की मैं प्रशंसा करता हूं। डॉ. गौर अर्वाचीन समय के भामाशाह हैं। इस अवसर पर अलग-अलग श्रेणी में विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। पत्रकारिता विभाग के प्रायोगिक समाचार पत्र समय और मध्यभारती शोध पत्रिका के 80वें अंक के विमोचन के साथ ही कई शिक्षकों की पुस्तकों का भी विमोचन हुआ। इस अवसर पर उत्कृष्ट कार्यों और सेवाओं के लिए विश्वविद्यालय के शिक्षकों, अधिकारियों और कर्मचारियों को सम्मानित किया गया।

एनएसयूआई ने सुंदरकांड का पाठ कर मनाई जयंती

गौर जयंती के उपलक्ष में भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन विश्वविद्यालय इकाई के अध्यक्ष अंकित ठाकुर के तत्वावधान में विश्वविद्यालय एनएसयूआई द्वारा दोपहर 12 बजे गौर मूर्ति के समीप विशाल एकत्रित होकर गौर साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। तत्पश्चात गौर मूर्ति के समीप ही संगठन के कार्यकर्ताओं द्वारा सुंदरकांड पाठ किया गया। इस अवसर पर संगठन के पूर्व जिला अध्यक्ष युवक कांग्रेस के प्रदेश सचिव राहुल खरे ने कहा कि डॉक्टर साहब सागर ही नहीं, संपूर्ण देश की आस्था का केंद्र है। हम सरकार से मांग करते हैं कि गौर जयंती को एक राष्ट्रीय दिवस के रूप में घोषित किया जाए और 26 नवंबर को राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया जावे। यह गौर साहब के लिए वास्तव में सच्ची श्रद्धांजलि होगी। कार्यक्रम के आयोजक विश्वविद्यालय एनएसयूआई के अध्यक्ष अंकित ठाकुर ने कहा कि डॉ गौर साहब को भारतरत्न मिलने तक एनएसयूआई की लड़ाई जारी रहेगी और हर मोर्चे पर हम इस लड़ाई को लड़ते रहेंगे।

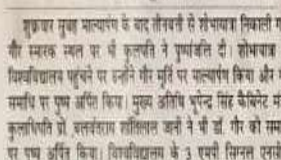

प्रवाह ने डॉ. हरीसिंह गौर का जन्मोत्सव मनाया

सांस्कृतिक, साहित्यिक, कला गतिविधि मंच प्रवाह द्वारा मकरोनिया दीपक सिंह गौर स्मृति द्वार पर गौर प्रतिमा पर माल्यार्पण कर व मिष्ठान वितरण कर गौर जन्मोत्सव मनाया गया। कार्यक्रम में संस्था अध्यक्ष संतोष रोहित, डॉ मनीष मिश्र, राजेश दुबे, देवेश लोधरा, नीरज सिंह, दलीलचंद गुप्ता, राजेश गौतम, मनोज जैन, ज्वाल राबर्ट्स, मनोज राय, कालीदास दुबे, अरविंद मिश्रा, जितेन्द्र शर्मा, मनीष त्यागी, जय चौरसिया, रजीत गौर, अजय मौर्य, भगवान सिंह, राजेश तिवारी आदि शामिल हुए।

डॉ. गौर जयंती पर बांदरी को दी सीएम राइजिंग स्कूल की सौगात

आज देश और दुनिया के ख्याति प्राप्त विधिवेत्ता, न्यायविद, शिक्षा शास्त्री और महादानी डॉ. सर हरीसिंह गौर का जन्मदिन है। इस अवसर पर हम बांदरी क्षेत्र के विद्यार्थियों को 38 करोड़ रुपए की लागत के सीएम राइजिंग स्कूल की सौगात दे रहे हैं। यह घोषणा मध्यप्रदेश शासन के नगरीय विकास एवं आवास मंत्री भूपेंद्र सिंह ने की। डॉ. गौर जयंती के उपलक्ष में बांदरी के शासकीय महाविद्यालय में आयोजित मेधावी छात्र-छात्रा प्रतिभा सम्मान समारोह में मंत्री भूपेन्द्र ने कहा कि इस क्षेत्र के 2 हजार से अधिक बच्चे बांदरी के स्कूल में पढ़ते हैं, जहां शैक्षणिक सुविधाओं का अभाव है। इसलिए हमने बांदरी को सीएम राइजिंग स्कूल योजना में जुड़वाया है। इसके साथ ही खुरई का मॉडल स्कूल भी सीएम राइजिंग स्कूल का स्वरूप लेगा। मंत्री श्री सिंह ने कहा कि बांदरी में सीएम राइजिंग स्कूल 38 करोड़ की लागत से बनेगा। जिसकी निर्माण के लिए वन विभाग से ली गई जमीन आवंटित की जाएगी। उन्होंने सीएम राइजिंग स्कूल की विशेषताएं बताते हुए कहा कि बच्चे परिवार और देश का भविष्य होते हैं, जिसके लिए शिक्षित होना बहुत जरूरी है। मंत्री श्री सिंह ने कहा कि जीवन में शिक्षा का क्या महत्व है, इसकी प्रेरणा दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर से लेना होगी। डॉ. गौर ने अत्यधिक गरीबी में बचपन झेला। छात्रवृत्ति से पढ़ाई की और बहुत ही कठिन परिस्थितियों में पढ़ने के लिए विदेश गए। देश दुनिया में शोहरत और धन कमाने के बाद अंततः अपने पूरे जीवन की सम्पत्ति से सागर विश्वविद्यालय बनाया। आज की तारीख में सागर विश्वविद्यालय की सम्पत्ति 10 हजार करोड़ से ज्यादा होगी। मंत्री भूपेन्द्र सिंह ने कहा कि बांदरी में पिछले समय महाविद्यालय स्वीकृत कराया था। बस स्टेण्ड के भवन में पढ़ाई की व्यवस्था की। पुलिस थाने की 5 एकड़ जमीन कॉलेज भवन के लिए ट्रांसफर कराई और भवन निर्माण का कार्य शुरू कराया। अगले सत्र में बच्चे नये भवन में पढ़ाई करेंगे। कॉलेज में नये विषय भी स्वीकृत करा रहे हैं। वन विभाग से जो जमीन ली है, वहां सरकारी खेल मैदान बनेगा। बांदरी में शानदार स्टेडियम भी बन रहे हैं। उन्होंने कहा कि बांदरी में लगातार विकास हो रहा है। क्योंकि विकास ही हमारे जीवन की तरक्की का आधार है।

आला कवि-शायरों के साहित्यिक प्रवाह की 'एक शाम गौर के नाम' आज

जागरण, सागर। देश के उत्कृष्ट कवि-शायरों की मौजूदगी के साथ प्रवाह संस्था के प्रतिष्ठित होते जा रहे कवि सम्मेलन-मुशायरा का आयोजन 27 नवंबर को मकरोनिया के पद्माकर नगर स्थित सामुदायिक भवन परिसर में होगा। कार्यक्रम शाम छह बजे शुरू होगा। मुख्य अतिथि नगरीय प्रशासन एवं आवास मंत्री भूपेंद्र सिंह होंगे। अध्यक्षता डॉ.हरीसिंह गौर विवि की कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता करेंगी। सांस्कृतिक-साहित्यिक और कला गतिविधियों को समर्पित प्रवाह संस्था द्वारा साहित्य रसिकों के लिए समर्पित यह तीसरा लगातार वार्षिक कार्यक्रम है। जिस तरह पूर्व के आयोजनों में एक से बढ़कर एक ख्यात शाइर-कवि शिरकत कर चुके हैं, वह परंपरा इस वर्ष भी जारी रहेगी। कवि सम्मेलन-मुशायरा में आकर्षण का केंद्र गीत-गजल में ख्यात हस्ताक्षरों की मौजूदगी रहेगी। इनमें अंजुम रहबर गुना को सुनना सुधी श्रोताओं के लिए विशेष अनुभव होगा। कई कवि सम्मेलनों और मुशायरों में शिरकत कर चुकीं अंजुम रहबर ने वर्ष 1977 से गजल-गीत की दुनिया में आगाज किया और आज वे एक सम्मानित चेहरा हैं। वहीं प्रवाह के इस आयोजन में एक बड़ा नाम आलोक श्रीवास्तव नईदिल्ली का है। मूलतः विदिशा के रहने वाले आलोक साहित्य की विभिन्न विधाओं में समान अधिकार रखते हैं। गीत, गजल, कहानी, समीक्षा, साक्षात्कार जैसी साहित्यिक विधाओं के साथ वे टीवी चैनल और प्रिंट मीडिया पत्रकारिता में भी अपना हुनर दिखा चुके हैं। इस अंतर्राष्ट्रीय शाइर का सागर में यह पहला कार्यक्रम है। इसके साथ ही इस कार्यक्रम में अशोक मिजाज, अंकिता सिंह, संतोष सागर और चांदनी पाण्डे जैसे आला रचनाकारों को भी सुनने का मौका मिलेगा। मिजाज साहब शहर के ही हैं और उनकी शाइरी के ढेरों मुरीद हैं। वहीं आयोजन में नव हस्ताक्षर के रूप में सोनाली सेन और मुकेश सोनी रहबर भी रचना पाठ करेंगे।

अज्ञानता के विरुद्ध ज्ञान के उजाले का नूतन विवेक

गौर जयंती पर मुख्य समारोह में कुलपति ने कहा, कैबिनेट मंत्री और सांसद ने विवि में प्रवेश में स्थानीयता के आरक्षण पर जोर दिया

नवभारत न्यूज

सागर 26 नवम्बर. सागर विवि के संस्थापक डॉ. सर हरीसिंह गौर की 152 वीं जन्म जयंती उमंग, उत्साह और उल्लास से मनाई गई. तीनबत्ती से शोभायात्रा निकाली गई, गौर स्मारक स्थल के बाद शोभायात्रा के विश्वविद्यालय पहुंचने पर गौर मूर्ति पर माल्यार्पण किया और गौर समाधि पर पुष्प अर्पित किया.

गौर प्रांगण में मुख्य समारोह में कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने स्वागत भाषण दिया. गौर उत्सव के मुख्य समन्वयक प्रो. आर के त्रिवेदी ने छह दिवसीय गौर उत्सव में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी दी. संचालन प्रो. ललित मोहन ने किया. इस अवसर पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि डॉ गौर की जयंती न केवल हमारे विवि के लिए बल्कि समूचे बुंदेलखंड के लिए अज्ञानता के अंधेरे के विरुद्ध ज्ञान के उजाले का नूतन विवेक है. आज का दिन उज्वल चेतना का पावन अभिषेक है. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नगरीय प्रशासन एवं आवास मंत्री भूपेंद्र सिंह ठाकुर ने कहा कि सागर एजूकेशन का हब बने जिसके लिए सागर में एयरपोर्ट की आवश्यकता है. वर्तमान में केंद्रीय विमानन मंत्री भी ग्वालियर क्षेत्र से हैं जिनके माध्यम से सागर में एयरपोर्ट बनाने के प्रयास किए जायेंगे. उन्होंने कहा कि केंद्रीय विवि बनने के बाद जिस प्रकार से कुलपति आने चाहिए थे वैसे नहीं आए, जिसके कारण केंद्रीय विवि का लाभ नहीं मिल सका है. इसके अलावा पिछले 12 वर्ष के दौरान विवि का कायाकल्प तक नहीं बन सका है. उन्होंने विवि में प्रवेश में 50 प्रतिशत स्थानीयता के आरक्षण की बात रखी. इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि सांसद राजबहादुर सिंह ने भी विवि में प्रवेश में 25 प्रतिशत स्थानीयता के आरक्षण पर जोर देते हुए कहा कि डॉ गौर को भारत रत्न मिलना चाहिए. अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी ने कहा कि डॉ. गौर की जयंती पर बौद्धिक समुदाय और जनभागीदारी को देखकर ऐसा लग रहा है कि यह उत्सव नहीं बल्कि अनुष्ठान है.

गौर भवन की 1 इंच भी जमीन कोई नहीं ले सकेगा

सिविल लाइन स्थित गौर भवन के रिडेवेलपमेंट को लेकर चल रही भ्रांतियों पर विराम लगाते हुए मंत्री श्री सिंह ने मंच से कहा कि गौर भवन की एक इंच भी जमीन ना तो स्मार्ट सिटी को दी जायेगी और ना ही किसी को. साथ ही गौर भवन के मूल स्वरूप से कोई छेड़छाड़ होगी. डॉ राकेश शर्मा के पत्र पर श्री सिंह ने यह जानकारी साझा की.

गौर जयंती मनाई गई

बंडा. डॉ हरिसिंह गौर की 152 वी जयंती झंडा चौक पर मनाई गई. अध्यक्षता पूर्व नगर परिषद अध्यक्ष श्याम सराफ ने की. उन्होंने डॉ गौर के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि हमें जन्मस्थली में रहने का सौभाग्य मिला. कार्यक्रम को पूर्व मंडल अध्यक्ष उमेश जैन, राजेंद्र भाईजी, डॉ अशोक जैन, संतोष सराफ राजेश आठिया, दीपक दुबे ने भी संबोधित किया व प्रतिमा लगाने एवं उन्हें भारत रत्न देने की मांग भी की गई. इस अवसर पर पन्ना पार्षद, डॉ सुनील जैन, श्रीकांत सोनी, दामोदर साहू, शाहिद भाईजान, प्रशांत जैन, दिनेश सोनी, रवि सेन मौजूद रहे.

सच्चे सरस्वती पुत्र थे डॉ हरिसिंह गौर :

सागर(एस.बी.न्यूज)। डॉ सर हरिसिंह गौर की 152 वी जयंती पर शासकीय उच्तर माध्यमिक विद्यालय रजुआ में सभी विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने डॉक्टरों गौर को पुष्प अर्पित कर श्रद्धा पूर्वक नमन किया। इस अवसर पर आयोजित व्याख्यानमाला में अध्यक्षीय उद्बोधन डॉ हरिसिंह गौर की कृतित्व पर बोलते हुए संस्था प्राचार्य पंडित महेश दत्त त्रिपाठी ने कहा कि वे देश के महान शिक्षाविदए दार्शनिकए कवि एवं सबसे बड़े दानवीर थे जिन्होंने अपने जीवन की गाढी कमाई से शिक्षा का महान विश्वविद्यालय सागर में बनाया जो विश्व के मानचित्र पर अद्भुत है। उन्होंने कहा सरस्वती लक्ष्मी दोनों ने दिया तुम्हें सादर ज़यपत्र साक्षी है हरिसिंह तुम्हारा ज्ञान दान का अक्षय सत्र। इतिहास के शिक्षक संतोष अहिरवार ने उनके जीवन वृतांत पर प्रकाश डाला भौतिकी के विशेषज्ञ मुकेश नेमा ने उनके कानून से जुड़े संस्मरण सुनाते हुए अपनी श्रद्धांजलि दी जैविक ज्ञानी डी एस ठाकुर ने उनके चील पहाड़ी की प्रसंग एवं अमित तिवा... बाल्यावस्था से पढ़ाई में आइ... विस्तार से बताते हुए उन्हें मह... बेत्ता निरूपित किया तथा संचालन विनीत चौबे ने उनकी आत्मकथा सेव.. लाइव को पढने एवं उनसे प्रेरणा लेने का आव्हान किया। गणित विशेषज्ञ कुमारी मनीषा जैन ने डॉक्टर गौर की देशभक्ति समाज सुधार से जुड़े कानून बनाने वा.. संविधान सभा को उपसभापति बनने तक की प्रसंग सुनाकर उन्हें भारत रत्न देने की मांग की। जिसे ध्वनिमत से पारित किया गया शिक्षाविद त्रिपाठी ने संविधान दिवस पर संविधान की उद्देशिका का वाचन कर कविता सुना कर सभी को प्रफुल्लित किया। मनोज यादव ने डॉक्टर गौर की जय के नारे लगवाए। इस अवसर पर कीर्ति चौधरी साक्षी शुक्ला अर्चना जैन बलवंत यादव अनिल लोधी अशोक पवारए संजय मिश्रा सहित सब्बि विद्यार्थी की उपस्थित रहे।

संविधान सर्वोच्च विधि है: एडीजे आरपी मिश्रा

बण्डा (एस.बी.न्यूज)। शासकीय महाविद्यालय बण्डा में संविधान दिवस तथा डॉ. हरीसिंह गौर जयंती का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसके पूर्व महाविद्यालय में प्रश्नोत्तरी तथा निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें 162 विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यशाला के मुख्य अतिथि अपर सत्र न्यायाधीश आरपी मिश्रा ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारत का संविधान हमें अधिकार देता है। हमें अधिकार और कर्तव्यों का बोध होना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंनें कहा भारत का संविधान सर्वोच्च विधि है और विधि की भूल क्षम्य नही होती। कार्यशाला के मुख्य वक्ता डॉ. सर्वेश्वर उपाध्याय ने संवैधानिक श्रेष्ठता का जिक्र करते हुये संवैधानिक अनुच्छेदों के विभिन्न पहलुओं को रखा। विशिष्ट वक्ता डॉ. अंशु सोनी ने डॉ. अम्बेडकर के तर्क ज्ञान एवं संविधान निर्माण में उनके योगदान पर व्याख्यान दिया। इसी तरह कनिष्ठ खण्ड न्यायाधीश श्रीमति ज्योत्सना तोमर ने अपने उद्बोधन में बताया कि संविधान से ही कानूनों का निर्माण संभव हुआ है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे संस्था के प्राचार्य डॉ. बीण्डीण अहिरवार ने अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुये संविधान सभा के गठन एवं संवैधानिक संशोधनों पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला। कार्यशाला के आरंभ में स्वागत भाषण एवं विषय पर प्रकाश डालते हुये डॉ. कुलदीप यादव ने कहा कि संविधान सभा के अथक प्रयास से हमारे देश को सुन्दर, श्रेष्ठ, विशाल और विस्तृत संविधान प्राप्त हुआ। इसी समय एडीजे आरपी मिश्रा ने संविधान की उद्देशिका का वाचन कराया। कार्यक्रम का संचालन डॉ अशोक पन्या ने किया तथा आभार डॉ. स्वीटी मिश्रा ने माना। कार्यक्रम के उपरांत अतिथियों ने महाविद्यालय की छात्र-छात्रा कबड्डी टीम से परिचय प्राप्त कर शुभकामनायें दी। इस अवसर पर डॉ. एसएच गणवीर, डॉ. एचआर ठाकुर, डॉ. आरके नगार्च, डॉ. अभिलाषा जैनए डॉ. शैलेन्द्र सकवार, डॉ0 संदीप श्रीवास्तव, डॉ0 विवेक द्विवेदी, मनीष आठिया सहित बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित थे।

चतुर्दिक उमंग उत्साह और उल्लास से मनाई गई गौर जयन्ती

सागर(एस.बी.न्यूज)। डॉं सर हरीसिंह गौर के 152 वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में 26 नवंबर गौर जयन्ती चतुर्दिक उमंग, उत्साह और उल्लास से मनाई गई। परम्परानुसार विश्वविद्यालय की कुलपति ने तीनबत्ती स्थल पर डॉ. गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया और अपने संबोधन में कहा कि सागर शहर के नागरिकों, बुद्धिजीवियों, विद्यार्थियों और जन.जन का का डॉ. गौर के प्रति प्रेम अगाध श्रद्धा और भाव देखकर मैं भाव विह्वल हूँ। डॉ गौर ने विश्वविद्यालय के रूप में एक शिक्षा और ज्ञान का केंद्र स्थापित किया है जिसके माध्यम से इस समूचे अंचल ने पूरे विश्व में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। आप सभी विश्वविद्यालय के विकास में अपना सहयोग करें ताकि सर गौर के सपनों को साकार किया जा सकेण् यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

उद्बोधन पश्चात तीन बत्ती से शोभायात्रा निकाली गई गौर स्मारक स्थल पर भी कुलपति ने पुष्पांजलि दीण् शोभायात्रा के विश्वविद्यालय पहुँचने पर उन्होंने गौर मूर्ति पर माल्यार्पण किया और गौर समाधि पर पुष्प अर्पित किया। मुख्य अतिथि मंत्री भूपेन्द्र सिंह, कुलाधिपति प्रोण बलवंतराय शांतिलाल जानी ने भी डॉ. गौर की समाधि पर पुष्प अर्पित किया।

एनसीसी कैडेट्स ने दिया गार्ड आफ ऑनर

विश्वविद्यालय के 3 एम पी सिग्नल एनसीसी कैडेट्स तीनबत्ती स्थल और विश्वविद्यालय परिसर में ले.कर्नल डॉ धर्मेन्द्र सर्राफ डॉ. गौतम प्रसाद और ऊषा

राणा के नेतृत्व में कुलपति महोदया को गार्ड ऑफ ऑनर दिया। गौर प्रांगण में मुख्य समारोह आयोजित किया गया। अतिथियों ने डॉ. गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया और दीप प्रज्ज्वलित किया। कुलसचिव संतोष सोहगौरा के स्वागत भाषण के पश्चात गौर उत्सव के मुख्य समन्वयक प्रो. आर के त्रिवेदी ने छह दिवसीय गौर उत्सव में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी दी।

डॉ. गौर का समूचा जीवन मनुष्य के अपराजेय जिजीविषा की जय यात्रा हैः कुलपति

इस अवसर पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने ज्ञान.दान के अन्यतम पुरोधा, शैक्षिक उन्नयन के अभिनव सूत्रधार और भारतीय मेधा के वैश्विक पहचान, विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉ हरीसिंह गौर जी की 152 वीं जयंती पर सभी को बधाई दी। उन्होंने कहा कि डॉ. हरीसिंह गौर की जयंती न केवल हमारे विश्वविद्यालय के लिए बल्कि समूचे बुन्देलखण्ड के लिए अज्ञानता के अंधेरे के विरुद्ध ज्ञान के उजाले का नूतन विवेक है। आज का दिन उज्ज्वल चेतना का पावन अभिषेक है।

विश्वविद्यालय कोरोना की महामारी के दौरान भी लगातार क्रियाशील रहा। दुनिया भर के शीर्ष वैज्ञानिकों की में 20 वैज्ञानिक हमारे विश्वविद्यालय के छात्र रहे हैं। इस प्रतिष्ठित सूची में सम्मिलित हमारे विधि के भी शिक्षक हैं। ज्ञान.विज्ञान के क्षेत्र शिक्षकों, विद्यार्थियों और अधिकारियों की उपलब्धियों के लिए बधाई दी और कहा कि यह कोशिश हमारे संस्थापक के सपनों को पूरा करने की दिशा में एक जागृत पहल है। उन्होंने कहा कि डॉ. गौर अपने प्रगतिशील सरोकारों के साथ व्यक्तिगत मुक्ति की जगह सामूहिक मुक्ति के हिमायती थे। अपनी मातृभूमि के लिए ज्ञान के उजाले का जो सपना देखा था उसे उन्होंने अपनी आस्था और त्याग से पूरा किया। आज उनके जन्मदिवस पर हम सबका कर्तव्य बनता है कि हम अपने संस्थापक के सपनों को कभी मैला नहीं होने देंगे। मुख्य अतिथि कैबिनेट मंत्री भूपेन्द्र सिंह ने कहा कि महादानी कर्ण के बाद के बाद यदि किसी का नाम लिया जा सकता है तो वे डॉ. गौर थे। उन्होंने कहा कि यह ऐसा शुभ दिन है जो समूचा बुंदेलखंड एक उत्सव के रूप में मनाता है। डॉ. गौर के समय में यहाँ अनेकानेक विषय शुरू हुए जो आज भी चल रहे हैं। उनके द्वारा स्थापित विश्वविद्यालय को आज केन्द्रीय दर्जा मिल चुका है। वक्त की मांग है कि कुछ नए अकादमिक पाठ्यक्रम शुरू किये जाएँ और बुंदेलखंड के अंचल में भी विश्वस्तरीय पढ़ाई होने लगे।

विशिष्ट अतिथि सागर लोक सभा सांसद राजबहादुर सिंह ने कहा कि गौर साहब की 150 वीं जयंती के अवसर पर मैंने लोकसभा में डॉ. गौर को भारत रत्न देने की मांग उठाई थी सरकार भी मेरी इस मांग पर विचार कर रही है लेकिन इस मुहिम में जनसहयोग भी उतना ही आवश्यक है। मैं उम्मीद करता हूँ कि डॉ. गौर को भारत रत्न मिले इसके लिए जनमानस का सबका सहयोग मिलेगा। इस अवसर पर अलग.अलग श्रेणी में विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. ललित मोहन ने किया। आभार ज्ञापन मुख्य समन्वयक प्रो. आर के त्रिवेदी ने किया।

सागर में डॉ.हरिसिंह गौर की 125 वीं जयंती मनाई

एंट्रेंस एग्जाम में बुंदेलखंड के छात्रों को 50 प्रतिशत का आरक्षण मिलेः भूपेंद्र सिंह

दीनबन्धु ■ सागर

सागर में शुक्रवार को डॉ. सर हरिसिंह गौर की 152वीं जयंती धूमधाम से मनाई गई। तीनबत्ती तिराहा पर स्थित डॉ. गौर प्रतिमा पर माल्यापर्ण करने के बाद विश्वविद्यालय में मुख्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में नगरीय प्रशासन मंत्री भूपेंद्र सिंह शामिल हुए।

मंत्री सिंह ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि सागर में केंद्रीय यूनिवर्सिटी बनने के बाद उसका जो लाभ हमें मिलना चाहिए था, वो हमें नहीं मिल पा रहा है। उन्होंने कहा कि यूनिवर्सिटी के एंट्रेंस एग्जाम में बुंदेलखंड के विद्यार्थियों को 50 प्रतिशत का आरक्षण मिलना चाहिए। यह कोई नई बात नहीं है। बनारस यूनिवर्सिटी व अन्य स्थानों पर वहां के छात्रों को

आरक्षण दिया जाता है। ठीक इसी तरह हमारे यहां भी बुंदेलखंड के छात्रों को 50 प्रतिशत का आरक्षक मिलना चाहिए। इसके लिए हम प्रयास करेंगे।

यूनिवर्सिटी में नए विषय लाने पर चल रहा विचार

मंत्री सिंह ने कहा कि डॉ. हरिसिंह. गौर यूनिवर्सिटी में नए विषय लाने की तैयारी की जा रही है। जल्द ही यूनिवर्सिटी में नए विषय और कोर्स शुरू होंगे। इसमें होटल मैनेजमेंट, टूरिज्म कोर्स, पेपर एण्ड प्लास्टिक का कोर्स, डिप्लोमा फिजियोथेरेपी का कोर्स ला सकते हैं। इसके अलावा इंजीनियरिंग कॉलेज सहित अन्य कोर्स लाए जा सकते हैं। इसके. लिए जल्द ही प्रयास किए जाएंगे।

गौर उत्सव के रूप में मनाई गई डॉ गौर जयंती

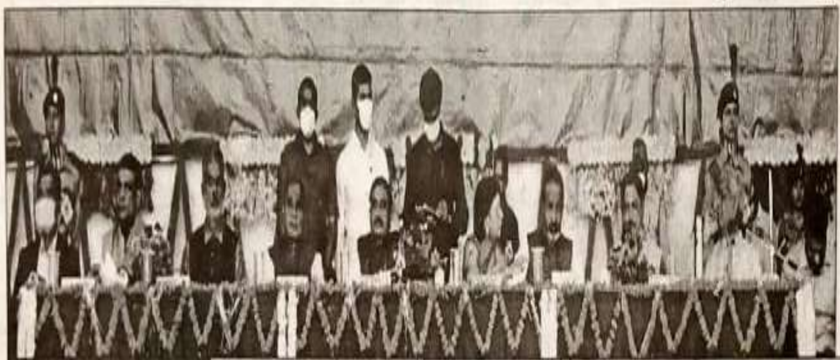

बड़ा बाजार छात्रसंघ ने निकाली विशाल बाईक रैली

सागर विवि के संस्थापक कुलपति ,दिल्ली और नागपुर विवि के पूर्व कुलपति, सविधान सभा के सदस्य डॉ हरिसिंह गौर की जयंती पर बड़ा बाजार छात्रसंघ ने एक बाईक रैली बड़ा बाजार छात्रसंघ के संयोजक नरेंद्र चौबे के नेतृत्व में निकाली । सांसद राजबहादुर सिंह, पूर्व विधायक सुनील जैन, और नेवी जैन , प्रो आर के त्रिवेदी शुक्रवार को रामबाग से हरीझंडी दिखाकर रवाना किया।

शहर भर में हुए विभिन्न आयोजन

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के संस्थापक महान शिक्षाविद् एवं प्रख्यात विधिवेत्ता, संविधान सभा के सदस्य एवं दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 21 नवंबर से 26 नवंबर तक आयोजित 'गौर उत्सव' में 26 नवंबर गौर जयन्ती चतुर्दिक उमंग, उत्साह और उल्लास से मनाई गई। परम्परानुसार विश्वविद्यालय की कुलपति ने तीनबत्ती स्थल पर डॉ. गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया और अपने संबोधन में कहा कि सागर शहर के नागरिकों, बुद्धिजीवियों, विद्यार्थियों और जन-जन का का डॉ. गौर के प्रति प्रेम, अगाध श्रद्धा और भाव देखकर मैं भाव विह्वल हूँ। डॉ गौर ने विश्वविद्यालय के रूप में एक शिक्षा और ज्ञान का केंद्र स्थापित किया है जिसके माध्यम से इस समूचे अंचल ने पूरे विश्व में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। शोभायात्रा के विश्वविद्यालय पहुँचने पर उन्होंने गौर मूर्ति पर माल्यार्पण किया और गौर समाधि पर पुष्प अर्पित किया. मुख्य अतिथि भूपेन्द्र सिंह, कैबिनेट मंत्री , कुलाधिपति प्रो. बलवंतराय शांतिलाल जानी ने भी डॉ. गौर की समाधि पर पुष्प अर्पित किया।

एनसीसी कैडेट्स ने दिया गार्ड ऑफ़ ऑनर-विश्वविद्यालय के 3 एम पी सिग्नल एनसीसी कैडेट्स तीनबत्ती स्थल और विश्वविद्यालय परिसर में ले. कर्नल डॉ धर्मेन्द्र सर्राफ, डॉ. गौतम प्रसाद और ऊषा राणा के नेतृत्व में कुलपति को गार्ड ऑफ़ ऑनर दिया।

विश्वस्तरीय पढ़ाई हो इसके प्रयास होना चाहिए-मंत्री भूपेंद्र सिंह- मुख्य अतिथि कैबिनेट मंत्री भूपेन्द्र सिंह ने कहा कि महादानी कर्ण के बाद के बाद यदि किसी का नाम लिया जा सकता है तो वे डॉ. गौर थे। उन्होंने कहा कि यह ऐसा शुभ दिन है जो समूचा बुंदेलखंड एक उत्सव के रूप में मनाता है। डॉ. गौर के समय में यहाँ अनेकानेक विषय शुरू

हुए जो आज भी चल रहे हैं। उनके द्वारा स्थापित विश्वविद्यालय को आज केन्द्रीय दर्जा मिल चुका है। वक्त की मांग है कि कुछ नए अकादमिक पाठ्यक्रम शुरू किये जाएं और बुंदेलखंड के अंचल में भी विश्वस्तरीय पढ़ाई होने लगे, इसके प्रयास किये जाने चाहिए।

डॉ. गौर को भारत रत्न मिले इसके लिए प्रयास जारी-सांसद राजबहादुर सिंह-विशिष्ट अतिथि सागर लोक सभा सांसद राजबहादुर सिंह ने कहा कि गौर साहब की 150 वीं जयन्ती के अवसर पर मैंने लोकसभा में डॉ. गौर को भारत रत्न देने की मांग उठाई थी। सरकार भी मेरी इस मांग पर विचार कर रही हैं लेकिन इस मुहिम में जनसहयोग भी उतना ही आवश्यक है।

'समय' और 'मध्य भारती' का विमोचन-इस अवसर पर अलग-अलग श्रेणी में विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया। पत्रकारिता विभाग के प्रायोगिक समाचार-पत्र 'समय' और 'मध्य भारती' शोध पत्रिका के 80वें अंक के विमोचन के साथ ही कई शिक्षकों की पुस्तकों का भी विमोचन हुआ। इस अवसर पर उत्कृष्ट कार्यों और सेवाओं के लिए विश्वविद्यालय के शिक्षकों, अधिकारियों और कर्मचारियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. ललित मोहन ने किया। आभार ज्ञापन मुख्य समन्वयक प्रो. आर के त्रिवेदी ने किया।

बड़ा बाजार छात्रसंघ के अध्यक्ष छात्रसंघ के अध्यक्ष अर्पित मिश्रा ने सभी का आभार जताया। बाईक रैली बाजे गाजे के साथ और बुंदेली नृत्यों के साथ बड़ा बाजार, तीनबत्ती होती विवि परिसर पहुची । यहां यात्रा का समापन हुआ। रैली में सांसद राजबहादुर सिंह, पूर्व विधायक सुनील जैन, और नेवी जैन , प्रो आर के त्रिवेदी ,संयोजक नरेंद्र चौबे, जगन्नाथ गुरैया, लक्ष्मण सिंह, अनूप उर्मिल, सिंटू कटारे, निकेश गुप्ता, सपन ताम्रकर, शिवशंकर यादव, रीतेश मिश्रा, जयदीप नगरिया, प्रतिभा चौबे , मेघा दुबे ,अर्पित मिश्रा, राजेश सैनी, बाबू घोषी, अंशुल सोनी, राहुल घोषी, अनिकेत यादव, बिट्टू काजी अनिरुध राजपूत, अमन ताम्रकार, सपन ताम्रकार, मोनू जैन, शुभम शुक्ला, उदय चोरसिया, रामु सोनी, अंशुल मिश्रा, मनोज रैकवार, ललित बाजपेई, अमन चौरसिया आदि शामिल हुए।

हर्षोल्लास एवं सद्भाव से मनाई गई डॉ गौर की जन्म जयंती

(दैनिक सागर सरोज)

सागर । महान दानवीर विधिवेत्ता एवं सागर विश्वविद्यालय की स्थापना करने वाले डॉ हरिसिंह गौर की 152वीं जन्म जयंती सागर, मध्यप्रदेश सहित संपूर्ण देश में पूरे हर्षोल्लास एवं सदभाव पूर्वक मनाई गई। डॉ हरिसिंह गौर की जन्म जयंती का मुख्य

परिसर में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलाधिपति बलवंत सिंह जानी, मुख्य अतिथि नगरीय विकास एवं आवास मंत्री भूपेंद्र सिंह, सांसद राज बहादुर सिंह, कलेक्टर दीपक आर्य, कुलपति डॉ नीलिमा गुप्ता, नगर निगम

समारोह डॉ हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के गौर स्मारक कमिश्नर आरपी अहिरवार सहित शिक्षक, छात्र–छात्राएं, शहरवासी एवं गणमान्य नागरिक मौजूद थे । डॉ हरिसिंह गौर की जन्म जयंती के अवसर पर भंवर मूर्ति तीनबत्ती पर प्रातः काल कुलपति द्वारा माल्यार्पण किया गया। तत्पश्चात विशाल शोभायात्रा निकाली गई जो कि विश्वविद्यालय के मुख्य समारोह स्थल पर संपन्न हुई । जहां मुख्य अतिथि नगरीय विकास एवं आवास मंत्री भूपेंद्र सिंह, सांसद राज बहादुर सिंह, कुलाधिपति, कुलपति द्वारा डॉ गौर की स्मारक पर पुष्प अर्पित किए गए। डॉ गौर की जयंती पर समस्त शैक्षणिक संस्थानों सहित अन्य संस्थानों में भी जयंती का आयोजन किया गया

नगरीय मंत्री ने डा. गौर जयंती पर बांदरी और खुरई को दी सीएमराईज स्कूल की सौगात

(दैनिक सागर सरोज)

सागर। प्रदेश के नगरीय एवं विकास मंत्री भूपेन्द्र सिंह ने बांदरी में शुक्रवार को दानवीर शिक्षाविद डा. हरीसिंह गौर की जयंती के अवसर पर बांदरी के स्कूल और कॉलेज के प्रतिभाशाली छात्र–छात्राओं को सम्मानित किया। उन्होंने महाविद्यालय के प्राध्यापकों को भी सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि डा. गौर ने अपने जीवन भर की पूंजी शिक्षा के लिये समर्पित कर सागर विश्वविद्यालय की स्थापना की। उन्होंने छात्र–छात्राओं से कहा कि डा. गौर के जीवन से प्रेरणा लें। आज यहां से पढ़कर निकले विद्यार्थियों के कारण देश दुनिया में सागर का नाम जाना जाता था। कार्यकम में उन्होंने कहा कि बांदरी और खुरई क्षेत्र के बच्चों को अच्छी शिक्षा मिले इसके लिये सीएमराईज स्कूल बांदरी और खुरई में खोला जायेगा। यह स्कूल कक्षा एक से लेकर कक्षा 12 तक के लिये होगा। बच्चे अच्छी शिक्षा लेंगे तो देश का भविष्य अच्छा होगा और परिवार का भी भविष्य अच्छा होगा। दस से पन्द्रह किलोमीटर क्षेत्र के बच्चों को इसमें गुणवत्तायुक्त शिक्षा मिलेगी। निःशुल्क बस के माध्यम से बच्चों को घर से स्कूल तक लाया और छोड़ा जायेगा। सीएमराईज स्कूल प्रायवेट स्कूलों से भी बेहतर होगा। इसमें सभी विषय उपलब्ध होंगे। सभी विषयों के अच्छे शिक्षक बच्चों को पढ़ायेंगे। स्कूल सर्वसुविधायुक्त होगा । स्कूल बनाने के लिये बांदरी में वन विभाग के माध्यम से जमीन उपलब्ध करा दी गई है।

कलेक्टर्स कमिश्नर कॉन्फ्रेंस को लेकर कलेक्टर ने की समीक्षा

(दैनिक सागर सरोज)

सागर । आगामी कलेक्टर कमिश्नर कांफ्रेंस के संबंध में कलेक्टर श्री दीपक आर्य ने जिला अधिकारियों के साथ बैठक आयोजित कर कलेक्टर कमिश्नर कांफ्रेंस से संबंधित महत्वपूर्ण विषयों की समीक्षा की। इस बैठक में कलेक्टर कमिश्नर कांफ्रेंस के एजेंडा अनुसार विभिन्न विषयों पर चर्चा कर अद्यतन स्थिति की जानकारी ली गई। बैठक में विगत कलेक्टर्स कमिश्नर कॉन्फ्रेंस के पालन प्रतिवेदन, प्रदेश में माफियाओं के विरुद्ध कार्यवाही, महिला अपराध एवं कानून व्यवस्था के संबंध में समीक्षा की गई। इसके साथ ही प्रधानमंत्री शहरी पथ विक्रेता स्वनिधि योजना एवं मुख्यमंत्री ग्रामीण पथ विक्रेता योजना के क्रियान्वयन की समीक्षा, कोविड टीकाकरण अंतर्गत द्वितीय डोज लगाने की कार्यवाही समय सीमा में पूर्ण करने एवं रणनीति के संबंध में समीक्षा की गई। कलेक्टर श्री आर्य ने सी.एम. हेल्पलाईन अंतर्गत प्रकरणों के निराकरण की प्रगति, सी. एम. राईज स्कूल्स योजना का प्रस्तुतीकरण , मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजना का प्रस्तुतिकरण की भी जानकारी ली।

गौर जयंती पर आयोजित हुई सांस्कृतिक संध्या

सागर, देशबन्धु। गौर जयंती की संध्या बेला में को विश्वविद्यालययीन विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम की शुरुआत तालवाद्य से हुई जो संगीत विभाग के विद्यार्थियों ने प्रस्तुत किया। केन्द्रीय विद्यालय के बच्चों ने गांधी जी थीम पर मूक अभिनय (माइम) प्रस्तुत कर गांधी जी के विचारों और संदेशों को प्रस्तुत किया। विवि के परफार्मिंग आर्ट्स के छात्रों ने डॉ राकेश सोनी द्वारा निर्देशित प्रहसन 'अंतिम इच्छा' की प्रस्तुति दी यह प्रस्तुति 26/11 की आतंकवादी घटना पर आधारित थी। विद्यार्थियों ने बुन्देली और अवधी लोक को कौव्वाली के रूप में प्रस्तुत किया। गीत को केन्द्रीय विद्यालय के बच्चों ने राजस्थानी लोकनृत्य कालबेलिया का प्रदर्शन किया। संगीत विभाग की छात्राओं ने एकल गायन प्रस्तुत किया। अंत में बुन्देली लोकनृत्य 'बधाई' की प्रस्तुति हुई। पूरा गौर प्रांगण दर्शकों से भरा हुआ था। इस अवसर पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता विशिष्ट अतिथि प्रो. डी के गुप्ता, कुलसचिव संतोष सोहगौरा तथा शिक्षक कर्मचारी, विद्यार्थी और कर्मचारी मौजूद थे। उनके परिवार के लोग भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। समस्त कार्यक्रम छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा और सांस्कृतिक परिषद् के समन्वयक डॉ. राकेश सोनी के निर्देशन में संपन्न हुआ।

गौर मूर्ति पर दीप प्रज्जवलित एवं माल्यार्पण कर मनाई गौर जयंती

सागर, देशबन्धु। डॉ सर हरीसिंह गौर जी की जयंती के स्वर्णिम अवसर पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा विश्वविद्यालय उपाध्यक्ष संजय टोंटे के नेतृत्व में विश्वविद्यालय स्थित गौर मूर्ति पर रमन मिश्रा और राज चौहान के द्वारा दीप प्रज्जवलन एवं माल्यार्पण का कार्यक्रम किया गया। इस दौरान डॉ देवआशीष बोस, विवेक विशारिया, आशुतोष तिवारी, गिरिराज शर्मा, सुरेंद्र वर्मा, श्रीराम रिछारिया, आदर्श ठाकुर, मृत्युंजय तिवारी, रोहित ठाकुर, सत्यभगत नामदेव, निशीप्रभा ठाकुर, प्रियांशी यादव, एकता पटेरिया, प्रिंसि बागरी, अंजिली बागरी, उमेश पटेल एवं समस्त छात्र-छात्रायें उपस्थित थे।

...ी मानसिकता
...रे शरीफ़ लोग'
...नहीं रोक सके ठहाके

विवि में सेना के जवानों का सम्मान किया गया

नवभारत न्यूज

सागर 27 नवम्बर. डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में 1971 के भारत पाक युद्ध में विजय के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भारतीय सेना के विक्टरी फ्लेम का विश्वविद्यालय में स्वागत किया गया. इस अवसर पर सेना के जवानों का सम्मान भी किया गया.

गौर जयंती की संध्या बेला में को विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी गई. कार्यक्रम की शुरुआत तालवाद्य से हुई जो संगीत विभाग के विद्यार्थियों ने प्रस्तुत किया. केंद्रीय विद्यालय के बच्चों ने गांधी जी थीम पर मूक अभिनय प्रस्तुत कर गांधी जी के विचारों और संदेशों को प्रस्तुत किया. विवि के परफार्मिंग आर्ट्स के छात्रों ने डॉ राकेश सोनी द्वारा निर्देशित प्रहसन अंतिम इच्छा की प्रस्तुति दी. इस अवसर पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता, विशिष्ट अतिथि प्रो. डीके गुप्ता, कुलसचिव संतोष सोहगौरा छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा मौजूद रहे.

सागर मौसम

अधिकतम 29.1 (+1)
न्यूनतम 14.0 (सा.)
आर्द्रता सुबह 49,
शाम 42, प्रतिशत

गौर साहब सिखा गए की साधनों की अल्पता को साधना से कैसे दूर करें : प्रो. जैन

सागर, देशबन्धु। डा सर हरीसिंह गौर का जीवन एक अद्भुत संदेश है जिसमें एक साथ त्याग, संघर्ष, एकाग्रता, समर्पण,अनुशासन, मितव्ययिता, देशप्रेम की सीखें भरी हुई हैं। वे हमे सिखा गए कि साधनों की अल्पता को साधना से कैसे दूर किया जा सकता है। गौर साहब का जीवन प्रेरणा, जीवटता और नैतिक मूल्यों से ओतप्रोत है, यह बात प्रोफेसर अमर कुमार जैन ने कही. वे इंक मीडिया पत्रकारिता संस्थान में आयोजित गौर जयंती समारोह में 'डा गौर के जीवन मूल्यों की विद्यार्थी जीवन में उपादेयता' विषय पर बतौर मुख्यवक्ता व्याख्यान दे रहे थे। उन्होंने कहा गौर साहब एक साथ शिक्षा, साहित्य, दर्शन, राजनीति, लेखन, कानून जैसे मोर्चों पर उतनी ही ऊर्जा से सक्रिय रहे। बुंदेलखंड की धरती का यह सौभाग्य है कि यहाँ इस महामानव ने जन्म लिया. उन्होंने दानशीलता की जो अनूठी मिसाल पेश की है वह बुंदेलखंड और भारत तो क्या समूची दुनिया में विरला उदाहरण है।

मुख्य अतिथि प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि गौर साहब जैसे युगपुरुष सदियों में जन्म लेते हैं। यदि विद्यार्थियों ने उनके चरित्र का एक अंश भी अपने जीवन में उतार लिया तो वो सफल हो जाएंगे। संस्थान के निदेशक डा आशीष द्विवेदी ने कहा गौर साहब के जीवन का एक ही संदेश है- अप्प दीपो।

गौर जयन्ती पर आयोजित हुई सांस्कृतिक संध्या

सागर, आचरण। गौर जयन्ती की संध्या बेला में को विश्वविद्यालयीन विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम की शुरुआत तालवाद्य से हुई जो संगीत विभाग के विद्यार्थियों ने प्रस्तुत किया. केन्द्रीय विद्यालय के बच्चों ने गांधी जी थीम पर मूक अभिनय (माइम) प्रस्तुत कर गांधी जी के विचारों और संदेशों को प्रस्तुत किया। विवि के परफार्मिंग आर्ट्स के छात्रों ने डॉ राकेश सोनी द्वारा निर्देशित प्रहसन 'अंतिम इच्छा' की प्रस्तुति दी यह प्रस्तुति 26/11 की आतंकवादी घटना पर आधारित थी। विद्यार्थियों ने बुन्देली और अवधी लोक को कौव्वाली के रूप में प्रस्तुत किया। गीत को केन्द्रीय विद्यालय के बच्चों ने राजस्थानी लोकनृत्य कालबेलिया का प्रदर्शन किया. संगीत विभाग की छात्राओं ने एकल गायन प्रस्तुत किया। अंत में बुन्देली लोकनृत्य 'बधाई' की प्रस्तुति हुई. पूरा गौर प्रांगण दर्शकों से भरा हुआ था। इस अवसर पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता विशिष्ट अतिथि प्रो. डी के गुप्ता, कुलसचिव संतोष सोहगौरा तथा शिक्षक कर्मचारी, विद्यार्थी और कर्मचारी मौजूद थे। उनके परिवार के लोग भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। समस्त कार्यक्रम छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा और सांस्कृतिक परिषद् के समन्वयक डॉ. राकेश सोनी के निर्देशन में संपन्न हुआ।

वर्धमान शाखा ने मनाई गौर जयंती एवं संविधान दिवस

सागर, आचरण। अखिल भा. दिगं. जैन महिला परिषद वर्धमान शाखा द्वारा मासिक बैठक आयोजित की गई। बैठक में सागर यूनिवर्सिटी के संस्थापक दानवीर डॉ हरिसिंह गौर को 152 वी जयंती पर श्रद्धांजलि दी गई। प्रां. उपा. डॉ. राजलक्ष्मी बमोरया ने शिक्षा के क्षेत्र में डॉक्टर गौर द्वारा किए कार्यों पर रोशनी डाली। प्रांतीय चेयर पर्सन सीमा भायजी ने अपने उद्बोधन में बताया कि साल 2015 से डॉक्टर अंबेडकर के 125 वी जयंती वर्ष को संविधान दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। संविधान ही वह कड़ी है जो हर भारतवासी को एक साथ पिरोती है। संभाग अध्यक्ष माया जी ने संविधान में महिलाओं को प्रदत्त अधिकारों के बारे में चर्चा की।शाखा अध्यक्ष मीना एवं आरती ने सभी का स्वागत किया किया है बैठक में प्रांतीय जनसंपर्क अधिकारी सीमा कल्पना सुषमा रिचा मनीषा सुनीता उपस्थित थे। आभार कोषाध्यक्ष सीमा ने व्यक्त किया।

गौर साहब सिखा गए की साधनों की अल्पता को साधना से कैसे दूर करें : प्रो. जैन

सागर, देशबन्धु। डा सर हरीसिंह गौर का जीवन एक अद्भुत संदेश है जिसमें एक साथ त्याग, संघर्ष, एकाग्रता, समर्पण,अनुशासन, मितव्ययिता, देशप्रेम की सीखें भरी हुई हैं। वे हमे सिखा गए कि साधनों की अल्पता को साधना से कैसे दूर किया जा सकता है। गौर साहब का जीवन प्रेरणा, जीवटता और नैतिक मूल्यों से ओतप्रोत है, यह बात प्रोफेसर अमर कुमार जैन ने कही. वे इंक मीडिया पत्रकारिता संस्थान में आयोजित गौर जयंती समारोह में 'डा गौर के जीवन मूल्यों की विद्यार्थी जीवन में उपादेयता' विषय पर बतौर मुख्यवक्ता व्याख्यान दे रहे थे। उन्होंने कहा गौर साहब एक साथ शिक्षा, साहित्य, दर्शन, राजनीति, लेखन, कानून जैसे मोर्चों पर उतनी ही ऊर्जा से सक्रिय रहे। बुंदेलखंड की धरती का यह सौभाग्य है कि यहाँ इस महामानव ने जन्म लिया. उन्होंने दानशीलता की जो अनूठी मिसाल पेश की है वह बुंदेलखंड और भारत तो क्या समूची दुनिया में विरला उदाहरण है।

मुख्य अतिथि प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि गौर साहब जैसे युगपुरुष सदियों में जन्म लेते हैं। यदि विद्यार्थियों ने उनके चरित्र का एक अंश भी अपने जीवन में उतार लिया तो वो सफल हो जाएंगे। संस्थान के निदेशक डा आशीष द्विवेदी ने कहा गौर साहब के जीवन का एक ही संदेश है- अप्प दीपो।

संविधान और डा. गौर दिवस पर हुए कार्यक्रम

रहली। स्नातकोत्तर महाविद्यालय में संविधान दिवस और डा. हरीसिंह गौर का जन्म दिवस मनाया गया। संविधान दिवस के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया। जिसमें निबंध प्रतियोगिता व भारतीय संविधान दिवस विषय पर क्विज प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। कार्यक्रम में प्राचार्य प्रो एके जैन, डा. प्रवीण श्रीवास्तव, डा. माधुरी सिंह, डा. मनोज जैन, आलोक कुमार सेन उपस्थित रहे।

जयंती पर बांदरी महाविद्यालय में प्रतिभा सम्मान समारोह सम्पन्न

डॉ. गौर जयंती पर बांदरी को दी सीएम राइजिंग स्कूल की सौगात

खुरई (सागर)। शिक्षा के क्षेत्र में जाने माने सर डॉ हरिसिंह गौर के जन्म दिन के अवसर पर हम बांदरी क्षेत्र के विद्यार्थियों को 38 करोड़ रुपए लागत के सीएम राइजिंग स्कूल की सौगात दे रहे हैं। यह घोषणा मध्यप्रदेश शासन के नगरीय विकास एवं आवास मंत्री भूपेन्द्र सिंह ने की। डॉ. गौर जयंती के उपलक्ष्य में बांदरी के शासकीय महाविद्यालय में आयोजित मेधावी छात्र-छात्रा प्रतिभा सम्मान समारोह में मंत्री भूपेन्द्र ने कहा कि इस क्षेत्र के 2 हजार से अधिक बच्चे बांदरी के स्कूल में पढ़तें हैं, जहां शैक्षणिक सुविधाओं का अभाव है। इसलिए हमने बांदरी को सीएम राइजिंग स्कूल योजना में जुड़वाया है।

इसके साथ ही खुरई का मॉडल स्कूल भी सीएम राइजिंग स्कूल का स्वरूप लेगा। मंत्री सिंह ने कहा कि जीवन में शिक्षा का क्या महत्व है, इसकी प्रेरणा दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर से लेना होगी। डॉ. गौर ने अत्यधिक गरीबी में बचपन झेला। छात्रवृत्ति से पढ़ाई की और बहुत ही कठिन परिस्थितियों में पढ़ने के लिए विदेश गए। देश दुनिया में शोहरत और धन कमाने के बाद अंततः अपने पूरे जीवन की सम्पत्ति से सागर विश्वविद्यालय बनाया। आज की तारीख में सागर विश्वविद्यालय की सम्पत्ति 10 हजार करोड़ से ज्यादा होगी। मंत्री भूपेन्द्र सिंह ने इस कार्यक्रम में बच्चों से सवाल किए और सही उत्तर देने वाले छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया।

प्रवाह ने गौर का जन्मोत्सव मनाया

सांस्कृतिक साहित्यिक कला गतिविधि मंच प्रवाह द्वारा मकरोनिया चौराहा स्थित गौर स्मृति द्वार पर गौर प्रतिमा पर माल्यार्पण कर व मिष्ठान वितरण कर गौर जन्मोत्सव मनाया गया। कार्यक्रम में संस्था अध्यक्ष सतीश रोहित उपाध्यक्ष डॉ मनीष मिश्र सचिव एड. राजेश दुबे कोषाध्यक्ष दैवेश नौखरा सहसचिव तीरथ सिंह सदस्य गण वकील चंद गुप्ता राजेश गौतम मनोज जैन नवल राबटर्स मनोज राय काशीदास दुबे अरविंद मिश्रा जितेन्द्र शर्मा मनीष स्वामी जय चौरसिया रजीत गौर अजय मौर्य भगवान सिंह राजेश तिवारी आदि शामिल हुए।

» मध्य रात्रि में डॉ. गौर की मूर्ति पर माल्यार्पण किया

सागर। सर डॉ हरीसिंह गौर की 152 जयंती के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय छात्र नेता उज्जवल तिवारी के नेतृत्व में मध्यरात्रि के समय विश्वविद्यालय छात्रवास के सभी छात्रों द्वारा विश्वविद्यालय स्थित डॉ सर गौर की मूर्ति के समक्ष माल्यार्पण किया गया व छात्रों द्वारा हर्ष उल्लास से आतिशबाजियों के साथ केक काट कर जन्म दिन को मनाया गया। कार्यक्रम में दीपेश ठाकुर अंकित ठाकुर वंश ठाकुर आदर्श जयसवाल नीरज शुभम आयुष रावत दीपू राजा मनीष मिश्रा सहित अन्य छात्र उपस्थित रहे।

गौर युवा मंच द्वारा जनवरी माह में स्थापित की जाएगी डॉ.गौर की प्रतिमा

डॉ सर हरिसिंह गौर की 152 वी जयंती के उपलक्ष्य पर प्रतिवर्ष अनुसार इस वर्ष भी 26 नवम्बर 2021 को प्रातः 9 बजे कबुलापुल स्थित गौर चौराहा से गौर युवा मंच द्वारा डॉ सर हरिसिंह गौर की पालकी यात्रा निकाली गयी। सर्वप्रथम डॉ गौर के चित्र पर माल्यार्पण किया। गौर युवा मंच के अध्यक्ष अधिवक्ता रविन्द्र अवस्थी ने कहा कि मंच का वर्षों पुराना संकल्प आज पूरा होने जा रहा है जनवरी माह में डॉ सर हरिसिंह गौर की मूर्ति कबुलापुल स्थित गौर चौराहे पर स्थापित की जाएगी। मंच के संरक्षक डॉ अनिल तिवारी संस्थापक कुलपति स्वामी विवेकानंद वि‌वि ने कहा कि गौर युवा मंच द्वारा जो संकल्प लिया गया उसे पूर्ण किया जा रहा है और हम सभी नगर वासियों को भी यह सोचने वाली बात है।

गौर जयंती पर निबंध प्रतियोगिता आयोजित की

देवरीकला। बीकेपी कॉलेज में राष्ट्रीय सेवा योजना ने डा. हरीसिंह गौर जयंती कार्यक्रम का आयोजन किया। जिसमें छात्र-छात्राओं ने रंगोली में डा. गौर की तस्वीर बनाई। साथ ही निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें कार्यक्रम अधिकारी अंजू पाठक ने छात्र छात्राओं को डा. गौर की जीवनी पर व्याख्यान दिया। इस कार्यक्रम में संतोष तिवारी सहित स्टाफ उपस्थित रहा।

गौर साहब सिखा गए की साधनों की अल्पता को साधना से कैसे दूर करें : प्रो. जैन

सागर, देशबन्धु। डा सर हरीसिंह गौर का जीवन एक अद्भुत संदेश है जिसमें एक साथ त्याग, संघर्ष, एकाग्रता, समर्पण,अनुशासन, मितव्ययिता, देशप्रेम की सीखें भरी हुई हैं। वे हमे सिखा गए कि साधनों की अल्पता को साधना से कैसे दूर किया जा सकता है। गौर साहब का जीवन प्रेरणा, जीवटता और नैतिक मूल्यों से ओतप्रोत है, यह बात प्रोफेसर अमर कुमार जैन ने कही. वे इंक मीडिया पत्रकारिता संस्थान में आयोजित गौर जयंती समारोह में 'डा गौर के जीवन मूल्यों की विद्यार्थी जीवन में उपादेयता' विषय पर बतौर मुख्यवक्ता व्याख्यान दे रहे थे। उन्होंने कहा गौर साहब एक साथ शिक्षा, साहित्य, दर्शन, राजनीति, लेखन, कानून जैसे मोर्चों पर उतनी ही ऊर्जा से सक्रिय रहे। बुंदेलखंड की धरती का यह सौभाग्य है कि यहाँ इस महामानव ने जन्म लिया. उन्होंने दानशीलता की जो अनूठी मिसाल पेश की है वह बुंदेलखंड और भारत तो क्या समूची दुनिया में विरला उदाहरण है।

मुख्य अतिथि प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि गौर साहब जैसे युगपुरुष सदियों में जन्म लेते हैं। यदि विद्यार्थियों ने उनके चरित्र का एक अंश भी अपने जीवन में उतार लिया तो वो सफल हो जाएंगे। संस्थान के निदेशक डा आशीष द्विवेदी ने कहा गौर साहब के जीवन का एक ही संदेश है- अप्प दीपो।

एडिना ग्रुप में मनाई गई गौर जयंती

सागर. डॉ. सर हरिसिंह गौर की जयंती पर एडिना ग्रुप में कार्यक्रम आयोजित हुए. डायरेक्टर डॉ. सुनील जैन ने डॉ गौर के जीवन एवं कार्यों को विस्तार से बताया. मैनेजिंग डायरेक्टर इंजी. रोहित जैन एवं इंजी.सुयश जैन ने डॉ गौर को भारत रत्न से सम्मानित करने के प्रयास के लिए उपस्थित शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को संकल्प दिलाया. विद्यार्थियों ने अपने विचार पोस्टर एवं प्रस्तुति के माध्यम से व्यक्त किए. इस अवसर पर प्राचार्य डॉ. अंशुल गंगेले, डॉ. प्रतीक जैन, डॉ. हर्षिता जैन आदि उपस्थित रहे.

गौर उत्सव सप्ताह

डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152 वें जन्मोत्सव पर साप्ताहिक आयोजन

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के संस्थापक शिक्षाविद् एवं प्रख्यात विधिवेत्ता, संविधान सभा के सदस्य एवं दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152 वें जन्मोत्सव पर साप्ताहिक आयोजन किया जा रहा है। गौर उत्सव सप्ताह आयोजन के मुख्य समन्वयक प्रो. आर. के त्रिवेदी ने बताया कि इस वर्ष 21 नवंबर से 26 नवंबर तक गौर जयंती उत्सव मनाया जाएगा जिसमें कई तरह के कार्यक्रम प्रस्तावित हैं। प्रस्तावित कार्यक्रम के अनुसार डॉ. गौर की जीवनी पर आधारित महाविद्यालयीन एवं स्कूली विद्यार्थियों के लिए निबंध एवं चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए कबड्डी एवं वालीबाल प्रतियोगिता, विश्वविद्यालय की महिला शिक्षकों एवं कर्मचारियों तथा महिला क्लब के लिए म्यूजिकल चेयर कार्यक्रम तथा विश्वविद्यालय के शिक्षक और अधिकारियों के बीच क्रिकेट प्रतियोगिता आयोजित की जायेगी। विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को 26 नवंबर को मुख्य समारोह में पुरस्कृत भी किया जाएगा। विधि विभाग परिसर में नवनिर्मित भवन 'मूट कोर्ट'-विक्रमादित्य भवन का लोकार्पण कार्यक्रम एवं व्याख्यान का आयोजन होगा। इसके अलावा मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान लेक्चर कॉम्पलेक्स का लोकार्पण भी होगा और इस अवसर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 पर आधारित व्याख्यान भी होगा।

स्वर्ण जयंती सभागार में डॉ. गौर परिसंवाद कार्यक्रम का भी आयोजन किया जाएगा जिसमें विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता और सागर से जुड़े हुए अनेक सम्माननीय एवं वरिष्ठ हस्ताक्षर सहभागिता करेंगे।

उत्सव सप्ताह में अखिल भारतीय कवि सम्मलेन का भी आयोजन किया जाएगा। कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने बताया कि 26 नवंबर को 'गौर-प्रांगण' में मुख्य समारोह आयोजित किया जाएगा जिसमें पुस्तक-विमोचन कार्यक्रम होगा। मुख्य समारोह में उत्कृष्ट शिक्षकों और कर्मचारियों को भी सम्मानित किया जाएगा। इसी दिन सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए जाएंगे। 26 नवम्बर को मुख्य समारोह के कार्यक्रमों के संचालन हेतु विभिन्न उप-समितियों का भी गठन किया गया है।

स्वदेश

संविधान के एक शिल्पी व सागर विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉ. हरीसिंह गौर की जन्मतिथि

शिक्षा से राष्ट्रनिर्माण का सपना लेकर सागर आया धरतीपुत्र

शिवकुमार विवेक
कार्यकारी संपादक
स्वदेश
shivkumar.vivek@gmail.com

मध्यप्रदेश में यदि आप सागर के विश्वविद्यालय का परिसर देखेंगे तो शायद शांति निकेतन के बाद दूसरा सबसे खूबसूरत शैक्षिक प्रांगण पाएंगे। विश्वविद्यालय के पहाड़ी परिसर में जो निरामय आनंद और निस्तब्ध शांति है, वह हमारे मन-मस्तिष्क में बड़प्पन, उदारता, व्यापकता और आध्यात्मिकता उतार देती है। इसमें ज्ञान का अंकुण कितनी सहजता से होता है, यह संभवत: हमारे महान पुरखे डॉ. हरीसिंह गौर जानते रहे हैं। उन्होंने उस शैल-शिखर पर बैठकर सागर शहर को निहारा जिससे लाखा बंजारा का बनाया विशालकाय तालाब दिखता था। लाखा ने शहर को जीवन दिया तो हरीसिंह ने जीवन की आशा और सार्थकता।

बालापन में बैलगाड़ी में दिन-दिन भर चलकर पढ़ने के लिए दो सौ किलोमीटर दूर जबलपुर जाने वाला अभावग्रस्त घर का यह बालक हरीसिंह अठारह साल की आयु में विदेश के लिए निकला और साठोत्तर आयु में दौलत व शोहरत के साथ एक बड़ा सपना लेकर अपने शहर लौटा। दुनिया भर में घूमकर, कानून के क्षेत्र में धाक जमाकर और विभिन्न उच्च सरकारी पदों पर रहने के बाद अनुभव व ज्ञान की पूंजी लेकर लौटे इस व्यक्ति के मन में अपने शहर को पिछड़ेपन से मुक्त करके उऋण होने की व्यक्तिगत कामना बलवती थी तो एक राष्ट्रीय चिंता भी जेहन में थी। वह नई पीढ़ी को लेकर राष्ट्र निर्माण का प्रयोग करना चाहता था। यह चिंता अभिव्यक्त करने के साथ उन्होंने अपना मंतव्य स्पष्ट किया- 'पिछले 1500 वर्ष के विदेशी शासन के अधीन भारतीय चरित्र का पतन हो चुका है। इस समस्या का हल देश भर में स्वशासन की स्थापना में है लेकिन स्वशासन के बाद भी कोई बदलाव न आया। न ही आएगा, जब तक कि आधुनिक शिक्षा व नए अनुभवों को सुधार का आधार नहीं बनाया जाएगा।' इसलिए यह व्यक्ति अपनी जिंदगी भर की जमा पूंजी दान कर विश्वविद्यालय की स्थापना में जुटा। संसाधनों के लिए दर-दर घूमा और दुनिया की श्रेष्ट अध्यापकीय प्रतिभाएं खोजकर लाया। विदेशों से दो-दोगुना वेतन देकर कई ऐसे विभागों में प्राध्यापक लाकर रखे जिनमें पढ़ने वाला एक छात्र तक नहीं था। लेकिन एक सपना था, एक जिद थी और एक जुनून था।

खाली पड़ी सेना बैरकों में कक्षाएं शुरू की और शहर के छोर पर स्थित (हाल के कुछ सालों में विस्तार-आकांक्षी शहर इसे पार कर गया है।) पथरिया पहाड़ियों पर 2600 एकड़ जमीन सरकार से मांगी। जिसके बाद डॉ. गौर ने अंग्रेजी के 'वी' आकार की पर्वत श्रंखला पर जुलाई 1946 में प्रदेश के पहले और सबसे बड़े शिक्षा केन्द्र की नींव रखी। उनका सपना आक्सफोर्ड और कैंब्रिज की टक्कर का विश्वविद्यालय खड़ा करने की थी, जिसे उन्होंने व्यक्त भी किया था। इसके पहले वे दिल्ली विश्वविद्यालय की स्थापना कर चुके थे और नागपुर विश्वविद्यालय के

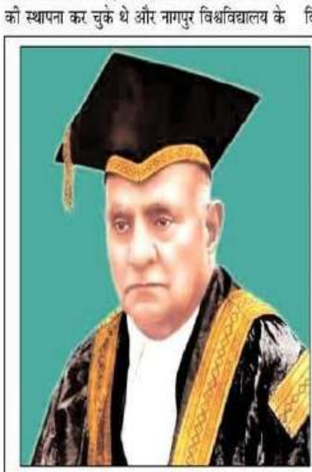

कुलपति रहकर आए थे। आज (26 नवंबर को) डॉ. हरीसिंह गौर की जयंती धूमधाम से मनाई जा रही है। यह विश्वविद्यालय की स्थापना के 75 वर्ष पूरे होने का भी अवसर है। पहली बार इतने व्यापक आयोजन हो रहे हैं और डॉ. गौर के अवदान को याद किया जा रहा है। पहली बार बड़े पैमाने पर शहर के चिंतनशील लोगों और जननेताओं को जोड़ा जा रहा है। इसके अलावा, हर साल गौर जयंती पर एक शोभायात्रा निकालकर कुछ छुटपुट आयोजन किए जाते रहे हैं। लेकिन विश्वविद्यालय की स्थिति पर गौर करने पर हर साल ही यह सवाल मन को मथता है कि गौर के सपने का हमने क्या किया। आज सागर विश्वविद्यालय कहां खड़ा है-देश में, प्रदेश में। देश के सौ शीर्ष विश्वविद्यालयों में उसकी कोई गिनती नहीं है। इस पर भी मंथन करने की महती जरूरत है। विश्वविद्यालय के आंतरिक स्तर पर, शहर के समाज में और प्रदेश-देश के भविष्य निर्माताओं के बीच। हमने इस संस्था ही नहीं, दूसरे अन्य उत्कृष्ट अथवा उत्कृष्टता उन्मुख संस्थानों का क्या हाल किया है, इसकी समीक्षा करने की दरकार है। और इसके बिना हम डॉ. गौर को सच्ची श्रद्धांजलि दे ही नहीं सकते। क्योंकि यदि हम आत्मा और इहलोक-परलोक में विश्वास करते हैं तो निश्चित ही डॉ. गौर की आत्मा इसे देखकर खुश नहीं हो रही होगी।

डॉ. हरीसिंह गौर के प्रति सागर शहर में काफी श्रद्धा का भाव है। बुंदेलखंड के इस पिछड़े हुए इलाके में विश्वविद्यालय ने कई घरों में उच्च शिक्षा का चिराग

> **दुनिया भर में घूमकर, कानून के क्षेत्र में धाक जमाकर और विभिन्न उच्च सरकारी पदों पर रहने के बाद अनुभव व ज्ञान की पूंजी लेकर लौटे इस व्यक्ति के मन में अपने शहर को पिछड़ेपन से मुक्त करके उऋण होने की व्यक्तिगत कामना बलवती थी तो एक राष्ट्रीय चिंता भी जेहन में थी। वह नई पीढ़ी को लेकर राष्ट्र निर्माण का प्रयोग करना चाहता था।**

रोशन किया। और सच कहें तो बीड़ी बनाकर गुजारा करने वाले लोगों के हाथों में गरीबी और पिछड़ेपन से लड़ने का एक औजार सौंपा। इसलिए घर-घर डॉ. गौर के प्रति कृतज्ञ रहा है। लेकिन इन्हीं लोगों में से निकले कुछ लोगों ने उच्च शिक्षा के इस मंदिर को राजनीति और निहित स्वार्थों का अखाड़ा बनाकर शैक्षिक वातावरण को पलीता लगाया। देश-विदेश की सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं को यहां आने से रोका और जो आईं, उन्हें पलायन के लिए विवश किया। जिस विश्वविद्यालय में देश के नामी शिक्षा शास्त्री, साहित्यकार, दार्शनिक, भाषाशास्त्री, समाजशास्त्री, मानवविज्ञानी, वनस्पति शास्त्रज्ञ आदि ज्ञानदान करते थे और पुराने अभिलेखों और देश के शैक्षणिक व शोध परिदृश्य पर जिनके स्वर्णांकित नाम हैं, वह लंबी कतार छोटी होकर लुप्त होती गई और उनकी जगह कई छोटे-छोटे कद और समझ के लोग, जिनमें कई नेता किस्म के लोग थे, बैठते गए। कुलपतियों की कुर्सी पर शिक्षाविदों की जगह कोई पुलिस वाला तो कोई सेना का चुका हुआ वीर बैठाया जाता रहा। कुल इतिहास में तीन कुलपति दैदीप्यमान हैं- कर्मयोगी डॉ. हरीसिंह गौर, ज्ञानयोगी डॉ. रामप्रसाद त्रिपाठी और इन दोनों से हटकर कुछ-कुछ भक्तियोगी डॉ. द्वारका प्रसाद मिश्र (मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री भी रहे।) इतिहास के अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त डॉ. त्रिपाठी को डॉ. गौर विदेश से खींचकर दो गुने वेतन पर यह वास्ता देकर लाए थे- 'तुम्हें अपनी माटी खींच रही है। उसके लिए कर्तव्य करने का वक्त है।' मध्यप्रदेश में दो ही विश्वविद्यालय बड़े सपनों और जज्बों के साथ शुरू हुए थे। दूसरा उज्जैन का विक्रम विश्वविद्यालय था, जिसे कालिदास अकादमी, विक्रम कीर्ति मंदिर जैसी संस्थाओं के साथ उज्जैन के कीर्ति पुरुष पं. सूर्य नारायण व्यास ने आकल्पित किया था। उसकी शैक्षणिक हैसियत भी देश या प्रदेश के शैक्षणिक जगत में क्या है, हम सब जानते हैं। इसलिए यह सोचने का विषय है कि आखिर हम उच्च शिक्षा का दायरा किस उद्देश्य की बिना पर फैला रहे हैं। केवल डिग्री के रूप में कागज का टुकड़ा हाथ में लेकर घूमने वाले नवयुवकों की कतार खड़ी करने के लिए। भूल गए हैं कि मूल्यहीनता लेकर बढ़ने वाली या बेरोजगारों में तब्दील होने वाली यह भीड़ शासकों के लिए भस्मासुर ही साबित होगी।

वह तो भला हुआ कि सागर विश्वविद्यालय, जिसका नाम अब डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय है, केन्द्रीय विश्वविद्यालय में तब्दील हो गया। उसके बाद ऊंची अकादमिक प्रतिभाओं के आने का रास्ता खुला और स्थानीय छुटभैया राजनीति की जकड़न कुछ कम हुई। लेकिन ऊंचे मापदंड बनाकर उनके काम करने की अब भी जरूरत रह गई है और जो कुछ किया जा रहा है, उसके सुफल मिलने के समाचारों की बाट जोही जा रही है। शोध और नवाचार के स्तर पर कुछ ठोस, बड़ा और नया होगा, तभी उसके अकादमिक स्तर की पहचान होगी। विश्वविद्यालयों की रैंकिंग को फौरी और सर्वग्राह्य पैमाना मान सकते हैं, उसमें हमारी प्रगति आंकी जानी चाहिए। इसके अलावा, विश्वविद्यालय की क्षेत्रीय अध्ययन और विकास में कोई न कोई भूमिका सुनिश्चित की जानी चाहिए। हर शैक्षणिक संस्था की यह अनिवार्य भूमिका होनी ही चाहिए। अपने आसपास के अध्ययन-मनन और शोध से ही बड़े फलक यानी राष्ट्रीय स्तर पर विकास के पदचाप पड़ेंगे।

Bhopal Main-Edition Edition
Nov 26, 2021 Page No. 6
Powered by : eReleGo.com

डॉ. गौर के सपनों का सागर और उनका विश्वविद्यालय पर परिसंवाद आयोजित

लोकतांत्रिक व प्रगतिशील शिक्षा के हिमायती थे डॉ. गौर : रघु ठाकुर

[illegible]

डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के संस्थापक महान शिक्षाविद् एवं प्रख्यात विधिवेत्ता, संविधान सभा के सदस्य एवं दानवीर डॉ सर हरीसिंह गौर के 152वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में 21 से 26 नवंबर तक आयोजित गौर उत्सव के पांचवें दिन गुरूवार को विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयंती सभागार में डॉ गौर के सपनों का सागर और उनका विश्वविद्यालय विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया गया।

[illegible]

गौर बब्बा की जयंती: आज याद करने तीनबत्ती पर उमड़ेगा जन सैलाब

[illegible]

डॉ. गौर की आंतरिक छवि विराट थी: कुलाधिपति

[illegible]

बुंदेलखंड के गौर बब्बा थे डा. गौर

[illegible]

सागर को विश्वपटल पर स्थापित किया: प्रो व्यास

[illegible]

प्रतिभाओं के जन्म का दशक है: डॉ चौबे

[illegible]

शब्द, चित्र और रंगों से विद्यार्थियों ने उकेरे अपने मन के डॉ. गौर

सागर (एस.बी.न्यूज)। गौर उत्सव के पहले दिन विद्यार्थियों ने शब्द, चित्र और रंगों से अपने मन के डॉ. हरीसिंह गौर को दर्शाया. गौरतलब है कि डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के संस्थापक महान शिक्षाविद् एवं प्रख्यात विधिवेत्ता, संविधान सभा के सदस्य एवं दानवीर डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152 वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 21 नवंबर से 26 नवंबर तक 'गौर उत्सव' का आयोजन किया जा रहा है. पहले दिन महाविद्यालयीन और स्कूल के विद्यार्थियों ने डॉ. गौर की जीवनी और उनके पर केंद्रित निबंध और चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लिया। यह दोनों प्रतियोगिताएं गर्ल्स डिग्री कॉलेज और एक्सलेंस स्कूल, सागर में आयोजित की गई थी। आयोजन के सह-संयोजक डॉ. राजेन्द्र यादव ने बताया कि दोनों प्रतियोगिताओं में सौ से अधिक विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की. विश्वविद्यालय के शिक्षकों डॉ. अरविन्द कुमार और अरविन्द गौतम के निर्देशन में ये आयोजन संपन्न हुआ।

कुलपति ने किया विद्यार्थियों उत्साहवर्धन विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने प्रतियोगिता स्थलों पर पहुंचकर प्रतिभागी विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया. इस दौरान विश्वविद्यालय के कुलसचिव संतोष सोहगौरा और उपकुलसचिव सतीश कुमार मौजूद रहे।

गौर उत्सव के पहले दिन बही काव्य-गंगा

'कुछ मन की, कुछ माटी की' आयोजन में शिक्षकों ने सुनाई कवितायें

विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयन्ती सभागार में 'कुछ मन की, कुछ माटी की' शीर्षक से शिक्षकों के काव्य पाठ का आयोजन संपन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि विश्वविद्यालय के शिक्षकों में अपार प्रतिभाएं हैं, उनकी प्रतिभा के हर क्षेत्र का लाभ विश्वविद्यालय को मिलना चाहिए, साथ ही शिक्षकों को भी अपनी प्रतिभाओं को निखारने का अवसर मिलना चाहिए, विश्वविद्यालय इसके लिए सबसे सुयोग्य स्थान है. यह शिक्षकों का, शिक्षकों द्वारा और शिक्षकों के लिए किया गया आयोजन है। उन्होंने सभी शिक्षक- कवियों को शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. गौर और मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण से हुई और डॉ. अवधेश तोमर ने वंदना प्रस्तुत की. कार्यक्रम के संयोजक प्रो. नवीन कांगो ने स्वागत वक्तव्य दिया। इस अवसर पर गौर उत्सव के मुख्य समन्वयक प्रो. आर. के. त्रिवेदी भी उपस्थित थे।

कहकशां हूं मैं, सारे सितारे मुझमें......बहता दरिया हूं, सारे किनारे मुझमें......

प्रो. नवीन कांगो ने बेहतरीन गजल की प्रस्तुति दी और डॉ. गौर के जीवन-चरित्र पर कविता भी सुनाई. डॉ. राकेश सोनी ने माउथ ऑर्गन बजाते हुए गीतकार संतोष आनंद की रचना 'इक प्यार का नगमा है.....' महफिल में समां बांधा। सपनों की इस नगरी में, कुछ सपने लेकर आई हूँ, शीर्षक से डॉ. चन्दना राजौरिया ने अपनी रचना का पाठ किया. डॉ. पंकज तिवारी ने डॉ. गौर के अवदान पर केंद्रित कविता पाठ किया. कुलसचिव संतोष सोहगौरा ने महादानी डॉ. गौर पर स्वरचित कविता सुनाई।

विश्वविद्यालय के शिक्षक-कवियों डॉ. पंकज तिवारी, डॉ. जी एल पुणताम्बेकर, डॉ. अवधेश, डॉ. अफरीन खान, डॉ. हिमांशु, डॉ. संजय कुमार, प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत, डॉ. कालीनाथ झा, प्रो. बी.के. श्रीवास्तव, डॉ. ललित मोहन, डॉ. किरण आर्य, डॉ. शशि कुमार सिंह, डॉ. रामहेत गौतम, डॉ. नीरज उपाध्याय, डॉ. त्रिलोकी नाथ ने अपनी काव्य रचनाओं का पाठ किया। कार्यक्रम के अंत में वरिष्ठ प्रो. ए.पी. सिंह, प्रो. पी के कठल, कुलसचिव संतोष सोहगौरा और संयोजक प्रो. नवीन कांगो ने सभी शिक्षक-कवियों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी, विद्यार्थी और सागर शहर के अनेक गणमान्य नागरिक और पत्रकार बंधु उपस्थित थे. संचालन सह-संयोजक डॉ. राजेन्द्र यादव ने किया और डॉ. आशुतोष ने आभार ज्ञापन किया।

22 नवंबर 2021 को आयोजित कार्यक्रम

मीडिया अधिकारी डॉ. विवेक जायसवाल ने बताया कि 22 नवंबर को पूरे दिन खेल-कूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया है. सुबह 08.30 बजे से विश्वविद्यालय के शिक्षकों और अधिकारियों के बीच 20 ओवर का मैत्री क्रिकेट मैच होगा. 11.00 बजे से विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए कबड्डी प्रतियोगिता रखी गई है. इसी के समानांतर 11 बजे से ही विश्वविद्यालय के विद्यार्थी वालीबाल प्रतियोगिता में भाग लेंगे. 12.00 बजे से विश्वविद्यालय के महिला शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी तथा महिला क्लब के सदस्यों के लिए म्यूजिकल चेयर और दोपहर 01.30 बजे से 'टग ऑफ वॉर' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है. 22 नवंबर को आयोजित सभी प्रतियोगिताएं विश्वविद्यालय के शारीरिक शिक्षा विभाग के प्रांगण में संपन्न होंगी।

उत्पादों के स्टाल लगाए गए है।

प्रदेश कांग्रेस कमेटी के कार्यकारी

विश्वविद्यालय में हुआ संविधान की प्रस्तावना का वाचन, विक्ट्री फ्लेम का स्वागत

सागर(एस.बी.न्यूज)। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के संस्थापक डॉ. सर हरीसिंह गौर के 152 वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 21 नवंबर से 26 नवंबर तक आयोजित गौर उत्सव में गौर जयन्ती 26 नवंबर के मुख्य समारोह आरम्भ होने से पूर्व संविधान के अंगीकार दिवस पर भारतीय संविधान की प्रस्तावना का वाचन किया गया।

प्रस्तावना वाचन कार्यक्रम देश भर की संस्थाओं में आयोजित किया गया था। विश्वविद्यालय में 1971 के भारत पाक युद्ध में विजय के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भारतीय सेना के विक्टरी फ्लेम का विश्वविद्यालय में स्वागत भी किया गया। इस अवसर पर सेना के जवानों का सम्मान भी किया गया।

गौर जयन्ती पर आयोजित हुई सांस्कृतिक संध्या

गौर जयन्ती की संध्या वेला में को विश्वविद्यालययीन विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम की शुरुआत तालवाद्य से हुई जो संगीत विभाग के विद्यार्थियों ने प्रस्तुत किय। केन्द्रीय विद्यालय के बच्चों ने गांधी जी थीम पर मूक अभिनय माइमद्ध प्रस्तुत कर गांधी जी के विचारों और संदेशों को प्रस्तुत किया। विवि के परफार्मिंग आर्ट्स के छात्रों ने डॉ राकेश सोनी द्वारा निर्देशित प्रहसन अंतिम इच्छा की प्रस्तुति दी। यह प्रस्तुति 26. 11 की आतंकवादी घटना पर आधारित थी। विद्यार्थियों ने बुन्देली और अवधी लोक को कौव्वाली के रूप में प्रस्तुत किया।

गीत को केन्द्रीय विद्यालय के बच्चों ने राजस्थानी लोकनृत्य कालबेलिया का प्रदर्शन किया। संगीत विभाग की छात्राओं ने एकल गायन प्रस्तुत किया। अंत में बुन्देली लोकनृत्य बधाई की प्रस्तुति हुई। पूरा गौर प्रांगण दर्शकों से भरा हुआ था। इस अवसर पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता विशिष्ट अतिथि प्रो. डी के गुप्ता, कुलसचिव संतोष सोहगौरा तथा शिक्षक कर्मचारी, विद्यार्थी और कर्मचारी मौजूद थे। उनके परिवार के लोग भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए, समस्त कार्यक्रम छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा और सांस्कृतिक परिषद् के समन्वयक डॉ. राकेश सोनी के निर्देशन में संपन्न हुआ।

ऑनलाइन लिंक्स

- https://www.facebook.com/106558305151154/posts/122313450242306/?sfnsn=wiwspwa
- https://www.facebook.com/106558305151154/posts/122313450242306/?sfnsn=wiwspwa
- https://www.teenbattinews.com/2021/11/21-26.html
- https://twitter.com/Teenbattinews1/status/1462095761861066752?t=CBgwG83QbRKcy0fltJTEpw&s=19
- https://twitter.com/MediaOfficer3/status/1462099799692361728?s=20
- https://www.sagartvnews.com/news_only.php?newsidget=9048
- https://www.facebook.com/106558305151154/posts/123091290164522/?sfnsn=wiwspwa
- https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=123396416800676&id=106558305151154&sfnsn=wiwspwa
- https://www.teenbattinews.com/2021/11/blog-post_76.html
- https://www.facebook.com/106558305151154/posts/123624080111243/?sfnsn=wiwspwa
- https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=123757126764605&id=106558305151154&sfnsn=wiwspwa
- https://twitter.com/MediaOfficer3/status/1463150441747738626?s=20
- http://sagarmanthannews.com/in-todays-time-there-is-a-need-of-judicious-justice-not-judgment/
- https://bit.ly/3r1W8CM

- https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=123821430091508&id=106558305151154&sfnsn=wiwspwa
- https://www.facebook.com/BundeliHalchalFB/videos/320658809577723/
- https://epaper.bhaskarhindi.com/c/64535386
- https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=123968706743447&id=106558305151154&sfnsn=wiwspwa
- https://www.facebook.com/106558305151154/posts/123984133408571/?sfnsn=wiwspwa
- https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=124060466734271&id=106558305151154&sfnsn=wiwspwa
- https://www.teenbattinews.com/2021/11/2020.html
- https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=124137396726578&id=106558305151154&sfnsn=wiwspwa
- https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=124136963393288&id=106558305151154&sfnsn=wiwspwa
- https://www.facebook.com/106558305151154/posts/124137126726605/?sfnsn=wiwspwa
- https://www.teenbattinews.com/2021/11/blog-post_46.html
- https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=124589606681357&id=106558305151154&sfnsn=wiwspwa
- https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=124590253347959&id=106558305151154&sfnsn=wiwspwa
- https://t.co/Mu7RfIpOcu
- https://sagar.nic.in/en/festival/gour-jayanti/

- https://epaperm.patrika.com/madhyapradesh/sagar/2021-11-26/62/page-1.html
- https://t.co/wod1xqhfwp
- https://www.teenbattinews.com/2021/11/blog-post_363.html
- https://www.facebook.com/106558305151154/posts/125060769967574/?sfnsn=wiwspwa
- https://www.facebook.com/106558305151154/posts/125060769967574/?sfnsn=wiwspwa
- https://www.facebook.com/106558305151154/posts/125063656633952/?sfnsn=wiwspwa
- https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=126048513202133&id=106558305151154&sfnsn=wiwspwa

यूट्यूब लिंक

- **https://youtu.be/07ckAJwvTzY**
- **https://youtu.be/YfEcdiFwt3k**
- **https://youtu.be/aYM3bTLWCFw**
- **https://youtu.be/05kgGZOlboM**
- **https://youtu.be/WFBnjyNo7Dg**
- **https://youtu.be/WlC_F-4gr-k**
- **https://youtu.be/vHVY3-KEAIo**
- **https://youtu.be/hVtcWPlugdQ**

फोटो गैलरी

पत्रकार वार्ता
गौर उत्सव
21-26 नवम्बर, 2021
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
mediaofficer@dhsgsu.edu.in
www.dhsgsu.ac.in

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय

महिला समाज

Jai Gour

A.5.

संकलन एवं संपादन

मीडिया अधिकारी कार्यालय

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

Website: www.dhsgsu.edu.in Email: mediaofficer@dhsgsu.edu.in